Model: C3,P3,PredictionPack30Year

SrNo: 112-123-101-1078 / 49 Date: 27/01/2024

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**27/01/2000**
दिन	गुरुवार
जन्म समय	**13:01:45 घंटे**
इष्ट	14:33:29 घटी
स्थान	**Delhi**
देश	India

अक्षांश	28:39:00 उत्तर
रेखांश	77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	12:40:37 घंटे
वेलान्तर	-00:12:37 घंटे
साम्पातिक काल	21:04:14 घंटे
सूर्योदय	07:12:21 घंटे
सूर्यास्त	17:55:26 घंटे
दिनमान	10:43:05 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	12:48:13 मकर
लग्न के अंश	05:55:29 वृष

चैत्रादि संवत / शक	2056 / 1921
मास	माघ
पक्ष	कृष्ण
सूर्योदय कालीन तिथि	7
तिथि समाप्ति काल	24:44:37
जन्म तिथि	7
सूर्योदय कालीन नक्षत्र	चित्रा
नक्षत्र समाप्ति काल	23:31:21 घंटे
जन्म नक्षत्र	चित्रा
सूर्योदय कालीन योग	धृति
योग समाप्ति काल	17:45:00 घंटे
जन्म योग	धृति
सूर्योदय कालीन करण	विष्टि
करण समाप्ति काल	12:13:24 घंटे
जन्म करण	बव

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	वृष – शुक्र
राशि–स्वामी	**तुला – शुक्र**
नक्षत्र–चरण	**चित्रा – 3**
नक्षत्र स्वामी	मंगल
योग	धृति
करण	बव
गण	राक्षस
योनि	व्याघ्र
नाड़ी	मध्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मृग
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	रा–राकेश
पाया(राशि–नक्षत्र)	स्वर्ण – रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कुम्भ

घात चक्र

मास	माघ
तिथि	4-9-14
दिन	गुरुवार
नक्षत्र	शतभिषा
योग	शुक्ल
करण	तैतिल
प्रहर	4
वर्ग	सिंह
लग्न	कन्या
सूर्य	कन्या
चन्द्र	धनु
मंगल	तुला
बुध	कर्क
गुरु	वृश्चिक
शुक्र	धनु
शनि	सिंह
राहु	मकर

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	05:55:29	398:04:18	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	बुध	–––
सूर्य			मक	12:48:13	01:00:59	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	राहु	शत्रु राशि
चंद्र			तुला	01:11:33	12:35:35	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	बुध	सम राशि
मंगल			कुंभ	24:05:00	00:46:12	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	बुध	सम राशि
बुध		अ	मक	20:30:40	01:44:30	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	सम राशि
गुरु			मेष	03:30:20	00:07:09	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	सूर्य	मित्र राशि
शुक्र			धनु	09:11:46	01:13:40	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	सम राशि
शनि			मेष	16:38:52	00:01:41	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	चंद्र	नीच राशि
राहु	व		कर्क	09:49:31	00:00:19	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	शुक्र	शत्रु राशि
केतु	व		मक	09:49:31	00:00:19	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष			मक	22:21:54	00:03:27	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	–––
नेप			मक	10:18:02	00:02:17	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	चंद्र	–––
प्लूटो			वृश्चि	18:23:57	00:01:33	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	–––
दशम भाव			मक	19:43:49	--	श्रवण	--	22	शनि	चंद्र	केतु	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
चित्रपक्षीय अयनांश : **23:51:16**

लग्न–चलित

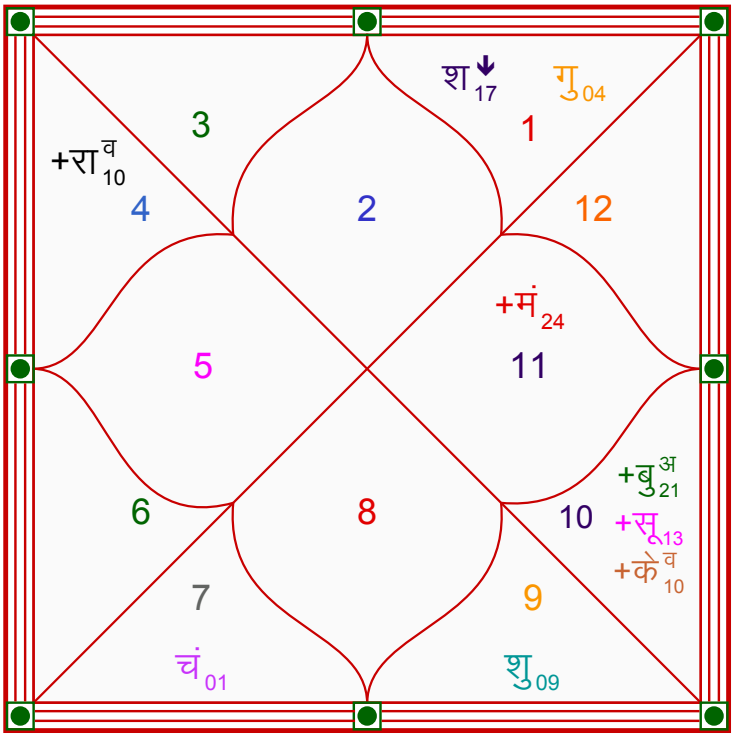

चन्द्र कुंडली

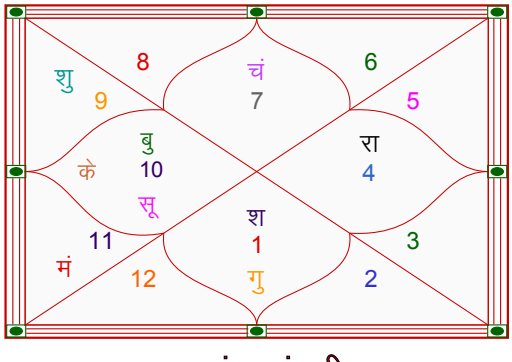

नवमांश कुंडली

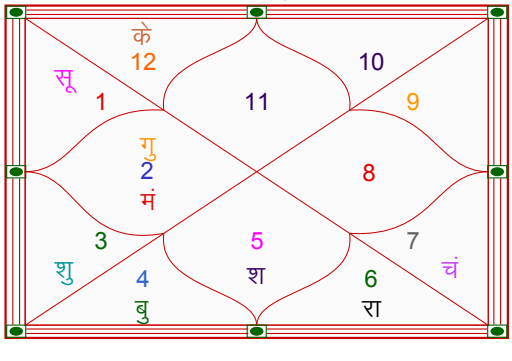

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मेष	18:13:33	वृष	05:55:29
2	वृष	18:13:33	मिथुन	00:31:36
3	मिथुन	12:49:39	मिथुन	25:07:43
4	कर्क	07:25:46	कर्क	19:43:49
5	सिंह	07:25:46	सिंह	25:07:43
6	कन्या	12:49:39	तुला	00:31:36
7	तुला	18:13:33	वृश्चिक	05:55:29
8	वृश्चिक	18:13:33	धनु	00:31:36
9	धनु	12:49:39	धनु	25:07:43
10	मकर	07:25:46	मकर	19:43:49
11	कुम्भ	07:25:46	कुम्भ	25:07:43
12	मीन	12:49:39	मेष	00:31:36

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	05:55:29
2	मिथुन	01:41:54
3	मिथुन	24:55:11
4	कर्क	19:43:49
5	सिंह	19:43:33
6	कन्या	26:43:04
7	वृश्चिक	05:55:29
8	धनु	01:41:54
9	धनु	24:55:11
10	मकर	19:43:49
11	कुम्भ	19:43:33
12	मीन	26:43:04

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त

चलित कुंडली

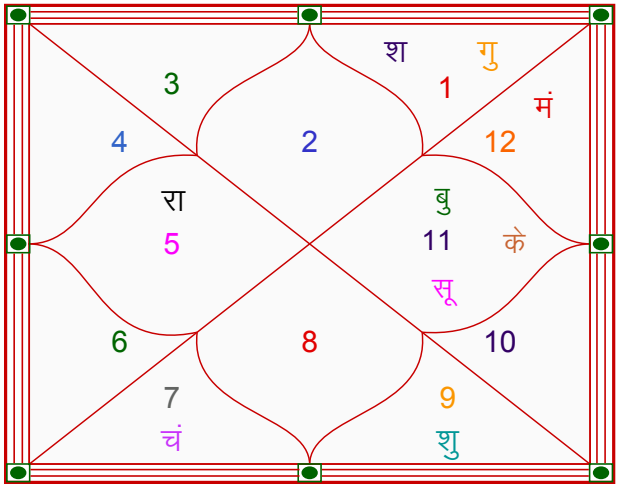

भाव कुंडली

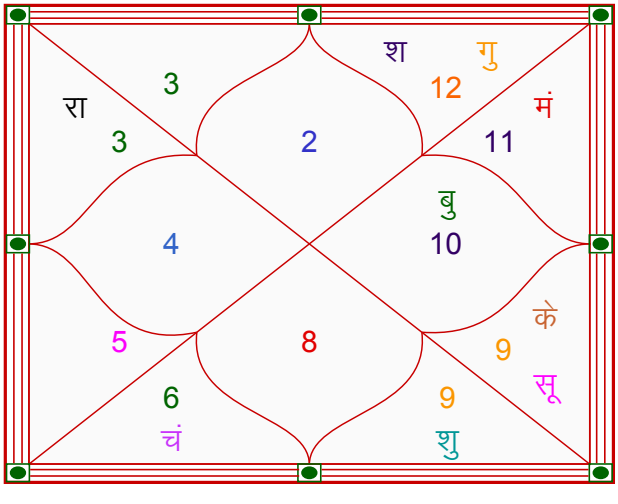

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

sample

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	मातृ	पितृ	युवा	खल	नृत्यलिप्सा	5.16	54 %
चंद्र	कलत्र	मातृ	बाल	शक्त	नृत्यलिप्सा	1.91	65 %
मंगल	आत्मा	भ्रातृ	मृत	निपीदित	आगमन	5.13	24 %
बुध	अमात्य	ज्ञाति	कुमार	विकल	नृत्यलिप्सा	0.00	66 %
गुरु	ज्ञाति	धन	बाल	मुदित	प्रकाश	4.59	42 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	कुमार	निपीदित	निद्रा	1.60	21 %
शनि	भ्रातृ	आयु	युवा	भीत	प्रकाश	0.09	-9 %
राहु	———	ज्ञान	वृद्ध	खल	आगमन	0.00	80 %
केतु	———	मोक्ष	वृद्ध	खल	भोजन	0.00	80 %
कुल						**18.48**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त

चलित कुंडली

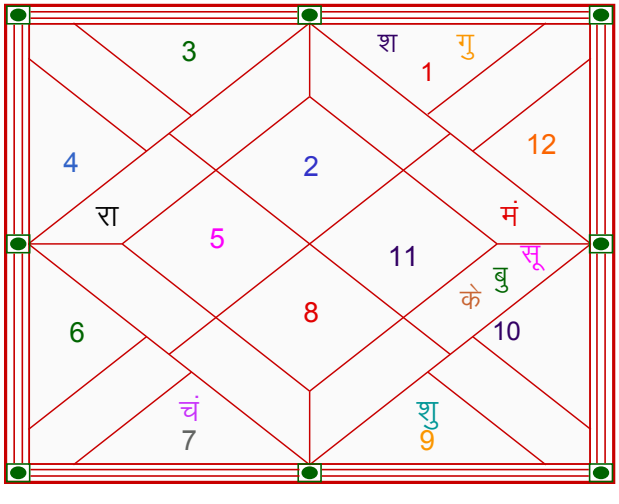

लग्न–चलित

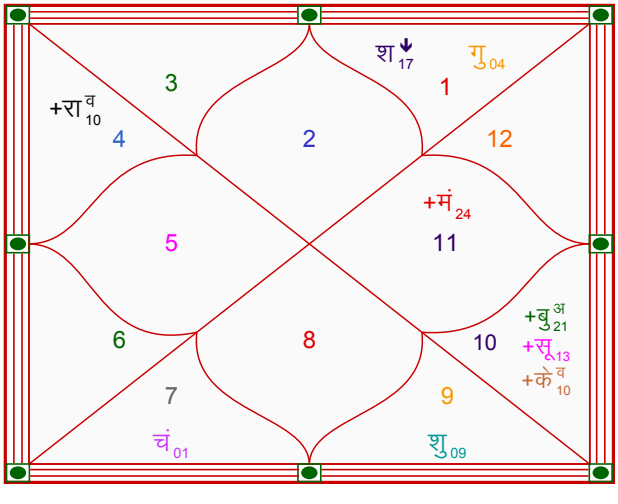

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

सुदर्शन चक्र

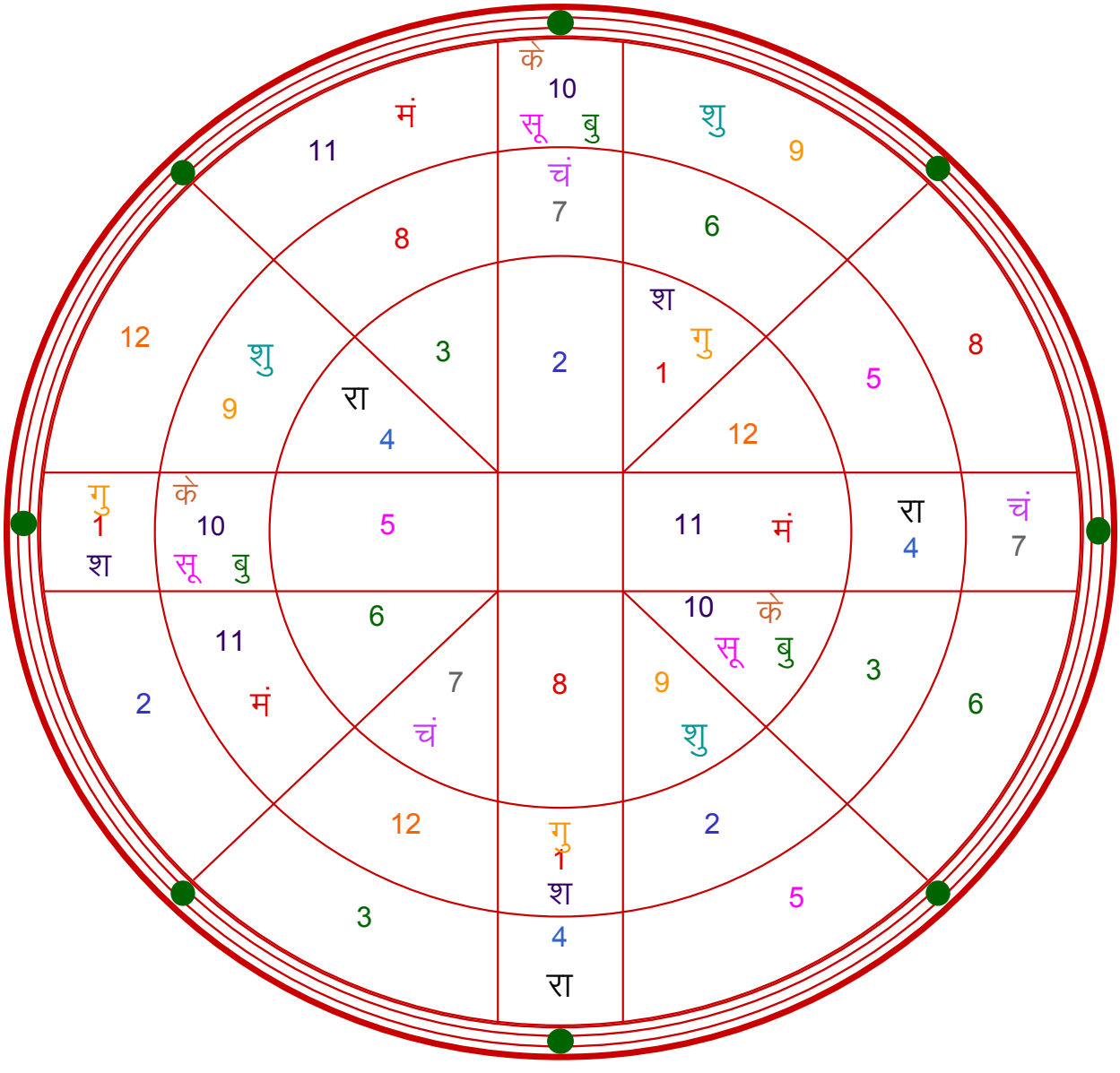

नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : मंगल 2 वर्ष 9 मास 25 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मक	12:54:15	शनि	चंद्र	राहु	बुध
चंद्र		तुला	01:17:35	शुक्र	मंगल	बुध	राहु
मंगल		कुंभ	24:11:02	शनि	गुरु	बुध	केतु
बुध		मक	20:36:42	शनि	चंद्र	शुक्र	शुक्र
गुरु		मेष	03:36:22	मंगल	केतु	सूर्य	शुक्र
शुक्र		धनु	09:17:48	गुरु	केतु	गुरु	राहु
शनि		मेष	16:44:54	मंगल	शुक्र	चंद्र	शनि
राहु	व	कर्क	09:55:33	चंद्र	शनि	शुक्र	बुध
केतु	व	मक	09:55:33	शनि	सूर्य	शुक्र	केतु
हर्ष		मक	22:27:56	शनि	चंद्र	शुक्र	बुध
नेप		मक	10:24:04	शनि	चंद्र	चंद्र	गुरु
प्लूटो		वृश्चि	18:29:59	मंगल	बुध	बुध	शनि

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृष	06:01:31	शुक्र	सूर्य	बुध	चंद्र
2	मिथु	01:47:56	बुध	मंगल	बुध	शनि
3	मिथु	25:01:13	बुध	गुरु	बुध	राहु
4	कर्क	19:49:51	चंद्र	बुध	शुक्र	चंद्र
5	सिंह	19:49:35	सूर्य	शुक्र	राहु	सूर्य
6	कन्या	26:49:06	बुध	मंगल	गुरु	बुध
7	वृश्चि	06:01:31	मंगल	शनि	बुध	शुक्र
8	धनु	01:47:56	गुरु	केतु	शुक्र	राहु
9	धनु	25:01:13	गुरु	शुक्र	बुध	मंगल
10	मक	19:49:51	शनि	चंद्र	केतु	शुक्र
11	कुंभ	19:49:35	शनि	राहु	मंगल	शुक्र
12	मीन	26:49:06	गुरु	बुध	गुरु	बुध

के.पी. अयनांश : 23:45:14

फॉरच्युना : मकर 24:24:52

लग्न कुंडली

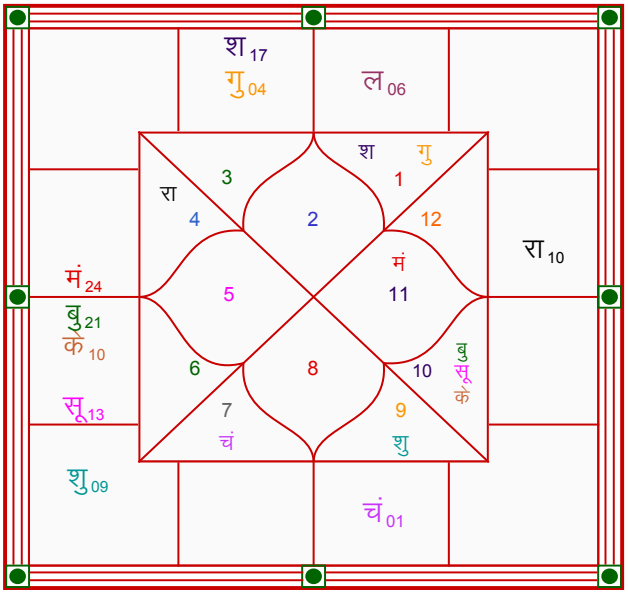

भाव कुंडली

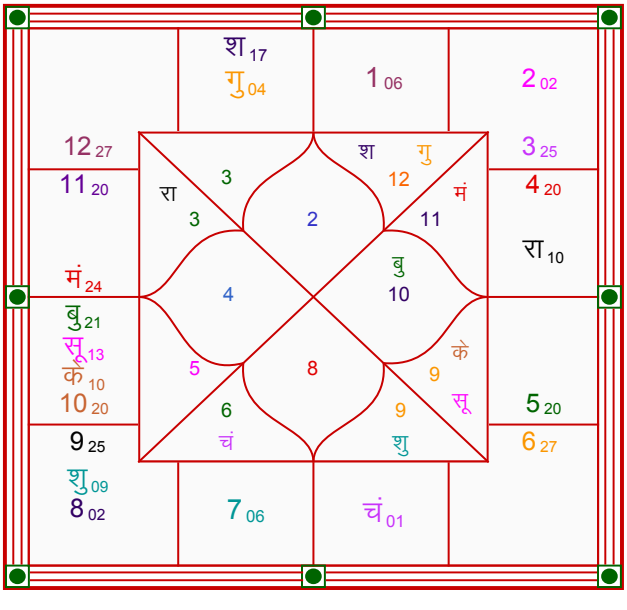

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

sample

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	शुक्र– शनि–
2	बुध–
3	बुध– राहु,
4	सूर्य– चंद्र– बुध–
5	सूर्य– केतु–
6	सूर्य, चंद्र, बुध+
7	चंद्र– मंगल–
8	मंगल– गुरु– शुक्र, शनि,
9	सूर्य, मंगल– गुरु+ शुक्र, केतु+
10	बुध, शनि– राहु–
11	चंद्र, मंगल, शनि– राहु–
12	मंगल+ गुरु, शनि, राहु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	4- 5- 6, 9,
चंद्र	4- 6, 7- 11,
मंगल	7- 8- 9- 11, 12+
बुध	2- 3- 4- 6+ 10,
गुरु	8- 9+ 12,
शुक्र	1- 8, 9,
शनि	1- 8, 10- 11- 12,
राहु	3, 10- 11- 12,
केतु	5- 9+

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	सूर्य
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	मंगल
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	गुरु
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	बुध

कारकत्व–सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	श	शु
2	--	--	--	बु
3	--	रा	--	बु
4	--	--	सू बु	चं
5	--	--	के	सू
6	सू बु	चं	--	बु
7	--	--	चं	मं
8	श	शु	मं	गु
9	गु शु के	सू के	मं	गु
10	--	बु	रा	श
11	चं	मं	रा	श
12	मं रा	गु श	मं	गु

ग्रह कारक सारिणी–1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	5	1	मकर	9
चंद्र	4	10	तुला	6
मंगल	7	2,6	कुम्भ	11
बुध	2,3,6	4,12	मकर	10
गुरु	8,9,12	3	मेष	12
शुक्र	1	5,9	धनु	8
शनि	10,11	7	मेष	12
राहु	---	11	कर्क	3
केतु	---	8	मकर	9

ग्रह कारक सारिणी–2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	4	10	6	---	11	3
चंद्र	7	2,6	11	2,3,6	4,12	10
मंगल	8,9,12	3	12	2,3,6	4,12	10
बुध	4	10	6	1	5,9	8
गुरु	---	8	9	5	1	9
शुक्र	---	8	9	8,9,12	3	12
शनि	1	5,9	8	4	10	6
राहु	10,11	7	12	1	5,9	8
केतु	5	1	9	1	5,9	8

sample

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	282.80	181.19	324.08	290.51	3.51	249.20	16.65	99.83	279.83	292.37	280.30	228.40
सूर्य	––	––	––	युति	––	––	चतु	सप्त	युति	युति	युति	––
282.80	0.00	0.00	0.00	6.92	0.00	0.00	1.60	9.52	9.52	5.39	9.66	0.00
चंद्र	––	––	––	––	सप्त	––	––	––	––	––	––	––
181.19	0.00	0.00	0.00	0.00	9.71	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	––	8वां	––	––	नवां	––	––	अष्टां	––	––	––	––
324.08	0.00	7.35	0.00	0.00	0.62	0.00	0.00	0.39	0.00	0.00	0.00	0.00
बुध	युति	––	––	––	पंचा	––	चतु	सप्त	युति	युति	युति	––
290.51	6.92	0.00	0.00	0.00	0.01	0.00	1.59	4.37	4.37	9.81	4.81	0.00
गुरु	––	सप्त	––	––	––	9वां	युति	––	––	––	––	––
3.51	0.00	9.71	0.00	0.00	0.00	8.28	1.93	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शुक्र	––	––	––	––	पंच	––	––	––	––	––	––	––
249.20	0.00	0.00	0.00	0.00	0.24	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	10वा	––	––	10वा	युति	––	––	––	10वा	10वा	10वा	––
16.65	9.20	0.00	0.00	9.19	1.93	0.00	0.00	0.00	7.55	8.26	7.87	0.00
राहु	सप्त	––	––	सप्त	––	षष्ठ	––	––	सप्त	सप्त	सप्त	––
99.83	9.52	0.00	0.00	4.37	0.00	0.55	0.00	0.00	10.00	2.55	9.99	0.00
केतु	युति	––	अष्ट	युति	––	––	––	सप्त	––	युति	युति	––
279.83	9.52	0.00	0.39	4.37	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	2.55	9.99	0.00
हर्ष	युति	––	––	युति	पंचा	––	चतु	सप्त	युति	––	युति	––
292.37	5.39	0.00	0.00	9.81	0.22	0.00	0.22	2.55	2.55	0.00	3.03	0.00
नेप	युति	––	––	युति	––	––	––	सप्त	युति	युति	––	––
280.30	9.66	0.00	0.00	4.81	0.00	0.00	0.00	9.99	9.99	3.03	0.00	0.00
प्लूटो	तृती	––	चतु	तृती	अष्टां	––	––	––	––	तृती	––	––
228.40	0.32	0.00	0.25	2.55	0.99	0.00	0.00	0.00	0.00	1.52	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

sample

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	35.92	60.53	85.13	109.73	145.13	180.53	215.92	240.53	265.13	289.73	325.13	0.53
सूर्य	––	––	––	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––	––
282.80	0.00	0.00	0.00	7.48	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.48	0.00	0.00
चंद्र	––	––	––	––	––	युति	––	तृती	––	––	––	सप्त
181.19	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.98	0.00	2.95	0.00	0.00	0.00	9.98
मंगल	पंचा	4था	––	––	सप्त	8वां	––	––	––	––	युति	––
324.08	0.97	7.81	0.00	0.00	9.94	7.81	0.00	0.00	0.00	0.00	9.94	0.00
बुध	––	––	––	––	––	––	––	––	––	युति	––	––
290.51	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.97	0.00	0.00
गुरु	––	तृती	––	5वां	––	सप्त	––	9वां	––	––	––	युति
3.51	0.00	2.13	0.00	1.28	0.00	9.52	0.00	9.52	0.00	0.00	0.00	9.52
शुक्र	––	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––	नवां	––	––
249.20	0.00	6.15	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.15	0.00	0.67	0.00	0.00
शनि	––	––	3रा	चतु	––	––	––	––	––	10वा	––	––
16.65	0.00	0.00	6.31	2.07	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.48	0.00	0.00
राहु	––	––	युति	युति	अष्ट	––	पंच	––	सप्त	सप्त	––	––
99.83	0.00	0.00	0.32	5.09	0.89	0.00	1.57	0.00	0.32	5.09	0.00	0.00
केतु	पंच	––	सप्त	सप्त	––	––	––	––	––	युति	अष्ट	––
279.83	1.57	0.00	0.32	5.09	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.09	0.89	0.00
हर्ष	––	––	––	सप्त	––	––	––	––	––	––	––	––
292.37	0.00	0.00	0.00	9.62	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	पंच	––	––	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––	––
280.30	1.24	0.00	0.00	5.51	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.51	0.00	0.00
प्लूटो	सप्त	सप्त	––	––	––	––	युति	युति	––	तृती	––	––
228.40	2.61	2.96	0.00	0.00	0.00	0.00	2.61	2.96	0.00	2.82	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

sample

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	35.92	61.70	84.92	109.73	139.73	176.72	215.92	241.70	264.92	289.73	319.73	356.72
सूर्य	––	––	––	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––	––
282.80	0.00	0.00	0.00	7.48	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.48	0.00	0.00
चंद्र	––	––	––	––	––	युति	––	तृती	––	––	––	सप्त
181.19	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.92	0.00	2.97	0.00	0.00	0.00	8.92
मंगल	पंचा	4था	––	––	सप्त	8वां	––	––	––	––	युति	––
324.08	0.97	6.99	0.00	0.00	8.98	9.62	0.00	0.00	0.00	0.00	8.98	0.00
बुध	––	––	––	––	––	––	––	––	––	युति	––	––
290.51	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.97	0.00	0.00
गुरु	––	तृती	––	5वां	––	सप्त	––	9वां	––	––	––	युति
3.51	0.00	2.67	0.00	1.28	0.00	7.58	0.00	9.82	0.00	0.00	0.00	7.58
शुक्र	––	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––	नवां	––	––
249.20	0.00	7.07	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.07	0.00	0.67	0.00	0.00
शनि	––	3रा	3रा	चतु	पंच	––	––	––	––	10वा	––	––
16.65	0.00	0.05	6.48	2.07	2.08	0.00	0.00	0.00	0.00	9.48	0.00	0.00
राहु	––	––	युति	युति	नवां	––	पंच	––	सप्त	सप्त	––	––
99.83	0.00	0.00	0.10	5.09	0.99	0.00	1.57	0.00	0.10	5.09	0.00	0.00
केतु	पंच	––	सप्त	सप्त	––	––	––	––	––	युति	नवां	––
279.83	1.57	0.00	0.10	5.09	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.09	0.99	0.00
हर्ष	––	––	––	सप्त	––	––	––	––	––	––	––	तृती
292.37	0.00	0.00	0.00	9.62	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.25
नेप	पंच	––	––	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––	––
280.30	1.24	0.00	0.00	5.51	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.51	0.00	0.00
प्लूटो	सप्त	सप्त	––	––	––	––	युति	युति	––	तृती	चतु	––
228.40	2.61	1.77	0.00	0.00	0.00	0.00	2.61	1.77	0.00	2.82	2.82	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

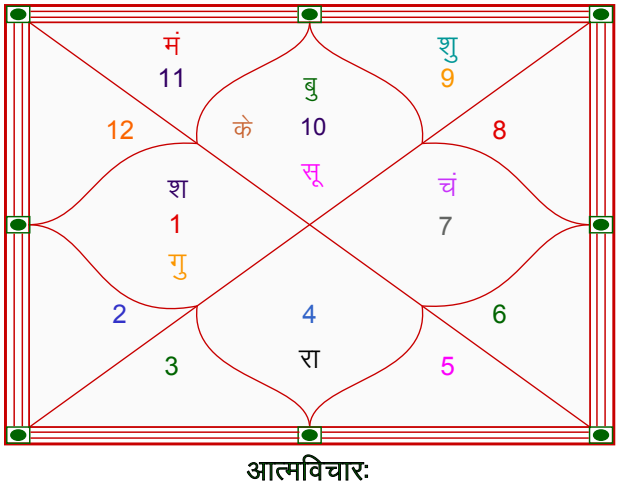

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

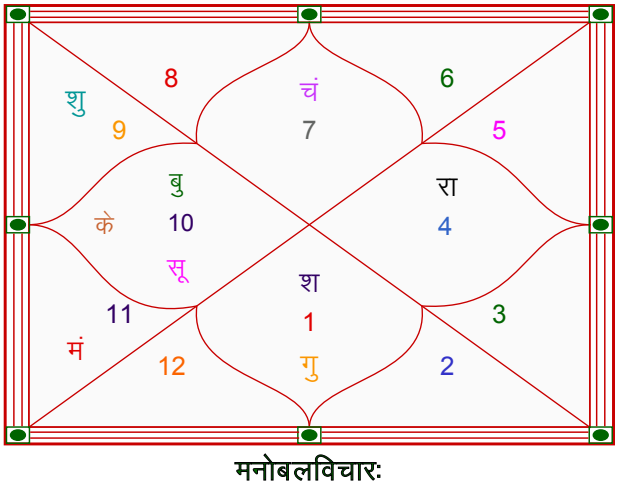

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

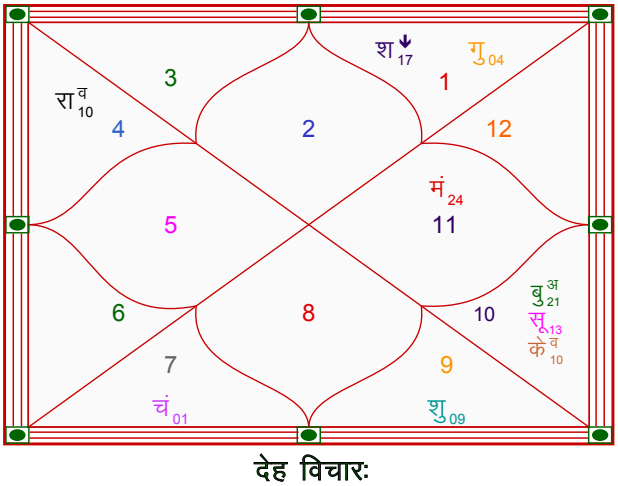

देह विचारः

होरा कुंडली

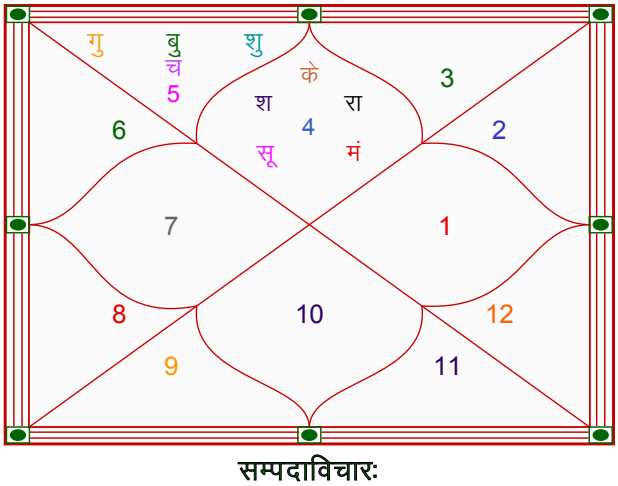

सम्पदाविचारः

sample

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

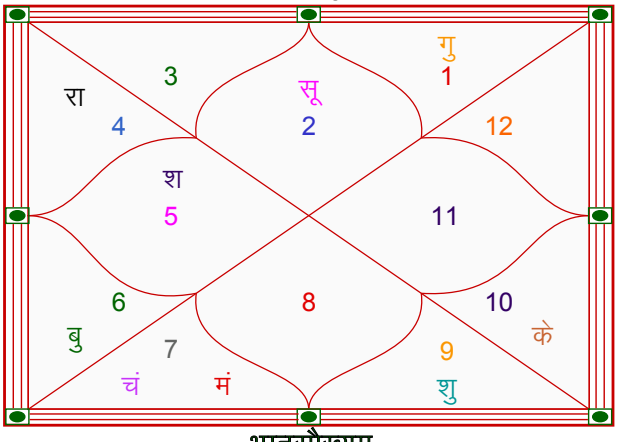

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

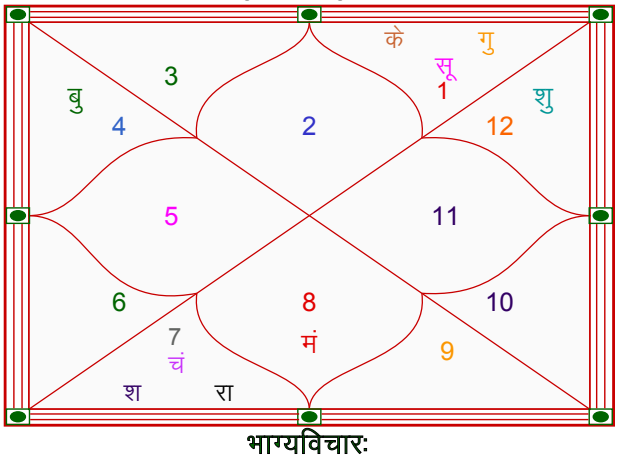

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

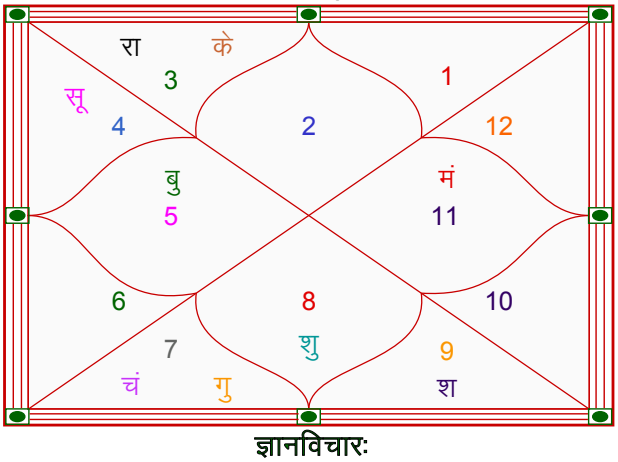

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

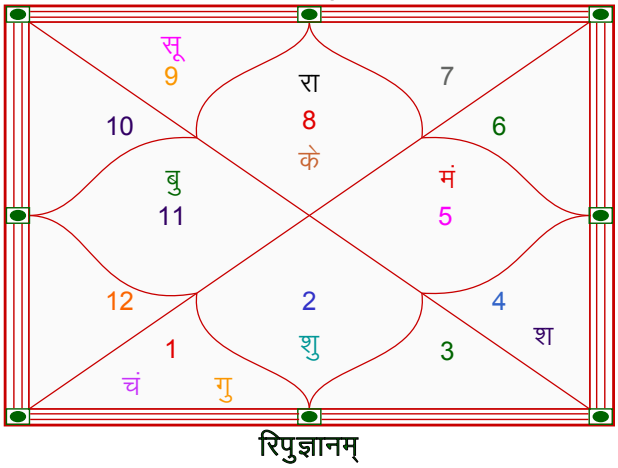

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

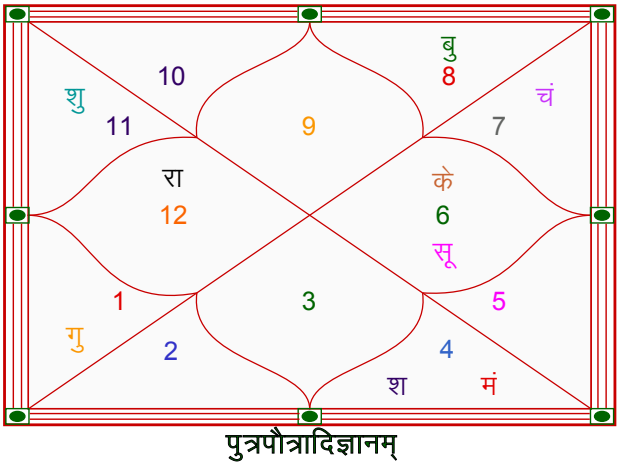

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

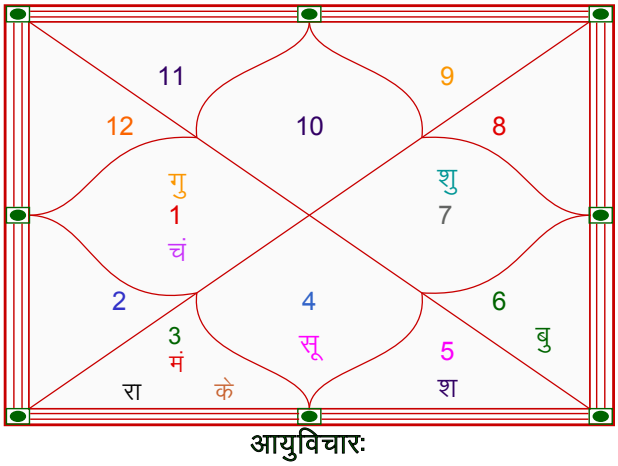

आयुविचारः

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

sample

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

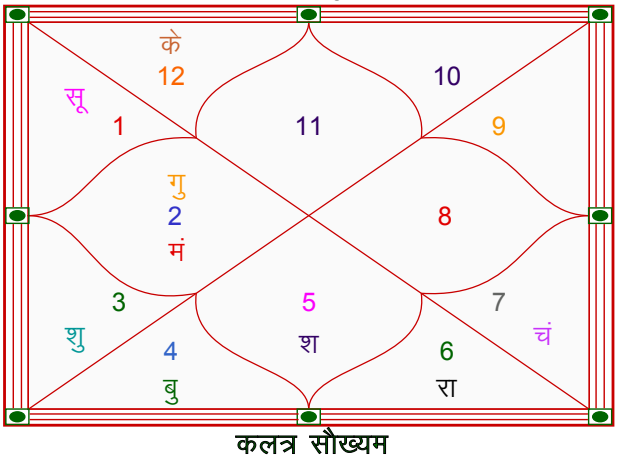

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

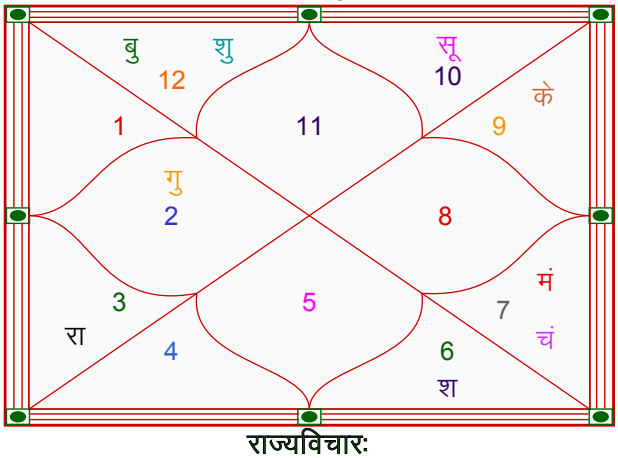

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

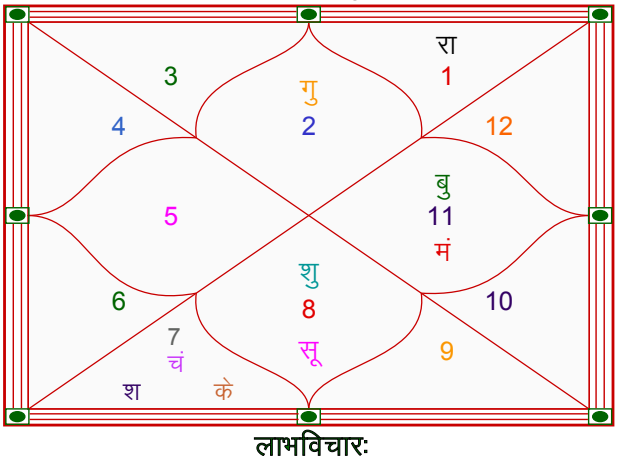

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

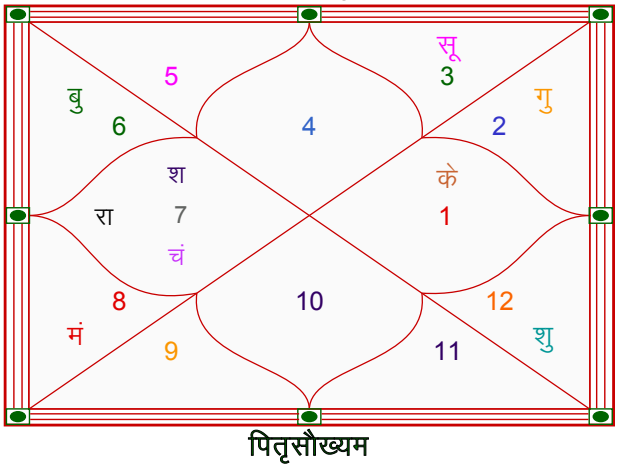

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

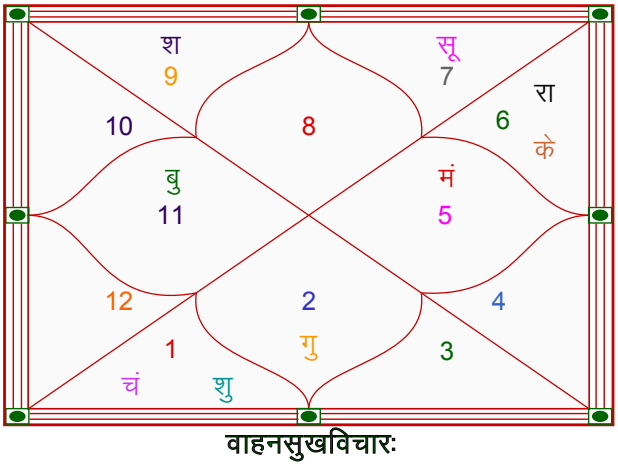

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

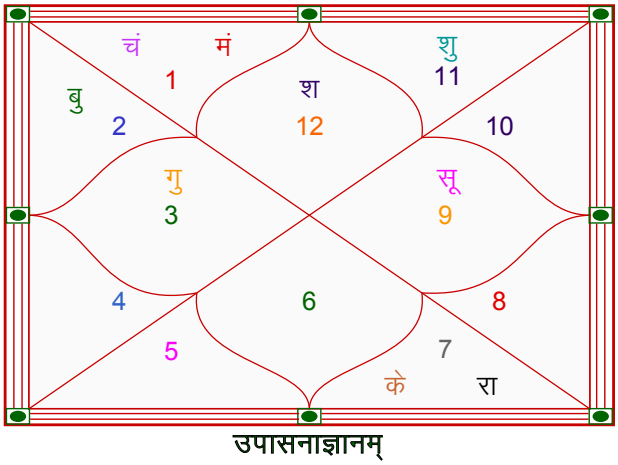

उपासनाज्ञानम्

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

sample

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

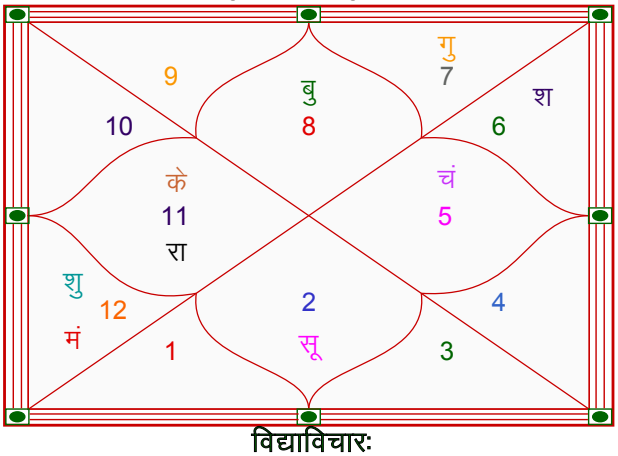

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

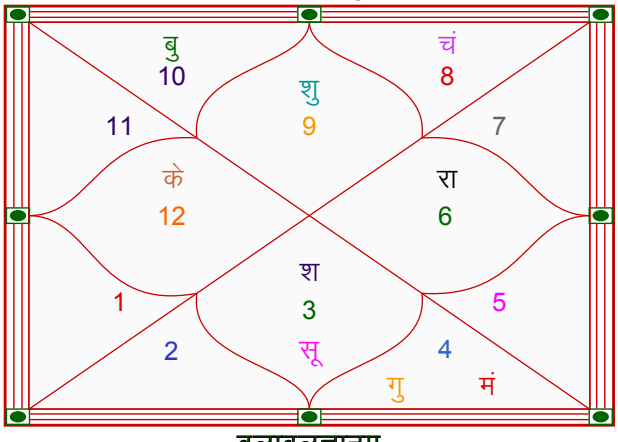

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

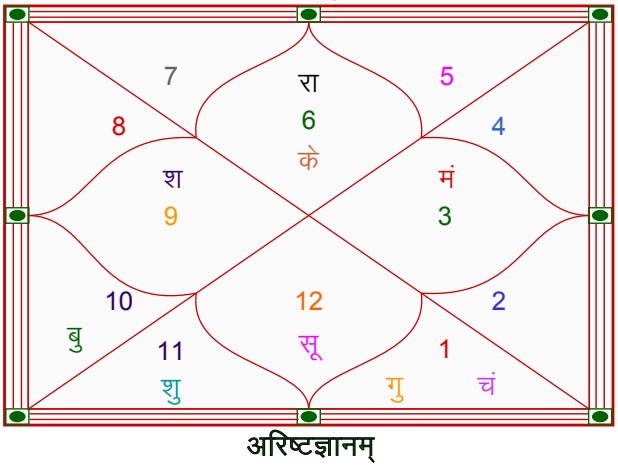

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

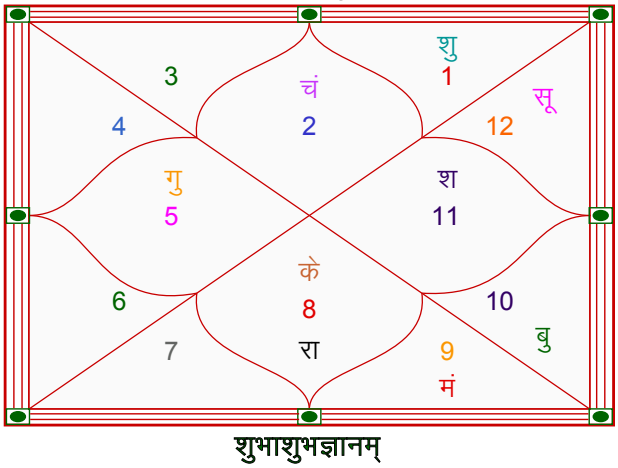

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

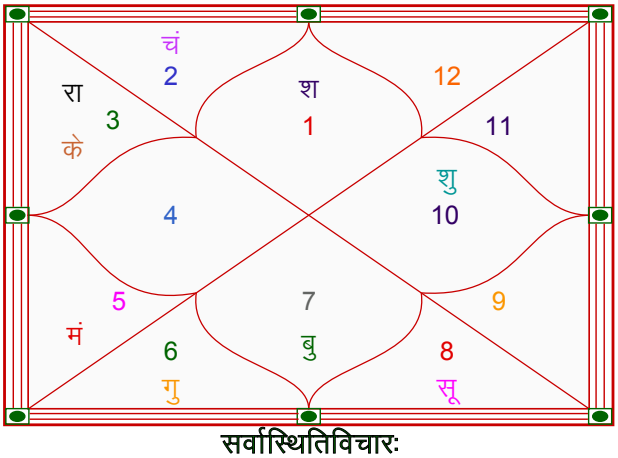

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

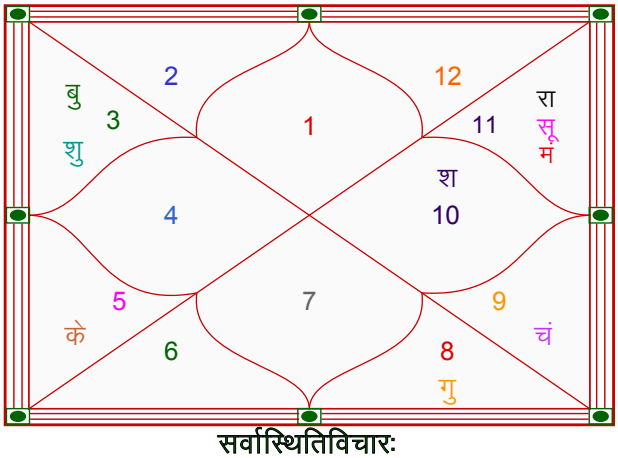

सर्वास्थितिविचारः

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

sample

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	वृष	मक	तुला	कुंभ	मक	मेष	धनु	मेष	कर्क	मक
होरा	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	वृष	वृष	तुला	तुला	कन्या	मेष	धनु	सिंह	कर्क	मक
चतुर्थांश	वृष	मेष	तुला	वृश्चि	कर्क	मेष	मीन	तुला	तुला	मेष
सप्तमांश	धनु	कन्या	तुला	कर्क	वृश्चि	मेष	कुंभ	कर्क	मीन	कन्या
नवमांश	कुंभ	मेष	तुला	वृष	कर्क	वृष	मिथु	सिंह	कन्या	मीन
दशमांश	कुंभ	मक	तुला	तुला	मीन	वृष	मीन	कन्या	मिथु	धनु
द्वादशांश	कर्क	मिथु	तुला	वृश्चि	कन्या	वृष	मीन	तुला	तुला	मेष
षोडशांश	वृश्चि	तुला	मेष	सिंह	कुंभ	वृष	मेष	धनु	कन्या	कन्या
विंशांश	मीन	धनु	मेष	मेष	वृष	मिथु	कुंभ	मीन	तुला	तुला
चतुर्विंशांश	वृश्चि	वृष	सिंह	मीन	वृश्चि	तुला	मीन	कन्या	कुंभ	कुंभ
सप्तविंशांश	धनु	मिथु	वृश्चि	कर्क	मक	कर्क	धनु	मिथु	कन्या	मीन
त्रिंशांश	कन्या	मीन	मेष	मिथु	मक	मेष	कुंभ	धनु	कन्या	कन्या
खवेदांश	वृष	मीन	वृष	धनु	मक	सिंह	मेष	कुंभ	वृश्चि	वृश्चि
अक्षवेदांश	मेष	वृश्चि	वृष	सिंह	तुला	कन्या	मक	मेष	मिथु	मिथु
षष्ट्यंश	मेष	कुंभ	धनु	कुंभ	मिथु	वृश्चि	मिथु	मक	कुंभ	सिंह

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 –––	1 –––	1 –––	2 भेदक
चन्द्र	0 –––	0 –––	0 –––	2 भेदक
मंगल	1 –––	1 –––	1 –––	3 कुसुम
बुध	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	3 कुसुम
गुरु	0 –––	0 –––	0 –––	1 –––
शुक्र	1 –––	1 –––	2 पारिजात	4 नागपुष्प
शनि	1 –––	1 –––	2 पारिजात	4 नागपुष्प
राहु	2 किंसुक	2 किंसुक	4 गोपुर	6 केरल
केतु	1 –––	1 –––	2 पारिजात	3 कुसुम

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	12.90	14.90	14.75	14.75	13.45	10.20	9.35	9.10	11.90
सप्तवर्ग	12.33	14.90	14.13	14.63	13.78	10.30	8.73	9.80	11.40
दशवर्ग	11.35	12.03	14.48	16.25	14.10	11.85	11.90	11.48	9.43
षोडशवर्ग	12.58	12.03	15.15	15.40	13.18	12.38	11.95	10.68	10.20

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

sample

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	–––	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	–––	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	–––	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	–––	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	–––	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	–––	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	–––	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	–––	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	–––

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	–––	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	–––	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	–––	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	–––	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
गुरु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	–––	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र
शुक्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	–––	शत्रु	शत्रु	मित्र
शनि	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	–––	मित्र	मित्र
राहु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	–––	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	–––

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	–––	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	–––	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	सम
मंगल	अतिमित्र	सम	–––	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	सम	मित्र	–––	मित्र	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	सम	अतिमित्र	सम	–––	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	–––	सम	सम	अतिमित्र
शनि	सम	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	शत्रु	सम	–––	अतिमित्र	सम
राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	सम	अतिमित्र	–––	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	–––

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	31	11	51	18	30	24	1
सप्तवर्गज बल	90	101	98	120	116	56	38
ओजयुग्मक बल	15	0	15	0	15	0	30
केन्द्र बल	15	15	60	15	15	30	15
द्रेष्काण बल	0	0	0	0	15	0	15
कुल स्थान बल	151	127	224	153	191	110	99
कुल दिग्बल	58	36	49	25	49	14	6
नतोन्नत बल	58	2	2	60	58	58	2
पक्ष बल	26	68	26	26	34	34	26
त्रिभाग बल	60	0	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	15	0	0	0
मास बल	0	0	30	0	0	0	0
वार बल	0	0	0	0	45	0	0
होरा बल	0	60	0	0	0	0	0
अयन बल	12	43	24	51	44	0	11
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	156	173	82	153	240	92	39
कुल चेष्टाबल	0	0	17	21	29	21	33
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	9	-18	7	-3	6	10	-5
कुल षट्बल	433	369	396	374	549	289	180
रूप षट्बल	7.2	6.2	6.6	6.2	9.2	4.8	3.0
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.4	1.0	1.3	0.9	1.4	0.9	0.6
संबंधित पद	1	4	3	5	2	6	7

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	19.44	18.95	29.63	19.34	29.16	22.65	6.05
कष्ट फल	37.27	35.93	19.31	40.60	30.83	37.29	40.07

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	289	374	374	369	433	289	396	549	549	180	180	396
भावदिग्बल	30	50	40	60	10	10	60	10	50	0	40	40
भावदृष्टि बल	35	33	33	81	57	54	32	23	52	3	10	39
कुल भाव बल	354	457	447	510	500	353	488	582	652	183	230	475
रूप भाव बल	5.9	7.6	7.5	8.5	8.3	5.9	8.1	9.7	10.9	3.0	3.8	7.9
संबंधित पद	9	7	8	3	4	10	5	2	1	12	11	6

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

sample

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	वृष	05:55:29	––	––	कृतिका	3	3
गुलिक	गु	मेष	02:38:01	––	––	अश्विनी	1	1
काल	का	मेष	28:17:26	––	––	कृतिका	1	3
मृत्यु	मृ	मिथु	09:10:37	––	––	आर्द्रा	1	6
यमघंटक	यम	कुंभ	06:41:35	––	––	शतभिषा	1	24
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मिथु	26:40:01	––	मूल	पुनर्वसु	3	7
धूम	धू	वृष	26:08:13	––	––	मृगशिरा	1	5
व्यतिपात	व्य	कुंभ	03:51:47	––	––	धनिष्ठा	4	23
परिवेश	परि	सिंह	03:51:47	––	––	मघा	2	10
इन्द्रचाप	इ	वृश्चि	26:08:13	––	––	ज्येष्ठा	3	18
उपकेतु	उप	धनु	12:48:13	––	––	मूल	4	19
मांदी	मांदी	मेष	21:36:04	––	––	भरणी	3	2

प्राणपद	:	वृश्चि	19:47:09	कारकाँश लग्न	:	वृष	06:45:04
भाव लग्न	:	सिंह	03:16:26	होरा लग्न	:	वृश्चि	00:37:23
घटी लग्न	:	मीन	29:32:57	वर्णद लग्न	:	धनु	06:32:52

उपग्रह कुंडली

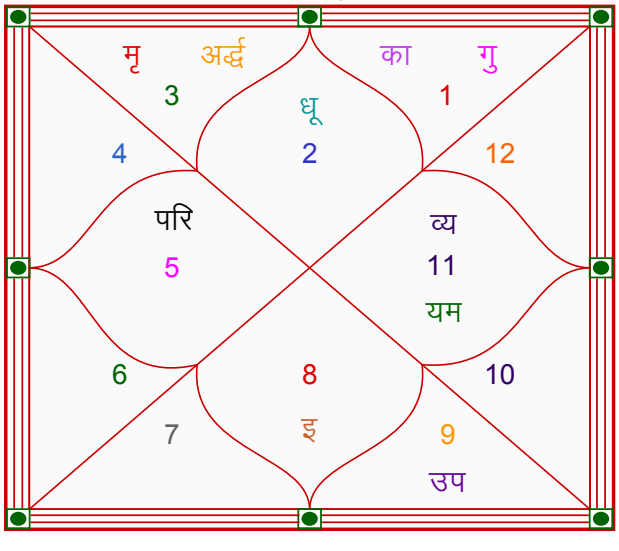

आरूढ़ कुंडली

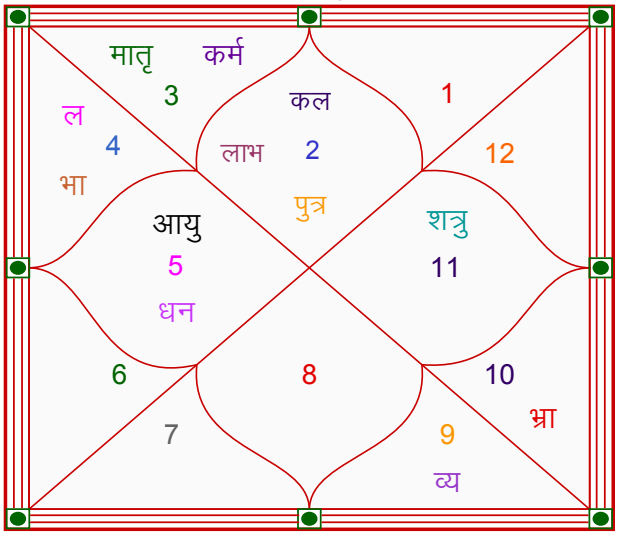

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

षन्नाडी चक्र

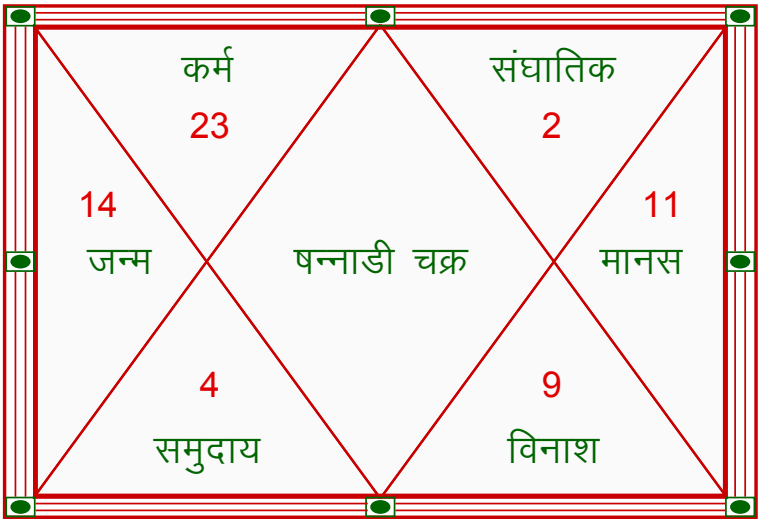

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
गुरु	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	4
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	4
लग्न	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	6
कुल	**2**	**5**	**4**	**3**	**4**	**2**	**4**	**5**	**4**	**5**	**5**	**5**	**48**

चंद्र का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
गुरु	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
मंगल	0	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	6
शुक्र	1	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	7
बुध	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	4
कुल	**6**	**4**	**2**	**2**	**4**	**6**	**5**	**2**	**5**	**6**	**5**	**2**	**49**

मंगल का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	7
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	5
शुक्र	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	4
बुध	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	4
चंद्र	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	3
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	5
कुल	**4**	**6**	**1**	**5**	**2**	**3**	**2**	**2**	**4**	**5**	**3**	**2**	**39**

बुध का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	6
लग्न	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	7
कुल	**4**	**5**	**6**	**2**	**6**	**3**	**3**	**4**	**4**	**5**	**6**	**6**	**54**

गुरू का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
सूर्य	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	9
शुक्र	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	6
बुध	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	5
लग्न	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
कुल	**5**	**5**	**5**	**2**	**6**	**6**	**5**	**6**	**1**	**5**	**6**	**4**	**56**

शुक्र का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	7
गुरु	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	5
मंगल	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चंद्र	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	9
लग्न	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	8
कुल	**7**	**6**	**4**	**3**	**2**	**4**	**4**	**4**	**6**	**4**	**3**	**5**	**52**

शनि का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	6
सूर्य	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
शुक्र	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	6
चंद्र	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	3
लग्न	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
कुल	**2**	**2**	**3**	**3**	**6**	**3**	**4**	**4**	**3**	**2**	**4**	**3**	**39**

लग्न का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	6
गुरु	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	9
मंगल	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	5
सूर्य	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	7
बुध	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	**1**	**3**	**6**	**4**	**3**	**4**	**3**	**5**	**4**	**6**	**4**	**6**	**49**

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	2	3	3	6	3	4	4	3	2	4	3	39
गुरु	5	5	5	2	6	6	5	6	1	5	6	4	56
मंगल	1	5	2	3	2	2	4	5	3	2	4	6	39
सूर्य	3	4	2	4	5	4	5	5	5	2	5	4	48
शुक्र	2	4	4	4	6	4	3	5	7	6	4	3	52
बुध	2	6	3	3	4	4	5	6	6	4	5	6	54
चंद्र	5	2	5	6	5	2	6	4	2	2	4	6	49
बिन्दु	20	28	24	25	34	25	32	35	27	23	32	32	337
रेखा	36	28	32	31	22	31	24	21	29	33	24	24	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	0	4	1	1	1	1	0	1	0	9
गुरु	4	0	0	0	5	1	0	4	0	0	1	2	17
मंगल	0	3	0	0	1	0	2	2	2	0	2	3	15
सूर्य	0	2	0	0	2	2	3	1	2	0	3	0	15
शुक्र	0	0	1	1	4	0	0	2	5	2	1	0	16
बुध	0	2	0	0	2	0	2	3	4	0	2	3	18
चंद्र	3	0	1	2	3	0	2	0	0	0	0	2	13
रेखा	7	7	2	3	21	4	10	13	14	2	10	10	103

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	0	4	1	1	1	1	0	1	0	9
गुरु	4	0	0	0	5	1	0	0	0	0	1	2	13
मंगल	0	1	0	0	1	0	2	2	2	0	2	1	11
सूर्य	0	0	0	0	2	2	3	1	2	0	3	0	13
शुक्र	0	0	1	1	4	0	0	2	5	2	1	0	16
बुध	0	0	0	0	2	0	2	3	4	0	2	0	13
चंद्र	3	0	1	2	3	0	2	0	0	0	0	2	13
रेखा	7	1	2	3	21	4	10	9	14	2	10	5	88

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	110	105	102	116	118	134	80
ग्रह पिंड	53	55	40	54	68	63	20
शोध्य पिंड	163	160	142	170	186	197	100

अष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

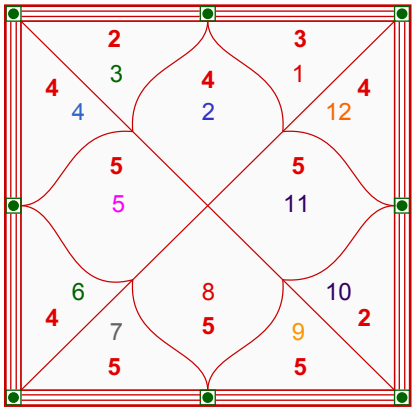

सर्वाष्टकवर्ग

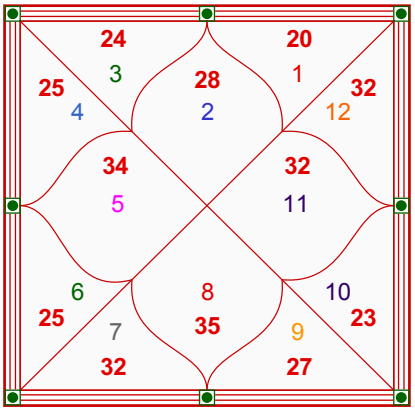

चंद्र का अष्टकवर्ग

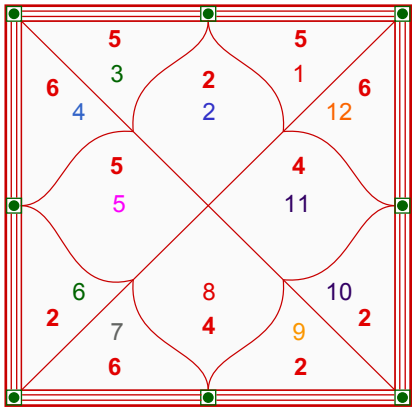

मंगल का अष्टकवर्ग

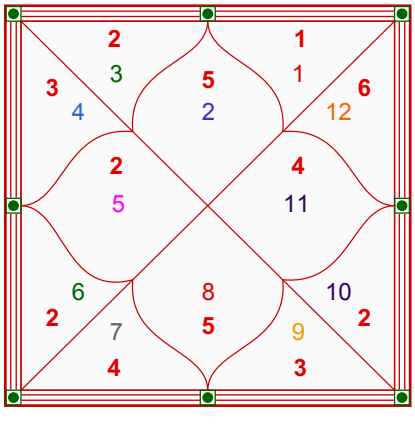

बुध का अष्टकवर्ग

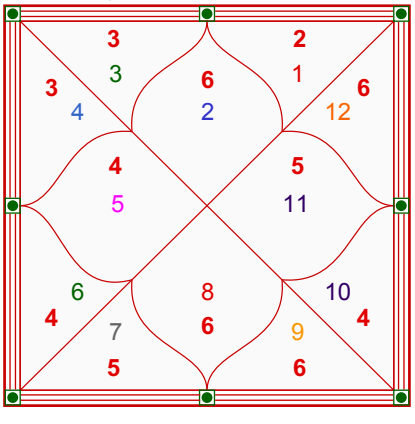

गुरू का अष्टकवर्ग

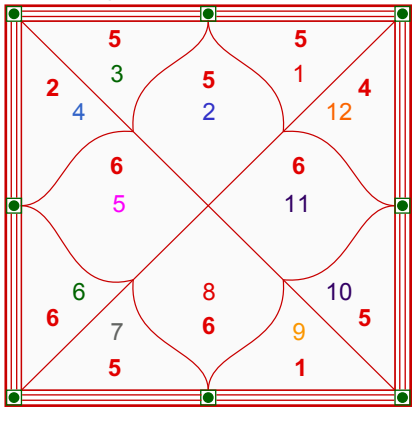

शुक्र का अष्टकवर्ग

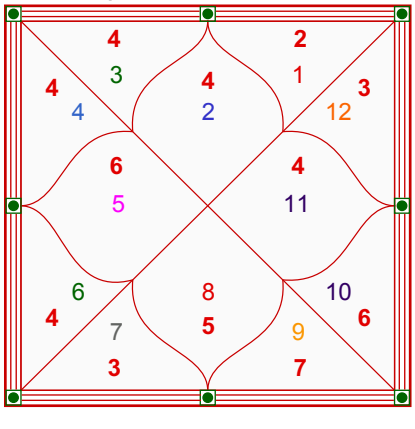

शनि का अष्टकवर्ग

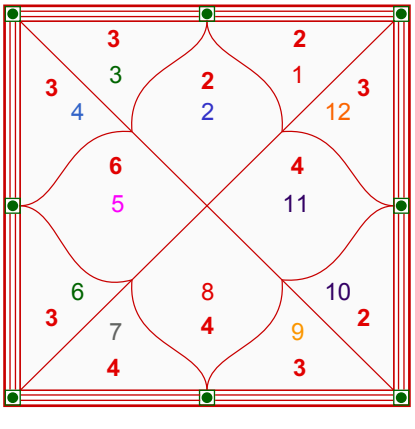

लग्न का अष्टकवर्ग

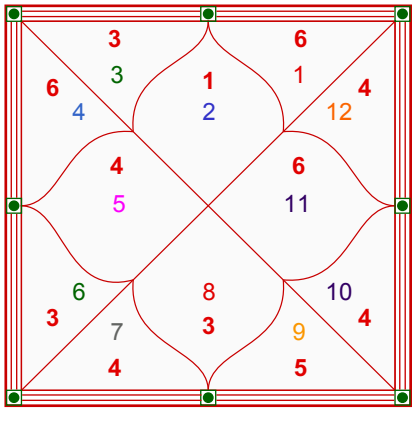

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 2 वर्ष 10 मास 14 दिन

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
27/01/2000		12/12/2002		11/12/2020		11/12/2036		12/12/2055	
12/12/2002		11/12/2020		11/12/2036		12/12/2055		11/12/2072	
	00/00/0000	राहु	24/08/2005	गुरु	29/01/2023	शनि	15/12/2039	बुध	10/05/2058
	00/00/0000	गुरु	18/01/2008	शनि	12/08/2025	बुध	24/08/2042	केतु	07/05/2059
	00/00/0000	शनि	23/11/2010	बुध	18/11/2027	केतु	03/10/2043	शुक्र	07/03/2062
	27/01/2000	बुध	12/06/2013	केतु	24/10/2028	शुक्र	03/12/2046	सूर्य	11/01/2063
बुध	09/06/2000	केतु	30/06/2014	शुक्र	25/06/2031	सूर्य	15/11/2047	चंद्र	12/06/2064
केतु	05/11/2000	शुक्र	30/06/2017	सूर्य	12/04/2032	चंद्र	15/06/2049	मंगल	09/06/2065
शुक्र	05/01/2002	सूर्य	25/05/2018	चंद्र	12/08/2033	मंगल	25/07/2050	राहु	27/12/2067
सूर्य	13/05/2002	चंद्र	24/11/2019	मंगल	19/07/2034	राहु	31/05/2053	गुरु	03/04/2070
चंद्र	12/12/2002	मंगल	11/12/2020	राहु	11/12/2036	गुरु	12/12/2055	शनि	11/12/2072

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
11/12/2072		12/12/2079		12/12/2099		12/12/2105		13/12/2115	
12/12/2079		12/12/2099		12/12/2105		13/12/2115		00/00/0000	
केतु	09/05/2073	शुक्र	12/04/2083	सूर्य	01/04/2100	चंद्र	13/10/2106	मंगल	10/05/2116
शुक्र	09/07/2074	सूर्य	12/04/2084	चंद्र	30/09/2100	मंगल	14/05/2107	राहु	29/05/2117
सूर्य	14/11/2074	चंद्र	11/12/2085	मंगल	05/02/2101	राहु	12/11/2108	गुरु	05/05/2118
चंद्र	15/06/2075	मंगल	11/02/2087	राहु	31/12/2101	गुरु	14/03/2110	शनि	13/06/2119
मंगल	12/11/2075	राहु	10/02/2090	गुरु	19/10/2102	शनि	13/10/2111	बुध	28/01/2120
राहु	29/11/2076	गुरु	11/10/2092	शनि	01/10/2103	बुध	14/03/2113		00/00/0000
गुरु	05/11/2077	शनि	12/12/2095	बुध	06/08/2104	केतु	13/10/2113		00/00/0000
शनि	15/12/2078	बुध	12/10/2098	केतु	12/12/2104	शुक्र	13/06/2115		00/00/0000
बुध	12/12/2079	केतु	12/12/2099	शुक्र	12/12/2105	सूर्य	13/12/2115		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 2 वर्ष 10 मा 23 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
27/01/2000		09/06/2000		05/11/2000		05/01/2002		13/05/2002	
09/06/2000		05/11/2000		05/01/2002		13/05/2002		12/12/2002	
	00/00/0000	केतु	17/06/2000	शुक्र	15/01/2001	सूर्य	11/01/2002	चंद्र	30/05/2002
	00/00/0000	शुक्र	12/07/2000	सूर्य	05/02/2001	चंद्र	22/01/2002	मंगल	12/06/2002
	00/00/0000	सूर्य	20/07/2000	चंद्र	13/03/2001	मंगल	29/01/2002	राहु	14/07/2002
	00/00/0000	चंद्र	01/08/2000	मंगल	06/04/2001	राहु	18/02/2002	गुरु	11/08/2002
	00/00/0000	मंगल	10/08/2000	राहु	09/06/2001	गुरु	07/03/2002	शनि	14/09/2002
	27/01/2000	राहु	01/09/2000	गुरु	05/08/2001	शनि	27/03/2002	बुध	14/10/2002
राहु	24/02/2000	गुरु	21/09/2000	शनि	12/10/2001	बुध	14/04/2002	केतु	27/10/2002
गुरु	12/04/2000	शनि	15/10/2000	बुध	11/12/2001	केतु	21/04/2002	शुक्र	01/12/2002
शनि	09/06/2000	बुध	05/11/2000	केतु	05/01/2002	शुक्र	13/05/2002	सूर्य	12/12/2002

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
12/12/2002		24/08/2005		18/01/2008		23/11/2010		12/06/2013	
24/08/2005		18/01/2008		23/11/2010		12/06/2013		30/06/2014	
राहु	09/05/2003	गुरु	19/12/2005	शनि	30/06/2008	बुध	04/04/2011	केतु	04/07/2013
गुरु	17/09/2003	शनि	07/05/2006	बुध	25/11/2008	केतु	29/05/2011	शुक्र	06/09/2013
शनि	20/02/2004	बुध	08/09/2006	केतु	25/01/2009	शुक्र	31/10/2011	सूर्य	25/09/2013
बुध	09/07/2004	केतु	29/10/2006	शुक्र	17/07/2009	सूर्य	17/12/2011	चंद्र	27/10/2013
केतु	05/09/2004	शुक्र	24/03/2007	सूर्य	07/09/2009	चंद्र	03/03/2012	मंगल	19/11/2013
शुक्र	16/02/2005	सूर्य	07/05/2007	चंद्र	03/12/2009	मंगल	26/04/2012	राहु	15/01/2014
सूर्य	06/04/2005	चंद्र	19/07/2007	मंगल	02/02/2010	राहु	13/09/2012	गुरु	07/03/2014
चंद्र	27/06/2005	मंगल	08/09/2007	राहु	08/07/2010	गुरु	15/01/2013	शनि	07/05/2014
मंगल	24/08/2005	राहु	18/01/2008	गुरु	23/11/2010	शनि	12/06/2013	बुध	30/06/2014

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
30/06/2014		30/06/2017		25/05/2018		24/11/2019		11/12/2020	
30/06/2017		25/05/2018		24/11/2019		11/12/2020		29/01/2023	
शुक्र	30/12/2014	सूर्य	17/07/2017	चंद्र	09/07/2018	मंगल	16/12/2019	गुरु	25/03/2021
सूर्य	23/02/2015	चंद्र	13/08/2017	मंगल	10/08/2018	राहु	12/02/2020	शनि	26/07/2021
चंद्र	25/05/2015	मंगल	01/09/2017	राहु	01/11/2018	गुरु	03/04/2020	बुध	14/11/2021
मंगल	28/07/2015	राहु	20/10/2017	गुरु	13/01/2019	शनि	02/06/2020	केतु	29/12/2021
राहु	08/01/2016	गुरु	03/12/2017	शनि	09/04/2019	बुध	27/07/2020	शुक्र	08/05/2022
गुरु	02/06/2016	शनि	24/01/2018	बुध	26/06/2019	केतु	18/08/2020	सूर्य	16/06/2022
शनि	23/11/2016	बुध	12/03/2018	केतु	28/07/2019	शुक्र	21/10/2020	चंद्र	20/08/2022
बुध	27/04/2017	केतु	31/03/2018	शुक्र	27/10/2019	सूर्य	09/11/2020	मंगल	05/10/2022
केतु	30/06/2017	शुक्र	25/05/2018	सूर्य	24/11/2019	चंद्र	11/12/2020	राहु	29/01/2023

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शनि	
29/01/2023	
12/08/2025	
शनि	25/06/2023
बुध	03/11/2023
केतु	27/12/2023
शुक्र	29/05/2024
सूर्य	14/07/2024
चंद्र	30/09/2024
मंगल	23/11/2024
राहु	10/04/2025
गुरु	12/08/2025

गुरु - बुध	
12/08/2025	
18/11/2027	
बुध	07/12/2025
केतु	24/01/2026
शुक्र	11/06/2026
सूर्य	23/07/2026
चंद्र	30/09/2026
मंगल	17/11/2026
राहु	21/03/2027
गुरु	10/07/2027
शनि	18/11/2027

गुरु - केतु	
18/11/2027	
24/10/2028	
केतु	08/12/2027
शुक्र	02/02/2028
सूर्य	19/02/2028
चंद्र	19/03/2028
मंगल	08/04/2028
राहु	29/05/2028
गुरु	13/07/2028
शनि	05/09/2028
बुध	24/10/2028

गुरु - शुक्र	
24/10/2028	
25/06/2031	
शुक्र	04/04/2029
सूर्य	23/05/2029
चंद्र	12/08/2029
मंगल	08/10/2029
राहु	03/03/2030
गुरु	11/07/2030
शनि	12/12/2030
बुध	29/04/2031
केतु	25/06/2031

गुरु - सूर्य	
25/06/2031	
12/04/2032	
सूर्य	09/07/2031
चंद्र	02/08/2031
मंगल	20/08/2031
राहु	02/10/2031
गुरु	10/11/2031
शनि	27/12/2031
बुध	06/02/2032
केतु	23/02/2032
शुक्र	12/04/2032

गुरु - चंद्र	
12/04/2032	
12/08/2033	
चंद्र	22/05/2032
मंगल	20/06/2032
राहु	01/09/2032
गुरु	05/11/2032
शनि	21/01/2033
बुध	31/03/2033
केतु	28/04/2033
शुक्र	18/07/2033
सूर्य	12/08/2033

गुरु - मंगल	
12/08/2033	
19/07/2034	
मंगल	01/09/2033
राहु	22/10/2033
गुरु	06/12/2033
शनि	29/01/2034
बुध	18/03/2034
केतु	07/04/2034
शुक्र	03/06/2034
सूर्य	20/06/2034
चंद्र	19/07/2034

गुरु - राहु	
19/07/2034	
11/12/2036	
राहु	27/11/2034
गुरु	24/03/2035
शनि	10/08/2035
बुध	12/12/2035
केतु	01/02/2036
शुक्र	26/06/2036
सूर्य	09/08/2036
चंद्र	21/10/2036
मंगल	11/12/2036

शनि - शनि	
11/12/2036	
15/12/2039	
शनि	03/06/2037
बुध	06/11/2037
केतु	09/01/2038
शुक्र	11/07/2038
सूर्य	04/09/2038
चंद्र	05/12/2038
मंगल	07/02/2039
राहु	22/07/2039
गुरु	15/12/2039

शनि - बुध	
15/12/2039	
24/08/2042	
बुध	02/05/2040
केतु	29/06/2040
शुक्र	10/12/2040
सूर्य	28/01/2041
चंद्र	20/04/2041
मंगल	16/06/2041
राहु	10/11/2041
गुरु	21/03/2042
शनि	24/08/2042

शनि - केतु	
24/08/2042	
03/10/2043	
केतु	17/09/2042
शुक्र	23/11/2042
सूर्य	13/12/2042
चंद्र	16/01/2043
मंगल	09/02/2043
राहु	11/04/2043
गुरु	04/06/2043
शनि	07/08/2043
बुध	03/10/2043

शनि - शुक्र	
03/10/2043	
03/12/2046	
शुक्र	13/04/2044
सूर्य	10/06/2044
चंद्र	14/09/2044
मंगल	20/11/2044
राहु	13/05/2045
गुरु	14/10/2045
शनि	15/04/2046
बुध	26/09/2046
केतु	03/12/2046

शनि - सूर्य	
03/12/2046	
15/11/2047	
सूर्य	20/12/2046
चंद्र	18/01/2047
मंगल	07/02/2047
राहु	31/03/2047
गुरु	16/05/2047
शनि	10/07/2047
बुध	29/08/2047
केतु	18/09/2047
शुक्र	15/11/2047

शनि - चंद्र	
15/11/2047	
15/06/2049	
चंद्र	02/01/2048
मंगल	05/02/2048
राहु	01/05/2048
गुरु	17/07/2048
शनि	17/10/2048
बुध	07/01/2049
केतु	10/02/2049
शुक्र	17/05/2049
सूर्य	15/06/2049

शनि - मंगल	
15/06/2049	
25/07/2050	
मंगल	09/07/2049
राहु	07/09/2049
गुरु	31/10/2049
शनि	03/01/2050
बुध	02/03/2050
केतु	25/03/2050
शुक्र	01/06/2050
सूर्य	21/06/2050
चंद्र	25/07/2050

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - राहु	
25/07/2050	
31/05/2053	
राहु	28/12/2050
गुरु	16/05/2051
शनि	27/10/2051
बुध	23/03/2052
केतु	23/05/2052
शुक्र	12/11/2052
सूर्य	03/01/2053
चंद्र	31/03/2053
मंगल	31/05/2053

शनि - गुरु	
31/05/2053	
12/12/2055	
गुरु	01/10/2053
शनि	25/02/2054
बुध	06/07/2054
केतु	29/08/2054
शुक्र	30/01/2055
सूर्य	17/03/2055
चंद्र	02/06/2055
मंगल	26/07/2055
राहु	12/12/2055

बुध - बुध	
12/12/2055	
10/05/2058	
बुध	15/04/2056
केतु	05/06/2056
शुक्र	30/10/2056
सूर्य	12/12/2056
चंद्र	24/02/2057
मंगल	16/04/2057
राहु	26/08/2057
गुरु	21/12/2057
शनि	10/05/2058

बुध - केतु	
10/05/2058	
07/05/2059	
केतु	31/05/2058
शुक्र	30/07/2058
सूर्य	17/08/2058
चंद्र	16/09/2058
मंगल	08/10/2058
राहु	01/12/2058
गुरु	18/01/2059
शनि	17/03/2059
बुध	07/05/2059

बुध - शुक्र	
07/05/2059	
07/03/2062	
शुक्र	26/10/2059
सूर्य	17/12/2059
चंद्र	12/03/2060
मंगल	12/05/2060
राहु	14/10/2060
गुरु	01/03/2061
शनि	12/08/2061
बुध	05/01/2062
केतु	07/03/2062

बुध - सूर्य	
07/03/2062	
11/01/2063	
सूर्य	22/03/2062
चंद्र	17/04/2062
मंगल	05/05/2062
राहु	21/06/2062
गुरु	01/08/2062
शनि	19/09/2062
बुध	02/11/2062
केतु	20/11/2062
शुक्र	11/01/2063

बुध - चंद्र	
11/01/2063	
12/06/2064	
चंद्र	23/02/2063
मंगल	25/03/2063
राहु	11/06/2063
गुरु	19/08/2063
शनि	09/11/2063
बुध	21/01/2064
केतु	20/02/2064
शुक्र	17/05/2064
सूर्य	12/06/2064

बुध - मंगल	
12/06/2064	
09/06/2065	
मंगल	03/07/2064
राहु	26/08/2064
गुरु	13/10/2064
शनि	10/12/2064
बुध	30/01/2065
केतु	20/02/2065
शुक्र	22/04/2065
सूर्य	10/05/2065
चंद्र	09/06/2065

बुध - राहु	
09/06/2065	
27/12/2067	
राहु	27/10/2065
गुरु	28/02/2066
शनि	25/07/2066
बुध	04/12/2066
केतु	27/01/2067
शुक्र	02/07/2067
सूर्य	17/08/2067
चंद्र	03/11/2067
मंगल	27/12/2067

बुध - गुरु	
27/12/2067	
03/04/2070	
गुरु	16/04/2068
शनि	25/08/2068
बुध	20/12/2068
केतु	06/02/2069
शुक्र	24/06/2069
सूर्य	05/08/2069
चंद्र	13/10/2069
मंगल	30/11/2069
राहु	03/04/2070

बुध - शनि	
03/04/2070	
11/12/2072	
शनि	06/09/2070
बुध	23/01/2071
केतु	21/03/2071
शुक्र	01/09/2071
सूर्य	20/10/2071
चंद्र	10/01/2072
मंगल	08/03/2072
राहु	02/08/2072
गुरु	11/12/2072

केतु - केतु	
11/12/2072	
09/05/2073	
केतु	20/12/2072
शुक्र	14/01/2073
सूर्य	21/01/2073
चंद्र	03/02/2073
मंगल	11/02/2073
राहु	06/03/2073
गुरु	26/03/2073
शनि	18/04/2073
बुध	09/05/2073

केतु - शुक्र	
09/05/2073	
09/07/2074	
शुक्र	19/07/2073
सूर्य	10/08/2073
चंद्र	14/09/2073
मंगल	09/10/2073
राहु	12/12/2073
गुरु	07/02/2074
शनि	15/04/2074
बुध	15/06/2074
केतु	09/07/2074

केतु - सूर्य	
09/07/2074	
14/11/2074	
सूर्य	16/07/2074
चंद्र	27/07/2074
मंगल	03/08/2074
राहु	22/08/2074
गुरु	08/09/2074
शनि	28/09/2074
बुध	17/10/2074
केतु	24/10/2074
शुक्र	14/11/2074

केतु - चंद्र	
14/11/2074	
15/06/2075	
चंद्र	02/12/2074
मंगल	15/12/2074
राहु	15/01/2075
गुरु	13/02/2075
शनि	19/03/2075
बुध	18/04/2075
केतु	30/04/2075
शुक्र	05/06/2075
सूर्य	15/06/2075

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - मंगल	
15/06/2075	
12/11/2075	
मंगल	24/06/2075
राहु	16/07/2075
गुरु	05/08/2075
शनि	29/08/2075
बुध	19/09/2075
केतु	28/09/2075
शुक्र	23/10/2075
सूर्य	30/10/2075
चंद्र	12/11/2075

केतु - राहु	
12/11/2075	
29/11/2076	
राहु	08/01/2076
गुरु	28/02/2076
शनि	29/04/2076
बुध	22/06/2076
केतु	15/07/2076
शुक्र	17/09/2076
सूर्य	06/10/2076
चंद्र	07/11/2076
मंगल	29/11/2076

केतु - गुरु	
29/11/2076	
05/11/2077	
गुरु	14/01/2077
शनि	08/03/2077
बुध	26/04/2077
केतु	16/05/2077
शुक्र	11/07/2077
सूर्य	29/07/2077
चंद्र	26/08/2077
मंगल	15/09/2077
राहु	05/11/2077

केतु - शनि	
05/11/2077	
15/12/2078	
शनि	08/01/2078
बुध	06/03/2078
केतु	30/03/2078
शुक्र	05/06/2078
सूर्य	26/06/2078
चंद्र	29/07/2078
मंगल	22/08/2078
राहु	22/10/2078
गुरु	15/12/2078

केतु - बुध	
15/12/2078	
12/12/2079	
बुध	04/02/2079
केतु	25/02/2079
शुक्र	27/04/2079
सूर्य	15/05/2079
चंद्र	14/06/2079
मंगल	05/07/2079
राहु	28/08/2079
गुरु	16/10/2079
शनि	12/12/2079

शुक्र - शुक्र	
12/12/2079	
12/04/2083	
शुक्र	02/07/2080
सूर्य	01/09/2080
चंद्र	11/12/2080
मंगल	20/02/2081
राहु	22/08/2081
गुरु	31/01/2082
शनि	12/08/2082
बुध	31/01/2083
केतु	12/04/2083

शुक्र - सूर्य	
12/04/2083	
12/04/2084	
सूर्य	01/05/2083
चंद्र	31/05/2083
मंगल	21/06/2083
राहु	15/08/2083
गुरु	03/10/2083
शनि	30/11/2083
बुध	21/01/2084
केतु	11/02/2084
शुक्र	12/04/2084

शुक्र - चंद्र	
12/04/2084	
11/12/2085	
चंद्र	01/06/2084
मंगल	07/07/2084
राहु	06/10/2084
गुरु	26/12/2084
शनि	02/04/2085
बुध	27/06/2085
केतु	02/08/2085
शुक्र	11/11/2085
सूर्य	11/12/2085

शुक्र - मंगल	
11/12/2085	
11/02/2087	
मंगल	05/01/2086
राहु	10/03/2086
गुरु	06/05/2086
शनि	13/07/2086
बुध	11/09/2086
केतु	06/10/2086
शुक्र	16/12/2086
सूर्य	06/01/2087
चंद्र	11/02/2087

शुक्र - राहु	
11/02/2087	
10/02/2090	
राहु	25/07/2087
गुरु	18/12/2087
शनि	09/06/2088
बुध	11/11/2088
केतु	14/01/2089
शुक्र	15/07/2089
सूर्य	08/09/2089
चंद्र	08/12/2089
मंगल	10/02/2090

शुक्र - गुरु	
10/02/2090	
11/10/2092	
गुरु	20/06/2090
शनि	21/11/2090
बुध	08/04/2091
केतु	04/06/2091
शुक्र	14/11/2091
सूर्य	01/01/2092
चंद्र	22/03/2092
मंगल	18/05/2092
राहु	11/10/2092

शुक्र - शनि	
11/10/2092	
12/12/2095	
शनि	12/04/2093
बुध	23/09/2093
केतु	30/11/2093
शुक्र	11/06/2094
सूर्य	07/08/2094
चंद्र	12/11/2094
मंगल	18/01/2095
राहु	11/07/2095
गुरु	12/12/2095

शुक्र - बुध	
12/12/2095	
12/10/2098	
बुध	07/05/2096
केतु	06/07/2096
शुक्र	25/12/2096
सूर्य	15/02/2097
चंद्र	12/05/2097
मंगल	12/07/2097
राहु	14/12/2097
गुरु	01/05/2098
शनि	12/10/2098

शुक्र - केतु	
12/10/2098	
12/12/2099	
केतु	06/11/2098
शुक्र	16/01/2099
सूर्य	06/02/2099
चंद्र	14/03/2099
मंगल	07/04/2099
राहु	10/06/2099
गुरु	06/08/2099
शनि	13/10/2099
बुध	12/12/2099

सूर्य - सूर्य	
12/12/2099	
01/04/2100	
सूर्य	17/12/2099
चंद्र	27/12/2099
मंगल	02/01/2100
राहु	18/01/2100
गुरु	02/02/2100
शनि	19/02/2100
बुध	07/03/2100
केतु	13/03/2100
शुक्र	01/04/2100

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - चंद्र	
01/04/2100	
30/09/2100	
चंद्र	16/04/2100
मंगल	26/04/2100
राहु	24/05/2100
गुरु	17/06/2100
शनि	16/07/2100
बुध	11/08/2100
केतु	22/08/2100
शुक्र	21/09/2100
सूर्य	30/09/2100

सूर्य - मंगल	
30/09/2100	
05/02/2101	
मंगल	08/10/2100
राहु	27/10/2100
गुरु	13/11/2100
शनि	03/12/2100
बुध	21/12/2100
केतु	29/12/2100
शुक्र	19/01/2101
सूर्य	25/01/2101
चंद्र	05/02/2101

सूर्य - राहु	
05/02/2101	
31/12/2101	
राहु	26/03/2101
गुरु	09/05/2101
शनि	30/06/2101
बुध	16/08/2101
केतु	04/09/2101
शुक्र	29/10/2101
सूर्य	14/11/2101
चंद्र	12/12/2101
मंगल	31/12/2101

सूर्य - गुरु	
31/12/2101	
19/10/2102	
गुरु	08/02/2102
शनि	26/03/2102
बुध	06/05/2102
केतु	23/05/2102
शुक्र	11/07/2102
सूर्य	26/07/2102
चंद्र	19/08/2102
मंगल	05/09/2102
राहु	19/10/2102

सूर्य - शनि	
19/10/2102	
01/10/2103	
शनि	13/12/2102
बुध	31/01/2103
केतु	20/02/2103
शुक्र	19/04/2103
सूर्य	06/05/2103
चंद्र	04/06/2103
मंगल	25/06/2103
राहु	16/08/2103
गुरु	01/10/2103

सूर्य - बुध	
01/10/2103	
06/08/2104	
बुध	14/11/2103
केतु	02/12/2103
शुक्र	23/01/2104
सूर्य	07/02/2104
चंद्र	04/03/2104
मंगल	22/03/2104
राहु	08/05/2104
गुरु	18/06/2104
शनि	06/08/2104

सूर्य - केतु	
06/08/2104	
12/12/2104	
केतु	14/08/2104
शुक्र	04/09/2104
सूर्य	11/09/2104
चंद्र	21/09/2104
मंगल	29/09/2104
राहु	18/10/2104
गुरु	04/11/2104
शनि	24/11/2104
बुध	12/12/2104

सूर्य - शुक्र	
12/12/2104	
12/12/2105	
शुक्र	11/02/2105
सूर्य	01/03/2105
चंद्र	01/04/2105
मंगल	22/04/2105
राहु	16/06/2105
गुरु	04/08/2105
शनि	30/09/2105
बुध	21/11/2105
केतु	12/12/2105

चंद्र - चंद्र	
12/12/2105	
13/10/2106	
चंद्र	07/01/2106
मंगल	25/01/2106
राहु	11/03/2106
गुरु	21/04/2106
शनि	08/06/2106
बुध	21/07/2106
केतु	08/08/2106
शुक्र	28/09/2106
सूर्य	13/10/2106

चंद्र - मंगल	
13/10/2106	
14/05/2107	
मंगल	25/10/2106
राहु	26/11/2106
गुरु	25/12/2106
शनि	27/01/2107
बुध	27/02/2107
केतु	11/03/2107
शुक्र	16/04/2107
सूर्य	26/04/2107
चंद्र	14/05/2107

चंद्र - राहु	
14/05/2107	
12/11/2108	
राहु	04/08/2107
गुरु	16/10/2107
शनि	11/01/2108
बुध	29/03/2108
केतु	29/04/2108
शुक्र	30/07/2108
सूर्य	26/08/2108
चंद्र	11/10/2108
मंगल	12/11/2108

चंद्र - गुरु	
12/11/2108	
14/03/2110	
गुरु	16/01/2109
शनि	03/04/2109
बुध	11/06/2109
केतु	09/07/2109
शुक्र	28/09/2109
सूर्य	23/10/2109
चंद्र	02/12/2109
मंगल	31/12/2109
राहु	14/03/2110

चंद्र - शनि	
14/03/2110	
13/10/2111	
शनि	13/06/2110
बुध	03/09/2110
केतु	07/10/2110
शुक्र	11/01/2111
सूर्य	09/02/2111
चंद्र	30/03/2111
मंगल	02/05/2111
राहु	28/07/2111
गुरु	13/10/2111

चंद्र - बुध	
13/10/2111	
14/03/2113	
बुध	25/12/2111
केतु	25/01/2112
शुक्र	20/04/2112
सूर्य	16/05/2112
चंद्र	28/06/2112
मंगल	28/07/2112
राहु	14/10/2112
गुरु	22/12/2112
शनि	14/03/2113

चंद्र - केतु	
14/03/2113	
13/10/2113	
केतु	26/03/2113
शुक्र	30/04/2113
सूर्य	11/05/2113
चंद्र	29/05/2113
मंगल	10/06/2113
राहु	12/07/2113
गुरु	10/08/2113
शनि	12/09/2113
बुध	13/10/2113

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - शनि - शुक्र	
27/12/2023 11:53	
29/05/2024 17:05	
शुक्र	22/01/2024 04:45
सूर्य	29/01/2024 21:48
चंद्र	11/02/2024 18:14
मंगल	20/02/2024 18:08
राहु	14/03/2024 21:19
गुरु	04/04/2024 10:49
शनि	28/04/2024 20:50
बुध	20/05/2024 17:10
केतु	29/05/2024 17:05

गुरु - शनि - सूर्य	
29/05/2024 17:05	
14/07/2024 23:26	
सूर्य	01/06/2024 00:36
चंद्र	04/06/2024 21:08
मंगल	07/06/2024 13:54
राहु	14/06/2024 12:27
गुरु	20/06/2024 16:30
शनि	28/06/2024 00:18
बुध	04/07/2024 13:36
केतु	07/07/2024 06:23
शुक्र	14/07/2024 23:26

गुरु - शनि - चंद्र	
14/07/2024 23:26	
30/09/2024 02:02	
चंद्र	21/07/2024 09:39
मंगल	25/07/2024 21:36
राहु	06/08/2024 11:12
गुरु	16/08/2024 17:57
शनि	28/08/2024 22:57
बुध	08/09/2024 21:07
केतु	13/09/2024 09:04
शुक्र	26/09/2024 05:30
सूर्य	30/09/2024 02:02

गुरु - शनि - मंगल	
30/09/2024 02:02	
23/11/2024 01:27	
मंगल	03/10/2024 05:36
राहु	11/10/2024 07:55
गुरु	18/10/2024 12:38
शनि	27/10/2024 01:45
बुध	03/11/2024 17:16
केतु	06/11/2024 20:50
शुक्र	15/11/2024 20:44
सूर्य	18/11/2024 13:30
चंद्र	23/11/2024 01:27

गुरु - शनि - राहु	
23/11/2024 01:27	
10/04/2025 20:32	
राहु	13/12/2024 21:07
गुरु	01/01/2025 09:16
शनि	23/01/2025 08:41
बुध	12/02/2025 00:35
केतु	20/02/2025 02:54
शुक्र	15/03/2025 06:05
सूर्य	22/03/2025 04:38
चंद्र	02/04/2025 18:13
मंगल	10/04/2025 20:32

गुरु - शनि - गुरु	
10/04/2025 20:32	
12/08/2025 05:30	
गुरु	27/04/2025 07:20
शनि	16/05/2025 20:09
बुध	03/06/2025 07:37
केतु	10/06/2025 12:21
शुक्र	01/07/2025 01:50
सूर्य	07/07/2025 05:53
चंद्र	17/07/2025 12:38
मंगल	24/07/2025 17:21
राहु	12/08/2025 05:30

गुरु - बुध - बुध	
12/08/2025 05:30	
07/12/2025 12:21	
बुध	28/08/2025 20:16
केतु	04/09/2025 16:28
शुक्र	24/09/2025 05:37
सूर्य	30/09/2025 02:21
चंद्र	09/10/2025 20:56
मंगल	16/10/2025 17:08
राहु	03/11/2025 07:21
गुरु	18/11/2025 22:40
शनि	07/12/2025 12:21

गुरु - बुध - केतु	
07/12/2025 12:21	
24/01/2026 19:25	
केतु	10/12/2025 07:58
शुक्र	18/12/2025 09:09
सूर्य	20/12/2025 19:06
चंद्र	24/12/2025 19:41
मंगल	27/12/2025 15:18
राहु	03/01/2026 21:09
गुरु	10/01/2026 07:42
शनि	17/01/2026 23:13
बुध	24/01/2026 19:25

गुरु - बुध - शुक्र	
24/01/2026 19:25	
11/06/2026 19:01	
शुक्र	16/02/2026 19:21
सूर्य	23/02/2026 16:56
चंद्र	07/03/2026 04:54
मंगल	15/03/2026 06:04
राहु	04/04/2026 22:49
गुरु	23/04/2026 08:22
शनि	15/05/2026 04:42
बुध	03/06/2026 17:50
केतु	11/06/2026 19:01

गुरु - बुध - सूर्य	
11/06/2026 19:01	
23/07/2026 04:30	
सूर्य	13/06/2026 20:41
चंद्र	17/06/2026 07:29
मंगल	19/06/2026 17:26
राहु	25/06/2026 22:27
गुरु	01/07/2026 10:55
शनि	08/07/2026 00:13
बुध	13/07/2026 20:58
केतु	16/07/2026 06:55
शुक्र	23/07/2026 04:30

गुरु - बुध - चंद्र	
23/07/2026 04:30	
30/09/2026 04:18	
चंद्र	28/07/2026 22:29
मंगल	01/08/2026 23:04
राहु	12/08/2026 07:26
गुरु	21/08/2026 12:13
शनि	01/09/2026 10:23
बुध	11/09/2026 04:57
केतु	15/09/2026 05:32
शुक्र	26/09/2026 17:30
सूर्य	30/09/2026 04:18

गुरु - बुध - मंगल	
30/09/2026 04:18	
17/11/2026 11:21	
मंगल	02/10/2026 23:55
राहु	10/10/2026 05:46
गुरु	16/10/2026 16:19
शनि	24/10/2026 07:50
बुध	31/10/2026 04:02
केतु	02/11/2026 23:38
शुक्र	11/11/2026 00:49
सूर्य	13/11/2026 10:46
चंद्र	17/11/2026 11:21

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - बुध - राहु	
17/11/2026 11:21	
21/03/2027 15:48	
राहु	06/12/2026 02:25
गुरु	22/12/2026 15:49
शनि	11/01/2027 07:43
बुध	28/01/2027 21:57
केतु	05/02/2027 03:48
शुक्र	25/02/2027 20:33
सूर्य	04/03/2027 01:34
चंद्र	14/03/2027 09:56
मंगल	21/03/2027 15:48

गुरु - बुध - गुरु	
21/03/2027 15:48	
10/07/2027 01:05	
गुरु	05/04/2027 09:02
शनि	22/04/2027 20:30
बुध	08/05/2027 11:49
केतु	14/05/2027 22:22
शुक्र	02/06/2027 07:54
सूर्य	07/06/2027 20:22
चंद्र	17/06/2027 01:09
मंगल	23/06/2027 11:41
राहु	10/07/2027 01:05

गुरु - बुध - शनि	
10/07/2027 01:05	
18/11/2027 03:06	
शनि	30/07/2027 19:12
बुध	18/08/2027 08:53
केतु	26/08/2027 00:24
शुक्र	16/09/2027 20:44
सूर्य	23/09/2027 10:02
चंद्र	04/10/2027 08:12
मंगल	11/10/2027 23:44
राहु	31/10/2027 15:38
गुरु	18/11/2027 03:06

गुरु - केतु - केतु	
18/11/2027 03:06	
08/12/2027 00:21	
केतु	19/11/2027 06:56
शुक्र	22/11/2027 14:29
सूर्य	23/11/2027 14:21
चंद्र	25/11/2027 06:07
मंगल	26/11/2027 09:57
राहु	29/11/2027 09:33
गुरु	02/12/2027 01:11
शनि	05/12/2027 04:45
बुध	08/12/2027 00:21

गुरु - केतु - शुक्र	
08/12/2027 00:21	
02/02/2028 19:57	
शुक्र	17/12/2027 11:37
सूर्य	20/12/2027 07:48
चंद्र	25/12/2027 01:26
मंगल	28/12/2027 08:59
राहु	05/01/2028 21:31
गुरु	13/01/2028 11:20
शनि	22/01/2028 11:14
बुध	30/01/2028 12:25
केतु	02/02/2028 19:57

गुरु - केतु - सूर्य	
02/02/2028 19:57	
19/02/2028 21:02	
सूर्य	03/02/2028 16:25
चंद्र	05/02/2028 02:30
मंगल	06/02/2028 02:22
राहु	08/02/2028 15:44
गुरु	10/02/2028 22:16
शनि	13/02/2028 15:02
बुध	16/02/2028 01:00
केतु	17/02/2028 00:51
शुक्र	19/02/2028 21:02

गुरु - केतु - चंद्र	
19/02/2028 21:02	
19/03/2028 06:50	
चंद्र	22/02/2028 05:51
मंगल	23/02/2028 21:38
राहु	28/02/2028 03:54
गुरु	02/03/2028 22:48
शनि	07/03/2028 10:45
बुध	11/03/2028 11:21
केतु	13/03/2028 03:07
शुक्र	17/03/2028 20:45
सूर्य	19/03/2028 06:50

गुरु - केतु - मंगल	
19/03/2028 06:50	
08/04/2028 04:06	
मंगल	20/03/2028 10:41
राहु	23/03/2028 10:16
गुरु	26/03/2028 01:54
शनि	29/03/2028 05:28
बुध	01/04/2028 01:05
केतु	02/04/2028 04:55
शुक्र	05/04/2028 12:28
सूर्य	06/04/2028 12:20
चंद्र	08/04/2028 04:06

गुरु - केतु - राहु	
08/04/2028 04:06	
29/05/2028 07:20	
राहु	15/04/2028 20:11
गुरु	22/04/2028 15:49
शनि	30/04/2028 18:08
बुध	07/05/2028 23:59
केतु	10/05/2028 23:35
शुक्र	19/05/2028 12:07
सूर्य	22/05/2028 01:29
चंद्र	26/05/2028 07:45
मंगल	29/05/2028 07:20

गुरु - केतु - गुरु	
29/05/2028 07:20	
13/07/2028 18:13	
गुरु	04/06/2028 08:47
शनि	11/06/2028 13:31
बुध	18/06/2028 00:03
केतु	20/06/2028 15:41
शुक्र	28/06/2028 05:30
सूर्य	30/06/2028 12:03
चंद्र	04/07/2028 06:57
मंगल	06/07/2028 22:35
राहु	13/07/2028 18:13

गुरु - केतु - शनि	
13/07/2028 18:13	
05/09/2028 17:38	
शनि	22/07/2028 07:20
बुध	29/07/2028 22:51
केतु	02/08/2028 02:25
शुक्र	11/08/2028 02:19
सूर्य	13/08/2028 19:05
चंद्र	18/08/2028 07:02
मंगल	21/08/2028 10:36
राहु	29/08/2028 12:55
गुरु	05/09/2028 17:38

गुरु - केतु - बुध	
05/09/2028 17:38	
24/10/2028 00:42	
बुध	12/09/2028 13:50
केतु	15/09/2028 09:27
शुक्र	23/09/2028 10:38
सूर्य	25/09/2028 20:35
चंद्र	29/09/2028 21:10
मंगल	02/10/2028 16:47
राहु	09/10/2028 22:38
गुरु	16/10/2028 09:11
शनि	24/10/2028 00:42

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 6 वर्ष 11 मास 22 दिन

बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष	
27/01/2000		19/01/2007		19/01/2025		20/01/2036		20/01/2048	
19/01/2007		19/01/2025		20/01/2036		20/01/2048		19/01/2061	
	00/00/0000	शुक्र	04/11/2009	सूर्य	04/02/2026	मंगल	17/04/2037	गुरु	05/07/2049
	00/00/0000	सूर्य	21/07/2011	मंगल	26/03/2027	गुरु	21/08/2038	शनि	29/01/2051
	00/00/0000	मंगल	31/05/2013	गुरु	19/06/2028	शनि	01/02/2040	केतु	04/10/2052
	27/01/2000	गुरु	07/06/2015	शनि	17/10/2029	केतु	21/08/2041	चंद्र	21/07/2054
गुरु	16/06/2000	शनि	08/08/2017	केतु	20/03/2031	चंद्र	17/04/2043	बुध	16/06/2056
शनि	05/07/2002	केतु	06/12/2019	चंद्र	24/09/2032	बुध	19/01/2045	शुक्र	22/06/2058
केतु	15/09/2004	चंद्र	31/05/2022	बुध	06/05/2034	शुक्र	30/11/2046	सूर्य	16/09/2059
चंद्र	19/01/2007	बुध	19/01/2025	शुक्र	20/01/2036	सूर्य	20/01/2048	मंगल	19/01/2061

शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
19/01/2061		19/01/2075		19/01/2090		20/01/2106	
19/01/2075		19/01/2090		20/01/2106		00/00/0000	
शनि	28/09/2062	केतु	28/12/2076	चंद्र	04/04/2092	बुध	18/07/2108
केतु	20/07/2064	चंद्र	22/01/2079	बुध	09/08/2094	शुक्र	09/03/2111
चंद्र	25/06/2066	बुध	04/04/2081	शुक्र	31/01/2097	सूर्य	17/10/2112
बुध	14/07/2068	शुक्र	03/08/2083	सूर्य	09/08/2098	मंगल	22/07/2114
शुक्र	15/09/2070	सूर्य	03/01/2085	मंगल	05/04/2100	गुरु	28/01/2116
सूर्य	13/01/2072	मंगल	24/07/2086	गुरु	20/01/2102		00/00/0000
मंगल	25/06/2073	गुरु	29/03/2088	शनि	26/12/2103		00/00/0000
गुरु	19/01/2075	शनि	19/01/2090	केतु	20/01/2106		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 1 वर्ष 10 मास 30 दिन

मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष	
27/01/2000		27/12/2001		27/12/2013		27/08/2024		27/04/2037	
27/12/2001		27/12/2013		27/08/2024		27/04/2037		27/08/2048	
	00/00/0000	राहु	15/10/2003	गुरु	30/05/2015	शनि	29/08/2026	बुध	05/12/2038
	00/00/0000	गुरु	22/05/2005	शनि	05/02/2017	बुध	15/06/2028	केतु	03/08/2039
	00/00/0000	शनि	16/04/2007	बुध	11/08/2018	केतु	12/03/2029	शुक्र	23/06/2041
	27/01/2000	बुध	27/12/2008	केतु	26/03/2019	शुक्र	22/04/2031	सूर्य	16/01/2042
बुध	25/04/2000	केतु	08/09/2009	शुक्र	04/01/2021	सूर्य	09/12/2031	चंद्र	27/12/2042
केतु	02/08/2000	शुक्र	09/09/2011	सूर्य	18/07/2021	चंद्र	29/12/2032	मंगल	26/08/2043
शुक्र	14/05/2001	सूर्य	15/04/2012	चंद्र	07/06/2022	मंगल	24/09/2033	राहु	07/05/2045
सूर्य	07/08/2001	चंद्र	15/04/2013	मंगल	20/01/2023	राहु	19/08/2035	गुरु	10/11/2046
चंद्र	27/12/2001	मंगल	27/12/2013	राहु	27/08/2024	गुरु	27/04/2037	शनि	27/08/2048

केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष	
27/08/2048		27/04/2053		27/08/2066		27/08/2070		27/04/2077	
27/04/2053		27/08/2066		27/08/2070		27/04/2077		00/00/0000	
केतु	04/12/2048	शुक्र	18/07/2055	सूर्य	08/11/2066	चंद्र	18/03/2071	मंगल	05/08/2077
शुक्र	14/09/2049	सूर्य	18/03/2056	चंद्र	10/03/2067	मंगल	07/08/2071	राहु	17/04/2078
सूर्य	09/12/2049	चंद्र	27/04/2057	मंगल	03/06/2067	राहु	07/08/2072	गुरु	01/12/2078
चंद्र	30/04/2050	मंगल	05/02/2058	राहु	09/01/2068	गुरु	27/06/2073	शनि	28/08/2079
मंगल	07/08/2050	राहु	06/02/2060	गुरु	21/07/2068	शनि	18/07/2074	बुध	27/01/2080
राहु	20/04/2051	गुरु	16/11/2061	शनि	10/03/2069	बुध	28/06/2075		00/00/0000
गुरु	03/12/2051	शनि	27/12/2063	बुध	03/10/2069	केतु	17/11/2075		00/00/0000
शनि	29/08/2052	बुध	16/11/2065	केतु	27/12/2069	शुक्र	27/12/2076		00/00/0000
बुध	27/04/2053	केतु	27/08/2066	शुक्र	27/08/2070	सूर्य	27/04/2077		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 10 वर्ष 2 मास 28 दिन

बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष	
27/01/2000		26/04/2010		25/04/2020		26/04/2039		26/04/2051	
26/04/2010		25/04/2020		26/04/2039		26/04/2051		25/04/2072	
	00/00/0000	शनि	30/03/2011	गुरु	29/08/2023	राहु	25/08/2040	शुक्र	27/05/2055
	27/01/2000	गुरु	01/01/2013	राहु	08/10/2025	शुक्र	25/12/2042	सूर्य	26/07/2056
गुरु	22/07/2000	राहु	11/02/2014	शुक्र	19/06/2029	सूर्य	26/08/2043	चंद्र	26/06/2059
राहु	12/06/2002	शुक्र	22/01/2016	सूर्य	09/07/2030	चंद्र	26/04/2045	मंगल	14/01/2061
शुक्र	02/10/2005	सूर्य	12/08/2016	चंद्र	27/02/2033	मंगल	16/03/2046	बुध	06/05/2064
सूर्य	12/09/2006	चंद्र	01/01/2018	मंगल	26/07/2034	बुध	04/02/2048	शनि	16/04/2066
चंद्र	21/01/2009	मंगल	29/09/2018	बुध	23/07/2037	शनि	16/03/2049	गुरु	25/12/2069
मंगल	26/04/2010	बुध	25/04/2020	शनि	26/04/2039	गुरु	26/04/2051	राहु	25/04/2072

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
25/04/2072		26/04/2078		26/04/2093		27/04/2101	
26/04/2078		26/04/2093		27/04/2101		00/00/0000	
सूर्य	25/08/2072	चंद्र	26/05/2080	मंगल	28/11/2093	बुध	30/12/2103
चंद्र	26/06/2073	मंगल	06/07/2081	बुध	03/03/2095	शनि	27/07/2105
मंगल	05/12/2073	बुध	15/11/2083	शनि	29/11/2095	गुरु	28/01/2108
बुध	15/11/2074	शनि	05/04/2085	गुरु	26/04/2097		00/00/0000
शनि	06/06/2075	गुरु	25/11/2087	राहु	16/03/2098		00/00/0000
गुरु	25/06/2076	राहु	26/07/2089	शुक्र	06/10/2099		00/00/0000
राहु	24/02/2077	शुक्र	25/06/2092	सूर्य	17/03/2100		00/00/0000
शुक्र	26/04/2078	सूर्य	26/04/2093	चंद्र	27/04/2101		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : मंगला 0 वर्ष 4 मास 28 दिन

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
27/01/2000		25/06/2000		25/06/2002		25/06/2005		25/06/2009	
25/06/2000		25/06/2002		25/06/2005		25/06/2009		25/06/2014	
	00/00/0000	पिंग	05/08/2000	धांय	25/09/2002	भ्राम	05/12/2005	भद्रि	06/03/2010
	00/00/0000	धांय	04/10/2000	भ्राम	25/01/2003	भद्रि	25/06/2006	उल्क	04/01/2011
	00/00/0000	भ्राम	25/12/2000	भद्रि	26/06/2003	उल्क	24/02/2007	सिद्ध	25/12/2011
	00/00/0000	भद्रि	05/04/2001	उल्क	25/12/2003	सिद्ध	05/12/2007	संक	03/02/2013
	00/00/0000	उल्क	05/08/2001	सिद्ध	25/07/2004	संक	25/10/2008	मंग	26/03/2013
	27/01/2000	सिद्ध	25/12/2001	संक	26/03/2005	मंग	04/12/2008	पिंग	05/07/2013
सिद्ध	05/04/2000	संक	05/06/2002	मंग	25/04/2005	पिंग	23/02/2009	धांय	05/12/2013
संक	25/06/2000	मंग	25/06/2002	पिंग	25/06/2005	धांय	25/06/2009	भ्राम	25/06/2014

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
25/06/2014		25/06/2020		26/06/2027		26/06/2035		25/06/2036	
25/06/2020		26/06/2027		26/06/2035		25/06/2036		25/06/2038	
उल्क	26/06/2015	सिद्ध	04/11/2021	संक	05/04/2029	मंग	06/07/2035	पिंग	05/08/2036
सिद्ध	25/08/2016	संक	26/05/2023	मंग	25/06/2029	पिंग	26/07/2035	धांय	04/10/2036
संक	25/12/2017	मंग	05/08/2023	पिंग	05/12/2029	धांय	26/08/2035	भ्राम	25/12/2036
मंग	24/02/2018	पिंग	25/12/2023	धांय	05/08/2030	भ्राम	05/10/2035	भद्रि	05/04/2037
पिंग	25/06/2018	धांय	25/07/2024	भ्राम	26/06/2031	भद्रि	25/11/2035	उल्क	05/08/2037
धांय	25/12/2018	भ्राम	06/05/2025	भद्रि	05/08/2032	उल्क	25/01/2036	सिद्ध	25/12/2037
भ्राम	26/08/2019	भद्रि	26/04/2026	उल्क	05/12/2033	सिद्ध	05/04/2036	संक	05/06/2038
भद्रि	25/06/2020	उल्क	26/06/2027	सिद्ध	26/06/2035	संक	25/06/2036	मंग	25/06/2038

नोट :– योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :–

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
25/06/2038		**25/06/2041**		**25/06/2045**		**25/06/2050**		**25/06/2056**	
25/06/2041		**25/06/2045**		**25/06/2050**		**25/06/2056**		**26/06/2063**	
धांय	25/09/2038	भ्राम	05/12/2041	भद्रि	06/03/2046	उल्क	26/06/2051	सिद्ध	04/11/2057
भ्राम	25/01/2039	भद्रि	25/06/2042	उल्क	04/01/2047	सिद्ध	25/08/2052	संक	26/05/2059
भद्रि	26/06/2039	उल्क	24/02/2043	सिद्ध	25/12/2047	संक	25/12/2053	मंग	05/08/2059
उल्क	25/12/2039	सिद्ध	05/12/2043	संक	03/02/2049	मंग	24/02/2054	पिंग	25/12/2059
सिद्ध	25/07/2040	संक	25/10/2044	मंग	26/03/2049	पिंग	25/06/2054	धांय	25/07/2060
संक	26/03/2041	मंग	04/12/2044	पिंग	05/07/2049	धांय	25/12/2054	भ्राम	06/05/2061
मंग	25/04/2041	पिंग	23/02/2045	धांय	05/12/2049	भ्राम	26/08/2055	भद्रि	26/04/2062
पिंग	25/06/2041	धांय	25/06/2045	भ्राम	25/06/2050	भद्रि	25/06/2056	उल्क	26/06/2063

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
26/06/2063		**26/06/2071**		**25/06/2072**		**25/06/2074**		**25/06/2077**	
26/06/2071		**25/06/2072**		**25/06/2074**		**25/06/2077**		**25/06/2081**	
संक	05/04/2065	मंग	06/07/2071	पिंग	05/08/2072	धांय	25/09/2074	भ्राम	05/12/2077
मंग	25/06/2065	पिंग	26/07/2071	धांय	04/10/2072	भ्राम	25/01/2075	भद्रि	25/06/2078
पिंग	05/12/2065	धांय	26/08/2071	भ्राम	25/12/2072	भद्रि	26/06/2075	उल्क	24/02/2079
धांय	05/08/2066	भ्राम	05/10/2071	भद्रि	05/04/2073	उल्क	25/12/2075	सिद्ध	05/12/2079
भ्राम	26/06/2067	भद्रि	25/11/2071	उल्क	05/08/2073	सिद्ध	25/07/2076	संक	25/10/2080
भद्रि	05/08/2068	उल्क	25/01/2072	सिद्ध	25/12/2073	संक	26/03/2077	मंग	04/12/2080
उल्क	05/12/2069	सिद्ध	05/04/2072	संक	05/06/2074	मंग	25/04/2077	पिंग	23/02/2081
सिद्ध	26/06/2071	संक	25/06/2072	मंग	25/06/2074	पिंग	25/06/2077	धांय	25/06/2081

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
25/06/2081		**25/06/2086**		**25/06/2092**		**26/06/2099**		**27/06/2107**	
25/06/2086		**25/06/2092**		**26/06/2099**		**27/06/2107**		**00/00/0000**	
भद्रि	06/03/2082	उल्क	26/06/2087	सिद्ध	04/11/2093	संक	06/04/2101	मंग	07/07/2107
उल्क	04/01/2083	सिद्ध	25/08/2088	संक	26/05/2095	मंग	26/06/2101	पिंग	27/07/2107
सिद्ध	25/12/2083	संक	25/12/2089	मंग	05/08/2095	पिंग	06/12/2101	धांय	27/08/2107
संक	03/02/2085	मंग	24/02/2090	पिंग	25/12/2095	धांय	06/08/2102	भ्राम	06/10/2107
मंग	26/03/2085	पिंग	25/06/2090	धांय	25/07/2096	भ्राम	27/06/2103	भद्रि	26/11/2107
पिंग	05/07/2085	धांय	25/12/2090	भ्राम	06/05/2097	भद्रि	06/08/2104	उल्क	26/01/2108
धांय	05/12/2085	भ्राम	26/08/2091	भद्रि	26/04/2098	उल्क	06/12/2105	सिद्ध	28/01/2108
भ्राम	25/06/2086	भद्रि	25/06/2092	उल्क	26/06/2099	सिद्ध	27/06/2107		00/00/0000

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : धनु 3 वर्ष 3 मास 19 दिन
कुल दशाकाल : 83 वर्ष
तिथि : चित्रा - 3 सव्य
देह : वृष जीव : मिथुन

धनु 10 वर्ष		मकर 4 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष		मीन 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष	
27/01/2000		18/05/2003		18/05/2007		18/05/2011		17/05/2021	
18/05/2003		18/05/2007		18/05/2011		17/05/2021		17/05/2028	
	00/00/0000	मक	27/07/2003	कुंभ	27/07/2007	मीन	31/07/2012	वृश्चि	19/12/2021
	00/00/0000	कुंभ	06/10/2003	मीन	19/01/2008	वृश्चि	04/06/2013	तुला	26/04/2023
	00/00/0000	मीन	30/03/2004	वृश्चि	22/05/2008	तुला	09/05/2015	कन्या	28/01/2024
	00/00/0000	वृश्चि	31/07/2004	तुला	27/02/2009	कन्या	08/06/2016	तुला	04/06/2025
	00/00/0000	तुला	09/05/2005	कन्या	05/08/2009	तुला	13/05/2018	वृश्चि	06/01/2026
	27/01/2000	कन्या	14/10/2005	तुला	13/05/2010	वृश्चि	17/03/2019	धनु	10/11/2026
कन्या	09/08/2000	तुला	23/07/2006	वृश्चि	13/09/2010	धनु	30/05/2020	मक	13/03/2027
तुला	14/07/2002	वृश्चि	23/11/2006	धनु	08/03/2011	मक	22/11/2020	कुंभ	14/07/2027
वृश्चि	18/05/2003	धनु	18/05/2007	मक	18/05/2011	कुंभ	17/05/2021	मीन	17/05/2028

तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		तुला 16 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		धनु 10 वर्ष	
17/05/2028		17/05/2044		17/05/2053		17/05/2069		17/05/2076	
17/05/2044		17/05/2053		17/05/2069		17/05/2076		00/00/0000	
तुला	18/06/2031	कन्या	09/05/2045	तुला	17/06/2056	वृश्चि	19/12/2069	धनु	31/07/2077
कन्या	12/03/2033	तुला	01/02/2047	वृश्चि	23/10/2057	धनु	23/10/2070	मक	23/01/2078
तुला	12/04/2036	वृश्चि	06/11/2047	धनु	27/09/2059	मक	23/02/2071	कुंभ	18/07/2078
वृश्चि	18/08/2037	धनु	06/12/2048	मक	05/07/2060	कुंभ	27/06/2071	मीन	01/10/2079
धनु	23/07/2039	मक	13/05/2049	कुंभ	12/04/2061	मीन	30/04/2072	वृश्चि	04/08/2080
मक	30/04/2040	कुंभ	18/10/2049	मीन	17/03/2063	वृश्चि	01/12/2072	तुला	09/07/2082
कुंभ	05/02/2041	मीन	18/11/2050	वृश्चि	22/07/2064	तुला	08/04/2074	कन्या	27/01/2083
मीन	10/01/2043	वृश्चि	23/08/2051	तुला	23/08/2067	कन्या	10/01/2075		00/00/0000
वृश्चि	17/05/2044	तुला	17/05/2053	कन्या	17/05/2069	तुला	17/05/2076		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा

भोग्य दशा काल : वृष 7 वर्ष 0 मास 0 दिन

वृष 7 वर्ष	
27/01/2000	
27/01/2007	
मेष	27/08/2000
मीन	28/03/2001
कुंभ	27/10/2001
मक	28/05/2002
धनु	27/12/2002
वृश्चि	28/07/2003
तुला	26/02/2004
कन्या	27/09/2004
सिंह	28/04/2005
कर्क	27/11/2005
मिथु	28/06/2006
वृष	27/01/2007

मेष 10 वर्ष	
27/01/2007	
26/01/2017	
वृष	27/11/2007
मिथु	27/09/2008
कर्क	28/07/2009
सिंह	28/05/2010
कन्या	29/03/2011
तुला	27/01/2012
वृश्चि	26/11/2012
धनु	27/09/2013
मक	28/07/2014
कुंभ	29/05/2015
मीन	28/03/2016
मेष	26/01/2017

मीन 11 वर्ष	
26/01/2017	
27/01/2028	
मेष	27/12/2017
वृष	27/11/2018
मिथु	28/10/2019
कर्क	27/09/2020
सिंह	27/08/2021
कन्या	28/07/2022
तुला	28/06/2023
वृश्चि	28/05/2024
धनु	28/04/2025
मक	28/03/2026
कुंभ	26/02/2027
मीन	27/01/2028

कुम्भ 10 वर्ष	
27/01/2028	
27/01/2038	
मीन	26/11/2028
मेष	27/09/2029
वृष	28/07/2030
मिथु	29/05/2031
कर्क	28/03/2032
सिंह	26/01/2033
कन्या	27/11/2033
तुला	27/09/2034
वृश्चि	28/07/2035
धनु	28/05/2036
मक	28/03/2037
कुंभ	27/01/2038

मकर 9 वर्ष	
27/01/2038	
27/01/2047	
धनु	27/10/2038
वृश्चि	28/07/2039
तुला	27/04/2040
कन्या	26/01/2041
सिंह	27/10/2041
कर्क	28/07/2042
मिथु	28/04/2043
वृष	27/01/2044
मेष	27/10/2044
मीन	28/07/2045
कुंभ	28/04/2046
मक	27/01/2047

धनु 4 वर्ष	
27/01/2047	
27/01/2051	
वृश्चि	29/05/2047
तुला	27/09/2047
कन्या	27/01/2048
सिंह	28/05/2048
कर्क	27/09/2048
मिथु	26/01/2049
वृष	28/05/2049
मेष	27/09/2049
मीन	27/01/2050
कुंभ	28/05/2050
मक	27/09/2050
धनु	27/01/2051

वृश्चिक 2 वर्ष	
27/01/2051	
26/01/2053	
तुला	29/03/2051
कन्या	29/05/2051
सिंह	28/07/2051
कर्क	27/09/2051
मिथु	27/11/2051
वृष	27/01/2052
मेष	28/03/2052
मीन	28/05/2052
कुंभ	28/07/2052
मक	27/09/2052
धनु	26/11/2052
वृश्चि	26/01/2053

तुला 2 वर्ष	
26/01/2053	
27/01/2055	
वृश्चि	28/03/2053
धनु	28/05/2053
मक	28/07/2053
कुंभ	27/09/2053
मीन	27/11/2053
मेष	27/01/2054
वृष	28/03/2054
मिथु	28/05/2054
कर्क	28/07/2054
सिंह	27/09/2054
कन्या	27/11/2054
तुला	27/01/2055

कन्या 8 वर्ष	
27/01/2055	
27/01/2063	
तुला	27/09/2055
वृश्चि	28/05/2056
धनु	26/01/2057
मक	27/09/2057
कुंभ	28/05/2058
मीन	27/01/2059
मेष	27/09/2059
वृष	28/05/2060
मिथु	26/01/2061
कर्क	27/09/2061
सिंह	28/05/2062
कन्या	27/01/2063

सिंह 7 वर्ष	
27/01/2063	
27/01/2070	
कन्या	28/08/2063
तुला	28/03/2064
वृश्चि	27/10/2064
धनु	28/05/2065
मक	27/12/2065
कुंभ	28/07/2066
मीन	26/02/2067
मेष	27/09/2067
वृष	27/04/2068
मिथु	26/11/2068
कर्क	27/06/2069
सिंह	27/01/2070

कर्क 9 वर्ष	
27/01/2070	
27/01/2079	
मिथु	27/10/2070
वृष	28/07/2071
मेष	27/04/2072
मीन	26/01/2073
कुंभ	27/10/2073
मक	28/07/2074
धनु	28/04/2075
वृश्चि	27/01/2076
तुला	27/10/2076
कन्या	28/07/2077
सिंह	28/04/2078
कर्क	27/01/2079

मिथुन 7 वर्ष	
27/01/2079	
27/01/2086	
वृष	28/08/2079
मेष	28/03/2080
मीन	27/10/2080
कुंभ	28/05/2081
मक	27/12/2081
धनु	28/07/2082
वृश्चि	26/02/2083
तुला	27/09/2083
कन्या	27/04/2084
सिंह	26/11/2084
कर्क	27/06/2085
मिथु	27/01/2086

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	9
भाग्यांक	3
मित्र अंक	1, 3, 6, 9
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मकर, मिथुन
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	लक्ष्मी
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

sample

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	98%	भाग्योदय, धन, सन्तति सुख
माणिक्य	सूर्य	75%	भाग्योदय, सुख
नीलम	शनि	62%	कम खर्च, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	50%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
लहसुनिया	केतु	50%	भाग्योदय, कम खर्च
गोमेद	राहु	22%	पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
मोती	चंद्र	19%	शत्रु व रोग, पराक्रम हानि
मूंगा	मंगल	12%	व्यावसायिक हानि, व्यय, दाम्पत्य कष्ट
पुखराज	गुरु	0%	व्यय, दुर्घटना, हानि

रत्न की शुभता

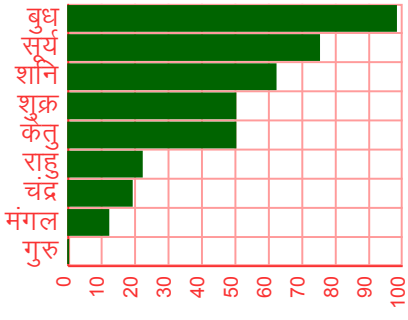

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	12/12/2002	81%	31%	38%	86%	0%	50%	62%	0%	56%
राहु	11/12/2020	62%	0%	0%	98%	0%	56%	69%	47%	25%
गुरु	11/12/2036	81%	31%	25%	86%	3%	25%	62%	22%	50%
शनि	12/12/2055	62%	0%	0%	100%	0%	56%	75%	34%	25%
बुध	11/12/2072	81%	0%	12%	100%	0%	56%	62%	22%	50%
केतु	12/12/2079	62%	0%	25%	98%	0%	56%	50%	0%	62%
शुक्र	12/12/2099	62%	0%	12%	100%	0%	62%	69%	34%	56%
सूर्य	12/12/2105	88%	31%	25%	98%	0%	25%	50%	0%	25%
चंद्र	13/12/2115	81%	44%	12%	100%	0%	50%	62%	0%	25%

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

sample

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह–नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान–सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान–प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पन्ना व माणिक्य रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना व माणिक्य रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए नीलम, हीरा एवं लहसुनिया रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

गोमेद, मोती, मूंगा व पुखराज रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान–सम्मान में कमी, धन–धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :–

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध नवम भाव में स्थित है। बुध रत्न पन्ना आपको धर्मात्मा और भाग्यशाली बनाएगा। रत्न की शुभता से आप सदाचारी, धर्म को जानने वाले और बुद्धिमान व्यक्ति

बनेंगे। यह रत्न आपको अपने धर्म भाव पर अडिग रखेगा। पन्ना रत्न तीर्थ यात्रा और धार्मिक कार्यों जैसे यज्ञ आदि में आपकी अच्छी रुचि बनाएगा। बुद्धि प्रयोग से आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। यह रत्न ज्ञान, धन और यश से उज्ज्वल बनाएगा। बुध रत्न पन्ना आपके ज्ञान और बुद्धि को बढ़ायेगा। यह रत्न आपको वक्ता, संगीतज्ञ, संपादक, लेखक या ज्योतिषी बनने के गुण दे सकता है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में बुध द्वितीयेश एवं पंचमेश है। पन्ना रत्न धारण कर आप बुध ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है। पन्ना रत्न आपको उद्धोग–व्यापार द्वारा सम्मान दिला सकता है। पन्ना रत्न बौद्धिक योग्यता से धन संचय दे सकता है। पारिवारिक कलह को दूर करने का कार्य भी पन्ना रत्न कर सकता है। यह रत्न आपको संतान पक्ष से सुखी कर सकता है. तथा यह रत्न आपको विद्या, बुद्धि, प्रतिष्ठा, धन–धान्य, प्रतियोगिताओं में सफलता, श्रेष्ठ पद पर आसीन, विलक्षण रूप से तीव्र बुद्धि एवं राजनैतिक कायी से लाभ दिला सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे – मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य नवम भाव में स्थित है। सूर्य रत्न माणिक्य आपके लिए शुभ रत्न है। अतः आप माणिक्य रत्न धारण करें। माणिक्य रत्न शुभता आपको लम्बी दूरी की यात्राएं करवाएगी। धर्म–कर्म एवं परोपकार से जुड़े कायी में आपकी सहभागिता बढ़ेगी। रत्न प्रभाव आपको अपने परिवार के अत्यधिक निकट लायेंगा। पिता से संबंध मधुर होकर मजबूत होंगे। सूर्य रत्न माणिक्य आपको शिक्षा के क्षेत्र में उत्तम फल देगा। उच्च शिक्षा प्राप्ति में माणिक्य रत्न शुभ फलदायक रत्न है। रत्न प्रभाव से विदेश गमन के योग बन सकते है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में सूर्य चतुर्थ भाव का स्वामी है। सूर्य आपके लिए केन्द्रेश, सुखेश ग्रह है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप घर, जमीन, जायदाद पैतृक सम्पति, वाहन, माता और जमीन के सुख प्राप्त कर सकते है। सूर्य चतुर्थेश होने के कारण माणिक्य रत्न आपके शैक्षिक ज्ञान का भी विकास करने में सक्षम है। सूर्य की शुभता पाने के लिए आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न शुभ होने के कारण आपकी वैचारिक शक्ति,

निर्णय शक्ति, योग्यता और कार्यक्षमता देगा। माणिक्य रत्न आपको विद्या, बुद्धि, मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, अध्यात्मिक और आत्मिक बल प्रदान कर सकता है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे– गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि द्वादश भाव में स्थित है। आप शनि ग्रह का नीलम रत्न धारण करें। नीलम रत्न धारण कर आपके फिजूलखर्चीं पर नियंत्रण होगा। इस रत्न को धारण कर आप अपने शत्रुओं को सहजता से पराजित कर सकते है। बडे–बडे दान और यज्ञ करने में आपकी रुचि बन सकती है। साथ ही यह रत्न आपको स्वजनों से प्रेम और धन संग्रह करने के लिए सदैव प्रयासरत रख जीवन में बडी तरक्की दे सकता है। रत्न धारण कर आप दानगृह, कारागार जैसी जगहों पर नौकरी कर आय प्राप्त कर सकते है। नीलम रत्न आपको गुप्त रीति से धन संचय करने का स्वभाव दे सकता है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शनि नवमेश एवं दशमेश है। शनि लग्नेश शुक्र के मित्र एवं योगकारक ग्रह है। आपके लिए शनि सबसे शुभ ग्रह है। शनि रत्न नीलम धारण कर आप अपना भाग्योदय कर सकते है। नीलम रत्न की शक्तियां आपके माता–पता के सुखों में बढ़ोतरी कर सकती है। यह रत्न शुभ होकर आपको भूमि, भवन, संपति के मामलों का सहज समाधान दे सकता है। नीलम रत्न की शुभता से आपकी आजीविका के कार्य बिना बाधाएं समय पर पूरे हो सकते है। लाभ क्षेत्र की कठिनाईयों को दूर करने में भी नीलम रत्न उपयोगी सिद्ध हो सकता है। विदेश स्थानों से आय प्राप्ति के योग बना सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे– उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा

sample

5–6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र अष्टम भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। शुक्र रत्न हीरा आपको निडर और प्रसन्नचित्त बनायेगा। रत्न शुभता से आप विद्वान, मनस्वी, धर्मात्मा और सदाचारी बनेंगे। रत्न शुभता आपको शारीरिक, आर्थिक अथवा ग्रहस्थ सुख देगी। आपको किसी स्त्री के माध्यम से धन की प्राप्ति हो सकती है। हीरा रत्न आपको किसी ट्रस्ट के माध्यम से धनलाभ करा सकता है। आपको विदेश यात्रा करने के अवसर प्राप्त होंगे। सेवकों और वाहनों से प्राप्त सुख में बढ़ोतरी होगी। हीरा शेयर बाजार में विनियोजन से लाभ देगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं षष्ठेश है। शुक्र आपके लग्न भाव के स्वामी होने के कारण सबसे शुभ ग्रह है। शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप अपने स्वास्थ्य सुख को बेहतर कर सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपको रोगों से मुक्त रखने में सहयोग करेगा। हीरा रत्न की शुभता से आपके आत्मबल में बढ़ोतरी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप अपने शत्रुओं पर विजय पाने में सफल रहेंगे। हीरा रत्न अनुकूल फलदायक होने के कारण आपके दांपत्य जीवन को सुखी, भौतिक सुख–सुविधाओं से युक्त तथा प्रतियोगिताओं में सफल हो सकते है.

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे– चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंड़ली में केतु नवम भाव में स्थित है। केतु रत्न लहसुनिया धारण करना आपके लिए शुभ रहेगा। यह रत्न धारण से आपके पराक्रम भाव में वृद्धि होगी। रत्न शुभता से आप

उदार और दयालु बनेंगे। लहसुनिया रत्न आपके भाग्य को बढ़ा सकता है। इस रत्न को धारण कर आप नैतिकता से धन लाभ कमाने का प्रयास करेंगे। रत्न प्रभाव सहोदर या भाईयों से आपके संबंध मजबूत करेगा। लहसुनिया रत्न शुभता से आप के पिता के सुख में भी यह रत्न बढ़ाएगा। लहसुनिया रत्न प्रभाव से आपको विदेश स्थानों से धनागमन प्राप्ति के योग बनेंगे।

केतु मकर राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि द्वादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न आपको सेवा कर्म में सुख एवं उद्योग–धंधों में लाभ एवं सफलता देगा। इस रत्न की शुभता से आपको इहलोक और परलोक दोनों में सुख की प्राप्ति होगी। साथ ही यह रत्न आपको अनेक प्रकार के सुःख भोगने के अवसर देगा। आपके व्यर्थ के व्ययों को नियंत्रित करेगा। इस रत्न को पहनने पर आप ऋण मुक्त, धार्मिक, परोपकारी और प्रलोभन से मुक्त होंगे। यह रत्न शुभ होकर आपको शयन सुख देगा तथा अनिद्रा रोग का निवारण करेगा। यह रत्न पहन कर आप अपने जीवन लक्ष्यों को सहजता से प्राप्त कर पाएंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है– सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8–10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहू रत्न गोमेद धारण करने पर आपके अरिष्ट और दुःख बढ़ सकते है। गोमेद रत्न आपके स्वास्थ्य में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपका बाहुबल प्रभावित होगा। संभावित है कि पराक्रम और साहस पूर्ण कार्य आपको अच्छे न लगे। गोमेद रत्न आपके यश, प्रतिष्ठा, दान एवं पुण्य विषयों में विश्वास भाव कम कर सकता है। आपकी मित्रताएं अल्पकालीन हो सकती है। गोमेद रत्न प्रभाव आपमें नकारात्मक प्रभाव और अंहकार भाव ला सकता है। भाईयों के विरोध का सामना आपको करना पड़ सकता है।

राहु कर्क राशि में स्थित है व इसका स्वामी चन्द्र छठे भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपको विशेष समय पर बौद्धिक योग्यता का सहयोग प्राप्त नहीं होने देगा। बुद्धि बल की कमी आपको शत्रु पक्ष से पराजय दे सकती है। रत्न प्रभाव से आप रोग, ऋण और शत्रुओं से पीड़ित होंगे। इसके कारण विशेष कार्य करने के अवसर अन्य किसी को प्राप्त हो सकते हैं। बड़े

कार्यों में योग्यता दिखाने के अवसर आपको नहीं मिल पाएंगे। आपको कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके रोगों में वृद्धि करेगा। कोर्ट कचहरी के मामलों में धन हानि होगी। इस रत्न को पहनने पर आपको विभिन्न षड्यंत्रों से निपटना पड़ेगा।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्रमा का मोती रत्न धारण करने पर किसी विशेष मामले में आपको अपमानित होना पड सकता है। आपके अपने मामा–मौसी से संबंध प्रतिकूल हो सकते है। अपने शत्रुओं की पहचान करना आपके लिए सरल नहीं होगा। यह रत्न आपको कफ रोगी, नेत्र रोगी, अल्पायु, आसक्त, व्ययी बना सकता है। इसके प्रभाव से आप अस्वस्थ्यता का अनुभव करेंगें। बढ़ते कर्ज आपको मानसिक चिंताएं दे सकते है। कर्ज का भुगदान ज्यादा आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। कार्यो को शीघ्रता से करने की प्रवृर्ति कार्यो में गुणवत्ता का अभाव ला सकती है। मोती रत्न आपमें असंतोष का भाव ला सकता है। आपको आंखों और पेट से संबंधित परेशानियां हो सकती हैं।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में चंद्र तृतीय भाव का स्वामी है। चंद्र ग्रह की शुभता प्राप्ति एवं अशुभता में कमी के लिए आपका चंद्र रत्न मोती धारण करना उचित नहीं होगा। इस रत्न को धारण करने पर आपके द्वारा अभक्ष्य पदार्थो का सेवन एवं आपमें क्रोध भाव की अधिकता हो सकती है। इस रत्न के प्रभाव से आपका आलोचनात्मक व्यवहार, पुरुषार्थ, साहस और शौर्य की कमी आपमें हो सकती है। खांसी तथा छाती के रोग आपको स्वास्थ्य विकार दे सकते है। यह रत्न आपके मानसिक क्लेश बढ़ा सकता है। रत्न धारण के बाद आपके द्वारा किये गये कार्यो में बाहुबल की प्रमुखता हो सकती है। धन संचय में परेशानियां बनी रह सकती है। रत्न प्रभाव आपके स्वास्थ्य सुख में कमी कर सकता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल दशम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर मैकेनिकल इंजीनियर, इलेक्ट्रानिक इंजीनियर, सैनिक, हथियार से जुड़े काम या विभागों से जुड़े कामों में कार्यरत होना आपको कष्ट दे सकता है। यह रत्न आपके सुख एवं यश को बाधित कर सकता है। आपमें नेतृत्व शक्ति की कमी आपकी सफलता को प्रभावित कर सकती है। मूंगा रत्न आपमें अत्यधिक जोश, साहस, ऊर्जा और उत्तेजना भाव को बढ़ाकर आपके द्वारा वादि–ववाद उत्पन्न करा सकता है। मूंगा रत्न से कार्यक्षेत्र में आपको लड़ाई झगड़ों की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। साहस की अधिकता व्यवसायिक क्षेत्र में आपको जोखिम पूर्ण क्षेत्रों में धन विनियोजन करा हानि दे सकती है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में मंगल सप्तमेश और द्वादशेश है। अशुभ भावों का स्वामित्व प्राप्त होने के कारण मंगल आपको शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः आपके द्वारा मंगल

रत्न मूंगा धारण करने पर आप निद्रा की कमी का अनुभव करेंगे। यह रत्न आपके वैवाहिक जीवन को तनाव पूर्ण और गृह कलेश से युक्त कर सकता है। रत्न प्रभाव से चोरी, झगड़ा, उपद्रव आदि विषयों में आपकी रुचि अधिक हो सकती है। यह रत्न आपकी कामवासना में उत्तरोत्तर वृद्धि करेगा। आपके पारिवारिक जीवन में अशांति का माहौल हो सकता है। बढ़ते हुए व्यय आपकी ग्रहस्थ जीवन को ओर अधिक कष्टमय बना सकते है। व्ययों का केन्द्र विशेष रूप से ग्रहस्थ जीवन हो सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण कर आपमें आशावादिता भाव की कमी आ सकती है। दूसरों के लिए आपमें सहानुभूति तो बहुत होगी परन्तु आप चाहकर भी किसी के काम नहीं आ पाएंगे। कई बार आप दुष्ट लोगों पर भी सहानुभूति रखेंगे। पुखराज रत्न आपको जीवन में हानि करा सकता है। आर्थिक स्थिति में बढ़ोतरी के पक्ष से यह रत्न आपको सहयोग नहीं कर रहा है। आपको सम्मान की कमी का सामना करना पड़ सकता है। पुखराज रत्न आपकी प्रसन्नता, सुख एवं सौभाग्य में कमी करेगा। यह रत्न रोग, ऋण और शत्रु आपके प्रबल कर सकता है। आयु और मातृ सुख में कमी कर सकता है। विदेश स्थानों से आपको धन हानि हो सकती है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में गुरु अष्टमेश एवं आयेश है। गुरु अष्ट्मेश है इसलिए इस ग्रह का रत्न धारण करना आपको प्रतिकूल फल दे सकता है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपको स्वास्थ्य में कमी का सामना करना पड़ सकता है। इस रत्न से व्याधी, आयु में कमी, मानसिक चिंता, नास्तिकता, नकारात्मक विचारधारा और दुर्भाग्य की स्थितियां बन सकती है। इसके अलावा अष्टम भाव का रत्न आपको दरिद्रता, आलस्य, अस्पताल एवं चीरफाड़ आदि जैसी परेशानियां भी दे सकता है। रत्न का अनुकूल न होने के कारण आपको आय, लाभ वृद्धि में आपको योग्यता की कमी का अनुभव हो सकता है। पुखराज रत्न धारण से आप के बड़े भाई से संबंध कुछ प्रभावित हो सकते है।

दशानुसार रत्न विचार

गुरु
(11/12/2020 - 11/12/2036)

गुरु की दशा में आपका पन्ना व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, मूंगा व हीरा रत्न नेष्ट हैं और गोमेद व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते

हैं।

शनि
(11/12/2036 - 12/12/2055)

शनि की दशा में आपका पन्ना व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और मोती, मूंगा व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(12/12/2055 - 11/12/2072)

बुध की दशा में आपका पन्ना व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, हीरा व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद, मूंगा, मोती व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(11/12/2072 - 12/12/2079)

केतु की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, लहसुनिया, हीरा व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और मोती, पुखराज व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(12/12/2079 - 12/12/2099)

शुक्र की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, माणिक्य, हीरा व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मूंगा, मोती व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(12/12/2099 - 12/12/2105)

सूर्य की दशा में आपका पन्ना व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, मूंगा, हीरा व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और पुखराज व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(12/12/2105 - 13/12/2115)

चन्द्र की दशा में आपका पन्ना व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और मूंगा, पुखराज व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

sample

नवग्रह रत्न धारण विधि

रत्न का पूर्ण शुभ फल पाने के लिए इसे शुक्ल पक्ष में निर्दिष्ट वार एवं समय में ही धारण करना चाहिए। निर्दिष्ट नक्षत्र में धारण करने से रत्न और भी प्रभावशाली हो जाता है। इसे निम्नलिखित तालिका में दिये गये भार या उससे अधिक भार का लेकर जो किवाया हो एवं पौना न हो जैसे 4–1/4 रत्ती आदि, उसे निर्दिष्ट धातु में इस प्रकार जड़वाएं कि रत्न नीचे से अंगुली को स्पर्श करे।

धारण करते समय अपने इष्ट देव का श्रद्धापूर्वक ध्यान करना चाहिए। तत्पश्चात अंगूठी को कच्चे दूध एवं गंगाजल में धोकर शुद्ध करना चाहिए एवं धूप दीप जलाकर संबंधित ग्रह के मंत्र का कम से कम एक माला जप करना चाहिए। फिर अंगूठी को धूप देकर निर्दिष्ट अंगुली में दाएं हाथ में धारण करना चाहिए। स्त्रियों को बाएं एवं पुरुषों को दाएं हाथ में अंगुली धारण करना चाहिए। अंगूठी धारण के पश्चात यथाशक्ति संबंधित ग्रह के पदार्थों का दान करना चाहिए।

यदि आप अन्य कोई रत्न पहले से पहने हुए हैं तो यह ध्यान रखें कि परस्पर विरोधी रत्न एकसाथ न पहनें। उपरोक्त विधि से रत्न को पहनने से रत्न के शुभ फल प्रचुर मात्रा में शीघ्र मिलते हैं।

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

रत्न	मंत्र	निषेध रत्न	दान पदार्थ
माणिक्य	ऊँ घृणि सूर्याय नमः	हीरा, नीलम, गोमेद	गेहूँ,चंदन,घी,लाल वस्त्र
मोती	ऊँ सों सोमाय नमः	गोमेद	चावल,चीनी,घी,श्वेत वस्त्र
मूंगा	ऊँ अं अंगारकाय नमः	हीरा, गोमेद, नीलम	गेहूँ,ताम्र,गुड़,लाल वस्त्र
पन्ना	ऊँ बुं बुधाय नमः	–––	मूंग,कांसा,हरित वस्त्र
पुखराज	ऊँ वृं वृहस्पतये नमः	हीरा, गोमेद	चने की दाल,गुड़,पीला वस्त्र
हीरा	ऊँ शुं शुक्राय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	चावल,चांदी,श्वेत वस्त्र
नीलम	ऊँ शं शनैश्चराय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	काला तिल,तेल,काला वस्त्र
गोमेद	ऊँ रां राहवे नमः	माणिक्य, मोती, मूंगा	तिल,तेल,कंबल,नीला वस्त्र
लहसुनिया	ऊँ कें केतवे नमः	–––	सप्तधान्य,नारियल,धूम्र वस्त्र

sample

रूद्राक्ष

रूद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रूद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रूद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रूद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रूद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रूद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रूद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग–अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रूद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रूद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रूद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रूद्राक्ष के बीचों–बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रूद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी–कभी 15 से 21 मुखी तक के रूद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग–अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है –

एक मुखी – सूर्य ग्रह – स्वास्थ्य, सफलता, मान–सम्मान, आत्म – विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी – चंद्र ग्रह– वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी – मंगल ग्रह– शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी – बुध ग्रह– शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि – विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी – गुरू ग्रह– शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी – शुक्र ग्रह – प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी – शनि ग्रह– शनि दोष निवारण, धन–संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी – राहू ग्रह– राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी – केतू ग्रह– केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख–शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी – भगवान महावीर– कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक–पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी – इंद्र ग्रह– आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी – भगवान विष्णु ग्रह– विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी – इंद्र ग्रह– सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश–कीर्ति, मान–प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी – शनि ग्रह– आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली वृष लग्न की हैं। वृषभ लग्न आपको आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी बना रहा हैं। स्थिर लग्न होने से इनका स्वभाव स्थिरता लिये हुए होता है। आप जो भी कार्य करते हैं उसे पूरा करके ही हटते हैं। राशि चिह्न बैल होने की वजह से आप अत्यंत मेहनती हैं तथा लगातार कार्य करते रहना आपका व्यवहार हैं। प्यार से आप कुछ भी कर सकते हैं लेकिन जबरदस्ती करने पर आप बैल की भाँति अड़ियल हो जाते हैं, उस स्थिति में आपसे कुछ भी कराना मुश्किल होता है। पृथ्वी तत्व राशि होने से सहनशीलता का भाव आपमें कूट–कूट कर भरा है। जब तक आपसे सहन होता है, आप करते जाते हैं। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना आपको पसंद होता है। हर वस्तु को नियत स्थान पर रखना, हाथ में लिया गया प्रत्येक कार्य पूर्ण करना, प्रत्येक सुन्दर वस्तु की ओर आप आसानी से आकर्षित हो जाते हैं।

त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6, 8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृषभ लग्न में छठे भाव व लग्न भाव के स्वामी शुक्र हैं, शुक्र षष्टेश होने पर स्वास्थ्य, ऋण के पक्ष से शुभ नहीं हैं। जीवन में प्रगति की राहों में बाधक बनता हैं। सतत प्रयासों के उपरान्त आप बाधाएं समाप्त करने में सफल रहेंगे।

अष्टम व एकादश भाव के गुरु हैं। इस भाव में बृहस्पति की स्व और मूल त्रिकोण धनु राशि हैं। बृहस्पति की राशि बाधक और गुप्त विषयों से सम्बंधित भाव में होना, आपको आर्थिक, वितीय और प्रबंधकीय विषयों में छोटी, धोखा और अप्रत्याशित हानि दे सकती हैं। जीवन की घटनाओं में शुभता के पक्ष से गुरु की धनु राशि इस भाव में आपके पक्ष में शुभ फल नहीं दे रही हैं।

द्वादश व सप्तम भाव के मंगल हैं। वृषभ लग्न के लिए मंगल विशेष अशुभ ग्रह होते हैं। आपके लग्न में मंगल की एक राशि सप्तम भाव तथा दूसरी द्वादश भाव में आती हैं। द्वादश भाव में मंगल की राशि मंगल के कारक तत्वों में कमी करती हैं। सप्तमेश मंगल दुर्घटनाओं, शल्यचिकित्सा, लड़ाई–झगड़ों के योग बना कर ऊर्जा शक्ति की हानि करा सकता हैं।

आपकी कुंडली में चन्द्र षष्ठ भाव में स्थित हैं। इसके परिणाम से शत्रुओं से कष्टों का सामना करना पड़ सकता हैं। आप रोग पीड़ित, चिंताग्रस्त, व्याधिक्य करने की प्रवृति से ग्रस्त हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त चन्द्र की अशुभता से आपके ऋण लेन–देन में बाधाएं आ सकती हैं।

शुक्र अष्टम भाव में विवाह के उपरान्त भाग्योन्नति, सामान्य धनी, जीवन साथी द्वारा धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करता है। शुक्र अष्टम भाव में प्रेम सम्बन्धों में बाधाएं, जन्म स्थान से दूर निवास, परस्त्रीरत बना सकता है।

गुरु द्वादश भाव में आपमें स्वार्थ भाव की वृद्धि कर रहा है, यह योग मामा को कष्ट दे सकता है, सट्टा–जुआ की लत से दूर रहे, ऋण ग्रस्तता, शत्रुओं से पीड़ित, संपति का नाश और माता –पिता से मांसिक मतभेद करा सकता है।

आपको पैतृक सम्पति से वंचित रहना पड़ सकता है, पिता से शत्रुता, तंत्र–मंत्र ज्योतिष में रूचि, शत्रुनाशक, दीर्घरोगी, भाइयों व मित्रों से मतभेद, आर्थिक विपन्नता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 3, 5, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा

दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्‌भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

sample

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता–पिता पर पङता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पङता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढेसाती द्वितीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढेसाती तृतीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	स्वास्थ्य
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	सन्तति
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	भाग्योदय

sample

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म–पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

sample

योग कारक

किसी भी जन्मकुंडली में ग्रह, अपने स्वामित्व तथा स्थिति के अनुसार, सकारात्मक या नकारात्मक फल देते हैं। ये ग्रह विभिन्न दशा काल में भिन्न–भिन्न प्रकार से आचरण करते हैं, जो दशा स्वामी की स्थिति तथा उससे ग्रह के संबंध पर आधारित है। सुविधा के लिए हमने ग्रह के शुभ तत्वों की संगणना प्रतिशत में की है। 50 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले ग्रहों को लाभकारक तथा उससे नीचे हानिकारक समझना चाहिए। इस सूचना को आधार बनाकर आप अपनी जन्मकुंडली में दशा के प्रभावों का अध्ययन स्वयं ही कर सकते हैं। इसी तरह इन आंकड़ों द्वारा गोचर के प्रभाव का भी अध्ययन किया जा सकता है।

योग कारक एवं मारक

लग्न के लिए	:	योग कारक	-	शुक्र, शनि, सूर्य
		मारक	-	चंद्र, मंगल, गुरु
जन्मकुंडली के लिए	:	योग कारक	-	सूर्य, केतु, बुध
		मारक	-	राहु, चंद्र, गुरु

जन्मकुंडली में ग्रह बल

सूर्य	60%	भाग्योदय, सुख
चन्द्र	38%	शत्रु व रोग मुक्ति, पराक्रम
मंगल	52%	व्यावसायिक उन्नति, कम खर्च, दम्पति
बुध	55%	भाग्योदय, धन, सन्तति सुख
गुरु	38%	कम खर्च, दुर्घटना से बचाव, धनार्जन
शुक्र	50%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
शनि	41%	कम खर्च, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
राहु	33%	पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति
केतु	57%	भाग्योदय, कम खर्च

दशा काल में ग्रह बल

दशा	समाप्ति	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मंगल	12/12/2002	61	66	88	33	50	43	39	22	59
राहु	11/12/2020	36	37	32	46	51	56	65	79	34
गुरु	11/12/2036	75	50	57	47	81	47	70	47	61
शनि	12/12/2055	50	25	32	72	69	72	83	60	48
बुध	11/12/2072	92	39	44	90	50	56	51	35	78
केतु	12/12/2079	67	39	57	77	50	56	39	22	91
शुक्र	12/12/2099	36	25	44	58	54	87	68	47	59
सूर्य	12/12/2105	92	64	57	77	62	31	39	22	66
चन्द्र	13/12/2115	73	81	61	71	37	43	39	36	47

sample

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर–कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति दशम भाव में है। यह भाव कर्म का मुख्य प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप एक कर्मठ एवं पराक्रमी व्यक्ति होंगे। अपने कार्य क्षेत्र में सर्वदा उन्नतिशील रहेंगे। साथ ही आप अपनी बुद्धि एवं योग्यता के बल पर किसी उच्च प्रशासनिक पद इंजीनियरिंग, मेडिकल या होटल आदि के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता अर्जित करेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे जिससे समाज में आप एक आदरणीय पुरुष समझें जाएंगे । आप अपने कार्यों के द्वारा विशिष्ट सम्मान एवं ख्याति भी अर्जित करेंगे। आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा आपको वे पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आप भी उनकी आज्ञा का अनुपालन करेंगे तथा यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

दशम भाव से मंगल की दृष्टि प्रथम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप यदा कदा पित या गर्मी से उत्पन्न रोगों के द्वारा कष्ट की अनुभूति कर सकते हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। सामान्यतया आप परिश्रम एवं उत्साह से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। चतुर्थ भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों को अर्जित करेंगे तथा आनन्द पूर्वक उनका उपभोग भी करेंगे। जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे परन्तु माता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप उनको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि से संतति से सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा साथ ही संतति की प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। आपकी बुद्धि में भी यदा कदा उग्रता का भाव विद्यमान रहेगा लेकिन आप अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से सम्पन्न करेंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको न्यूनाधिक सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा।

sample

इस प्रकार दशमस्थ मंगल के प्रभाव से आप एक प्रभावी व्यक्ति होंगे। जीवन में धनऐश्वर्य एवं सुख संसाधनों से सर्वदा युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करने में समर्थ रहेंगे जिससे परिवार में शान्ति तथा सन्तुष्टि रहेगी। इसके अतिरिक्त सभी लोग आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

sample

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं–

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

sample

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया वृष लग्न में उत्पन्न जातक सुदंर उदार तथा सहिष्णु स्वभाव के होते हैं। उनकी वाणी में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहता है। साथ ही व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में वे समर्थ रहते हैं। शारीरिक रूप से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा मानसिक सन्तुष्टि भी उनकी बनी रहती है। ये अत्याधिक परिश्रमी जातक होते हैं तथा परिश्रम करने की उनकी अपूर्व क्षमता रहती है जिससे जीवन में उन्नति मार्ग प्रशस्त करने तथा सुखैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में वे प्रायः सफल रहते हैं। शांति एवं सहिष्णुता के साथ इनमें साहस तथा पराक्रम का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। अपने वाक्चातुर्य से शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सिद्ध करने में भी सफल होंगे। आपका शारीरिक कद मध्यम होगा परन्तु स्वरूप सुदंर एवं आकर्षक होगा। आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान होगा।

आप एक परिश्रमी पुरूष होंगे तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से किसी उच्च पद या समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करेंगे साथ ही अपने सदगुणों के द्वारा श्रेष्ठ जनों को सन्तुष्ट करने में सफल होंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा विभिन्न विषयों कला साहित्य एवं संगीत का आपको उचित ज्ञान रहेगा तथा इस क्षेत्र में प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी।

लग्नेश शुक्र की राशि के प्रभाव से शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे तथा उत्साह एवं परिश्रम पूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। दानशीलता का भाव भी आप में विद्यमान होगा तथा समय समय पर जरूरतमन्दों को दान देने में तत्पर रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी।

धर्म के प्रति आप श्रद्धालु रहेंगे तथा अवसरानुकूल धार्मिक अनुष्ठानों तथा कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। धार्मिक क्षेत्र में आप किसी संस्था से सम्बंधित हो सकते हैं या इस क्षेत्र में आपको कोई विशिष्ट सफलता या प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकती है।

आप में उदारता तथा सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल आप समाज सेवा के लिए भी उद्यत रहेंगे। आपकी प्रवृति सात्विक होगी तथा विचार भी उत्तम होंगे। साथ ही परोपकार की भावना भी विद्यमान होगी। इसके अतिरिक्त कई शास्त्रों का आपको ज्ञान होगा जिससे आपको सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि प्राप्त होगी।

इस प्रकार आप स्वस्थ सुदंर आकर्षक व्यक्तित्व विद्वान एवं साहसी पुरूष होंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक आपका जीवन व्यतीत होगा।

sample

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों एवं आधुनिक विलासमय वस्तुओं से युक्त होंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। शुक्र के प्रभाव से युवावस्था से ही आपको सुख–संसाधनों की उपलब्धि हो जायेगी तथा इसके लिए विशेष परिश्रम भी कम ही करना पड़ेगा।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को आप अवश्य प्राप्त करेंगे। आपके प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा विवाह के बाद इसमें काफी वृद्धि होगी। स्त्री के सहयोग से भी धनाढ्य एवं समृद्धशाली व्यक्ति माने जायेंगे। चल सम्पत्ति की उपेक्षा अचल सम्पत्ति की आपके पास बहुलता होगी जिससे जमीन जायदाद तथा मकान प्रमुख होंगे। साथ ही समस्त आधुनिक भौतिक एवं विलासमय उपकरणों से आप सम्पन्न होंगे तथा आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

उत्तम निवास स्थान के विषय में आप सौभाग्यशाली व्यक्ति समझे जायेंगे। आपका घर उत्तम एवं आधुनिक स्थान में होगा तथा सर्व प्रकार से यह आकर्षक एवं सुसज्जित रहेगा। आप भी इसकी सुन्दरता एवं सफाई का पूर्ण ध्यान रखेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे तथा आपसी संबंध अच्छे रहेंगे। आपकी कुंडली में उत्तम वाहन के भी योग बनते है जिसका आप युवावस्था से ही उपयोग करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

आपकी माता जी सुन्दर सुसंस्कृत एवं मृदुस्वभाव की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक चतुर एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपनी चतुराई एवं व्यवहार कुशलता से परिवार का अच्छी तरह पालन पोषण करेंगी एवं किसी भी व्यक्ति को उनसे कोई परेशानी नहीं होगी। आपके प्रति उनके हृदय में विशेष वात्सल्य एवं स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको प्रचुर मात्रा में आर्थिक सहयोग की भी प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा उनकी आज्ञा का पालन करने में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त सुख–दुख में उनको अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आपसी संबंध भी मधुर होंगे।

अध्ययन के प्रति वचपन से ही आपकी रूचि होगी तथा बुद्धिमान एवं परिश्रमशील होने के कारण प्रारंभ से ही अध्ययन के क्षेत्र में अनावश्यक समस्याओं एवं बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसी परिपेक्ष्य में आप स्नातक परीक्षा आसानी से उतीर्ण करेंगे तथा इससे आप की आत्मिक शक्ति में वृद्धि होगी फलतः जीवन में इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। सामाजिक जनों एवं संबंधियों में भी आपके सम्मान में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं प्रभावित होंगे। इससे आपको प्रोत्साहन मिलेगा जिससे भविष्य उज्ज्वल होगा।

sample

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा आपके सांसारिक एवं अन्य कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे। आप कठिन से कठिन कार्य को आसानी से पूर्ण करने में भी समर्थ होंगे। यद्यपि वैदिक धर्म एवं दर्शन शास्त्रों में आपकी रूचि अल्प होगी परंतु आधुनिक साहित्य कविता एवं कला में आप पूर्ण रूचि रखेंगे। पाश्चात्य कला, संगीत एवं साहित्य के विशेष प्रेमी होंगे तथा इन क्षेत्रों में आप अपनी बुद्धिमता, योग्यता एवं परिश्रम से ज्ञान अर्जित करके समाज में अपने प्रभुत्व को स्थापित करने में समर्थ होंगे। फलतः आपका सम्मान एवं विद्वता का प्रभाव समाज में बना रहेगा।

पंचमभाव में कन्या राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में आप अधिक लिप्त रहेंगे तथा अधिकांश प्रसंग आप मनोरंजन या मानसिक सन्तुष्टि के लिए स्थापित करेंगे। आपके प्रेम प्रसंग में आदर्श, यथार्थवाद एवं मर्यादा की भी कमी होगी। फलतः ऐसे क्षेत्र में आप अपने लिए अनावश्यक परेशानियां एवं अशान्ति उत्पन्न कर सकते है तथा वैवाहिक जीवन पर भी दुष्प्रभाव हो सकता है। अतः ऐसे प्रसंगों की यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए तभी आप सुखी रह सकते है।

पंचमभाव में बुध की राशि के प्रभाव से आपको यथा समय संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब नहीं होगा आपकी संतति बुद्धिमान एवं गुणवान होगी तथा आज्ञाकारिकता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा एवं एक दूसरे के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान का भाव भी रखेंगे । वे व्यावहारिक बुद्धि के स्वामी होंगे फलतः जीविकार्जन एवं आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ रहेंगे। सुख दुःख में माता पिता की पूरी सेवा करेंगे।

अध्ययन के प्रति बच्चों की रूचि सामान्य होगी तथापि परिश्रम पूर्वक वे वांछित शिक्षा अर्जित करने में समर्थ होंगे। यद्यपि किसी मान्यता प्राप्त प्रशासनिक या अन्य क्षेत्रों में वे परिश्रम एवं पराक्रम से ही प्रवेश कर रखेंगे परंतु वाणिज्य क्षेत्र में योग्य सिद्ध होंगे तथा इसी से अपने जीवन में ऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करेंगे। अतः इनके लिए आपको अधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथापि अपने लिए आपको पूर्ण धन संचय करके रखना चाहिए जेकि आपके सुख दुख के समय काम आएगा तथा बच्चों को स्वावलंबी छोड़ देना चाहिए एवं उनके कार्यो में दखल नहीं देना चाहिए। इससे आप तथा वे शान्ति एवं सन्तुष्टि अनुभूति करेंगे।

sample

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है सामान्यतया सप्तम भाव में जलतत्व युक्त वृश्चिक राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी पित प्रकृति धनवान एवं अधिक व्ययशील होता है। परन्तु नैसर्गिक शुभ ग्रह एवं जलतत्व युक्त शुक्र के प्रभाव से जातक सुशील संगीत एवं कला प्रिय मधुरभाषी तथा आधुनिक विचारों से युक्त होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव से युक्त बुद्धिमान एवं गुणवती महिला होंगी तथा आधुनिकता के प्रति विशेष आकर्षित रहेंगी। उनमें चंचलता का भाव भी होगा एवं प्रवृति भ्रमण प्रिय होगी। सांसारिक कार्य कलापों में वह दक्ष होंगी। वह एक शिक्षित महिला होंगी तथा आधुनिक तथा पाश्चात्य शास्त्रों में विशेष रूचि रखेंगी। वह कर्तव्य परायण एवं मधुर बोलने वाली होंगी जिससे पारिवारिक एवं सामाजिक लोग उनसे प्रभावित रहेंगे।

आपकी पत्नी गौरवर्ण की सुंदर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा उनका अदभुत सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा उनका कद भी सामान्य होगा परन्तु शारीरिक संरचना दर्शनीय होगी एवं अंग प्रत्यंग सुडौल एवं पुष्ट रहेंगे। वृश्चिक राशि एवं शुक्र ग्रह में जल तत्व की प्रधानता के कारण उनमें स्थूलता भी आ सकती है अतः पहले से ही व्यायाम या योगादि द्वारा इसे नियंत्रित करना चाहिए। सौन्दर्य के प्रति वह हमेशा सतर्क रहेगी तथा सुंदर वस्तुओं संगीत एवं कला के प्रति समर्पित होंगी।

आपका विवाह विज्ञापन या किसी महिला संबंधी के द्वारा सम्पन्न होगा। सप्तम भावस्थ शुक्र के प्रभाव से प्रेम विवाह की भी प्रबल संभावना रहती है। विवाह के बाद आप एक दूसरे के प्रति समर्पित रहेंगे तथा सुख दुख में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। अतः आपके संबंधों में मधुरता रहेगी जिससे दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा ।

आपका विवाह किसी उच्च एवं प्रभावशाली परिवार में होगा तथा आर्थिक रूप से भी उनकी स्थिति सुदृढ़ होगी फलतः विवाह के समय आपको ससुराल से प्रचुर मात्रा में धन सम्पति की प्राप्ति होगी। सास ससुर से भी आपके संबंधों में मधुरता रहेगी एवं उनको पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। वे भी आपको पुत्रवत स्नेह देंगे तथा ससुराल से आर्थिक एवं नैतिक सहयोग भी अवसरानुकूल मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी सेवा एवं श्रद्धा का भाव रखेंगी तथा उनकी सुख सुविधा का ध्यान रखकर उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। साथ ही अपने सद्व्यवहार एवं मृदुवाणी से देवर एवं ननदों से भी यथोचित सम्मान एवं सहयोग प्राप्त करेंगी जिससे परिवार में सुख शांति बनी रहेगी।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी एवं इससे आपके लाभ एवं उन्नति

मार्ग प्रशस्त होंगे।

sample

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्मसमय में दशम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। साथ ही मंगल भी कुम्भराशि में ही दशमभाव में स्थित है। कुम्भ राशि वायु तत्व एवं मंगल ग्रह अग्नितत्व युक्त ग्रह है अतः इनके प्रभाव से आपका व्यवसाय मानसिक एवं बौद्धिक क्रिया प्रधान होगा तथा इसमें आप सतत उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे दिग्बली मंगल के प्रभाव से स्वपराक्रम से आप इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही दशम भाव में स्थिर राशि के प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र स्थिर होगा तथा इसमें परिवर्तन की संभावना अल्प ही होगी।

आपके लिए आजीविका की दृष्टि से डाक्टर, सेना, पुलिस, सी आई डी, इंजीनियर, विद्युत एवं ऊर्जा शक्ति से संबंधित विभाग, विद्युत फैक्टरी, होटल या अग्नि से संबंधित कार्य, रत्न संबंधी कार्य एवं अन्य पराक्रमी कार्य शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। यदि आप उपरोक्त विभागों में ही अपने आजीविका क्षेत्र का चयन करेंगे तो इसमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा। अतः अपने उज्जवल भविष्य के लिए आपको यत्नपूर्वक इन्हीं क्षेत्रों में अपनी आजीविका प्रारंभ करनी चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में आप शस्त्रों का व्यापार, बिजली के उपकरण, दवाइयों का व्यापार, इंजीनियरिंग उपकरण, रासायनिक वस्तु, होटल एवं भारी उद्योग में वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अतः प्रचुर धन एवं लाभ अर्जित करने तथा जीवन में उन्नति प्राप्त करने के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार करना चाहिए। इससे आपके कार्य में सतत उन्नति होगी एवं किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याएं एवं तनावों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

सप्तमेश मंगल की दशम भाव में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको किसी उच्च पद एवं विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही इसे आप स्वपराक्रम एवं प्रभाव से अर्जित करेंगे। आपको किसी सामाजिक संस्था में भी किसी सम्मानीय एवं प्रभावशाली पद की प्राप्ति होगी जिससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे, परन्तु शनि की राशि के प्रभाव से इससे यदा कदा विलम्ब या व्यवधान भी आ सकते हैं परन्तु इससे आपको हतोत्साहित नहीं होना चाहिए एवं परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिता एक पराक्रमी योग्य एवं तेजस्वी स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा समाज में उनका पूर्ण प्रभाव रहेगा। साथ ही सभी लोग उन्हें वांछित आदर प्रदान करके उनके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव होगा तथा आपकी शिक्षा दीक्षा की समुचित व्यवस्था करेंगे एवं आपको योग्य व्यक्ति बनाना उनका मुख्य उददेश्य होगा। साथ ही आपके कार्य क्षेत्र की उन्नति में उनका मुख्य सहयोग होगा तथा उनके प्रभाव से भी आप उन्नति एवं यश प्राप्त करेंगे। आपका भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा का भाव होगा तथा यत्नपूर्वक उनकी आज्ञा का पालन करेंगे। इसके अतिरिक्त नैसर्गिक पापी ग्रह मंगल के प्रभाव से यदा कदा

सैद्धान्तिक एवं वैचारिक मतभेद भी बने रहेंगे लेकिन बुद्धिमता से आप दोनों परस्पर सामंजस्य स्थापित करने में समर्थ होंगे।

sample

वार्षिक फलादेश - 2024

इस वर्ष शनि कुम्भ राशि में शनि दशम में और राहु मीन राशि में एकादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में गुरू मेष राशि में द्वादश में रहेंगे और 1 मई को वृष राशि में लग्न भाव में गोचर करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 29 अप्रैल से 28 जुन तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला–जुला रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ बाहरी या विदेशी सम्बन्धों से लाभ प्राप्त होगा। आपको अपने व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान–सम्मान प्राप्त होगा। अप्रैल के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपको अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। लग्न स्थान का गुरु व्यापार में नये अवसरों का संकेत दे रहा है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। एकादश स्थान के राहु अचानक लाभ कराते रहेंगे जिससे आपके धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आपके पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

अप्रैल से समय बहुत अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी सर्वप्रकारेण उन्नति होगी। व्यावसायिक जीवन में स्थिरता आपके लिए वरदान सिद्ध होगी तथा कोई भी व्यवधान आपकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के आपके प्रयास में बाधक सिद्ध नहीं हो सकता। निवेश के लिए यह समय काफी अनुकूल है। यदि इस समय आपने निवेश किया तो आपको इच्छित लाभ हो सकता है।

घर–परिवार, समाज

वर्षारम्भ में चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगा व परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक लगाव रहेगा।

अप्रैल के बाद समय और अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। उसमें आपकी अहम भूमिका

sample

होगा। सप्तम स्थान पर गुरू एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान का गुरु सन्तान सम्बन्धित कुछ चिन्ताएं दे सकता है, परन्तु अप्रैल के बाद लग्नस्थ गुरू के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है।

आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेगे व शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करेंगे। श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश होगा। आप अपने बच्चों पर गर्व करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान हेतु शुभ समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय भाग्यवर्द्धक है। यदि विवाह के योग्य है, तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान के गुरु आपके स्वास्थ्य में उतार–चढ़ाव की स्थिति बना सकते हैं। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है।

गुरु ग्रह के अग्नि तत्व राशि में होने के कारण पित्त या पेट संबंधित परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, परन्तु अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य, दिनचर्या व आहार सम्बन्धी अनुशासन में निश्चित रूप से सुधार आना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में विशेष सफलता नहीं मिलेगी, परन्तु गुरू ग्रह के गोचर के बाद समय पूर्णतः अनुकूल हो जायेगा।

आप शिक्षा के क्षेत्र में अच्छा करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्त कर पायेंगे। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता निश्चित है। अनुभवी व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त होगा। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना है।

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के शुभ योग बना रहे हैं।

sample

अप्रैल के बाद नवम स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि तीर्थ यात्रा के लिए शुभ है। कुल मिलाकर यह वर्ष छोटी व लम्बी तथा अन्य सभी प्रकार की यात्रा के लिए शुभ रहेगा तथा यात्राएं सौभाग्यवर्द्धक सिद्ध होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादशस्थ गुरू पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंग जैसे– गरीबों को खाना खिलाना, भिक्षुओं को दान देना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा करना आदि आपका नैसर्गिक गुण होगा। अप्रैल के बाद गुरू ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान और बढ़ेगा, जिससे निःस्वार्थ भाव से आप पूजा पाठ में रूचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- माता–पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- नित्यप्रति सूर्य को अर्घ्य दें।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि दशम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु एकादश भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि एकादश भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि का गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि द्वितीय भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि तृतीय स्थान में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि द्वितीय भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे जिससे आपकी आय में वृद्धि होगी। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। कोई नया व्यापार शुरु करने के लिए अच्छा समय है। लग्न स्थान का गुरु नवीन विचार धारा तथा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं।

आपका भाग्य भी आपके साथ है। इसलिए कम समय में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। साझेदारी या शेयर बजार में आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। मई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी। एकादश स्थान के राहु अचानक धन लाभ कराते रहेंगे। आपको बड़े भाईयों से लाभ प्राप्त होता रहेगा। मई के बाद आपको रत्न आभूशण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपके रुके हुए पैसे मिल सकते हैं। आप बचत करने में सफल रहेंगे।

मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से खर्च करेंगे। निवेश के मामले में यह वर्ष अनुकूल रहेगा, और आप अच्छा निवेश भी करेंगे। अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। 14 मई के बाद अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से धन लाभ हो सकता है।

sample

घर–परिवार, समाज

वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

मई के बाद परिवार में सदस्य संख्या में बढोत्तरी हो सकती है। आपको बड़े भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, जिससे समाज में आपके पराक्रम व प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। 30 मई के बाद चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा और आपको उनका सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है।

यदि आपकी सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय काफी अनुकूल है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त होगी। आपके बच्चे इतने कामयाब होंगे कि आपको उन पर गर्व होगा।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में हमेशा अच्छे विचार आएंगे। जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान–पान पर विशेष ध्यान देंगे एवं अपनी दिनचर्या भी अनुशासित रखेंगे।

यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है। उस समय आपको मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से

अनुकूल है। यदि शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

14 मई के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्त होगी। जिन जातकों की नौकरी अभी तक नहीं लगी है, मई के बाद उन लोगों को नौकरी मिल सकती है।

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा होगी।

द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहें है। मई के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी। आप पूजा पाठ, यज्ञ एवं अनुष्ठान करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। आप गुरु मन्त्र लेकर साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके सामने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्रणायाम करें।

sample

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे औंर उसके बाद मकर राशिमें नवम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने व्यवसाय में बेहतरसफलता प्राप्त करेंगे। आपकी सफलता में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में कुछ नया करेंगेऔर आपको अच्छा लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान–सम्मान मिलेगा व अपने अधिकारियों की अनुकूलता प्राप्त होगी।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपने कार्य क्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो उसमें भी इच्छित लाभ प्राप्त होगा। भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को 31 अक्टूबर के बाद अच्छा लाभ मिलेगा। इस समय के अंतराल में इच्छित स्थान पर आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्धबहुत उत्तम रहेगा। आपके धनागम में वृद्धि होगीजिससे आप इच्छित बचत करके आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपको रत्न आभुषण इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पैतृक सम्पत्ति, या ससुराल से धन प्राप्त होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी आय के स्रोतों में बढोत्तरी होगी। इस समय अंतराल में आपको अचानक धन लाभ होगा। 31 अक्टूबर के बाद भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख भी प्राप्त हो सकता है।

sample

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनने के कारण सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का केतु आपके पारिवारिक माहौल को भंग करने की कोशिश करेगा, परन्तु आप अपने बुद्धि–विवेक से उसे भी अनुकूल कर लेंगे।

02 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियों मेंबढ़ चढ़ के भाग लेंगे और सामाजिक उत्थान के लिए आप किसी संस्था का संचालन भी कर सकते हैं। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। 31 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है उस समय आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण छा जाएगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। संतान के इच्छुक व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है।

02 जून से आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दुसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो विवाह हो जाएगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावानात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धउत्तम रहेगा। आपकी शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। गुरु ग्रह की अनुकूलता के कारण शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप छोटी–मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आलस्य की भावना उत्पन्न कर सकती है। उस समय आपको परहेज की ज्यादा जरूरत होगी। खान–पान के साथ साथ आपको अपनी दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा, षष्ठ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे, सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है।

02 जून के बाद तकनीकि शिक्षा या व्यवसाय के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारणबेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला–जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोइ विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है, परन्तु 02 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी–मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

31 अक्टूबर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंग या पयर्टन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 2 जून के बाद नवम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा–पाठ यज्ञ,अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन भी करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 31 अक्टूबर के बाद अपने परिवार में सुख शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगें।

- स्फटिक श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं एवं ऊँ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।

sample

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि एकादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं एकादश भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष नवम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी रहेगा। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके कार्य व्यवसाय में अनुकूलता बनी रहेगा। बड़े अधिकारी या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय में कुछ विशेष वनया करने के अवसर भी मिलते रहेंगे परन्तु इस समय के अंतराल में व्यापार में विस्तार न करें। जितना आपसे हो सके उतना ही कार्य करें नहीं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपसे नुकसान हो सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नती के साथ–साथ स्थान परिवर्तन भी हो सकता है।

03 जून के बाद शनि ग्रह का गोचर द्वादश भाव में हो रहा है। उस समय आपका कार्य व्यवसाय कुछ प्रभावित हो सकता है। आपके प्रतिद्वंदी आपका विरोध कर सकते हैं या शत्रुओं द्वारा आपके कार्य में रुकावट डालने की चेष्टा की जा सकती है। अतः बिना किसी पर विश्वास किये आत्मविश्वास के साथ कार्य करते रहें, क्योकि 03 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके सारे विरोधी शान्त होंगे और आपको कार्य–व्यवसाय मेंसफलता भी मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण सेयह वर्ष अच्छारहेगा।एकादश स्थान केशनि धनागम में निरंतरता बनाए रखेंगे। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धनादि संचित करने में आपको भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। निवेश के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ रहेगा। मांगलिक कार्यों में या समाजिक कार्यों में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

sample

03 जून से 03 अक्टूबर के मध्य समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें या किसी को उधार पैसे न दें। कोई आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें नही तो आपका पैसा फंस सकता है। 03 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। वर्षान्त में गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा, जिसके प्रभाव से सट्टा लॉटरी या शेयर बजार से भी आप को धन लाभ हो सकता है।

घर–परिवार, समाज

सामाजिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़–चढ़ कर भाग लेंगे। पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

26 जून से चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद संतान पक्ष के लिए समय काफी अनुकूल हो रहा है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा–दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। सन्तान का लक्ष्य प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम भी मनचाहा परिणाम नहीं देगा परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह निश्चित है।

जून के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 26 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का शुभसमय है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं।

sample

मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा परन्तु शनि ग्रह के गोचर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

03 जून के बाद द्वादश स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप बीमार हो सकते है। सुबह जल्दी उठ कर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी, जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दूर हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। इन्जीनीयरिंग या हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

जून के बाद विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति रूझान बढ़ेगा। द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर अपने करियर में उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा है।

यात्रा–तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ–साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी अधिकांश यात्रा अचानक होंगी। पूर्व से निधारित यात्रा प्रायः निरस्त होंगी।

26जून के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रूचि लेंगे। नियमित रूप से अपनी दैनिक पूजा करते रहेंगे। जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, यन्त्र एवं मन्त्र के प्रति आप

का विश्वास बढेगा और चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें। (तांबे के लोटे में चावल डाल कर)
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और शनि मन्त्र का पाठ करें।
- संध्या के समय पीपल वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।

sample

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। कोई नया कार्य आरम्भ करेंगे और उसमें आपको सफलता भी मिलेगी। उच्च अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति भी हो सकती है। 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रतिकूल हो रहा है। गुप्तशत्रु या विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर व्यावसायिक जीवन की समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने कर्मचारियों पर निगाह रखें ।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष के प्रारम्भ में धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। नये व्यापार से भी शीघ्र लाभ होने के योग हैं। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय करेंगे। फरवरी से जून तक समय कुछ प्रभावित रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ खर्च से आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऋण इत्यादि भी बढ़ सकता है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण सामान्य काम काज पर असर नहीं होगा। परन्तु आर्थिक कमी महसूस होती रहेगी। मांगलिक कार्य व पुत्रादि के विवाह अवसर पर भी धन का व्यय हो सकता है।

sample

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप विवाह योग्य हैं तो विवाह होने की सम्भावना है। प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। 28 फरवरी के बाद मातुल पक्ष के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। माता के लिए समय शुभ रहेगा परंतु पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

24 जुलाई के बाद समय अच्छा हो रहा है। नवविवाहिताओं को संतान की प्राप्ति हो सकती है। पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना रहेगा। यह समय बड़े भाई तथा मित्रों से लाभ का योग बना रहा है। घर के वातावरण में प्रेम, आपसी समन्वय व प्रसन्नता का संचार होगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि के संकेत है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपनी बुद्धि एवं विवेक के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। संतान की इच्छा रखने वाली महिलाओं के लिए गर्भ धारण का अच्छा समय है। परन्तु 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रभावित रहेगा। ये समय आपके संतान की तरक्की में बाधक हो सकता है। दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

जुलाई के बाद आपके बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी। आपको अपने बच्चों पर अभिमान होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अतिउत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। 23 फरवरी के बाद शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु का गोचर एक साथ प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य में उतार–चढाव की स्थिति बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने का पूर्ण प्रयास करेंगे फिर भी चोट या दुघर्टना की स्थिति बन सकती है।

sample

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। परन्तु 23 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यावसायिक रूप से भी समय अच्छा नही रहेगा।

यात्रा–तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटी–मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही नवमस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचानक आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। 23 फरवरी के बाद विदेश यात्रा का भी योग बन रहा है। फरवरी के बाद चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से मनोवांछित स्थान पर स्थानांतरण होने के योग बन रहे हैं। आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे अथवा माता के निवास स्थल का भ्रमण करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में यात्रा के दौरान आपको छोटी–मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा–पाठ यज्ञ अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति रूचि बढ़ेगी। फरवरी के बाद पारिवारिक सुख शान्ति के लिए भी आप अपने घर में हवन व कोई धार्मिक कार्य संपन्न करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप गुरु मन्त्र लेकर साधना भी कर सकते है। आप अपने से बड़े लोगों का सम्मान करेंगे।

- शनि मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का या काले कम्बल मजदूरों या गरीबों को दान करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।

sample

Model: C3,P3,PredictionPack30Year

SrNo: 112-123-101-1078 / 49 Date: 27/01/2024

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**27/01/2000**
दिन	गुरुवार
जन्म समय	**13:01:45 घंटे**
इष्ट	14:33:29 घटी
स्थान	**Delhi**
देश	India

अक्षांश	28:39:00 उत्तर
रेखांश	77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	12:40:37 घंटे
वेलान्तर	-00:12:37 घंटे
साम्पातिक काल	21:04:14 घंटे
सूर्योदय	07:12:21 घंटे
सूर्यास्त	17:55:26 घंटे
दिनमान	10:43:05 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	12:48:13 मकर
लग्न के अंश	05:55:29 वृष

चैत्रादि संवत / शक	2056 / 1921
मास	माघ
पक्ष	कृष्ण
सूर्योदय कालीन तिथि	7
तिथि समाप्ति काल	24:44:37
जन्म तिथि	7
सूर्योदय कालीन नक्षत्र	चित्रा
नक्षत्र समाप्ति काल	23:31:21 घंटे
जन्म नक्षत्र	चित्रा
सूर्योदय कालीन योग	धृति
योग समाप्ति काल	17:45:00 घंटे
जन्म योग	धृति
सूर्योदय कालीन करण	विष्टि
करण समाप्ति काल	12:13:24 घंटे
जन्म करण	बव

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	वृष – शुक्र
राशि–स्वामी	**तुला – शुक्र**
नक्षत्र–चरण	**चित्रा – 3**
नक्षत्र स्वामी	मंगल
योग	धृति
करण	बव
गण	राक्षस
योनि	व्याघ्र
नाड़ी	मध्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मृग
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	रा–राकेश
पाया(राशि–नक्षत्र)	स्वर्ण – रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कुम्भ

घात चक्र

मास	माघ
तिथि	4-9-14
दिन	गुरुवार
नक्षत्र	शतभिषा
योग	शुक्ल
करण	तैतिल
प्रहर	4
वर्ग	सिंह
लग्न	कन्या
सूर्य	कन्या
चन्द्र	धनु
मंगल	तुला
बुध	कर्क
गुरु	वृश्चिक
शुक्र	धनु
शनि	सिंह
राहु	मकर

sample

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	05:55:29	398:04:18	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	बुध	–––
सूर्य			मक	12:48:13	01:00:59	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	राहु	शत्रु राशि
चंद्र			तुला	01:11:33	12:35:35	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	बुध	सम राशि
मंगल			कुंभ	24:05:00	00:46:12	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	बुध	सम राशि
बुध		अ	मक	20:30:40	01:44:30	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	सम राशि
गुरु			मेष	03:30:20	00:07:09	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	सूर्य	मित्र राशि
शुक्र			धनु	09:11:46	01:13:40	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	सम राशि
शनि			मेष	16:38:52	00:01:41	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	चंद्र	नीच राशि
राहु	व		कर्क	09:49:31	00:00:19	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	शुक्र	शत्रु राशि
केतु	व		मक	09:49:31	00:00:19	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष			मक	22:21:54	00:03:27	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	–––
नेप			मक	10:18:02	00:02:17	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	चंद्र	–––
प्लूटो			वृश्चि	18:23:57	00:01:33	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	–––
दशम भाव			मक	19:43:49	--	श्रवण	--	22	शनि	चंद्र	केतु	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
चित्रपक्षीय अयनांश : **23:51:16**

लग्न–चलित

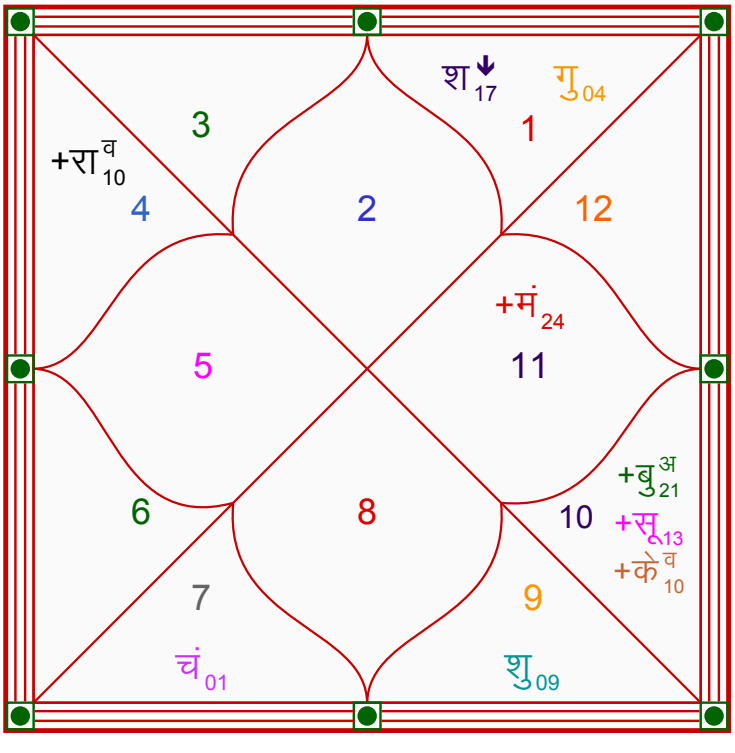

चन्द्र कुंडली

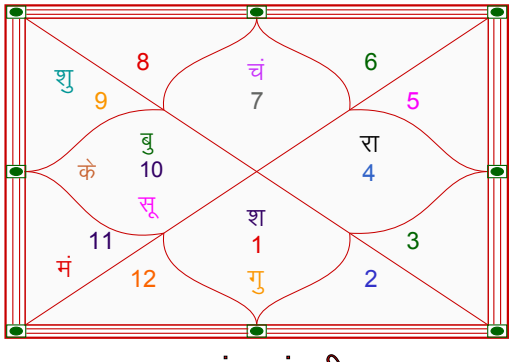

नवमांश कुंडली

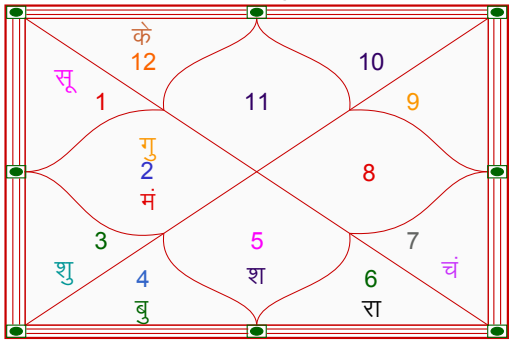

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मेष	18:13:33	वृष	05:55:29
2	वृष	18:13:33	मिथुन	00:31:36
3	मिथुन	12:49:39	मिथुन	25:07:43
4	कर्क	07:25:46	कर्क	19:43:49
5	सिंह	07:25:46	सिंह	25:07:43
6	कन्या	12:49:39	तुला	00:31:36
7	तुला	18:13:33	वृश्चिक	05:55:29
8	वृश्चिक	18:13:33	धनु	00:31:36
9	धनु	12:49:39	धनु	25:07:43
10	मकर	07:25:46	मकर	19:43:49
11	कुम्भ	07:25:46	कुम्भ	25:07:43
12	मीन	12:49:39	मेष	00:31:36

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	05:55:29
2	मिथुन	01:41:54
3	मिथुन	24:55:11
4	कर्क	19:43:49
5	सिंह	19:43:33
6	कन्या	26:43:04
7	वृश्चिक	05:55:29
8	धनु	01:41:54
9	धनु	24:55:11
10	मकर	19:43:49
11	कुम्भ	19:43:33
12	मीन	26:43:04

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त

चलित कुंडली

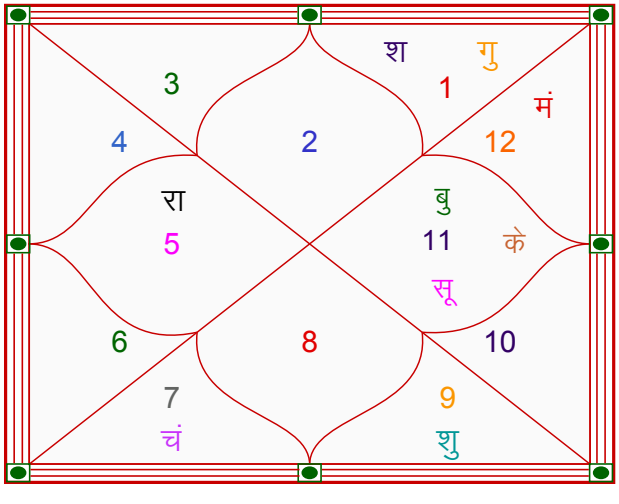

भाव कुंडली

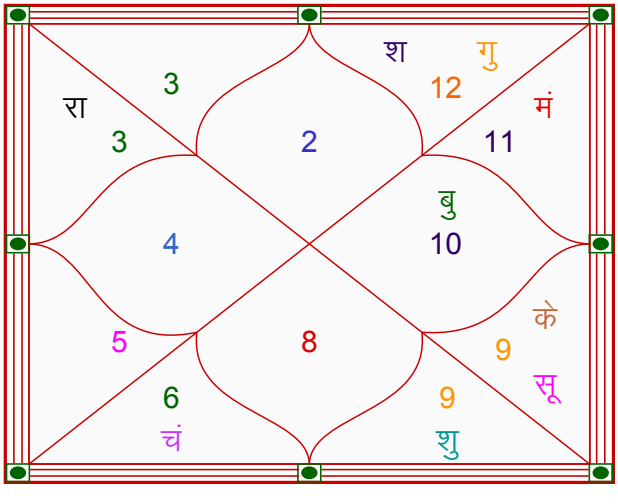

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

sample

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	मातृ	पितृ	युवा	खल	नृत्यलिप्सा	5.16	54 %
चंद्र	कलत्र	मातृ	बाल	शक्त	नृत्यलिप्सा	1.91	65 %
मंगल	आत्मा	भ्रातृ	मृत	निपीदित	आगमन	5.13	24 %
बुध	अमात्य	ज्ञाति	कुमार	विकल	नृत्यलिप्सा	0.00	66 %
गुरु	ज्ञाति	धन	बाल	मुदित	प्रकाश	4.59	42 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	कुमार	निपीदित	निद्रा	1.60	21 %
शनि	भ्रातृ	आयु	युवा	भीत	प्रकाश	0.09	-9 %
राहु	———	ज्ञान	वृद्ध	खल	आगमन	0.00	80 %
केतु	———	मोक्ष	वृद्ध	खल	भोजन	0.00	80 %
कुल						**18.48**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त

चलित कुंडली

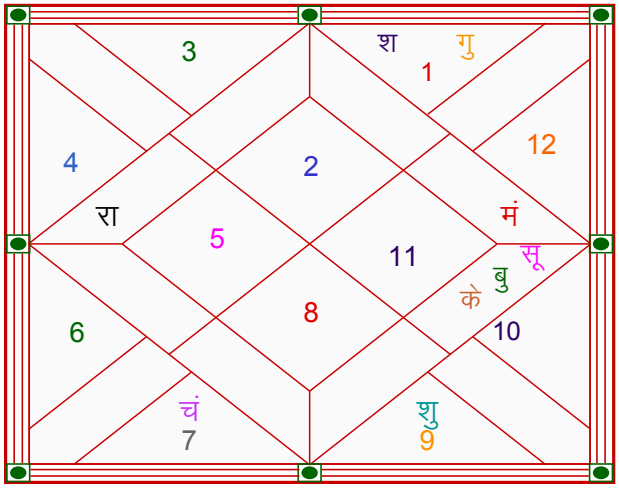

लग्न–चलित

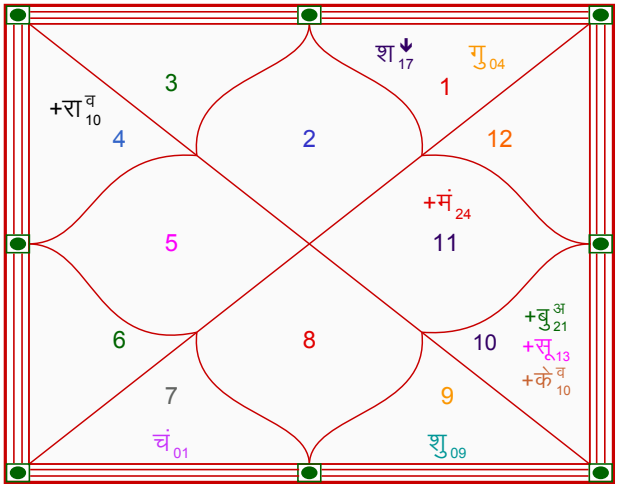

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

सुदर्शन चक्र

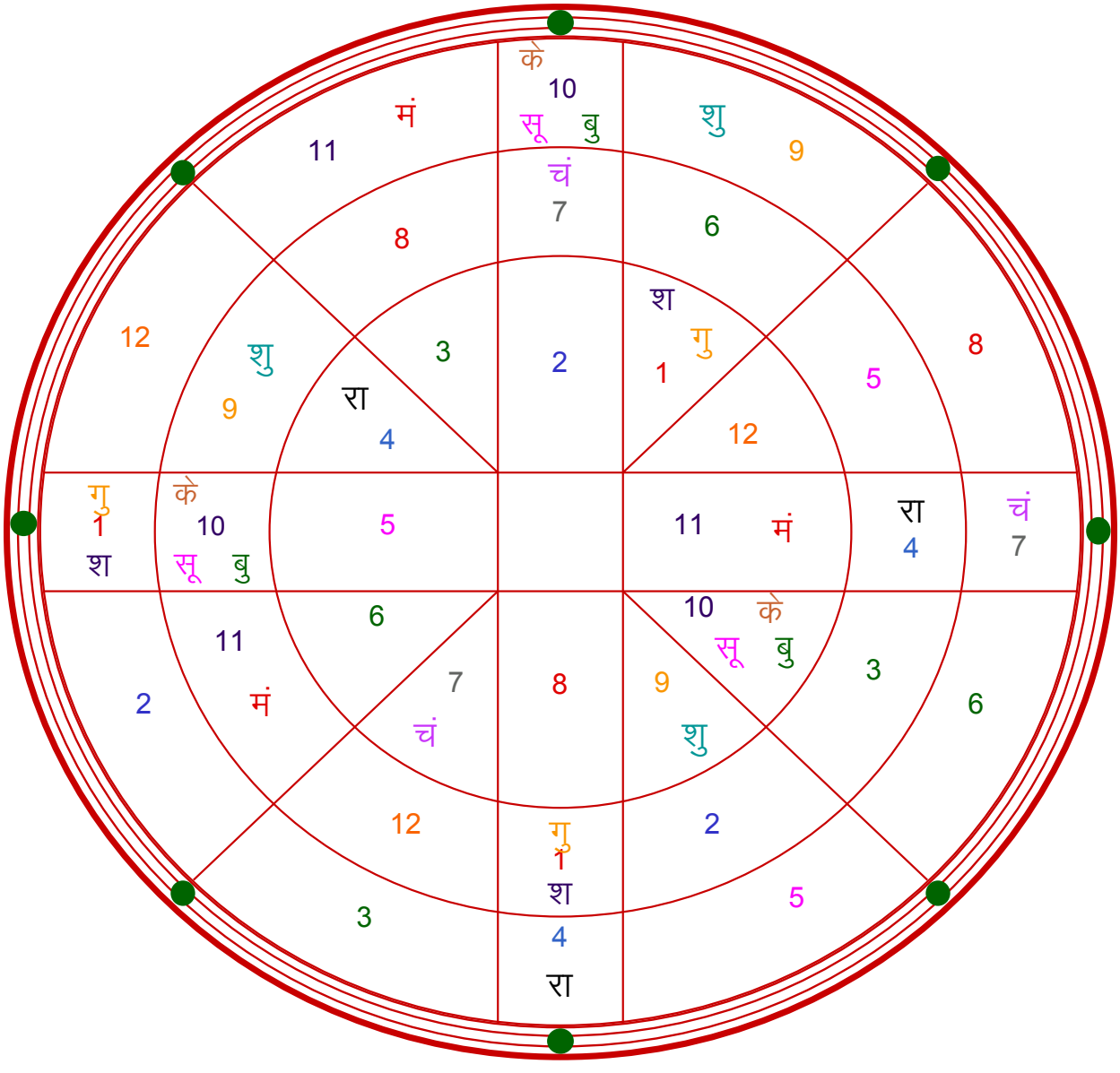

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

sample

सर्वतोभद्र चक्र

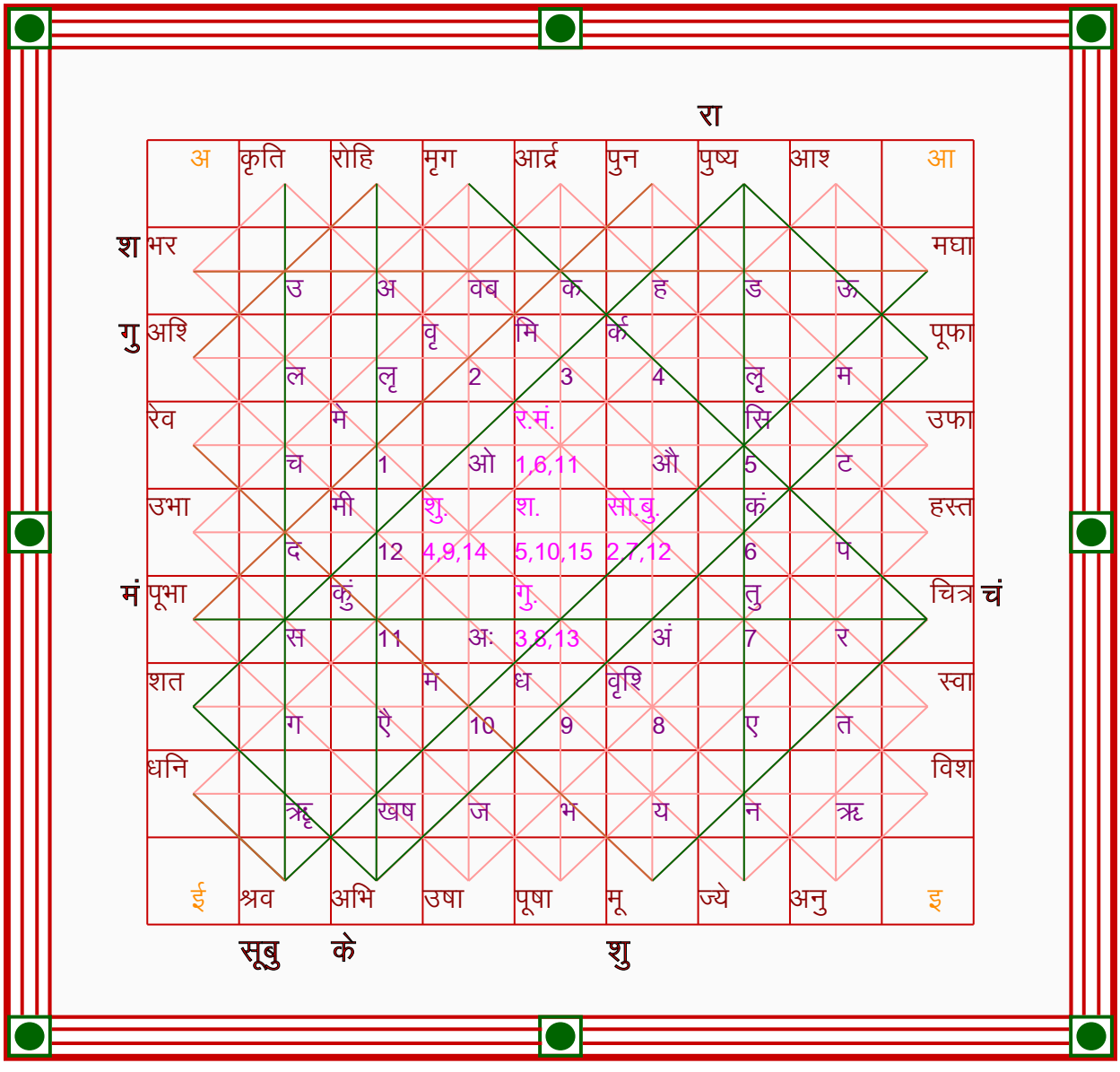

नोटः सर्वतोभद्र चक्र जन्म या गोचर ग्रह का दूसरे ग्रहों पर वेध जानने के लिए सर्वोत्तम चक्र है। ग्रह अपने नक्षत्र से तीन नक्षत्रों में स्थित ग्रहों को वेध करता हैः— अपने से बायीं ओर, दायीं ओर एवं सामने। शुभाशुभ ग्रह बाधा का ज्ञान सटीक फलादेश में विशेष उपयोगी है।

sample

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : मंगल 2 वर्ष 9 मास 25 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मक	12:54:15	शनि	चंद्र	राहु	बुध
चंद्र		तुला	01:17:35	शुक्र	मंगल	बुध	राहु
मंगल		कुंभ	24:11:02	शनि	गुरु	बुध	केतु
बुध		मक	20:36:42	शनि	चंद्र	शुक्र	शुक्र
गुरु		मेष	03:36:22	मंगल	केतु	सूर्य	शुक्र
शुक्र		धनु	09:17:48	गुरु	केतु	गुरु	राहु
शनि		मेष	16:44:54	मंगल	शुक्र	चंद्र	शनि
राहु	व	कर्क	09:55:33	चंद्र	शनि	शुक्र	बुध
केतु	व	मक	09:55:33	शनि	सूर्य	शुक्र	केतु
हर्ष		मक	22:27:56	शनि	चंद्र	शुक्र	बुध
नेप		मक	10:24:04	शनि	चंद्र	चंद्र	गुरु
प्लूटो		वृश्चि	18:29:59	मंगल	बुध	बुध	शनि

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृष	06:01:31	शुक्र	सूर्य	बुध	चंद्र
2	मिथु	01:47:56	बुध	मंगल	बुध	शनि
3	मिथु	25:01:13	बुध	गुरु	बुध	राहु
4	कर्क	19:49:51	चंद्र	बुध	शुक्र	चंद्र
5	सिंह	19:49:35	सूर्य	शुक्र	राहु	सूर्य
6	कन्या	26:49:06	बुध	मंगल	गुरु	बुध
7	वृश्चि	06:01:31	मंगल	शनि	बुध	शुक्र
8	धनु	01:47:56	गुरु	केतु	शुक्र	राहु
9	धनु	25:01:13	गुरु	शुक्र	बुध	मंगल
10	मक	19:49:51	शनि	चंद्र	केतु	शुक्र
11	कुंभ	19:49:35	शनि	राहु	मंगल	शुक्र
12	मीन	26:49:06	गुरु	बुध	गुरु	बुध

के.पी. अयनांश : 23:45:14

फॉरच्युना : मकर 24:24:52

लग्न कुंडली

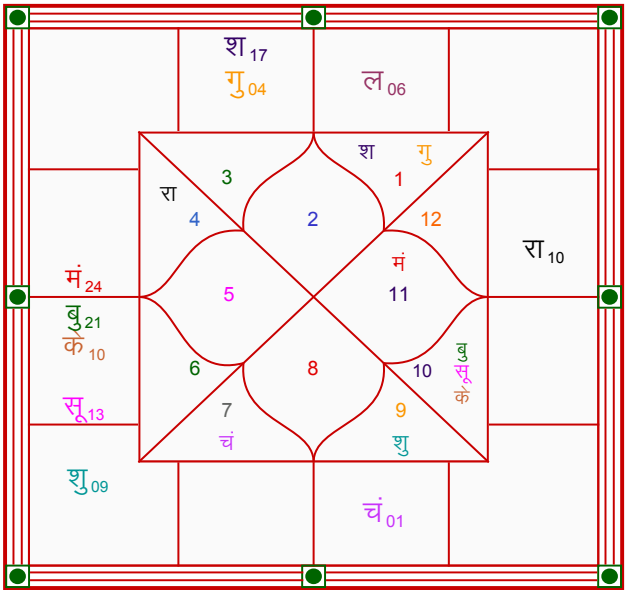

भाव कुंडली

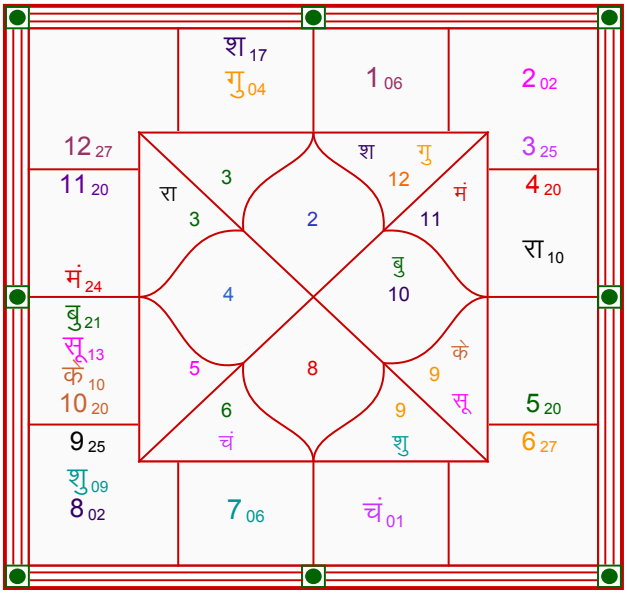

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

sample

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	शुक्र– शनि–
2	बुध–
3	बुध– राहु,
4	सूर्य– चंद्र– बुध–
5	सूर्य– केतु–
6	सूर्य, चंद्र, बुध+
7	चंद्र– मंगल–
8	मंगल– गुरु– शुक्र, शनि,
9	सूर्य, मंगल– गुरु+ शुक्र, केतु+
10	बुध, शनि– राहु–
11	चंद्र, मंगल, शनि– राहु–
12	मंगल+ गुरु, शनि, राहु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	4- 5- 6, 9,
चंद्र	4- 6, 7- 11,
मंगल	7- 8- 9- 11, 12+
बुध	2- 3- 4- 6+ 10,
गुरु	8- 9+ 12,
शुक्र	1- 8, 9,
शनि	1- 8, 10- 11- 12,
राहु	3, 10- 11- 12,
केतु	5- 9+

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	सूर्य
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	मंगल
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	गुरु
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	बुध

कारकत्व–सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	श	शु
2	--	--	--	बु
3	--	रा	--	बु
4	--	--	सू बु	चं
5	--	--	के	सू
6	सू बु	चं	--	बु
7	--	--	चं	मं
8	श	शु	मं	गु
9	गु शु के	सू के	मं	गु
10	--	बु	रा	श
11	चं	मं	रा	श
12	मं रा	गु श	मं	गु

ग्रह कारक सारिणी–1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	5	1	मकर	9
चंद्र	4	10	तुला	6
मंगल	7	2,6	कुम्भ	11
बुध	2,3,6	4,12	मकर	10
गुरु	8,9,12	3	मेष	12
शुक्र	1	5,9	धनु	8
शनि	10,11	7	मेष	12
राहु	---	11	कर्क	3
केतु	---	8	मकर	9

ग्रह कारक सारिणी–2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	4	10	6	---	11	3
चंद्र	7	2,6	11	2,3,6	4,12	10
मंगल	8,9,12	3	12	2,3,6	4,12	10
बुध	4	10	6	1	5,9	8
गुरु	---	8	9	5	1	9
शुक्र	---	8	9	8,9,12	3	12
शनि	1	5,9	8	4	10	6
राहु	10,11	7	12	1	5,9	8
केतु	5	1	9	1	5,9	8

sample

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	282.80	181.19	324.08	290.51	3.51	249.20	16.65	99.83	279.83	292.37	280.30	228.40
सूर्य	––	––	––	युति	––	––	चतु	सप्त	युति	युति	युति	––
282.80	0.00	0.00	0.00	6.92	0.00	0.00	1.60	9.52	9.52	5.39	9.66	0.00
चंद्र	––	––	––	––	सप्त	––	––	––	––	––	––	––
181.19	0.00	0.00	0.00	0.00	9.71	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	––	8वां	––	––	नवां	––	––	अष्टां	––	––	––	––
324.08	0.00	7.35	0.00	0.00	0.62	0.00	0.00	0.39	0.00	0.00	0.00	0.00
बुध	युति	––	––	––	पंचा	––	चतु	सप्त	युति	युति	युति	––
290.51	6.92	0.00	0.00	0.00	0.01	0.00	1.59	4.37	4.37	9.81	4.81	0.00
गुरु	––	सप्त	––	––	––	9वां	युति	––	––	––	––	––
3.51	0.00	9.71	0.00	0.00	0.00	8.28	1.93	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शुक्र	––	––	––	––	पंच	––	––	––	––	––	––	––
249.20	0.00	0.00	0.00	0.00	0.24	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	10वा	––	––	10वा	युति	––	––	––	10वा	10वा	10वा	––
16.65	9.20	0.00	0.00	9.19	1.93	0.00	0.00	0.00	7.55	8.26	7.87	0.00
राहु	सप्त	––	––	सप्त	––	षष्ठ	––	––	सप्त	सप्त	सप्त	––
99.83	9.52	0.00	0.00	4.37	0.00	0.55	0.00	0.00	10.00	2.55	9.99	0.00
केतु	युति	––	अष्ट	युति	––	––	––	सप्त	––	युति	युति	––
279.83	9.52	0.00	0.39	4.37	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	2.55	9.99	0.00
हर्ष	युति	––	––	युति	पंचा	––	चतु	सप्त	युति	––	युति	––
292.37	5.39	0.00	0.00	9.81	0.22	0.00	0.22	2.55	2.55	0.00	3.03	0.00
नेप	युति	––	––	युति	––	––	––	सप्त	युति	युति	––	––
280.30	9.66	0.00	0.00	4.81	0.00	0.00	0.00	9.99	9.99	3.03	0.00	0.00
प्लूटो	तृती	––	चतु	तृती	अष्टां	––	––	––	––	तृती	––	––
228.40	0.32	0.00	0.25	2.55	0.99	0.00	0.00	0.00	0.00	1.52	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

sample

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	35.92	60.53	85.13	109.73	145.13	180.53	215.92	240.53	265.13	289.73	325.13	0.53
सूर्य	––	––	––	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––	––
282.80	0.00	0.00	0.00	7.48	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.48	0.00	0.00
चंद्र	––	––	––	––	––	युति	––	तृती	––	––	––	सप्त
181.19	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.98	0.00	2.95	0.00	0.00	0.00	9.98
मंगल	पंचा	4था	––	––	सप्त	8वां	––	––	––	––	युति	––
324.08	0.97	7.81	0.00	0.00	9.94	7.81	0.00	0.00	0.00	0.00	9.94	0.00
बुध	––	––	––	––	––	––	––	––	––	युति	––	––
290.51	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.97	0.00	0.00
गुरु	––	तृती	––	5वां	––	सप्त	––	9वां	––	––	––	युति
3.51	0.00	2.13	0.00	1.28	0.00	9.52	0.00	9.52	0.00	0.00	0.00	9.52
शुक्र	––	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––	नवां	––	––
249.20	0.00	6.15	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.15	0.00	0.67	0.00	0.00
शनि	––	––	3रा	चतु	––	––	––	––	––	10वा	––	––
16.65	0.00	0.00	6.31	2.07	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.48	0.00	0.00
राहु	––	––	युति	युति	अष्ट	––	पंच	––	सप्त	सप्त	––	––
99.83	0.00	0.00	0.32	5.09	0.89	0.00	1.57	0.00	0.32	5.09	0.00	0.00
केतु	पंच	––	सप्त	सप्त	––	––	––	––	––	युति	अष्ट	––
279.83	1.57	0.00	0.32	5.09	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.09	0.89	0.00
हर्ष	––	––	––	सप्त	––	––	––	––	––	––	––	––
292.37	0.00	0.00	0.00	9.62	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	पंच	––	––	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––	––
280.30	1.24	0.00	0.00	5.51	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.51	0.00	0.00
प्लूटो	सप्त	सप्त	––	––	––	––	युति	युति	––	तृती	––	––
228.40	2.61	2.96	0.00	0.00	0.00	0.00	2.61	2.96	0.00	2.82	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

sample

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	35.92	61.70	84.92	109.73	139.73	176.72	215.92	241.70	264.92	289.73	319.73	356.72
सूर्य	––	––	––	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––	––
282.80	0.00	0.00	0.00	7.48	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.48	0.00	0.00
चंद्र	––	––	––	––	––	युति	––	तृती	––	––	––	सप्त
181.19	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.92	0.00	2.97	0.00	0.00	0.00	8.92
मंगल	पंचा	4था	––	––	सप्त	8वां	––	––	––	––	युति	––
324.08	0.97	6.99	0.00	0.00	8.98	9.62	0.00	0.00	0.00	0.00	8.98	0.00
बुध	––	––	––	––	––	––	––	––	––	युति	––	––
290.51	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.97	0.00	0.00
गुरु	––	तृती	––	5वां	––	सप्त	––	9वां	––	––	––	युति
3.51	0.00	2.67	0.00	1.28	0.00	7.58	0.00	9.82	0.00	0.00	0.00	7.58
शुक्र	––	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––	नवां	––	––
249.20	0.00	7.07	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.07	0.00	0.67	0.00	0.00
शनि	––	3रा	3रा	चतु	पंच	––	––	––	––	10वा	––	––
16.65	0.00	0.05	6.48	2.07	2.08	0.00	0.00	0.00	0.00	9.48	0.00	0.00
राहु	––	––	युति	युति	नवां	––	पंच	––	सप्त	सप्त	––	––
99.83	0.00	0.00	0.10	5.09	0.99	0.00	1.57	0.00	0.10	5.09	0.00	0.00
केतु	पंच	––	सप्त	सप्त	––	––	––	––	––	युति	नवां	––
279.83	1.57	0.00	0.10	5.09	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.09	0.99	0.00
हर्ष	––	––	––	सप्त	––	––	––	––	––	––	––	तृती
292.37	0.00	0.00	0.00	9.62	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.25
नेप	पंच	––	––	सप्त	––	––	––	––	––	युति	––	––
280.30	1.24	0.00	0.00	5.51	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.51	0.00	0.00
प्लूटो	सप्त	सप्त	––	––	––	––	युति	युति	––	तृती	चतु	––
228.40	2.61	1.77	0.00	0.00	0.00	0.00	2.61	1.77	0.00	2.82	2.82	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

sample

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

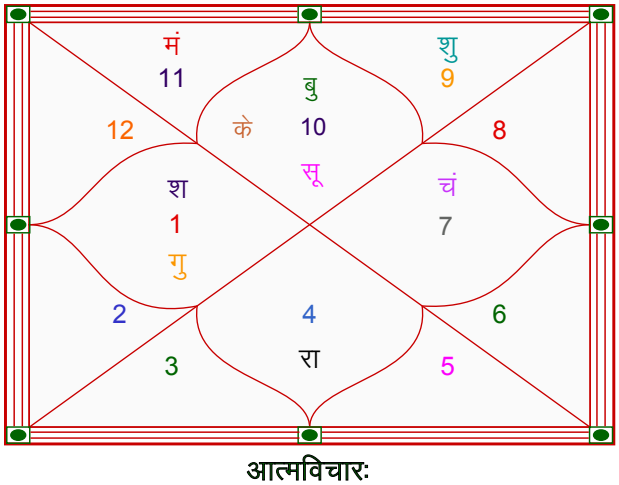

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

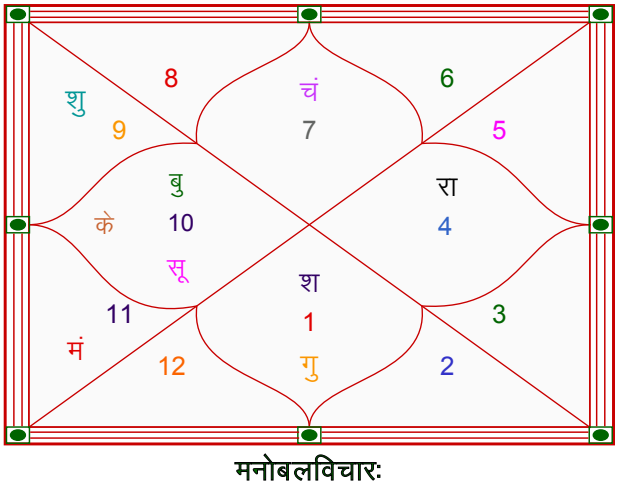

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

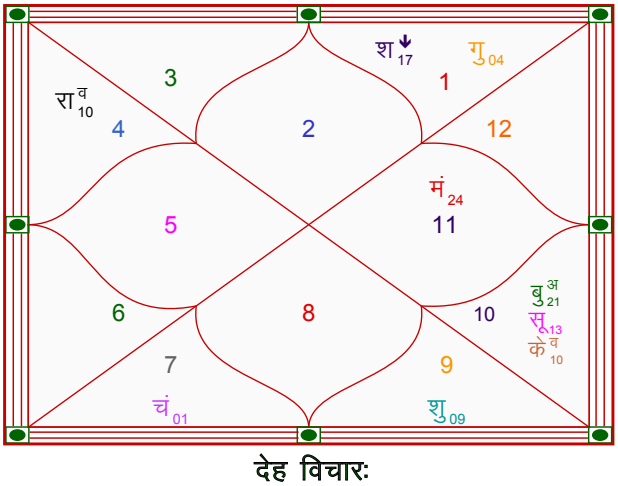

देह विचारः

होरा कुंडली

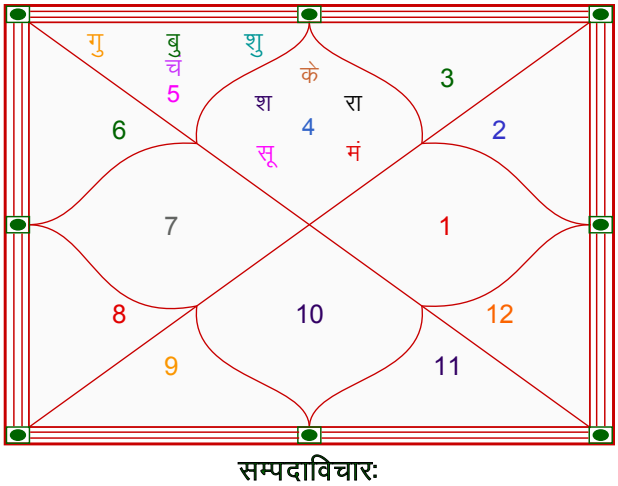

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

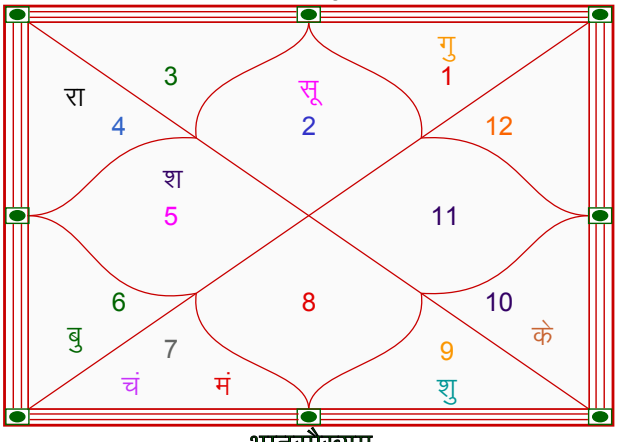

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

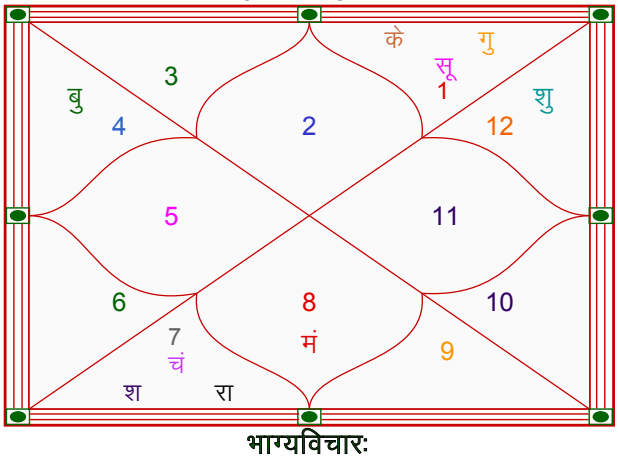

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

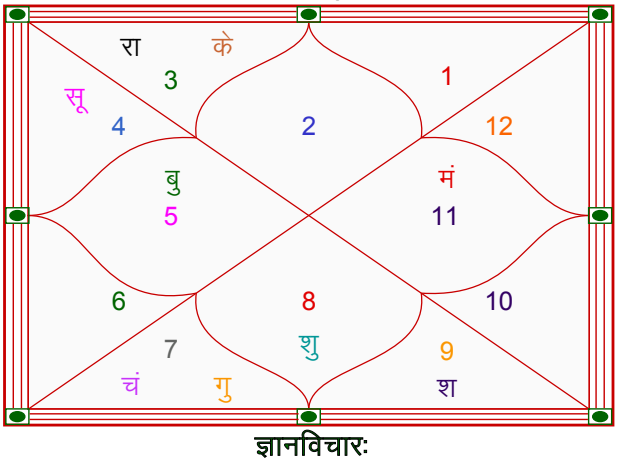

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

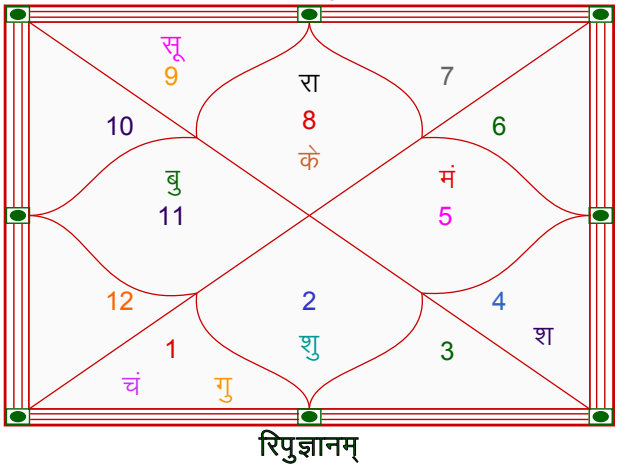

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

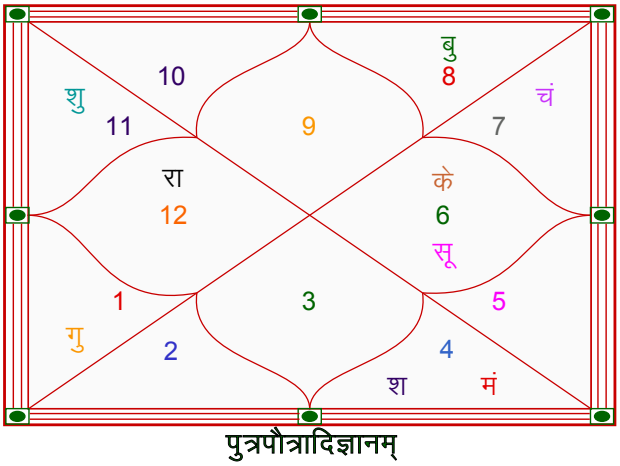

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

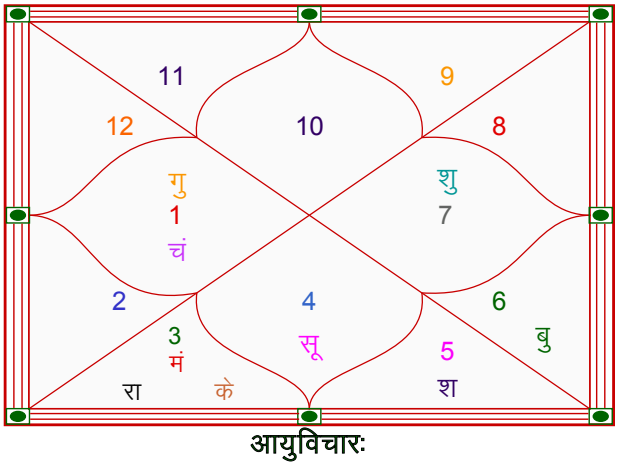

आयुविचारः

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

sample

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

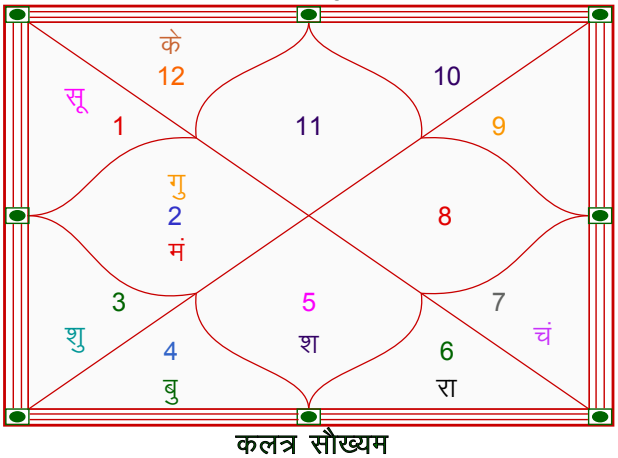

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

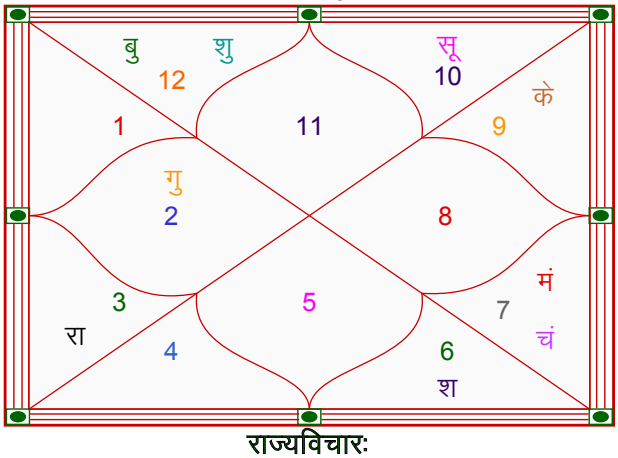

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

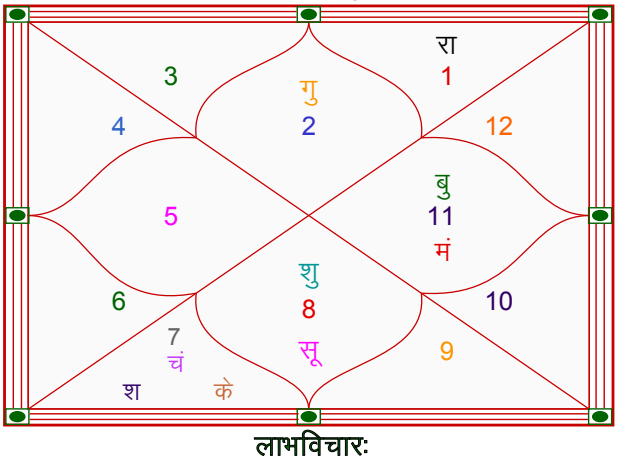

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

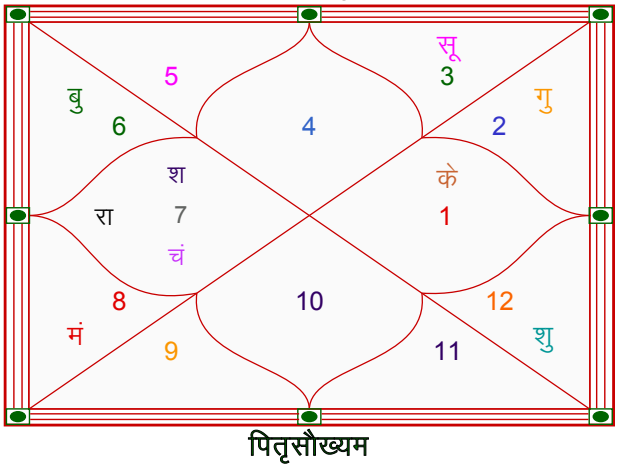

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

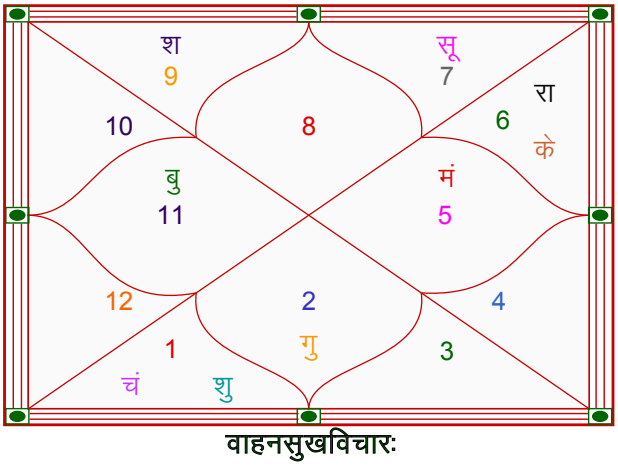

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

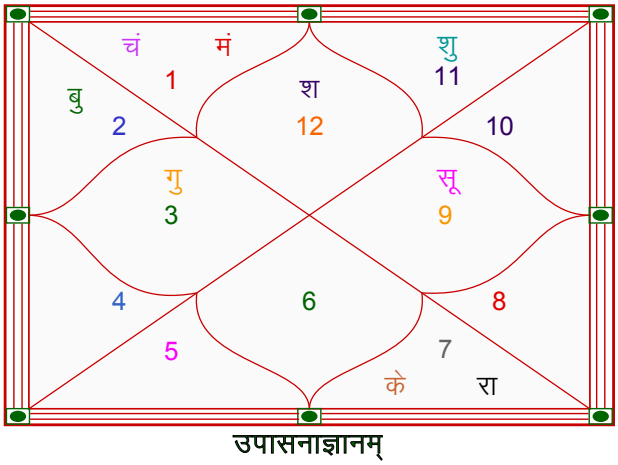

उपासनाज्ञानम्

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

sample

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

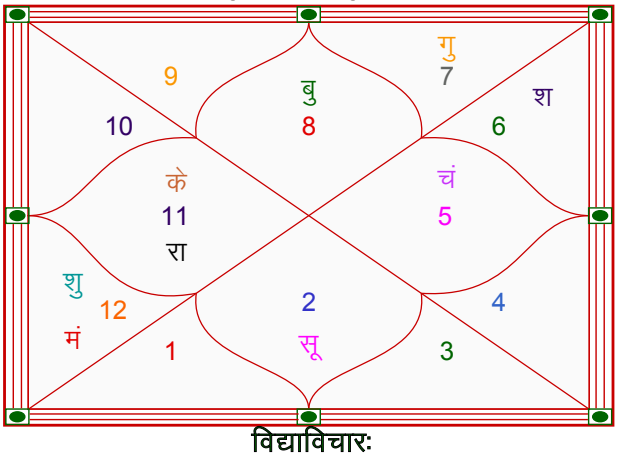

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

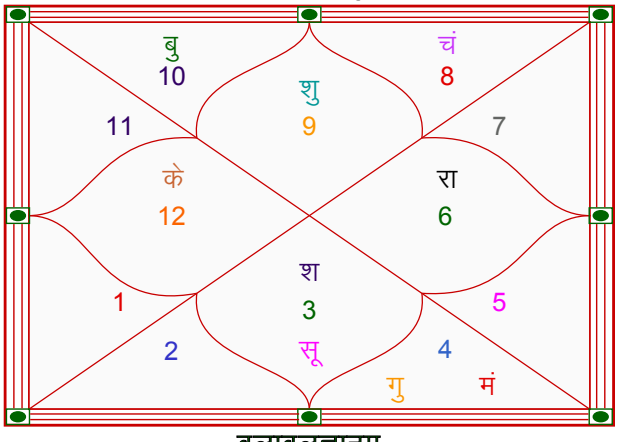

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

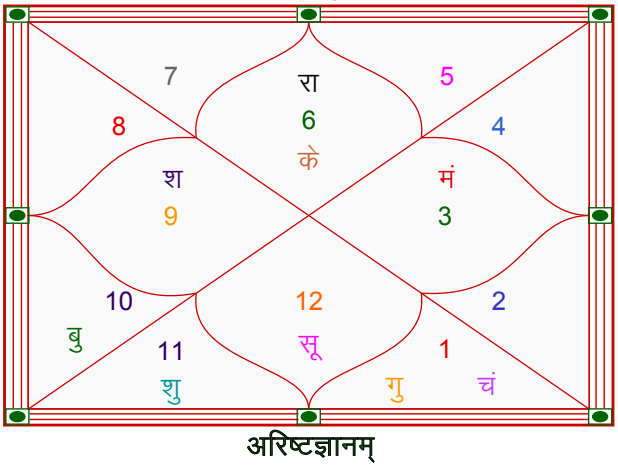

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

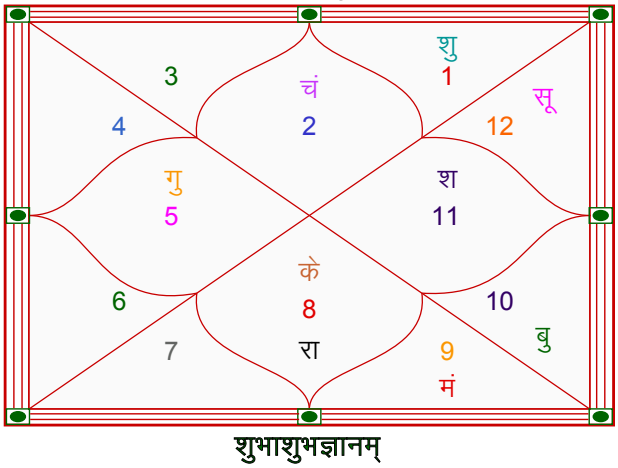

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

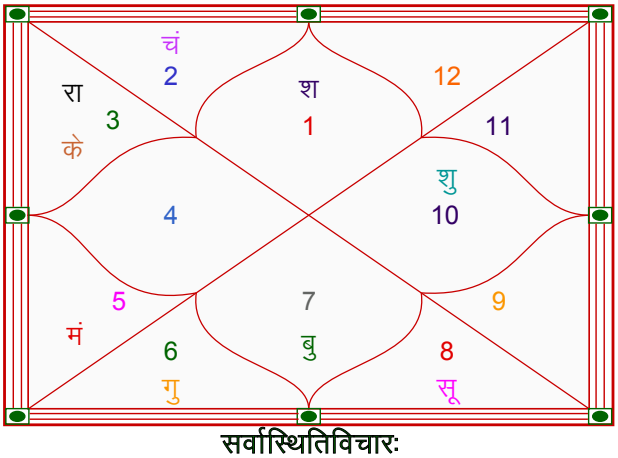

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

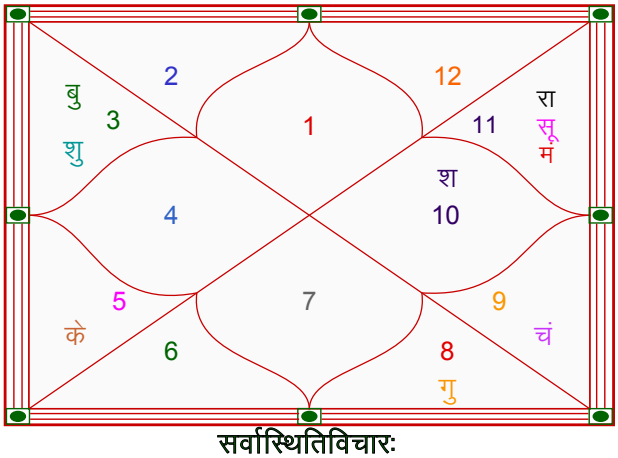

सर्वास्थितिविचारः

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

sample

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	वृष	मक	तुला	कुंभ	मक	मेष	धनु	मेष	कर्क	मक
होरा	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	वृष	वृष	तुला	तुला	कन्या	मेष	धनु	सिंह	कर्क	मक
चतुर्थांश	वृष	मेष	तुला	वृश्चि	कर्क	मेष	मीन	तुला	तुला	मेष
सप्तमांश	धनु	कन्या	तुला	कर्क	वृश्चि	मेष	कुंभ	कर्क	मीन	कन्या
नवमांश	कुंभ	मेष	तुला	वृष	कर्क	वृष	मिथु	सिंह	कन्या	मीन
दशमांश	कुंभ	मक	तुला	तुला	मीन	वृष	मीन	कन्या	मिथु	धनु
द्वादशांश	कर्क	मिथु	तुला	वृश्चि	कन्या	वृष	मीन	तुला	तुला	मेष
षोडशांश	वृश्चि	तुला	मेष	सिंह	कुंभ	वृष	मेष	धनु	कन्या	कन्या
विंशांश	मीन	धनु	मेष	मेष	वृष	मिथु	कुंभ	मीन	तुला	तुला
चतुर्विंशांश	वृश्चि	वृष	सिंह	मीन	वृश्चि	तुला	मीन	कन्या	कुंभ	कुंभ
सप्तविंशांश	धनु	मिथु	वृश्चि	कर्क	मक	कर्क	धनु	मिथु	कन्या	मीन
त्रिंशांश	कन्या	मीन	मेष	मिथु	मक	मेष	कुंभ	धनु	कन्या	कन्या
खवेदांश	वृष	मीन	वृष	धनु	मक	सिंह	मेष	कुंभ	वृश्चि	वृश्चि
अक्षवेदांश	मेष	वृश्चि	वृष	सिंह	तुला	कन्या	मक	मेष	मिथु	मिथु
षष्ट्यंश	मेष	कुंभ	धनु	कुंभ	मिथु	वृश्चि	मिथु	मक	कुंभ	सिंह

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 –––	1 –––	1 –––	2 भेदक
चन्द्र	0 –––	0 –––	0 –––	2 भेदक
मंगल	1 –––	1 –––	1 –––	3 कुसुम
बुध	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	3 कुसुम
गुरु	0 –––	0 –––	0 –––	1 –––
शुक्र	1 –––	1 –––	2 पारिजात	4 नागपुष्प
शनि	1 –––	1 –––	2 पारिजात	4 नागपुष्प
राहु	2 किंसुक	2 किंसुक	4 गोपुर	6 केरल
केतु	1 –––	1 –––	2 पारिजात	3 कुसुम

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	12.90	14.90	14.75	14.75	13.45	10.20	9.35	9.10	11.90
सप्तवर्ग	12.33	14.90	14.13	14.63	13.78	10.30	8.73	9.80	11.40
दशवर्ग	11.35	12.03	14.48	16.25	14.10	11.85	11.90	11.48	9.43
षोडशवर्ग	12.58	12.03	15.15	15.40	13.18	12.38	11.95	10.68	10.20

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

sample

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	–––	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	–––	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	–––	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	–––	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	–––	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	–––	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	–––	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	–––	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	–––

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	–––	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	–––	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	–––	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	–––	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
गुरु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	–––	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र
शुक्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	–––	शत्रु	शत्रु	मित्र
शनि	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	–––	मित्र	मित्र
राहु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	–––	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	–––

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	–––	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	–––	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	सम
मंगल	अतिमित्र	सम	–––	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	सम	मित्र	–––	मित्र	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	सम	अतिमित्र	सम	–––	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	–––	सम	सम	अतिमित्र
शनि	सम	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	शत्रु	सम	–––	अतिमित्र	सम
राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	सम	अतिमित्र	–––	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	–––

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	31	11	51	18	30	24	1
सप्तवर्गज बल	90	101	98	120	116	56	38
ओजयुग्मक बल	15	0	15	0	15	0	30
केन्द्र बल	15	15	60	15	15	30	15
द्रेष्काण बल	0	0	0	0	15	0	15
कुल स्थान बल	151	127	224	153	191	110	99
कुल दिग्बल	58	36	49	25	49	14	6
नतोन्नत बल	58	2	2	60	58	58	2
पक्ष बल	26	68	26	26	34	34	26
त्रिभाग बल	60	0	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	15	0	0	0
मास बल	0	0	30	0	0	0	0
वार बल	0	0	0	0	45	0	0
होरा बल	0	60	0	0	0	0	0
अयन बल	12	43	24	51	44	0	11
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	156	173	82	153	240	92	39
कुल चेष्टाबल	0	0	17	21	29	21	33
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	9	-18	7	-3	6	10	-5
कुल षट्बल	433	369	396	374	549	289	180
रूप षट्बल	7.2	6.2	6.6	6.2	9.2	4.8	3.0
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.4	1.0	1.3	0.9	1.4	0.9	0.6
संबंधित पद	1	4	3	5	2	6	7

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	19.44	18.95	29.63	19.34	29.16	22.65	6.05
कष्ट फल	37.27	35.93	19.31	40.60	30.83	37.29	40.07

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	289	374	374	369	433	289	396	549	549	180	180	396
भावदिग्बल	30	50	40	60	10	10	60	10	50	0	40	40
भावदृष्टि बल	35	33	33	81	57	54	32	23	52	3	10	39
कुल भाव बल	354	457	447	510	500	353	488	582	652	183	230	475
रूप भाव बल	5.9	7.6	7.5	8.5	8.3	5.9	8.1	9.7	10.9	3.0	3.8	7.9
संबंधित पद	9	7	8	3	4	10	5	2	1	12	11	6

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

sample

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	वृष	05:55:29	––	––	कृतिका	3	3
गुलिक	गु	मेष	02:38:01	––	––	अश्विनी	1	1
काल	का	मेष	28:17:26	––	––	कृतिका	1	3
मृत्यु	मृ	मिथु	09:10:37	––	––	आर्द्रा	1	6
यमघंटक	यम	कुंभ	06:41:35	––	––	शतभिषा	1	24
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मिथु	26:40:01	––	मूल	पुनर्वसु	3	7
धूम	धू	वृष	26:08:13	––	––	मृगशिरा	1	5
व्यतिपात	व्य	कुंभ	03:51:47	––	––	धनिष्ठा	4	23
परिवेश	परि	सिंह	03:51:47	––	––	मघा	2	10
इन्द्रचाप	इ	वृश्चि	26:08:13	––	––	ज्येष्ठा	3	18
उपकेतु	उप	धनु	12:48:13	––	––	मूल	4	19
मांदी	मांदी	मेष	21:36:04	––	––	भरणी	3	2

प्राणपद	:	वृश्चि	19:47:09	कारकाँश लग्न	:	वृष	06:45:04
भाव लग्न	:	सिंह	03:16:26	होरा लग्न	:	वृश्चि	00:37:23
घटी लग्न	:	मीन	29:32:57	वर्णद लग्न	:	धनु	06:32:52

उपग्रह कुंडली

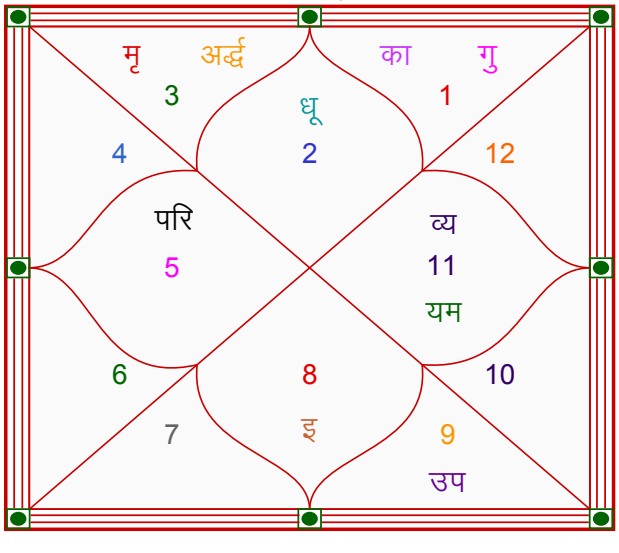

आरूढ़ कुंडली

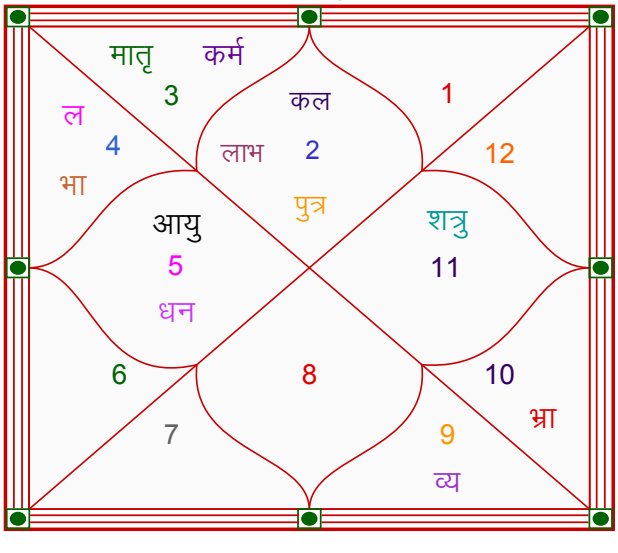

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

षन्नाडी चक्र

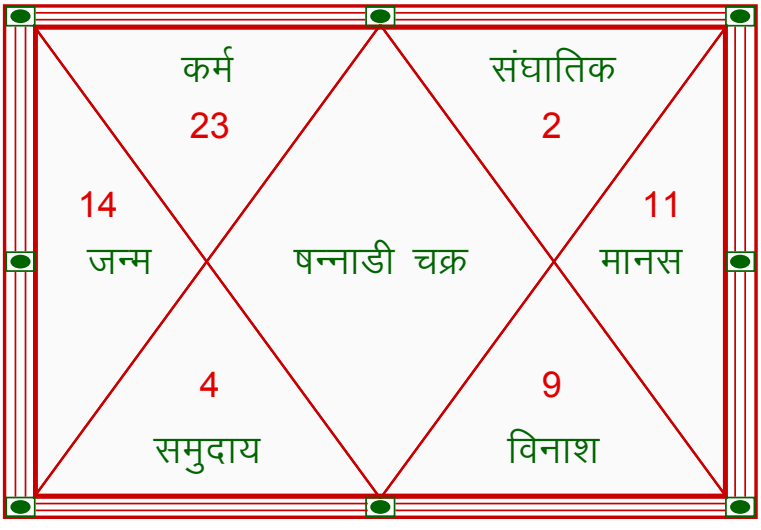

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
गुरु	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	4
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	4
लग्न	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	6
कुल	**2**	**5**	**4**	**3**	**4**	**2**	**4**	**5**	**4**	**5**	**5**	**5**	**48**

चंद्र का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
गुरु	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
मंगल	0	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	6
शुक्र	1	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	7
बुध	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	4
कुल	**6**	**4**	**2**	**2**	**4**	**6**	**5**	**2**	**5**	**6**	**5**	**2**	**49**

मंगल का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	7
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	5
शुक्र	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	4
बुध	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	4
चंद्र	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	3
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	5
कुल	**4**	**6**	**1**	**5**	**2**	**3**	**2**	**2**	**4**	**5**	**3**	**2**	**39**

बुध का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	6
लग्न	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	7
कुल	**4**	**5**	**6**	**2**	**6**	**3**	**3**	**4**	**4**	**5**	**6**	**6**	**54**

गुरू का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
सूर्य	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	9
शुक्र	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	6
बुध	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	5
लग्न	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
कुल	**5**	**5**	**5**	**2**	**6**	**6**	**5**	**6**	**1**	**5**	**6**	**4**	**56**

शुक्र का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	7
गुरु	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	5
मंगल	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चंद्र	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	9
लग्न	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	8
कुल	**7**	**6**	**4**	**3**	**2**	**4**	**4**	**4**	**6**	**4**	**3**	**5**	**52**

शनि का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	6
सूर्य	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
शुक्र	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	6
चंद्र	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	3
लग्न	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
कुल	**2**	**2**	**3**	**3**	**6**	**3**	**4**	**4**	**3**	**2**	**4**	**3**	**39**

लग्न का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	6
गुरु	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	9
मंगल	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	5
सूर्य	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	7
बुध	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	**1**	**3**	**6**	**4**	**3**	**4**	**3**	**5**	**4**	**6**	**4**	**6**	**49**

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	2	3	3	6	3	4	4	3	2	4	3	39
गुरु	5	5	5	2	6	6	5	6	1	5	6	4	56
मंगल	1	5	2	3	2	2	4	5	3	2	4	6	39
सूर्य	3	4	2	4	5	4	5	5	5	2	5	4	48
शुक्र	2	4	4	4	6	4	3	5	7	6	4	3	52
बुध	2	6	3	3	4	4	5	6	6	4	5	6	54
चंद्र	5	2	5	6	5	2	6	4	2	2	4	6	49
बिन्दु	20	28	24	25	34	25	32	35	27	23	32	32	337
रेखा	36	28	32	31	22	31	24	21	29	33	24	24	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	0	4	1	1	1	1	0	1	0	9
गुरु	4	0	0	0	5	1	0	4	0	0	1	2	17
मंगल	0	3	0	0	1	0	2	2	2	0	2	3	15
सूर्य	0	2	0	0	2	2	3	1	2	0	3	0	15
शुक्र	0	0	1	1	4	0	0	2	5	2	1	0	16
बुध	0	2	0	0	2	0	2	3	4	0	2	3	18
चंद्र	3	0	1	2	3	0	2	0	0	0	0	2	13
रेखा	7	7	2	3	21	4	10	13	14	2	10	10	103

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	0	4	1	1	1	1	0	1	0	9
गुरु	4	0	0	0	5	1	0	0	0	0	1	2	13
मंगल	0	1	0	0	1	0	2	2	2	0	2	1	11
सूर्य	0	0	0	0	2	2	3	1	2	0	3	0	13
शुक्र	0	0	1	1	4	0	0	2	5	2	1	0	16
बुध	0	0	0	0	2	0	2	3	4	0	2	0	13
चंद्र	3	0	1	2	3	0	2	0	0	0	0	2	13
रेखा	7	1	2	3	21	4	10	9	14	2	10	5	88

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	110	105	102	116	118	134	80
ग्रह पिंड	53	55	40	54	68	63	20
शोध्य पिंड	163	160	142	170	186	197	100

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

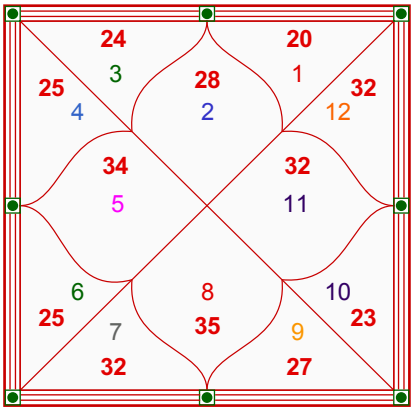

सूर्य का अष्टकवर्ग

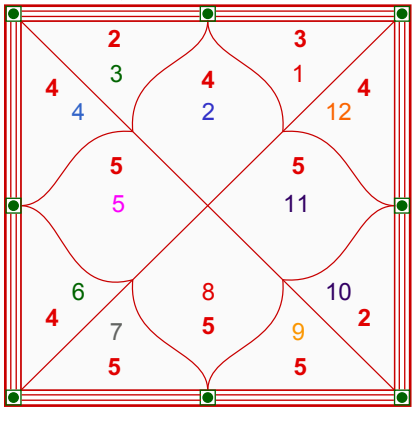

चंद्र का अष्टकवर्ग

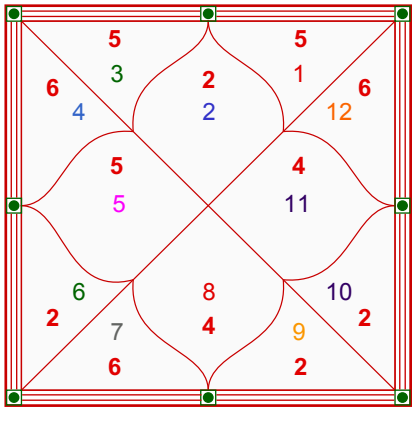

मंगल का अष्टकवर्ग

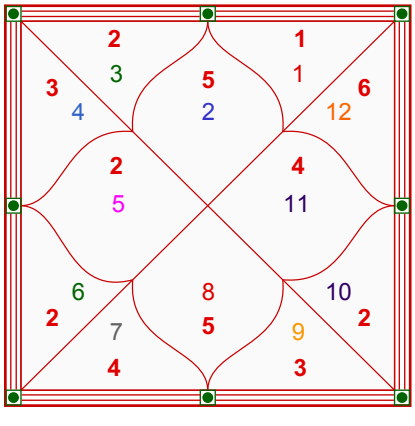

बुध का अष्टकवर्ग

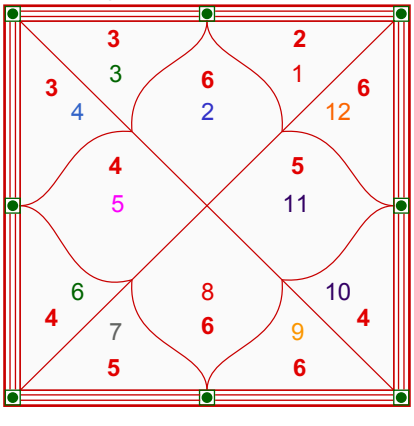

गुरू का अष्टकवर्ग

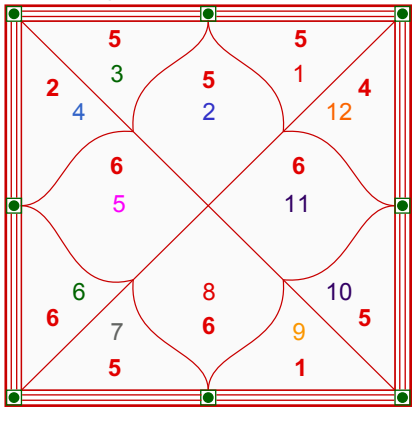

शुक्र का अष्टकवर्ग

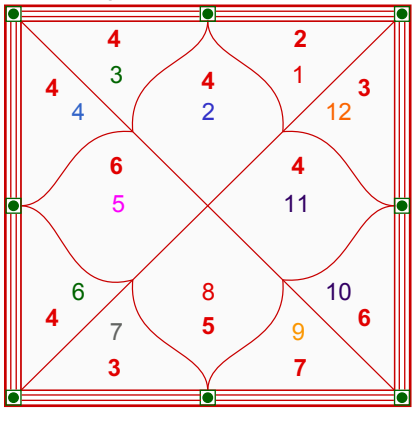

शनि का अष्टकवर्ग

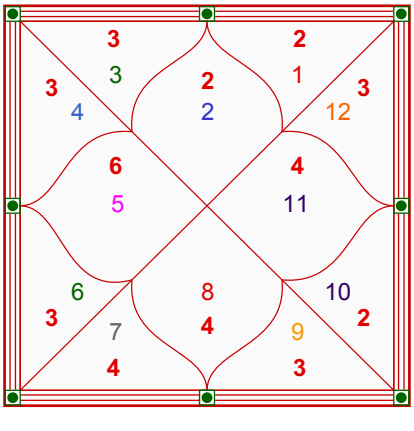

लग्न का अष्टकवर्ग

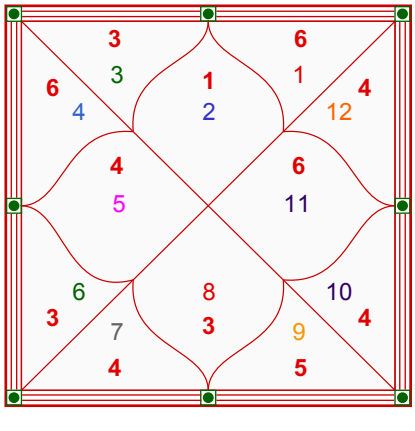

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 2 वर्ष 10 मास 14 दिन

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
27/01/2000		12/12/2002		11/12/2020		11/12/2036		12/12/2055	
12/12/2002		11/12/2020		11/12/2036		12/12/2055		11/12/2072	
	00/00/0000	राहु	24/08/2005	गुरु	29/01/2023	शनि	15/12/2039	बुध	10/05/2058
	00/00/0000	गुरु	18/01/2008	शनि	12/08/2025	बुध	24/08/2042	केतु	07/05/2059
	00/00/0000	शनि	23/11/2010	बुध	18/11/2027	केतु	03/10/2043	शुक्र	07/03/2062
	27/01/2000	बुध	12/06/2013	केतु	24/10/2028	शुक्र	03/12/2046	सूर्य	11/01/2063
बुध	09/06/2000	केतु	30/06/2014	शुक्र	25/06/2031	सूर्य	15/11/2047	चंद्र	12/06/2064
केतु	05/11/2000	शुक्र	30/06/2017	सूर्य	12/04/2032	चंद्र	15/06/2049	मंगल	09/06/2065
शुक्र	05/01/2002	सूर्य	25/05/2018	चंद्र	12/08/2033	मंगल	25/07/2050	राहु	27/12/2067
सूर्य	13/05/2002	चंद्र	24/11/2019	मंगल	19/07/2034	राहु	31/05/2053	गुरु	03/04/2070
चंद्र	12/12/2002	मंगल	11/12/2020	राहु	11/12/2036	गुरु	12/12/2055	शनि	11/12/2072

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
11/12/2072		12/12/2079		12/12/2099		12/12/2105		13/12/2115	
12/12/2079		12/12/2099		12/12/2105		13/12/2115		00/00/0000	
केतु	09/05/2073	शुक्र	12/04/2083	सूर्य	01/04/2100	चंद्र	13/10/2106	मंगल	10/05/2116
शुक्र	09/07/2074	सूर्य	12/04/2084	चंद्र	30/09/2100	मंगल	14/05/2107	राहु	29/05/2117
सूर्य	14/11/2074	चंद्र	11/12/2085	मंगल	05/02/2101	राहु	12/11/2108	गुरु	05/05/2118
चंद्र	15/06/2075	मंगल	11/02/2087	राहु	31/12/2101	गुरु	14/03/2110	शनि	13/06/2119
मंगल	12/11/2075	राहु	10/02/2090	गुरु	19/10/2102	शनि	13/10/2111	बुध	28/01/2120
राहु	29/11/2076	गुरु	11/10/2092	शनि	01/10/2103	बुध	14/03/2113		00/00/0000
गुरु	05/11/2077	शनि	12/12/2095	बुध	06/08/2104	केतु	13/10/2113		00/00/0000
शनि	15/12/2078	बुध	12/10/2098	केतु	12/12/2104	शुक्र	13/06/2115		00/00/0000
बुध	12/12/2079	केतु	12/12/2099	शुक्र	12/12/2105	सूर्य	13/12/2115		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 2 वर्ष 10 मा 23 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
27/01/2000		09/06/2000		05/11/2000		05/01/2002		13/05/2002	
09/06/2000		05/11/2000		05/01/2002		13/05/2002		12/12/2002	
	00/00/0000	केतु	17/06/2000	शुक्र	15/01/2001	सूर्य	11/01/2002	चंद्र	30/05/2002
	00/00/0000	शुक्र	12/07/2000	सूर्य	05/02/2001	चंद्र	22/01/2002	मंगल	12/06/2002
	00/00/0000	सूर्य	20/07/2000	चंद्र	13/03/2001	मंगल	29/01/2002	राहु	14/07/2002
	00/00/0000	चंद्र	01/08/2000	मंगल	06/04/2001	राहु	18/02/2002	गुरु	11/08/2002
	00/00/0000	मंगल	10/08/2000	राहु	09/06/2001	गुरु	07/03/2002	शनि	14/09/2002
	27/01/2000	राहु	01/09/2000	गुरु	05/08/2001	शनि	27/03/2002	बुध	14/10/2002
राहु	24/02/2000	गुरु	21/09/2000	शनि	12/10/2001	बुध	14/04/2002	केतु	27/10/2002
गुरु	12/04/2000	शनि	15/10/2000	बुध	11/12/2001	केतु	21/04/2002	शुक्र	01/12/2002
शनि	09/06/2000	बुध	05/11/2000	केतु	05/01/2002	शुक्र	13/05/2002	सूर्य	12/12/2002

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
12/12/2002		24/08/2005		18/01/2008		23/11/2010		12/06/2013	
24/08/2005		18/01/2008		23/11/2010		12/06/2013		30/06/2014	
राहु	09/05/2003	गुरु	19/12/2005	शनि	30/06/2008	बुध	04/04/2011	केतु	04/07/2013
गुरु	17/09/2003	शनि	07/05/2006	बुध	25/11/2008	केतु	29/05/2011	शुक्र	06/09/2013
शनि	20/02/2004	बुध	08/09/2006	केतु	25/01/2009	शुक्र	31/10/2011	सूर्य	25/09/2013
बुध	09/07/2004	केतु	29/10/2006	शुक्र	17/07/2009	सूर्य	17/12/2011	चंद्र	27/10/2013
केतु	05/09/2004	शुक्र	24/03/2007	सूर्य	07/09/2009	चंद्र	03/03/2012	मंगल	19/11/2013
शुक्र	16/02/2005	सूर्य	07/05/2007	चंद्र	03/12/2009	मंगल	26/04/2012	राहु	15/01/2014
सूर्य	06/04/2005	चंद्र	19/07/2007	मंगल	02/02/2010	राहु	13/09/2012	गुरु	07/03/2014
चंद्र	27/06/2005	मंगल	08/09/2007	राहु	08/07/2010	गुरु	15/01/2013	शनि	07/05/2014
मंगल	24/08/2005	राहु	18/01/2008	गुरु	23/11/2010	शनि	12/06/2013	बुध	30/06/2014

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
30/06/2014		30/06/2017		25/05/2018		24/11/2019		11/12/2020	
30/06/2017		25/05/2018		24/11/2019		11/12/2020		29/01/2023	
शुक्र	30/12/2014	सूर्य	17/07/2017	चंद्र	09/07/2018	मंगल	16/12/2019	गुरु	25/03/2021
सूर्य	23/02/2015	चंद्र	13/08/2017	मंगल	10/08/2018	राहु	12/02/2020	शनि	26/07/2021
चंद्र	25/05/2015	मंगल	01/09/2017	राहु	01/11/2018	गुरु	03/04/2020	बुध	14/11/2021
मंगल	28/07/2015	राहु	20/10/2017	गुरु	13/01/2019	शनि	02/06/2020	केतु	29/12/2021
राहु	08/01/2016	गुरु	03/12/2017	शनि	09/04/2019	बुध	27/07/2020	शुक्र	08/05/2022
गुरु	02/06/2016	शनि	24/01/2018	बुध	26/06/2019	केतु	18/08/2020	सूर्य	16/06/2022
शनि	23/11/2016	बुध	12/03/2018	केतु	28/07/2019	शुक्र	21/10/2020	चंद्र	20/08/2022
बुध	27/04/2017	केतु	31/03/2018	शुक्र	27/10/2019	सूर्य	09/11/2020	मंगल	05/10/2022
केतु	30/06/2017	शुक्र	25/05/2018	सूर्य	24/11/2019	चंद्र	11/12/2020	राहु	29/01/2023

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शनि	
29/01/2023	
12/08/2025	
शनि	25/06/2023
बुध	03/11/2023
केतु	27/12/2023
शुक्र	29/05/2024
सूर्य	14/07/2024
चंद्र	30/09/2024
मंगल	23/11/2024
राहु	10/04/2025
गुरु	12/08/2025

गुरु - बुध	
12/08/2025	
18/11/2027	
बुध	07/12/2025
केतु	24/01/2026
शुक्र	11/06/2026
सूर्य	23/07/2026
चंद्र	30/09/2026
मंगल	17/11/2026
राहु	21/03/2027
गुरु	10/07/2027
शनि	18/11/2027

गुरु - केतु	
18/11/2027	
24/10/2028	
केतु	08/12/2027
शुक्र	02/02/2028
सूर्य	19/02/2028
चंद्र	19/03/2028
मंगल	08/04/2028
राहु	29/05/2028
गुरु	13/07/2028
शनि	05/09/2028
बुध	24/10/2028

गुरु - शुक्र	
24/10/2028	
25/06/2031	
शुक्र	04/04/2029
सूर्य	23/05/2029
चंद्र	12/08/2029
मंगल	08/10/2029
राहु	03/03/2030
गुरु	11/07/2030
शनि	12/12/2030
बुध	29/04/2031
केतु	25/06/2031

गुरु - सूर्य	
25/06/2031	
12/04/2032	
सूर्य	09/07/2031
चंद्र	02/08/2031
मंगल	20/08/2031
राहु	02/10/2031
गुरु	10/11/2031
शनि	27/12/2031
बुध	06/02/2032
केतु	23/02/2032
शुक्र	12/04/2032

गुरु - चंद्र	
12/04/2032	
12/08/2033	
चंद्र	22/05/2032
मंगल	20/06/2032
राहु	01/09/2032
गुरु	05/11/2032
शनि	21/01/2033
बुध	31/03/2033
केतु	28/04/2033
शुक्र	18/07/2033
सूर्य	12/08/2033

गुरु - मंगल	
12/08/2033	
19/07/2034	
मंगल	01/09/2033
राहु	22/10/2033
गुरु	06/12/2033
शनि	29/01/2034
बुध	18/03/2034
केतु	07/04/2034
शुक्र	03/06/2034
सूर्य	20/06/2034
चंद्र	19/07/2034

गुरु - राहु	
19/07/2034	
11/12/2036	
राहु	27/11/2034
गुरु	24/03/2035
शनि	10/08/2035
बुध	12/12/2035
केतु	01/02/2036
शुक्र	26/06/2036
सूर्य	09/08/2036
चंद्र	21/10/2036
मंगल	11/12/2036

शनि - शनि	
11/12/2036	
15/12/2039	
शनि	03/06/2037
बुध	06/11/2037
केतु	09/01/2038
शुक्र	11/07/2038
सूर्य	04/09/2038
चंद्र	05/12/2038
मंगल	07/02/2039
राहु	22/07/2039
गुरु	15/12/2039

शनि - बुध	
15/12/2039	
24/08/2042	
बुध	02/05/2040
केतु	29/06/2040
शुक्र	10/12/2040
सूर्य	28/01/2041
चंद्र	20/04/2041
मंगल	16/06/2041
राहु	10/11/2041
गुरु	21/03/2042
शनि	24/08/2042

शनि - केतु	
24/08/2042	
03/10/2043	
केतु	17/09/2042
शुक्र	23/11/2042
सूर्य	13/12/2042
चंद्र	16/01/2043
मंगल	09/02/2043
राहु	11/04/2043
गुरु	04/06/2043
शनि	07/08/2043
बुध	03/10/2043

शनि - शुक्र	
03/10/2043	
03/12/2046	
शुक्र	13/04/2044
सूर्य	10/06/2044
चंद्र	14/09/2044
मंगल	20/11/2044
राहु	13/05/2045
गुरु	14/10/2045
शनि	15/04/2046
बुध	26/09/2046
केतु	03/12/2046

शनि - सूर्य	
03/12/2046	
15/11/2047	
सूर्य	20/12/2046
चंद्र	18/01/2047
मंगल	07/02/2047
राहु	31/03/2047
गुरु	16/05/2047
शनि	10/07/2047
बुध	29/08/2047
केतु	18/09/2047
शुक्र	15/11/2047

शनि - चंद्र	
15/11/2047	
15/06/2049	
चंद्र	02/01/2048
मंगल	05/02/2048
राहु	01/05/2048
गुरु	17/07/2048
शनि	17/10/2048
बुध	07/01/2049
केतु	10/02/2049
शुक्र	17/05/2049
सूर्य	15/06/2049

शनि - मंगल	
15/06/2049	
25/07/2050	
मंगल	09/07/2049
राहु	07/09/2049
गुरु	31/10/2049
शनि	03/01/2050
बुध	02/03/2050
केतु	25/03/2050
शुक्र	01/06/2050
सूर्य	21/06/2050
चंद्र	25/07/2050

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - राहु	
25/07/2050	
31/05/2053	
राहु	28/12/2050
गुरु	16/05/2051
शनि	27/10/2051
बुध	23/03/2052
केतु	23/05/2052
शुक्र	12/11/2052
सूर्य	03/01/2053
चंद्र	31/03/2053
मंगल	31/05/2053

शनि - गुरु	
31/05/2053	
12/12/2055	
गुरु	01/10/2053
शनि	25/02/2054
बुध	06/07/2054
केतु	29/08/2054
शुक्र	30/01/2055
सूर्य	17/03/2055
चंद्र	02/06/2055
मंगल	26/07/2055
राहु	12/12/2055

बुध - बुध	
12/12/2055	
10/05/2058	
बुध	15/04/2056
केतु	05/06/2056
शुक्र	30/10/2056
सूर्य	12/12/2056
चंद्र	24/02/2057
मंगल	16/04/2057
राहु	26/08/2057
गुरु	21/12/2057
शनि	10/05/2058

बुध - केतु	
10/05/2058	
07/05/2059	
केतु	31/05/2058
शुक्र	30/07/2058
सूर्य	17/08/2058
चंद्र	16/09/2058
मंगल	08/10/2058
राहु	01/12/2058
गुरु	18/01/2059
शनि	17/03/2059
बुध	07/05/2059

बुध - शुक्र	
07/05/2059	
07/03/2062	
शुक्र	26/10/2059
सूर्य	17/12/2059
चंद्र	12/03/2060
मंगल	12/05/2060
राहु	14/10/2060
गुरु	01/03/2061
शनि	12/08/2061
बुध	05/01/2062
केतु	07/03/2062

बुध - सूर्य	
07/03/2062	
11/01/2063	
सूर्य	22/03/2062
चंद्र	17/04/2062
मंगल	05/05/2062
राहु	21/06/2062
गुरु	01/08/2062
शनि	19/09/2062
बुध	02/11/2062
केतु	20/11/2062
शुक्र	11/01/2063

बुध - चंद्र	
11/01/2063	
12/06/2064	
चंद्र	23/02/2063
मंगल	25/03/2063
राहु	11/06/2063
गुरु	19/08/2063
शनि	09/11/2063
बुध	21/01/2064
केतु	20/02/2064
शुक्र	17/05/2064
सूर्य	12/06/2064

बुध - मंगल	
12/06/2064	
09/06/2065	
मंगल	03/07/2064
राहु	26/08/2064
गुरु	13/10/2064
शनि	10/12/2064
बुध	30/01/2065
केतु	20/02/2065
शुक्र	22/04/2065
सूर्य	10/05/2065
चंद्र	09/06/2065

बुध - राहु	
09/06/2065	
27/12/2067	
राहु	27/10/2065
गुरु	28/02/2066
शनि	25/07/2066
बुध	04/12/2066
केतु	27/01/2067
शुक्र	02/07/2067
सूर्य	17/08/2067
चंद्र	03/11/2067
मंगल	27/12/2067

बुध - गुरु	
27/12/2067	
03/04/2070	
गुरु	16/04/2068
शनि	25/08/2068
बुध	20/12/2068
केतु	06/02/2069
शुक्र	24/06/2069
सूर्य	05/08/2069
चंद्र	13/10/2069
मंगल	30/11/2069
राहु	03/04/2070

बुध - शनि	
03/04/2070	
11/12/2072	
शनि	06/09/2070
बुध	23/01/2071
केतु	21/03/2071
शुक्र	01/09/2071
सूर्य	20/10/2071
चंद्र	10/01/2072
मंगल	08/03/2072
राहु	02/08/2072
गुरु	11/12/2072

केतु - केतु	
11/12/2072	
09/05/2073	
केतु	20/12/2072
शुक्र	14/01/2073
सूर्य	21/01/2073
चंद्र	03/02/2073
मंगल	11/02/2073
राहु	06/03/2073
गुरु	26/03/2073
शनि	18/04/2073
बुध	09/05/2073

केतु - शुक्र	
09/05/2073	
09/07/2074	
शुक्र	19/07/2073
सूर्य	10/08/2073
चंद्र	14/09/2073
मंगल	09/10/2073
राहु	12/12/2073
गुरु	07/02/2074
शनि	15/04/2074
बुध	15/06/2074
केतु	09/07/2074

केतु - सूर्य	
09/07/2074	
14/11/2074	
सूर्य	16/07/2074
चंद्र	27/07/2074
मंगल	03/08/2074
राहु	22/08/2074
गुरु	08/09/2074
शनि	28/09/2074
बुध	17/10/2074
केतु	24/10/2074
शुक्र	14/11/2074

केतु - चंद्र	
14/11/2074	
15/06/2075	
चंद्र	02/12/2074
मंगल	15/12/2074
राहु	15/01/2075
गुरु	13/02/2075
शनि	19/03/2075
बुध	18/04/2075
केतु	30/04/2075
शुक्र	05/06/2075
सूर्य	15/06/2075

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - मंगल	
15/06/2075	
12/11/2075	
मंगल	24/06/2075
राहु	16/07/2075
गुरु	05/08/2075
शनि	29/08/2075
बुध	19/09/2075
केतु	28/09/2075
शुक्र	23/10/2075
सूर्य	30/10/2075
चंद्र	12/11/2075

केतु - राहु	
12/11/2075	
29/11/2076	
राहु	08/01/2076
गुरु	28/02/2076
शनि	29/04/2076
बुध	22/06/2076
केतु	15/07/2076
शुक्र	17/09/2076
सूर्य	06/10/2076
चंद्र	07/11/2076
मंगल	29/11/2076

केतु - गुरु	
29/11/2076	
05/11/2077	
गुरु	14/01/2077
शनि	08/03/2077
बुध	26/04/2077
केतु	16/05/2077
शुक्र	11/07/2077
सूर्य	29/07/2077
चंद्र	26/08/2077
मंगल	15/09/2077
राहु	05/11/2077

केतु - शनि	
05/11/2077	
15/12/2078	
शनि	08/01/2078
बुध	06/03/2078
केतु	30/03/2078
शुक्र	05/06/2078
सूर्य	26/06/2078
चंद्र	29/07/2078
मंगल	22/08/2078
राहु	22/10/2078
गुरु	15/12/2078

केतु - बुध	
15/12/2078	
12/12/2079	
बुध	04/02/2079
केतु	25/02/2079
शुक्र	27/04/2079
सूर्य	15/05/2079
चंद्र	14/06/2079
मंगल	05/07/2079
राहु	28/08/2079
गुरु	16/10/2079
शनि	12/12/2079

शुक्र - शुक्र	
12/12/2079	
12/04/2083	
शुक्र	02/07/2080
सूर्य	01/09/2080
चंद्र	11/12/2080
मंगल	20/02/2081
राहु	22/08/2081
गुरु	31/01/2082
शनि	12/08/2082
बुध	31/01/2083
केतु	12/04/2083

शुक्र - सूर्य	
12/04/2083	
12/04/2084	
सूर्य	01/05/2083
चंद्र	31/05/2083
मंगल	21/06/2083
राहु	15/08/2083
गुरु	03/10/2083
शनि	30/11/2083
बुध	21/01/2084
केतु	11/02/2084
शुक्र	12/04/2084

शुक्र - चंद्र	
12/04/2084	
11/12/2085	
चंद्र	01/06/2084
मंगल	07/07/2084
राहु	06/10/2084
गुरु	26/12/2084
शनि	02/04/2085
बुध	27/06/2085
केतु	02/08/2085
शुक्र	11/11/2085
सूर्य	11/12/2085

शुक्र - मंगल	
11/12/2085	
11/02/2087	
मंगल	05/01/2086
राहु	10/03/2086
गुरु	06/05/2086
शनि	13/07/2086
बुध	11/09/2086
केतु	06/10/2086
शुक्र	16/12/2086
सूर्य	06/01/2087
चंद्र	11/02/2087

शुक्र - राहु	
11/02/2087	
10/02/2090	
राहु	25/07/2087
गुरु	18/12/2087
शनि	09/06/2088
बुध	11/11/2088
केतु	14/01/2089
शुक्र	15/07/2089
सूर्य	08/09/2089
चंद्र	08/12/2089
मंगल	10/02/2090

शुक्र - गुरु	
10/02/2090	
11/10/2092	
गुरु	20/06/2090
शनि	21/11/2090
बुध	08/04/2091
केतु	04/06/2091
शुक्र	14/11/2091
सूर्य	01/01/2092
चंद्र	22/03/2092
मंगल	18/05/2092
राहु	11/10/2092

शुक्र - शनि	
11/10/2092	
12/12/2095	
शनि	12/04/2093
बुध	23/09/2093
केतु	30/11/2093
शुक्र	11/06/2094
सूर्य	07/08/2094
चंद्र	12/11/2094
मंगल	18/01/2095
राहु	11/07/2095
गुरु	12/12/2095

शुक्र - बुध	
12/12/2095	
12/10/2098	
बुध	07/05/2096
केतु	06/07/2096
शुक्र	25/12/2096
सूर्य	15/02/2097
चंद्र	12/05/2097
मंगल	12/07/2097
राहु	14/12/2097
गुरु	01/05/2098
शनि	12/10/2098

शुक्र - केतु	
12/10/2098	
12/12/2099	
केतु	06/11/2098
शुक्र	16/01/2099
सूर्य	06/02/2099
चंद्र	14/03/2099
मंगल	07/04/2099
राहु	10/06/2099
गुरु	06/08/2099
शनि	13/10/2099
बुध	12/12/2099

सूर्य - सूर्य	
12/12/2099	
01/04/2100	
सूर्य	17/12/2099
चंद्र	27/12/2099
मंगल	02/01/2100
राहु	18/01/2100
गुरु	02/02/2100
शनि	19/02/2100
बुध	07/03/2100
केतु	13/03/2100
शुक्र	01/04/2100

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
01/04/2100		30/09/2100		05/02/2101		31/12/2101		19/10/2102	
30/09/2100		05/02/2101		31/12/2101		19/10/2102		01/10/2103	
चंद्र	16/04/2100	मंगल	08/10/2100	राहु	26/03/2101	गुरु	08/02/2102	शनि	13/12/2102
मंगल	26/04/2100	राहु	27/10/2100	गुरु	09/05/2101	शनि	26/03/2102	बुध	31/01/2103
राहु	24/05/2100	गुरु	13/11/2100	शनि	30/06/2101	बुध	06/05/2102	केतु	20/02/2103
गुरु	17/06/2100	शनि	03/12/2100	बुध	16/08/2101	केतु	23/05/2102	शुक्र	19/04/2103
शनि	16/07/2100	बुध	21/12/2100	केतु	04/09/2101	शुक्र	11/07/2102	सूर्य	06/05/2103
बुध	11/08/2100	केतु	29/12/2100	शुक्र	29/10/2101	सूर्य	26/07/2102	चंद्र	04/06/2103
केतु	22/08/2100	शुक्र	19/01/2101	सूर्य	14/11/2101	चंद्र	19/08/2102	मंगल	25/06/2103
शुक्र	21/09/2100	सूर्य	25/01/2101	चंद्र	12/12/2101	मंगल	05/09/2102	राहु	16/08/2103
सूर्य	30/09/2100	चंद्र	05/02/2101	मंगल	31/12/2101	राहु	19/10/2102	गुरु	01/10/2103

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
01/10/2103		06/08/2104		12/12/2104		12/12/2105		13/10/2106	
06/08/2104		12/12/2104		12/12/2105		13/10/2106		14/05/2107	
बुध	14/11/2103	केतु	14/08/2104	शुक्र	11/02/2105	चंद्र	07/01/2106	मंगल	25/10/2106
केतु	02/12/2103	शुक्र	04/09/2104	सूर्य	01/03/2105	मंगल	25/01/2106	राहु	26/11/2106
शुक्र	23/01/2104	सूर्य	11/09/2104	चंद्र	01/04/2105	राहु	11/03/2106	गुरु	25/12/2106
सूर्य	07/02/2104	चंद्र	21/09/2104	मंगल	22/04/2105	गुरु	21/04/2106	शनि	27/01/2107
चंद्र	04/03/2104	मंगल	29/09/2104	राहु	16/06/2105	शनि	08/06/2106	बुध	27/02/2107
मंगल	22/03/2104	राहु	18/10/2104	गुरु	04/08/2105	बुध	21/07/2106	केतु	11/03/2107
राहु	08/05/2104	गुरु	04/11/2104	शनि	30/09/2105	केतु	08/08/2106	शुक्र	16/04/2107
गुरु	18/06/2104	शनि	24/11/2104	बुध	21/11/2105	शुक्र	28/09/2106	सूर्य	26/04/2107
शनि	06/08/2104	बुध	12/12/2104	केतु	12/12/2105	सूर्य	13/10/2106	चंद्र	14/05/2107

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
14/05/2107		12/11/2108		14/03/2110		13/10/2111		14/03/2113	
12/11/2108		14/03/2110		13/10/2111		14/03/2113		13/10/2113	
राहु	04/08/2107	गुरु	16/01/2109	शनि	13/06/2110	बुध	25/12/2111	केतु	26/03/2113
गुरु	16/10/2107	शनि	03/04/2109	बुध	03/09/2110	केतु	25/01/2112	शुक्र	30/04/2113
शनि	11/01/2108	बुध	11/06/2109	केतु	07/10/2110	शुक्र	20/04/2112	सूर्य	11/05/2113
बुध	29/03/2108	केतु	09/07/2109	शुक्र	11/01/2111	सूर्य	16/05/2112	चंद्र	29/05/2113
केतु	29/04/2108	शुक्र	28/09/2109	सूर्य	09/02/2111	चंद्र	28/06/2112	मंगल	10/06/2113
शुक्र	30/07/2108	सूर्य	23/10/2109	चंद्र	30/03/2111	मंगल	28/07/2112	राहु	12/07/2113
सूर्य	26/08/2108	चंद्र	02/12/2109	मंगल	02/05/2111	राहु	14/10/2112	गुरु	10/08/2113
चंद्र	11/10/2108	मंगल	31/12/2109	राहु	28/07/2111	गुरु	22/12/2112	शनि	12/09/2113
मंगल	12/11/2108	राहु	14/03/2110	गुरु	13/10/2111	शनि	14/03/2113	बुध	13/10/2113

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - शनि - शुक्र	
27/12/2023 11:53	
29/05/2024 17:05	
शुक्र	22/01/2024 04:45
सूर्य	29/01/2024 21:48
चंद्र	11/02/2024 18:14
मंगल	20/02/2024 18:08
राहु	14/03/2024 21:19
गुरु	04/04/2024 10:49
शनि	28/04/2024 20:50
बुध	20/05/2024 17:10
केतु	29/05/2024 17:05

गुरु - शनि - सूर्य	
29/05/2024 17:05	
14/07/2024 23:26	
सूर्य	01/06/2024 00:36
चंद्र	04/06/2024 21:08
मंगल	07/06/2024 13:54
राहु	14/06/2024 12:27
गुरु	20/06/2024 16:30
शनि	28/06/2024 00:18
बुध	04/07/2024 13:36
केतु	07/07/2024 06:23
शुक्र	14/07/2024 23:26

गुरु - शनि - चंद्र	
14/07/2024 23:26	
30/09/2024 02:02	
चंद्र	21/07/2024 09:39
मंगल	25/07/2024 21:36
राहु	06/08/2024 11:12
गुरु	16/08/2024 17:57
शनि	28/08/2024 22:57
बुध	08/09/2024 21:07
केतु	13/09/2024 09:04
शुक्र	26/09/2024 05:30
सूर्य	30/09/2024 02:02

गुरु - शनि - मंगल	
30/09/2024 02:02	
23/11/2024 01:27	
मंगल	03/10/2024 05:36
राहु	11/10/2024 07:55
गुरु	18/10/2024 12:38
शनि	27/10/2024 01:45
बुध	03/11/2024 17:16
केतु	06/11/2024 20:50
शुक्र	15/11/2024 20:44
सूर्य	18/11/2024 13:30
चंद्र	23/11/2024 01:27

गुरु - शनि - राहु	
23/11/2024 01:27	
10/04/2025 20:32	
राहु	13/12/2024 21:07
गुरु	01/01/2025 09:16
शनि	23/01/2025 08:41
बुध	12/02/2025 00:35
केतु	20/02/2025 02:54
शुक्र	15/03/2025 06:05
सूर्य	22/03/2025 04:38
चंद्र	02/04/2025 18:13
मंगल	10/04/2025 20:32

गुरु - शनि - गुरु	
10/04/2025 20:32	
12/08/2025 05:30	
गुरु	27/04/2025 07:20
शनि	16/05/2025 20:09
बुध	03/06/2025 07:37
केतु	10/06/2025 12:21
शुक्र	01/07/2025 01:50
सूर्य	07/07/2025 05:53
चंद्र	17/07/2025 12:38
मंगल	24/07/2025 17:21
राहु	12/08/2025 05:30

गुरु - बुध - बुध	
12/08/2025 05:30	
07/12/2025 12:21	
बुध	28/08/2025 20:16
केतु	04/09/2025 16:28
शुक्र	24/09/2025 05:37
सूर्य	30/09/2025 02:21
चंद्र	09/10/2025 20:56
मंगल	16/10/2025 17:08
राहु	03/11/2025 07:21
गुरु	18/11/2025 22:40
शनि	07/12/2025 12:21

गुरु - बुध - केतु	
07/12/2025 12:21	
24/01/2026 19:25	
केतु	10/12/2025 07:58
शुक्र	18/12/2025 09:09
सूर्य	20/12/2025 19:06
चंद्र	24/12/2025 19:41
मंगल	27/12/2025 15:18
राहु	03/01/2026 21:09
गुरु	10/01/2026 07:42
शनि	17/01/2026 23:13
बुध	24/01/2026 19:25

गुरु - बुध - शुक्र	
24/01/2026 19:25	
11/06/2026 19:01	
शुक्र	16/02/2026 19:21
सूर्य	23/02/2026 16:56
चंद्र	07/03/2026 04:54
मंगल	15/03/2026 06:04
राहु	04/04/2026 22:49
गुरु	23/04/2026 08:22
शनि	15/05/2026 04:42
बुध	03/06/2026 17:50
केतु	11/06/2026 19:01

गुरु - बुध - सूर्य	
11/06/2026 19:01	
23/07/2026 04:30	
सूर्य	13/06/2026 20:41
चंद्र	17/06/2026 07:29
मंगल	19/06/2026 17:26
राहु	25/06/2026 22:27
गुरु	01/07/2026 10:55
शनि	08/07/2026 00:13
बुध	13/07/2026 20:58
केतु	16/07/2026 06:55
शुक्र	23/07/2026 04:30

गुरु - बुध - चंद्र	
23/07/2026 04:30	
30/09/2026 04:18	
चंद्र	28/07/2026 22:29
मंगल	01/08/2026 23:04
राहु	12/08/2026 07:26
गुरु	21/08/2026 12:13
शनि	01/09/2026 10:23
बुध	11/09/2026 04:57
केतु	15/09/2026 05:32
शुक्र	26/09/2026 17:30
सूर्य	30/09/2026 04:18

गुरु - बुध - मंगल	
30/09/2026 04:18	
17/11/2026 11:21	
मंगल	02/10/2026 23:55
राहु	10/10/2026 05:46
गुरु	16/10/2026 16:19
शनि	24/10/2026 07:50
बुध	31/10/2026 04:02
केतु	02/11/2026 23:38
शुक्र	11/11/2026 00:49
सूर्य	13/11/2026 10:46
चंद्र	17/11/2026 11:21

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - बुध - राहु	
17/11/2026 11:21	
21/03/2027 15:48	
राहु	06/12/2026 02:25
गुरु	22/12/2026 15:49
शनि	11/01/2027 07:43
बुध	28/01/2027 21:57
केतु	05/02/2027 03:48
शुक्र	25/02/2027 20:33
सूर्य	04/03/2027 01:34
चंद्र	14/03/2027 09:56
मंगल	21/03/2027 15:48

गुरु - बुध - गुरु	
21/03/2027 15:48	
10/07/2027 01:05	
गुरु	05/04/2027 09:02
शनि	22/04/2027 20:30
बुध	08/05/2027 11:49
केतु	14/05/2027 22:22
शुक्र	02/06/2027 07:54
सूर्य	07/06/2027 20:22
चंद्र	17/06/2027 01:09
मंगल	23/06/2027 11:41
राहु	10/07/2027 01:05

गुरु - बुध - शनि	
10/07/2027 01:05	
18/11/2027 03:06	
शनि	30/07/2027 19:12
बुध	18/08/2027 08:53
केतु	26/08/2027 00:24
शुक्र	16/09/2027 20:44
सूर्य	23/09/2027 10:02
चंद्र	04/10/2027 08:12
मंगल	11/10/2027 23:44
राहु	31/10/2027 15:38
गुरु	18/11/2027 03:06

गुरु - केतु - केतु	
18/11/2027 03:06	
08/12/2027 00:21	
केतु	19/11/2027 06:56
शुक्र	22/11/2027 14:29
सूर्य	23/11/2027 14:21
चंद्र	25/11/2027 06:07
मंगल	26/11/2027 09:57
राहु	29/11/2027 09:33
गुरु	02/12/2027 01:11
शनि	05/12/2027 04:45
बुध	08/12/2027 00:21

गुरु - केतु - शुक्र	
08/12/2027 00:21	
02/02/2028 19:57	
शुक्र	17/12/2027 11:37
सूर्य	20/12/2027 07:48
चंद्र	25/12/2027 01:26
मंगल	28/12/2027 08:59
राहु	05/01/2028 21:31
गुरु	13/01/2028 11:20
शनि	22/01/2028 11:14
बुध	30/01/2028 12:25
केतु	02/02/2028 19:57

गुरु - केतु - सूर्य	
02/02/2028 19:57	
19/02/2028 21:02	
सूर्य	03/02/2028 16:25
चंद्र	05/02/2028 02:30
मंगल	06/02/2028 02:22
राहु	08/02/2028 15:44
गुरु	10/02/2028 22:16
शनि	13/02/2028 15:02
बुध	16/02/2028 01:00
केतु	17/02/2028 00:51
शुक्र	19/02/2028 21:02

गुरु - केतु - चंद्र	
19/02/2028 21:02	
19/03/2028 06:50	
चंद्र	22/02/2028 05:51
मंगल	23/02/2028 21:38
राहु	28/02/2028 03:54
गुरु	02/03/2028 22:48
शनि	07/03/2028 10:45
बुध	11/03/2028 11:21
केतु	13/03/2028 03:07
शुक्र	17/03/2028 20:45
सूर्य	19/03/2028 06:50

गुरु - केतु - मंगल	
19/03/2028 06:50	
08/04/2028 04:06	
मंगल	20/03/2028 10:41
राहु	23/03/2028 10:16
गुरु	26/03/2028 01:54
शनि	29/03/2028 05:28
बुध	01/04/2028 01:05
केतु	02/04/2028 04:55
शुक्र	05/04/2028 12:28
सूर्य	06/04/2028 12:20
चंद्र	08/04/2028 04:06

गुरु - केतु - राहु	
08/04/2028 04:06	
29/05/2028 07:20	
राहु	15/04/2028 20:11
गुरु	22/04/2028 15:49
शनि	30/04/2028 18:08
बुध	07/05/2028 23:59
केतु	10/05/2028 23:35
शुक्र	19/05/2028 12:07
सूर्य	22/05/2028 01:29
चंद्र	26/05/2028 07:45
मंगल	29/05/2028 07:20

गुरु - केतु - गुरु	
29/05/2028 07:20	
13/07/2028 18:13	
गुरु	04/06/2028 08:47
शनि	11/06/2028 13:31
बुध	18/06/2028 00:03
केतु	20/06/2028 15:41
शुक्र	28/06/2028 05:30
सूर्य	30/06/2028 12:03
चंद्र	04/07/2028 06:57
मंगल	06/07/2028 22:35
राहु	13/07/2028 18:13

गुरु - केतु - शनि	
13/07/2028 18:13	
05/09/2028 17:38	
शनि	22/07/2028 07:20
बुध	29/07/2028 22:51
केतु	02/08/2028 02:25
शुक्र	11/08/2028 02:19
सूर्य	13/08/2028 19:05
चंद्र	18/08/2028 07:02
मंगल	21/08/2028 10:36
राहु	29/08/2028 12:55
गुरु	05/09/2028 17:38

गुरु - केतु - बुध	
05/09/2028 17:38	
24/10/2028 00:42	
बुध	12/09/2028 13:50
केतु	15/09/2028 09:27
शुक्र	23/09/2028 10:38
सूर्य	25/09/2028 20:35
चंद्र	29/09/2028 21:10
मंगल	02/10/2028 16:47
राहु	09/10/2028 22:38
गुरु	16/10/2028 09:11
शनि	24/10/2028 00:42

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - शुक्र - शुक्र	
24/10/2028 00:42	
04/04/2029 08:42	
शुक्र	20/11/2028 02:02
सूर्य	28/11/2028 04:50
चंद्र	11/12/2028 17:30
मंगल	21/12/2028 04:46
राहु	14/01/2029 13:10
गुरु	05/02/2029 04:38
शनि	02/03/2029 21:30
बुध	25/03/2029 21:26
केतु	04/04/2029 08:42

गुरु - शुक्र - सूर्य	
04/04/2029 08:42	
23/05/2029 01:30	
सूर्य	06/04/2029 19:08
चंद्र	10/04/2029 20:32
मंगल	13/04/2029 16:43
राहु	21/04/2029 00:02
गुरु	27/04/2029 11:53
शनि	05/05/2029 04:56
बुध	12/05/2029 02:31
केतु	14/05/2029 22:42
शुक्र	23/05/2029 01:30

गुरु - शुक्र - चंद्र	
23/05/2029 01:30	
12/08/2029 05:30	
चंद्र	29/05/2029 19:50
मंगल	03/06/2029 13:28
राहु	15/06/2029 17:40
गुरु	26/06/2029 13:24
शनि	09/07/2029 09:50
बुध	20/07/2029 21:48
केतु	25/07/2029 15:26
शुक्र	08/08/2029 04:06
सूर्य	12/08/2029 05:30

गुरु - शुक्र - मंगल	
12/08/2029 05:30	
08/10/2029 01:06	
मंगल	15/08/2029 13:02
राहु	24/08/2029 01:35
गुरु	31/08/2029 15:24
शनि	09/09/2029 15:18
बुध	17/09/2029 16:28
केतु	21/09/2029 00:01
शुक्र	30/09/2029 11:17
सूर्य	03/10/2029 07:28
चंद्र	08/10/2029 01:06

गुरु - शुक्र - राहु	
08/10/2029 01:06	
03/03/2030 03:30	
राहु	29/10/2029 23:03
गुरु	18/11/2029 10:35
शनि	11/12/2029 13:45
बुध	01/01/2030 06:30
केतु	09/01/2030 19:02
शुक्र	03/02/2030 03:26
सूर्य	10/02/2030 10:45
चंद्र	22/02/2030 14:57
मंगल	03/03/2030 03:30

गुरु - शुक्र - गुरु	
03/03/2030 03:30	
11/07/2030 00:18	
गुरु	20/03/2030 11:04
शनि	10/04/2030 00:34
बुध	28/04/2030 10:07
केतु	05/05/2030 23:55
शुक्र	27/05/2030 15:23
सूर्य	03/06/2030 03:14
चंद्र	13/06/2030 22:58
मंगल	21/06/2030 12:47
राहु	11/07/2030 00:18

गुरु - शुक्र - शनि	
11/07/2030 00:18	
12/12/2030 05:30	
शनि	04/08/2030 10:19
बुध	26/08/2030 06:39
केतु	04/09/2030 06:34
शुक्र	29/09/2030 23:26
सूर्य	07/10/2030 16:29
चंद्र	20/10/2030 12:55
मंगल	29/10/2030 12:49
राहु	21/11/2030 16:00
गुरु	12/12/2030 05:30

गुरु - शुक्र - बुध	
12/12/2030 05:30	
29/04/2031 05:06	
बुध	31/12/2030 18:38
केतु	08/01/2031 19:49
शुक्र	31/01/2031 19:45
सूर्य	07/02/2031 17:20
चंद्र	19/02/2031 05:18
मंगल	27/02/2031 06:28
राहु	19/03/2031 23:13
गुरु	07/04/2031 08:46
शनि	29/04/2031 05:06

गुरु - शुक्र - केतु	
29/04/2031 05:06	
25/06/2031 00:42	
केतु	02/05/2031 12:38
शुक्र	11/05/2031 23:54
सूर्य	14/05/2031 20:05
चंद्र	19/05/2031 13:43
मंगल	22/05/2031 21:16
राहु	31/05/2031 09:48
गुरु	07/06/2031 23:37
शनि	16/06/2031 23:31
बुध	25/06/2031 00:42

गुरु - सूर्य - सूर्य	
25/06/2031 00:42	
09/07/2031 15:20	
सूर्य	25/06/2031 18:14
चंद्र	26/06/2031 23:27
मंगल	27/06/2031 19:54
राहु	30/06/2031 00:30
गुरु	01/07/2031 23:15
शनि	04/07/2031 06:46
बुध	06/07/2031 08:27
केतु	07/07/2031 04:54
शुक्र	09/07/2031 15:20

गुरु - सूर्य - चंद्र	
09/07/2031 15:20	
02/08/2031 23:44	
चंद्र	11/07/2031 16:02
मंगल	13/07/2031 02:08
राहु	16/07/2031 17:47
गुरु	19/07/2031 23:42
शनि	23/07/2031 20:14
बुध	27/07/2031 07:02
केतु	28/07/2031 17:07
शुक्र	01/08/2031 18:31
सूर्य	02/08/2031 23:44

गुरु - सूर्य - मंगल	
02/08/2031 23:44	
20/08/2031 00:49	
मंगल	03/08/2031 23:36
राहु	06/08/2031 12:58
गुरु	08/08/2031 19:30
शनि	11/08/2031 12:17
बुध	13/08/2031 22:14
केतु	14/08/2031 22:06
शुक्र	17/08/2031 18:16
सूर्य	18/08/2031 14:44
चंद्र	20/08/2031 00:49

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - सूर्य - राहु	
20/08/2031 00:49	
02/10/2031 20:44	
राहु	26/08/2031 14:36
गुरु	01/09/2031 10:52
शनि	08/09/2031 09:25
बुध	14/09/2031 14:26
केतु	17/09/2031 03:48
शुक्र	24/09/2031 11:07
सूर्य	26/09/2031 15:43
चंद्र	30/09/2031 07:23
मंगल	02/10/2031 20:44

गुरु - सूर्य - गुरु	
02/10/2031 20:44	
10/11/2031 19:47	
गुरु	08/10/2031 01:25
शनि	14/10/2031 05:27
बुध	19/10/2031 17:55
केतु	22/10/2031 00:28
शुक्र	28/10/2031 12:18
सूर्य	30/10/2031 11:03
चंद्र	02/11/2031 16:59
मंगल	04/11/2031 23:31
राहु	10/11/2031 19:47

गुरु - सूर्य - शनि	
10/11/2031 19:47	
27/12/2031 02:08	
शनि	18/11/2031 03:35
बुध	24/11/2031 16:53
केतु	27/11/2031 09:39
शुक्र	05/12/2031 02:43
सूर्य	07/12/2031 10:14
चंद्र	11/12/2031 06:46
मंगल	13/12/2031 23:32
राहु	20/12/2031 22:05
गुरु	27/12/2031 02:08

गुरु - सूर्य - बुध	
27/12/2031 02:08	
06/02/2032 11:37	
बुध	01/01/2032 22:53
केतु	04/01/2032 08:50
शुक्र	11/01/2032 06:25
सूर्य	13/01/2032 08:05
चंद्र	16/01/2032 18:53
मंगल	19/01/2032 04:50
राहु	25/01/2032 09:51
गुरु	30/01/2032 22:19
शनि	06/02/2032 11:37

गुरु - सूर्य - केतु	
06/02/2032 11:37	
23/02/2032 12:42	
केतु	07/02/2032 11:29
शुक्र	10/02/2032 07:40
सूर्य	11/02/2032 04:07
चंद्र	12/02/2032 14:12
मंगल	13/02/2032 14:04
राहु	16/02/2032 03:26
गुरु	18/02/2032 09:58
शनि	21/02/2032 02:45
बुध	23/02/2032 12:42

गुरु - सूर्य - शुक्र	
23/02/2032 12:42	
12/04/2032 05:30	
शुक्र	02/03/2032 15:30
सूर्य	05/03/2032 01:56
चंद्र	09/03/2032 03:20
मंगल	11/03/2032 23:31
राहु	19/03/2032 06:50
गुरु	25/03/2032 18:41
शनि	02/04/2032 11:44
बुध	09/04/2032 09:19
केतु	12/04/2032 05:30

गुरु - चंद्र - चंद्र	
12/04/2032 05:30	
22/05/2032 19:30	
चंद्र	15/04/2032 14:40
मंगल	17/04/2032 23:29
राहु	24/04/2032 01:35
गुरु	29/04/2032 11:27
शनि	05/05/2032 21:40
बुध	11/05/2032 15:39
केतु	14/05/2032 00:28
शुक्र	20/05/2032 18:48
सूर्य	22/05/2032 19:30

गुरु - चंद्र - मंगल	
22/05/2032 19:30	
20/06/2032 05:18	
मंगल	24/05/2032 11:16
राहु	28/05/2032 17:32
गुरु	01/06/2032 12:27
शनि	06/06/2032 00:24
बुध	10/06/2032 00:59
केतु	11/06/2032 16:45
शुक्र	16/06/2032 10:23
सूर्य	17/06/2032 20:29
चंद्र	20/06/2032 05:18

गुरु - चंद्र - राहु	
20/06/2032 05:18	
01/09/2032 06:30	
राहु	01/07/2032 04:17
गुरु	10/07/2032 22:02
शनि	22/07/2032 11:38
बुध	01/08/2032 20:00
केतु	06/08/2032 02:16
शुक्र	18/08/2032 06:28
सूर्य	21/08/2032 22:08
चंद्र	28/08/2032 00:14
मंगल	01/09/2032 06:30

गुरु - चंद्र - गुरु	
01/09/2032 06:30	
05/11/2032 04:54	
गुरु	09/09/2032 22:17
शनि	20/09/2032 05:02
बुध	29/09/2032 09:48
केतु	03/10/2032 04:43
शुक्र	14/10/2032 00:27
सूर्य	17/10/2032 06:22
चंद्र	22/10/2032 16:14
मंगल	26/10/2032 11:08
राहु	05/11/2032 04:54

गुरु - चंद्र - शनि	
05/11/2032 04:54	
21/01/2033 07:30	
शनि	17/11/2032 09:55
बुध	28/11/2032 08:05
केतु	02/12/2032 20:02
शुक्र	15/12/2032 16:28
सूर्य	19/12/2032 13:00
चंद्र	25/12/2032 23:13
मंगल	30/12/2032 11:10
राहु	11/01/2033 00:45
गुरु	21/01/2033 07:30

गुरु - चंद्र - बुध	
21/01/2033 07:30	
31/03/2033 07:18	
बुध	31/01/2033 02:04
केतु	04/02/2033 02:39
शुक्र	15/02/2033 14:37
सूर्य	19/02/2033 01:25
चंद्र	24/02/2033 19:24
मंगल	28/02/2033 19:59
राहु	11/03/2033 04:21
गुरु	20/03/2033 09:08
शनि	31/03/2033 07:18

विंशोत्तरी दशा - प्राण

गुरु - शनि - शुक्र - सूर्य	
22/01/2024 04:45	
29/01/2024 21:48	
सूर्य	22/01/2024 14:00
चंद्र	23/01/2024 05:25
मंगल	23/01/2024 16:13
राहु	24/01/2024 19:58
गुरु	25/01/2024 20:39
शनि	27/01/2024 01:57
बुध	28/01/2024 04:10
केतु	28/01/2024 14:58
शुक्र	29/01/2024 21:48

गुरु - शनि - शुक्र - चंद्र	
29/01/2024 21:48	
11/02/2024 18:14	
चंद्र	30/01/2024 23:30
मंगल	31/01/2024 17:30
राहु	02/02/2024 15:46
गुरु	04/02/2024 08:53
शनि	06/02/2024 09:43
बुध	08/02/2024 05:25
केतु	08/02/2024 23:25
शुक्र	11/02/2024 02:49
सूर्य	11/02/2024 18:14

गुरु - शनि - शुक्र - मंगल	
11/02/2024 18:14	
20/02/2024 18:08	
मंगल	12/02/2024 06:50
राहु	13/02/2024 15:13
गुरु	14/02/2024 20:00
शनि	16/02/2024 06:11
बुध	17/02/2024 12:47
केतु	18/02/2024 01:22
शुक्र	19/02/2024 13:21
सूर्य	20/02/2024 00:09
चंद्र	20/02/2024 18:08

गुरु - शनि - शुक्र - राहु	
20/02/2024 18:08	
14/03/2024 21:19	
राहु	24/02/2024 05:25
गुरु	27/02/2024 07:27
शनि	01/03/2024 23:21
बुध	05/03/2024 06:00
केतु	06/03/2024 14:23
शुक्र	10/03/2024 10:55
सूर्य	11/03/2024 14:40
चंद्र	13/03/2024 12:56
मंगल	14/03/2024 21:19

गुरु - शनि - शुक्र - गुरु	
14/03/2024 21:19	
04/04/2024 10:49	
गुरु	17/03/2024 15:07
शनि	20/03/2024 21:15
बुध	23/03/2024 19:10
केतु	24/03/2024 23:57
शुक्र	28/03/2024 10:12
सूर्य	29/03/2024 10:53
चंद्र	31/03/2024 04:00
मंगल	01/04/2024 08:47
राहु	04/04/2024 10:49

गुरु - शनि - शुक्र - शनि	
04/04/2024 10:49	
28/04/2024 20:50	
शनि	08/04/2024 07:36
बुध	11/04/2024 18:37
केतु	13/04/2024 04:48
शुक्र	17/04/2024 06:29
सूर्य	18/04/2024 11:47
चंद्र	20/04/2024 12:37
मंगल	21/04/2024 22:48
राहु	25/04/2024 14:42
गुरु	28/04/2024 20:50

गुरु - शनि - शुक्र - बुध	
28/04/2024 20:50	
20/05/2024 17:10	
बुध	01/05/2024 23:07
केतु	03/05/2024 05:42
शुक्र	06/05/2024 21:06
सूर्य	07/05/2024 23:19
चंद्र	09/05/2024 19:00
मंगल	11/05/2024 01:36
राहु	14/05/2024 08:15
गुरु	17/05/2024 06:09
शनि	20/05/2024 17:10

गुरु - शनि - शुक्र - केतु	
20/05/2024 17:10	
29/05/2024 17:05	
केतु	21/05/2024 05:46
शुक्र	22/05/2024 17:45
सूर्य	23/05/2024 04:33
चंद्र	23/05/2024 22:32
मंगल	24/05/2024 11:08
राहु	25/05/2024 19:31
गुरु	27/05/2024 00:18
शनि	28/05/2024 10:29
बुध	29/05/2024 17:05

गुरु - शनि - सूर्य - सूर्य	
29/05/2024 17:05	
01/06/2024 00:36	
सूर्य	29/05/2024 19:51
चंद्र	30/05/2024 00:29
मंगल	30/05/2024 03:43
राहु	30/05/2024 12:03
गुरु	30/05/2024 19:27
शनि	31/05/2024 04:14
बुध	31/05/2024 12:06
केतु	31/05/2024 15:21
शुक्र	01/06/2024 00:36

गुरु - शनि - सूर्य - चंद्र	
01/06/2024 00:36	
04/06/2024 21:08	
चंद्र	01/06/2024 08:18
मंगल	01/06/2024 13:42
राहु	02/06/2024 03:35
गुरु	02/06/2024 15:55
शनि	03/06/2024 06:34
बुध	03/06/2024 19:41
केतु	04/06/2024 01:05
शुक्र	04/06/2024 16:30
सूर्य	04/06/2024 21:08

गुरु - शनि - सूर्य - मंगल	
04/06/2024 21:08	
07/06/2024 13:54	
मंगल	05/06/2024 00:54
राहु	05/06/2024 10:37
गुरु	05/06/2024 19:15
शनि	06/06/2024 05:31
बुध	06/06/2024 14:41
केतु	06/06/2024 18:28
शुक्र	07/06/2024 05:16
सूर्य	07/06/2024 08:30
चंद्र	07/06/2024 13:54

गुरु - शनि - सूर्य - राहु	
07/06/2024 13:54	
14/06/2024 12:27	
राहु	08/06/2024 14:53
गुरु	09/06/2024 13:05
शनि	10/06/2024 15:27
बुध	11/06/2024 15:03
केतु	12/06/2024 00:46
शुक्र	13/06/2024 04:32
सूर्य	13/06/2024 12:51
चंद्र	14/06/2024 02:44
मंगल	14/06/2024 12:27

विंशोत्तरी दशा - प्राण

गुरु - शनि - सूर्य - गुरु	
14/06/2024 12:27	
20/06/2024 16:30	
गुरु	15/06/2024 08:11
शनि	16/06/2024 07:38
बुध	17/06/2024 04:36
केतु	17/06/2024 13:14
शुक्र	18/06/2024 13:55
सूर्य	18/06/2024 21:19
चंद्र	19/06/2024 09:39
मंगल	19/06/2024 18:17
राहु	20/06/2024 16:30

गुरु - शनि - सूर्य - शनि	
20/06/2024 16:30	
28/06/2024 00:18	
शनि	21/06/2024 20:20
बुध	22/06/2024 21:14
केतु	23/06/2024 07:30
शुक्र	24/06/2024 12:48
सूर्य	24/06/2024 21:35
चंद्र	25/06/2024 12:14
मंगल	25/06/2024 22:30
राहु	27/06/2024 00:52
गुरु	28/06/2024 00:18

गुरु - शनि - सूर्य - बुध	
28/06/2024 00:18	
04/07/2024 13:36	
बुध	28/06/2024 22:35
केतु	29/06/2024 07:46
शुक्र	30/06/2024 09:59
सूर्य	30/06/2024 17:51
चंद्र	01/07/2024 06:57
मंगल	01/07/2024 16:08
राहु	02/07/2024 15:44
गुरु	03/07/2024 12:42
शनि	04/07/2024 13:36

गुरु - शनि - सूर्य - केतु	
04/07/2024 13:36	
07/07/2024 06:23	
केतु	04/07/2024 17:23
शुक्र	05/07/2024 04:11
सूर्य	05/07/2024 07:25
चंद्र	05/07/2024 12:49
मंगल	05/07/2024 16:36
राहु	06/07/2024 02:19
गुरु	06/07/2024 10:57
शनि	06/07/2024 21:12
बुध	07/07/2024 06:23

गुरु - शनि - सूर्य - शुक्र	
07/07/2024 06:23	
14/07/2024 23:26	
शुक्र	08/07/2024 13:13
सूर्य	08/07/2024 22:28
चंद्र	09/07/2024 13:54
मंगल	10/07/2024 00:41
राहु	11/07/2024 04:27
गुरु	12/07/2024 05:07
शनि	13/07/2024 10:26
बुध	14/07/2024 12:39
केतु	14/07/2024 23:26

गुरु - शनि - चंद्र - चंद्र	
14/07/2024 23:26	
21/07/2024 09:39	
चंद्र	15/07/2024 12:17
मंगल	15/07/2024 21:17
राहु	16/07/2024 20:25
गुरु	17/07/2024 16:59
शनि	18/07/2024 17:24
बुध	19/07/2024 15:15
केतु	20/07/2024 00:14
शुक्र	21/07/2024 01:57
सूर्य	21/07/2024 09:39

गुरु - शनि - चंद्र - मंगल	
21/07/2024 09:39	
25/07/2024 21:36	
मंगल	21/07/2024 15:57
राहु	22/07/2024 08:09
गुरु	22/07/2024 22:32
शनि	23/07/2024 15:38
बुध	24/07/2024 06:55
केतु	24/07/2024 13:13
शुक्र	25/07/2024 07:13
सूर्य	25/07/2024 12:37
चंद्र	25/07/2024 21:36

गुरु - शनि - चंद्र - राहु	
25/07/2024 21:36	
06/08/2024 11:12	
राहु	27/07/2024 15:15
गुरु	29/07/2024 04:15
शनि	31/07/2024 00:12
बुध	01/08/2024 15:32
केतु	02/08/2024 07:44
शुक्र	04/08/2024 05:59
सूर्य	04/08/2024 19:52
चंद्र	05/08/2024 19:00
मंगल	06/08/2024 11:12

गुरु - शनि - चंद्र - गुरु	
06/08/2024 11:12	
16/08/2024 17:57	
गुरु	07/08/2024 20:06
शनि	09/08/2024 11:10
बुध	10/08/2024 22:07
केतु	11/08/2024 12:31
शुक्र	13/08/2024 05:38
सूर्य	13/08/2024 17:58
चंद्र	14/08/2024 14:32
मंगल	15/08/2024 04:56
राहु	16/08/2024 17:57

गुरु - शनि - चंद्र - शनि	
16/08/2024 17:57	
28/08/2024 22:57	
शनि	18/08/2024 16:20
बुध	20/08/2024 09:51
केतु	21/08/2024 02:56
शुक्र	23/08/2024 03:46
सूर्य	23/08/2024 18:25
चंद्र	24/08/2024 18:51
मंगल	25/08/2024 11:56
राहु	27/08/2024 07:53
गुरु	28/08/2024 22:57

गुरु - शनि - चंद्र - बुध	
28/08/2024 22:57	
08/09/2024 21:07	
बुध	30/08/2024 12:06
केतु	31/08/2024 03:23
शुक्र	01/09/2024 23:05
सूर्य	02/09/2024 12:11
चंद्र	03/09/2024 10:02
मंगल	04/09/2024 01:20
राहु	05/09/2024 16:39
गुरु	07/09/2024 03:37
शनि	08/09/2024 21:07

गुरु - शनि - चंद्र - केतु	
08/09/2024 21:07	
13/09/2024 09:04	
केतु	09/09/2024 03:25
शुक्र	09/09/2024 21:25
सूर्य	10/09/2024 02:49
चंद्र	10/09/2024 11:48
मंगल	10/09/2024 18:06
राहु	11/09/2024 10:18
गुरु	12/09/2024 00:41
शनि	12/09/2024 17:47
बुध	13/09/2024 09:04

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 6 वर्ष 11 मास 22 दिन

बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष	
27/01/2000		19/01/2007		19/01/2025		20/01/2036		20/01/2048	
19/01/2007		19/01/2025		20/01/2036		20/01/2048		19/01/2061	
	00/00/0000	शुक्र	04/11/2009	सूर्य	04/02/2026	मंगल	17/04/2037	गुरु	05/07/2049
	00/00/0000	सूर्य	21/07/2011	मंगल	26/03/2027	गुरु	21/08/2038	शनि	29/01/2051
	00/00/0000	मंगल	31/05/2013	गुरु	19/06/2028	शनि	01/02/2040	केतु	04/10/2052
	27/01/2000	गुरु	07/06/2015	शनि	17/10/2029	केतु	21/08/2041	चंद्र	21/07/2054
गुरु	16/06/2000	शनि	08/08/2017	केतु	20/03/2031	चंद्र	17/04/2043	बुध	16/06/2056
शनि	05/07/2002	केतु	06/12/2019	चंद्र	24/09/2032	बुध	19/01/2045	शुक्र	22/06/2058
केतु	15/09/2004	चंद्र	31/05/2022	बुध	06/05/2034	शुक्र	30/11/2046	सूर्य	16/09/2059
चंद्र	19/01/2007	बुध	19/01/2025	शुक्र	20/01/2036	सूर्य	20/01/2048	मंगल	19/01/2061

शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
19/01/2061		19/01/2075		19/01/2090		20/01/2106	
19/01/2075		19/01/2090		20/01/2106		00/00/0000	
शनि	28/09/2062	केतु	28/12/2076	चंद्र	04/04/2092	बुध	18/07/2108
केतु	20/07/2064	चंद्र	22/01/2079	बुध	09/08/2094	शुक्र	09/03/2111
चंद्र	25/06/2066	बुध	04/04/2081	शुक्र	31/01/2097	सूर्य	17/10/2112
बुध	14/07/2068	शुक्र	03/08/2083	सूर्य	09/08/2098	मंगल	22/07/2114
शुक्र	15/09/2070	सूर्य	03/01/2085	मंगल	05/04/2100	गुरु	28/01/2116
सूर्य	13/01/2072	मंगल	24/07/2086	गुरु	20/01/2102		00/00/0000
मंगल	25/06/2073	गुरु	29/03/2088	शनि	26/12/2103		00/00/0000
गुरु	19/01/2075	शनि	19/01/2090	केतु	20/01/2106		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - गुरु	
27/01/2000	
16/06/2000	
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	27/01/2000
शुक्र	30/01/2000
सूर्य	05/04/2000
मंगल	16/06/2000

बुध - शनि	
16/06/2000	
05/07/2002	
शनि	14/09/2000
केतु	20/12/2000
चंद्र	02/04/2001
बुध	21/07/2001
शुक्र	14/11/2001
सूर्य	24/01/2002
मंगल	12/04/2002
गुरु	05/07/2002

बुध - केतु	
05/07/2002	
15/09/2004	
केतु	17/10/2002
चंद्र	04/02/2003
बुध	02/06/2003
शुक्र	05/10/2003
सूर्य	20/12/2003
मंगल	12/03/2004
गुरु	10/06/2004
शनि	15/09/2004

बुध - चंद्र	
15/09/2004	
19/01/2007	
चंद्र	11/01/2005
बुध	16/05/2005
शुक्र	26/09/2005
सूर्य	17/12/2005
मंगल	15/03/2006
गुरु	19/06/2006
शनि	01/10/2006
केतु	19/01/2007

शुक्र - शुक्र	
19/01/2007	
04/11/2009	
शुक्र	27/06/2007
सूर्य	01/10/2007
मंगल	15/01/2008
गुरु	08/05/2008
शनि	08/09/2008
केतु	18/01/2009
चंद्र	08/06/2009
बुध	04/11/2009

शुक्र - सूर्य	
04/11/2009	
21/07/2011	
सूर्य	03/01/2010
मंगल	08/03/2010
गुरु	17/05/2010
शनि	31/07/2010
केतु	20/10/2010
चंद्र	14/01/2011
बुध	15/04/2011
शुक्र	21/07/2011

शुक्र - मंगल	
21/07/2011	
31/05/2013	
मंगल	29/09/2011
गुरु	14/12/2011
शनि	06/03/2012
केतु	02/06/2012
चंद्र	03/09/2012
बुध	12/12/2012
शुक्र	28/03/2013
सूर्य	31/05/2013

शुक्र - गुरु	
31/05/2013	
07/06/2015	
गुरु	22/08/2013
शनि	19/11/2013
केतु	22/02/2014
चंद्र	03/06/2014
बुध	19/09/2014
शुक्र	12/01/2015
सूर्य	23/03/2015
मंगल	07/06/2015

शुक्र - शनि	
07/06/2015	
08/08/2017	
शनि	11/09/2015
केतु	22/12/2015
चंद्र	10/04/2016
बुध	04/08/2016
शुक्र	05/12/2016
सूर्य	18/02/2017
मंगल	11/05/2017
गुरु	08/08/2017

शुक्र - केतु	
08/08/2017	
06/12/2019	
केतु	26/11/2017
चंद्र	23/03/2018
बुध	26/07/2018
शुक्र	05/12/2018
सूर्य	24/02/2019
मंगल	23/05/2019
गुरु	26/08/2019
शनि	06/12/2019

शुक्र - चंद्र	
06/12/2019	
31/05/2022	
चंद्र	10/04/2020
बुध	20/08/2020
शुक्र	08/01/2021
सूर्य	04/04/2021
मंगल	07/07/2021
गुरु	17/10/2021
शनि	03/02/2022
केतु	31/05/2022

शुक्र - बुध	
31/05/2022	
19/01/2025	
बुध	19/10/2022
शुक्र	18/03/2023
सूर्य	17/06/2023
मंगल	25/09/2023
गुरु	11/01/2024
शनि	06/05/2024
केतु	08/09/2024
चंद्र	19/01/2025

सूर्य - सूर्य	
19/01/2025	
04/02/2026	
सूर्य	24/02/2025
मंगल	04/04/2025
गुरु	17/05/2025
शनि	02/07/2025
केतु	20/08/2025
चंद्र	12/10/2025
बुध	07/12/2025
शुक्र	04/02/2026

सूर्य - मंगल	
04/02/2026	
26/03/2027	
मंगल	19/03/2026
गुरु	04/05/2026
शनि	24/06/2026
केतु	16/08/2026
चंद्र	13/10/2026
बुध	12/12/2026
शुक्र	15/02/2027
सूर्य	26/03/2027

सूर्य - गुरु	
26/03/2027	
19/06/2028	
गुरु	16/05/2027
शनि	09/07/2027
केतु	05/09/2027
चंद्र	07/11/2027
बुध	12/01/2028
शुक्र	21/03/2028
सूर्य	03/05/2028
मंगल	19/06/2028

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र	
19/06/2028		17/10/2029		20/03/2031		24/09/2032		06/05/2034	
17/10/2029		20/03/2031		24/09/2032		06/05/2034		20/01/2036	
शनि	16/08/2028	केतु	23/12/2029	चंद्र	05/06/2031	बुध	20/12/2032	शुक्र	11/08/2034
केतु	18/10/2028	चंद्र	04/03/2030	बुध	25/08/2031	शुक्र	21/03/2033	सूर्य	09/10/2034
चंद्र	24/12/2028	बुध	20/05/2030	शुक्र	19/11/2031	सूर्य	16/05/2033	मंगल	12/12/2034
बुध	05/03/2029	शुक्र	08/08/2030	सूर्य	10/01/2032	मंगल	16/07/2033	गुरु	20/02/2035
शुक्र	19/05/2029	सूर्य	26/09/2030	मंगल	08/03/2032	गुरु	20/09/2033	शनि	07/05/2035
सूर्य	04/07/2029	मंगल	19/11/2030	गुरु	09/05/2032	शनि	30/11/2033	केतु	26/07/2035
मंगल	23/08/2029	गुरु	16/01/2031	शनि	15/07/2032	केतु	14/02/2034	चंद्र	20/10/2035
गुरु	17/10/2029	शनि	20/03/2031	केतु	24/09/2032	चंद्र	06/05/2034	बुध	20/01/2036

मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - केतु		मंगल - चंद्र	
20/01/2036		17/04/2037		21/08/2038		01/02/2040		21/08/2041	
17/04/2037		21/08/2038		01/02/2040		21/08/2041		17/04/2043	
मंगल	06/03/2036	गुरु	11/06/2037	शनि	24/10/2038	केतु	14/04/2040	चंद्र	12/11/2041
गुरु	26/04/2036	शनि	09/08/2037	केतु	31/12/2038	चंद्र	02/07/2040	बुध	09/02/2042
शनि	20/06/2036	केतु	12/10/2037	चंद्र	14/03/2039	बुध	23/09/2040	शुक्र	14/05/2042
केतु	18/08/2036	चंद्र	19/12/2037	बुध	31/05/2039	शुक्र	20/12/2040	सूर्य	10/07/2042
चंद्र	19/10/2036	बुध	01/03/2038	शुक्र	21/08/2039	सूर्य	11/02/2041	मंगल	11/09/2042
बुध	25/12/2036	शुक्र	16/05/2038	सूर्य	10/10/2039	मंगल	11/04/2041	गुरु	17/11/2042
शुक्र	05/03/2037	सूर्य	01/07/2038	मंगल	04/12/2039	गुरु	13/06/2041	शनि	29/01/2043
सूर्य	17/04/2037	मंगल	21/08/2038	गुरु	01/02/2040	शनि	21/08/2041	केतु	17/04/2043

मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु		गुरु - शनि	
17/04/2043		19/01/2045		30/11/2046		20/01/2048		05/07/2049	
19/01/2045		30/11/2046		20/01/2048		05/07/2049		29/01/2051	
बुध	21/07/2043	शुक्र	04/05/2045	सूर्य	08/01/2047	गुरु	19/03/2048	शनि	12/09/2049
शुक्र	28/10/2043	सूर्य	08/07/2045	मंगल	20/02/2047	शनि	22/05/2048	केतु	25/11/2049
सूर्य	28/12/2043	मंगल	16/09/2045	गुरु	08/04/2047	केतु	30/07/2048	चंद्र	12/02/2050
मंगल	04/03/2044	गुरु	01/12/2045	शनि	28/05/2047	चंद्र	12/10/2048	बुध	07/05/2050
गुरु	15/05/2044	शनि	21/02/2046	केतु	21/07/2047	बुध	29/12/2048	शुक्र	04/08/2050
शनि	31/07/2044	केतु	20/05/2046	चंद्र	16/09/2047	शुक्र	21/03/2049	सूर्य	27/09/2050
केतु	22/10/2044	चंद्र	22/08/2046	बुध	16/11/2047	सूर्य	11/05/2049	मंगल	26/11/2050
चंद्र	19/01/2045	बुध	30/11/2046	शुक्र	20/01/2048	मंगल	05/07/2049	गुरु	29/01/2051

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - केतु		गुरु - चंद्र		गुरु - बुध		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
29/01/2051		04/10/2052		21/07/2054		16/06/2056		22/06/2058	
04/10/2052		21/07/2054		16/06/2056		22/06/2058		16/09/2059	
केतु	18/04/2051	चंद्र	02/01/2053	बुध	31/10/2054	शुक्र	08/10/2056	सूर्य	04/08/2058
चंद्र	12/07/2051	बुध	08/04/2053	शुक्र	16/02/2055	सूर्य	17/12/2056	मंगल	20/09/2058
बुध	10/10/2051	शुक्र	19/07/2053	सूर्य	23/04/2055	मंगल	03/03/2057	गुरु	09/11/2058
शुक्र	13/01/2052	सूर्य	19/09/2053	मंगल	04/07/2055	गुरु	25/05/2057	शनि	02/01/2059
सूर्य	11/03/2052	मंगल	26/11/2053	गुरु	20/09/2055	शनि	21/08/2057	केतु	02/03/2059
मंगल	14/05/2052	गुरु	07/02/2054	शनि	13/12/2055	केतु	25/11/2057	चंद्र	03/05/2059
गुरु	22/07/2052	शनि	27/04/2054	केतु	12/03/2056	चंद्र	06/03/2058	बुध	08/07/2059
शनि	04/10/2052	केतु	21/07/2054	चंद्र	16/06/2056	बुध	22/06/2058	शुक्र	16/09/2059

गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु		शनि - चंद्र		शनि - बुध	
16/09/2059		19/01/2061		28/09/2062		20/07/2064		25/06/2066	
19/01/2061		28/09/2062		20/07/2064		25/06/2066		14/07/2068	
मंगल	05/11/2059	शनि	03/04/2061	केतु	22/12/2062	चंद्र	25/10/2064	बुध	13/10/2066
गुरु	30/12/2059	केतु	22/06/2061	चंद्र	24/03/2063	बुध	06/02/2065	शुक्र	07/02/2067
शनि	28/02/2060	चंद्र	15/09/2061	बुध	29/06/2063	शुक्र	26/05/2065	सूर्य	19/04/2067
केतु	01/05/2060	बुध	15/12/2061	शुक्र	09/10/2063	सूर्य	01/08/2065	मंगल	05/07/2067
चंद्र	08/07/2060	शुक्र	20/03/2062	सूर्य	11/12/2063	मंगल	13/10/2065	गुरु	27/09/2067
बुध	18/09/2060	सूर्य	18/05/2062	मंगल	17/02/2064	गुरु	31/12/2065	शनि	27/12/2067
शुक्र	03/12/2060	मंगल	21/07/2062	गुरु	01/05/2064	शनि	26/03/2066	केतु	01/04/2068
सूर्य	19/01/2061	गुरु	28/09/2062	शनि	20/07/2064	केतु	25/06/2066	चंद्र	14/07/2068

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल		शनि - गुरु		केतु - केतु	
14/07/2068		15/09/2070		13/01/2072		25/06/2073		19/01/2075	
15/09/2070		13/01/2072		25/06/2073		19/01/2075		28/12/2076	
शुक्र	14/11/2068	सूर्य	31/10/2070	मंगल	08/03/2072	गुरु	28/08/2073	केतु	21/04/2075
सूर्य	28/01/2069	मंगल	20/12/2070	गुरु	06/05/2072	शनि	06/11/2073	चंद्र	28/07/2075
मंगल	20/04/2069	गुरु	13/02/2071	शनि	09/07/2072	केतु	19/01/2074	बुध	08/11/2075
गुरु	18/07/2069	शनि	12/04/2071	केतु	15/09/2072	चंद्र	08/04/2074	शुक्र	26/02/2076
शनि	22/10/2069	केतु	14/06/2071	चंद्र	27/11/2072	बुध	01/07/2074	सूर्य	04/05/2076
केतु	02/02/2070	चंद्र	20/08/2071	बुध	13/02/2073	शुक्र	28/09/2074	मंगल	16/07/2076
चंद्र	22/05/2070	बुध	30/10/2071	शुक्र	06/05/2073	सूर्य	21/11/2074	गुरु	03/10/2076
बुध	15/09/2070	शुक्र	13/01/2072	सूर्य	25/06/2073	मंगल	19/01/2075	शनि	28/12/2076

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - चंद्र	
28/12/2076	
22/01/2079	
चंद्र	11/04/2077
बुध	31/07/2077
शुक्र	25/11/2077
सूर्य	05/02/2078
मंगल	24/04/2078
गुरु	18/07/2078
शनि	17/10/2078
केतु	22/01/2079

केतु - बुध	
22/01/2079	
04/04/2081	
बुध	20/05/2079
शुक्र	22/09/2079
सूर्य	07/12/2079
मंगल	28/02/2080
गुरु	28/05/2080
शनि	02/09/2080
केतु	15/12/2080
चंद्र	04/04/2081

केतु - शुक्र	
04/04/2081	
03/08/2083	
शुक्र	14/08/2081
सूर्य	03/11/2081
मंगल	30/01/2082
गुरु	05/05/2082
शनि	16/08/2082
केतु	04/12/2082
चंद्र	31/03/2083
बुध	03/08/2083

केतु - सूर्य	
03/08/2083	
03/01/2085	
सूर्य	21/09/2083
मंगल	14/11/2083
गुरु	11/01/2084
शनि	13/03/2084
केतु	20/05/2084
चंद्र	30/07/2084
बुध	14/10/2084
शुक्र	03/01/2085

केतु - मंगल	
03/01/2085	
24/07/2086	
मंगल	03/03/2085
गुरु	05/05/2085
शनि	13/07/2085
केतु	24/09/2085
चंद्र	11/12/2085
बुध	04/03/2086
शुक्र	31/05/2086
सूर्य	24/07/2086

केतु - गुरु	
24/07/2086	
29/03/2088	
गुरु	01/10/2086
शनि	14/12/2086
केतु	03/03/2087
चंद्र	27/05/2087
बुध	25/08/2087
शुक्र	28/11/2087
सूर्य	25/01/2088
मंगल	29/03/2088

केतु - शनि	
29/03/2088	
19/01/2090	
शनि	17/06/2088
केतु	10/09/2088
चंद्र	10/12/2088
बुध	17/03/2089
शुक्र	28/06/2089
सूर्य	30/08/2089
मंगल	06/11/2089
गुरु	19/01/2090

चंद्र - चंद्र	
19/01/2090	
04/04/2092	
चंद्र	10/05/2090
बुध	05/09/2090
शुक्र	08/01/2091
सूर्य	26/03/2091
मंगल	17/06/2091
गुरु	16/09/2091
शनि	22/12/2091
केतु	04/04/2092

चंद्र - बुध	
04/04/2092	
09/08/2094	
बुध	08/08/2092
शुक्र	19/12/2092
सूर्य	10/03/2093
मंगल	06/06/2093
गुरु	10/09/2093
शनि	23/12/2093
केतु	12/04/2094
चंद्र	09/08/2094

चंद्र - शुक्र	
09/08/2094	
31/01/2097	
शुक्र	27/12/2094
सूर्य	23/03/2095
मंगल	25/06/2095
गुरु	05/10/2095
शनि	22/01/2096
केतु	18/05/2096
चंद्र	20/09/2096
बुध	31/01/2097

चंद्र - सूर्य	
31/01/2097	
09/08/2098	
सूर्य	25/03/2097
मंगल	21/05/2097
गुरु	22/07/2097
शनि	27/09/2097
केतु	08/12/2097
चंद्र	22/02/2098
बुध	15/05/2098
शुक्र	09/08/2098

चंद्र - मंगल	
09/08/2098	
05/04/2100	
मंगल	10/10/2098
गुरु	17/12/2098
शनि	28/02/2099
केतु	17/05/2099
चंद्र	08/08/2099
बुध	05/11/2099
शुक्र	07/02/2100
सूर्य	05/04/2100

चंद्र - गुरु	
05/04/2100	
20/01/2102	
गुरु	17/06/2100
शनि	05/09/2100
केतु	28/11/2100
चंद्र	27/02/2101
बुध	03/06/2101
शुक्र	12/09/2101
सूर्य	13/11/2101
मंगल	20/01/2102

चंद्र - शनि	
20/01/2102	
26/12/2103	
शनि	15/04/2102
केतु	15/07/2102
चंद्र	21/10/2102
बुध	01/02/2103
शुक्र	21/05/2103
सूर्य	27/07/2103
मंगल	08/10/2103
गुरु	26/12/2103

चंद्र - केतु	
26/12/2103	
20/01/2106	
केतु	02/04/2104
चंद्र	15/07/2104
बुध	03/11/2104
शुक्र	28/02/2105
सूर्य	11/05/2105
मंगल	28/07/2105
गुरु	21/10/2105
शनि	20/01/2106

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 1 वर्ष 10 मास 30 दिन

मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष	
27/01/2000		27/12/2001		27/12/2013		27/08/2024		27/04/2037	
27/12/2001		27/12/2013		27/08/2024		27/04/2037		27/08/2048	
	00/00/0000	राहु	15/10/2003	गुरु	30/05/2015	शनि	29/08/2026	बुध	05/12/2038
	00/00/0000	गुरु	22/05/2005	शनि	05/02/2017	बुध	15/06/2028	केतु	03/08/2039
	00/00/0000	शनि	16/04/2007	बुध	11/08/2018	केतु	12/03/2029	शुक्र	23/06/2041
	27/01/2000	बुध	27/12/2008	केतु	26/03/2019	शुक्र	22/04/2031	सूर्य	16/01/2042
बुध	25/04/2000	केतु	08/09/2009	शुक्र	04/01/2021	सूर्य	09/12/2031	चंद्र	27/12/2042
केतु	02/08/2000	शुक्र	09/09/2011	सूर्य	18/07/2021	चंद्र	29/12/2032	मंगल	26/08/2043
शुक्र	14/05/2001	सूर्य	15/04/2012	चंद्र	07/06/2022	मंगल	24/09/2033	राहु	07/05/2045
सूर्य	07/08/2001	चंद्र	15/04/2013	मंगल	20/01/2023	राहु	19/08/2035	गुरु	10/11/2046
चंद्र	27/12/2001	मंगल	27/12/2013	राहु	27/08/2024	गुरु	27/04/2037	शनि	27/08/2048

केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष	
27/08/2048		27/04/2053		27/08/2066		27/08/2070		27/04/2077	
27/04/2053		27/08/2066		27/08/2070		27/04/2077		00/00/0000	
केतु	04/12/2048	शुक्र	18/07/2055	सूर्य	08/11/2066	चंद्र	18/03/2071	मंगल	05/08/2077
शुक्र	14/09/2049	सूर्य	18/03/2056	चंद्र	10/03/2067	मंगल	07/08/2071	राहु	17/04/2078
सूर्य	09/12/2049	चंद्र	27/04/2057	मंगल	03/06/2067	राहु	07/08/2072	गुरु	01/12/2078
चंद्र	30/04/2050	मंगल	05/02/2058	राहु	09/01/2068	गुरु	27/06/2073	शनि	28/08/2079
मंगल	07/08/2050	राहु	06/02/2060	गुरु	21/07/2068	शनि	18/07/2074	बुध	27/01/2080
राहु	20/04/2051	गुरु	16/11/2061	शनि	10/03/2069	बुध	28/06/2075		00/00/0000
गुरु	03/12/2051	शनि	27/12/2063	बुध	03/10/2069	केतु	17/11/2075		00/00/0000
शनि	29/08/2052	बुध	16/11/2065	केतु	27/12/2069	शुक्र	27/12/2076		00/00/0000
बुध	27/04/2053	केतु	27/08/2066	शुक्र	27/08/2070	सूर्य	27/04/2077		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
27/01/2000		25/04/2000		02/08/2000		14/05/2001		07/08/2001	
25/04/2000		02/08/2000		14/05/2001		07/08/2001		27/12/2001	
	00/00/0000	केतु	01/05/2000	शुक्र	19/09/2000	सूर्य	18/05/2001	चंद्र	19/08/2001
	00/00/0000	शुक्र	17/05/2000	सूर्य	03/10/2000	चंद्र	25/05/2001	मंगल	27/08/2001
	00/00/0000	सूर्य	22/05/2000	चंद्र	27/10/2000	मंगल	30/05/2001	राहु	17/09/2001
	00/00/0000	चंद्र	31/05/2000	मंगल	12/11/2000	राहु	12/06/2001	गुरु	06/10/2001
	00/00/0000	मंगल	05/06/2000	राहु	25/12/2000	गुरु	23/06/2001	शनि	29/10/2001
	27/01/2000	राहु	20/06/2000	गुरु	01/02/2001	शनि	07/07/2001	बुध	18/11/2001
राहु	15/02/2000	गुरु	04/07/2000	शनि	18/03/2001	बुध	19/07/2001	केतु	26/11/2001
गुरु	18/03/2000	शनि	19/07/2000	बुध	27/04/2001	केतु	24/07/2001	शुक्र	20/12/2001
शनि	25/04/2000	बुध	02/08/2000	केतु	14/05/2001	शुक्र	07/08/2001	सूर्य	27/12/2001

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
27/12/2001		15/10/2003		22/05/2005		16/04/2007		27/12/2008	
15/10/2003		22/05/2005		16/04/2007		27/12/2008		08/09/2009	
राहु	04/04/2002	गुरु	01/01/2004	शनि	09/09/2005	बुध	13/07/2007	केतु	10/01/2009
गुरु	01/07/2002	शनि	03/04/2004	बुध	16/12/2005	केतु	18/08/2007	शुक्र	22/02/2009
शनि	13/10/2002	बुध	25/06/2004	केतु	25/01/2006	शुक्र	29/11/2007	सूर्य	07/03/2009
बुध	14/01/2003	केतु	29/07/2004	शुक्र	21/05/2006	सूर्य	30/12/2007	चंद्र	28/03/2009
केतु	22/02/2003	शुक्र	03/11/2004	सूर्य	25/06/2006	चंद्र	20/02/2008	मंगल	12/04/2009
शुक्र	11/06/2003	सूर्य	02/12/2004	चंद्र	22/08/2006	मंगल	27/03/2008	राहु	20/05/2009
सूर्य	14/07/2003	चंद्र	20/01/2005	मंगल	01/10/2006	राहु	28/06/2008	गुरु	24/06/2009
चंद्र	07/09/2003	मंगल	23/02/2005	राहु	13/01/2007	गुरु	19/09/2008	शनि	03/08/2009
मंगल	15/10/2003	राहु	22/05/2005	गुरु	16/04/2007	शनि	27/12/2008	बुध	08/09/2009

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
08/09/2009		09/09/2011		15/04/2012		15/04/2013		27/12/2013	
09/09/2011		15/04/2012		15/04/2013		27/12/2013		30/05/2015	
शुक्र	08/01/2010	सूर्य	20/09/2011	चंद्र	15/05/2012	मंगल	30/04/2013	गुरु	06/03/2014
सूर्य	14/02/2010	चंद्र	08/10/2011	मंगल	06/06/2012	राहु	07/06/2013	शनि	27/05/2014
चंद्र	15/04/2010	मंगल	21/10/2011	राहु	30/07/2012	गुरु	12/07/2013	बुध	09/08/2014
मंगल	28/05/2010	राहु	23/11/2011	गुरु	17/09/2012	शनि	21/08/2013	केतु	08/09/2014
राहु	15/09/2010	गुरु	22/12/2011	शनि	14/11/2012	बुध	26/09/2013	शुक्र	04/12/2014
गुरु	21/12/2010	शनि	26/01/2012	बुध	05/01/2013	केतु	11/10/2013	सूर्य	30/12/2014
शनि	16/04/2011	बुध	26/02/2012	केतु	26/01/2013	शुक्र	23/11/2013	चंद्र	11/02/2015
बुध	28/07/2011	केतु	09/03/2012	शुक्र	28/03/2013	सूर्य	06/12/2013	मंगल	13/03/2015
केतु	09/09/2011	शुक्र	15/04/2012	सूर्य	15/04/2013	चंद्र	27/12/2013	राहु	30/05/2015

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
30/05/2015		05/02/2017		11/08/2018		26/03/2019		04/01/2021	
05/02/2017		11/08/2018		26/03/2019		04/01/2021		18/07/2021	
शनि	05/09/2015	बुध	24/04/2017	केतु	24/08/2018	शुक्र	13/07/2019	सूर्य	13/01/2021
बुध	01/12/2015	केतु	27/05/2017	शुक्र	01/10/2018	सूर्य	14/08/2019	चंद्र	30/01/2021
केतु	06/01/2016	शुक्र	27/08/2017	सूर्य	13/10/2018	चंद्र	07/10/2019	मंगल	10/02/2021
शुक्र	18/04/2016	सूर्य	23/09/2017	चंद्र	01/11/2018	मंगल	14/11/2019	राहु	11/03/2021
सूर्य	19/05/2016	चंद्र	08/11/2017	मंगल	14/11/2018	राहु	19/02/2020	गुरु	06/04/2021
चंद्र	09/07/2016	मंगल	10/12/2017	राहु	18/12/2018	गुरु	16/05/2020	शनि	07/05/2021
मंगल	14/08/2016	राहु	03/03/2018	गुरु	17/01/2019	शनि	27/08/2020	बुध	04/06/2021
राहु	15/11/2016	गुरु	16/05/2018	शनि	22/02/2019	बुध	27/11/2020	केतु	15/06/2021
गुरु	05/02/2017	शनि	11/08/2018	बुध	26/03/2019	केतु	04/01/2021	शुक्र	18/07/2021

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध	
18/07/2021		07/06/2022		20/01/2023		27/08/2024		29/08/2026	
07/06/2022		20/01/2023		27/08/2024		29/08/2026		15/06/2028	
चंद्र	14/08/2021	मंगल	20/06/2022	राहु	18/04/2023	शनि	21/12/2024	बुध	30/11/2026
मंगल	01/09/2021	राहु	25/07/2022	गुरु	05/07/2023	बुध	04/04/2025	केतु	07/01/2027
राहु	20/10/2021	गुरु	24/08/2022	शनि	06/10/2023	केतु	16/05/2025	शुक्र	27/04/2027
गुरु	02/12/2021	शनि	29/09/2022	बुध	27/12/2023	शुक्र	15/09/2025	सूर्य	29/05/2027
शनि	23/01/2022	बुध	31/10/2022	केतु	30/01/2024	सूर्य	22/10/2025	चंद्र	23/07/2027
बुध	10/03/2022	केतु	13/11/2022	शुक्र	07/05/2024	चंद्र	22/12/2025	मंगल	30/08/2027
केतु	29/03/2022	शुक्र	21/12/2022	सूर्य	05/06/2024	मंगल	03/02/2026	राहु	07/12/2027
शुक्र	22/05/2022	सूर्य	01/01/2023	चंद्र	24/07/2024	राहु	24/05/2026	गुरु	03/03/2028
सूर्य	07/06/2022	चंद्र	20/01/2023	मंगल	27/08/2024	गुरु	29/08/2026	शनि	15/06/2028

शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
15/06/2028		12/03/2029		22/04/2031		09/12/2031		29/12/2032	
12/03/2029		22/04/2031		09/12/2031		29/12/2032		24/09/2033	
केतु	01/07/2028	शुक्र	18/07/2029	सूर्य	03/05/2031	चंद्र	10/01/2032	मंगल	13/01/2033
शुक्र	15/08/2028	सूर्य	26/08/2029	चंद्र	23/05/2031	मंगल	02/02/2032	राहु	23/02/2033
सूर्य	28/08/2028	चंद्र	29/10/2029	मंगल	05/06/2031	राहु	31/03/2032	गुरु	31/03/2033
चंद्र	19/09/2028	मंगल	13/12/2029	राहु	10/07/2031	गुरु	21/05/2032	शनि	13/05/2033
मंगल	05/10/2028	राहु	08/04/2030	गुरु	10/08/2031	शनि	21/07/2032	बुध	20/06/2033
राहु	15/11/2028	गुरु	19/07/2030	शनि	15/09/2031	बुध	14/09/2032	केतु	06/07/2033
गुरु	21/12/2028	शनि	19/11/2030	बुध	18/10/2031	केतु	06/10/2032	शुक्र	20/08/2033
शनि	01/02/2029	बुध	08/03/2031	केतु	01/11/2031	शुक्र	09/12/2032	सूर्य	02/09/2033
बुध	12/03/2029	केतु	22/04/2031	शुक्र	09/12/2031	सूर्य	29/12/2032	चंद्र	24/09/2033

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र	
24/09/2033		19/08/2035		27/04/2037		05/12/2038		03/08/2039	
19/08/2035		27/04/2037		05/12/2038		03/08/2039		23/06/2041	
राहु	07/01/2034	गुरु	10/11/2035	बुध	19/07/2037	केतु	19/12/2038	शुक्र	26/11/2039
गुरु	09/04/2034	शनि	15/02/2036	केतु	23/08/2037	शुक्र	28/01/2039	सूर्य	31/12/2039
शनि	28/07/2034	बुध	13/05/2036	शुक्र	28/11/2037	सूर्य	09/02/2039	चंद्र	26/02/2040
बुध	03/11/2034	केतु	18/06/2036	सूर्य	28/12/2037	चंद्र	01/03/2039	मंगल	06/04/2040
केतु	14/12/2034	शुक्र	29/09/2036	चंद्र	15/02/2038	मंगल	15/03/2039	राहु	19/07/2040
शुक्र	08/04/2035	सूर्य	29/10/2036	मंगल	21/03/2038	राहु	21/04/2039	गुरु	19/10/2040
सूर्य	13/05/2035	चंद्र	20/12/2036	राहु	17/06/2038	गुरु	23/05/2039	शनि	05/02/2041
चंद्र	10/07/2035	मंगल	25/01/2037	गुरु	03/09/2038	शनि	30/06/2039	बुध	14/05/2041
मंगल	19/08/2035	राहु	27/04/2037	शनि	05/12/2038	बुध	03/08/2039	केतु	23/06/2041

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु	
23/06/2041		16/01/2042		27/12/2042		26/08/2043		07/05/2045	
16/01/2042		27/12/2042		26/08/2043		07/05/2045		10/11/2046	
सूर्य	03/07/2041	चंद्र	14/02/2042	मंगल	10/01/2043	राहु	27/11/2043	गुरु	20/07/2045
चंद्र	21/07/2041	मंगल	06/03/2042	राहु	15/02/2043	गुरु	17/02/2044	शनि	15/10/2045
मंगल	02/08/2041	राहु	27/04/2042	गुरु	20/03/2043	शनि	26/05/2044	बुध	02/01/2046
राहु	02/09/2041	गुरु	12/06/2042	शनि	27/04/2043	बुध	22/08/2044	केतु	03/02/2046
गुरु	29/09/2041	शनि	05/08/2042	बुध	31/05/2043	केतु	27/09/2044	शुक्र	06/05/2046
शनि	01/11/2041	बुध	23/09/2042	केतु	14/06/2043	शुक्र	08/01/2045	सूर्य	02/06/2046
बुध	01/12/2041	केतु	13/10/2042	शुक्र	24/07/2043	सूर्य	09/02/2045	चंद्र	18/07/2046
केतु	13/12/2041	शुक्र	10/12/2042	सूर्य	05/08/2043	चंद्र	01/04/2045	मंगल	20/08/2046
शुक्र	16/01/2042	सूर्य	27/12/2042	चंद्र	26/08/2043	मंगल	07/05/2045	राहु	10/11/2046

बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र	
10/11/2046		27/08/2048		04/12/2048		14/09/2049		09/12/2049	
27/08/2048		04/12/2048		14/09/2049		09/12/2049		30/04/2050	
शनि	22/02/2047	केतु	02/09/2048	शुक्र	21/01/2049	सूर्य	19/09/2049	चंद्र	20/12/2049
बुध	26/05/2047	शुक्र	18/09/2048	सूर्य	04/02/2049	चंद्र	26/09/2049	मंगल	29/12/2049
केतु	03/07/2047	सूर्य	23/09/2048	चंद्र	27/02/2049	मंगल	01/10/2049	राहु	19/01/2050
शुक्र	21/10/2047	चंद्र	01/10/2048	मंगल	16/03/2049	राहु	13/10/2049	गुरु	07/02/2050
सूर्य	22/11/2047	मंगल	07/10/2048	राहु	28/04/2049	गुरु	25/10/2049	शनि	01/03/2050
चंद्र	16/01/2048	राहु	22/10/2048	गुरु	05/06/2049	शनि	07/11/2049	बुध	22/03/2050
मंगल	23/02/2048	गुरु	04/11/2048	शनि	20/07/2049	बुध	19/11/2049	केतु	30/03/2050
राहु	31/05/2048	शनि	20/11/2048	बुध	29/08/2049	केतु	24/11/2049	शुक्र	23/04/2050
गुरु	27/08/2048	बुध	04/12/2048	केतु	14/09/2049	शुक्र	09/12/2049	सूर्य	30/04/2050

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
30/04/2050		07/08/2050		20/04/2051		03/12/2051		29/08/2052	
07/08/2050		20/04/2051		03/12/2051		29/08/2052		27/04/2053	
मंगल	05/05/2050	राहु	14/09/2050	गुरु	20/05/2051	शनि	15/01/2052	बुध	02/10/2052
राहु	20/05/2050	गुरु	18/10/2050	शनि	25/06/2051	बुध	22/02/2052	केतु	16/10/2052
गुरु	03/06/2050	शनि	28/11/2050	बुध	27/07/2051	केतु	09/03/2052	शुक्र	25/11/2052
शनि	18/06/2050	बुध	03/01/2051	केतु	09/08/2051	शुक्र	23/04/2052	सूर्य	07/12/2052
बुध	02/07/2050	केतु	18/01/2051	शुक्र	16/09/2051	सूर्य	06/05/2052	चंद्र	28/12/2052
केतु	08/07/2050	शुक्र	02/03/2051	सूर्य	28/09/2051	चंद्र	29/05/2052	मंगल	11/01/2053
शुक्र	25/07/2050	सूर्य	14/03/2051	चंद्र	17/10/2051	मंगल	13/06/2052	राहु	16/02/2053
सूर्य	30/07/2050	चंद्र	05/04/2051	मंगल	30/10/2051	राहु	24/07/2052	गुरु	20/03/2053
चंद्र	07/08/2050	मंगल	20/04/2051	राहु	03/12/2051	गुरु	29/08/2052	शनि	27/04/2053

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु	
27/04/2053		18/07/2055		18/03/2056		27/04/2057		05/02/2058	
18/07/2055		18/03/2056		27/04/2057		05/02/2058		06/02/2060	
शुक्र	10/09/2053	सूर्य	30/07/2055	चंद्र	20/04/2056	मंगल	14/05/2057	राहु	26/05/2058
सूर्य	20/10/2053	चंद्र	19/08/2055	मंगल	14/05/2056	राहु	26/06/2057	गुरु	31/08/2058
चंद्र	27/12/2053	मंगल	03/09/2055	राहु	14/07/2056	गुरु	02/08/2057	शनि	25/12/2058
मंगल	12/02/2054	राहु	09/10/2055	गुरु	06/09/2056	शनि	16/09/2057	बुध	08/04/2059
राहु	14/06/2054	गुरु	11/11/2055	शनि	09/11/2056	बुध	27/10/2057	केतु	20/05/2059
गुरु	30/09/2054	शनि	19/12/2055	बुध	06/01/2057	केतु	12/11/2057	शुक्र	19/09/2059
शनि	06/02/2055	बुध	23/01/2056	केतु	29/01/2057	शुक्र	30/12/2057	सूर्य	25/10/2059
बुध	01/06/2055	केतु	06/02/2056	शुक्र	07/04/2057	सूर्य	13/01/2058	चंद्र	25/12/2059
केतु	18/07/2055	शुक्र	18/03/2056	सूर्य	27/04/2057	चंद्र	05/02/2058	मंगल	06/02/2060

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
06/02/2060		16/11/2061		27/12/2063		16/11/2065		27/08/2066	
16/11/2061		27/12/2063		16/11/2065		27/08/2066		08/11/2066	
गुरु	02/05/2060	शनि	18/03/2062	बुध	03/04/2064	केतु	03/12/2065	सूर्य	31/08/2066
शनि	13/08/2060	बुध	06/07/2062	केतु	13/05/2064	शुक्र	19/01/2066	चंद्र	06/09/2066
बुध	13/11/2060	केतु	20/08/2062	शुक्र	05/09/2064	सूर्य	02/02/2066	मंगल	10/09/2066
केतु	21/12/2060	शुक्र	26/12/2062	सूर्य	10/10/2064	चंद्र	26/02/2066	राहु	21/09/2066
शुक्र	08/04/2061	सूर्य	03/02/2063	चंद्र	06/12/2064	मंगल	15/03/2066	गुरु	01/10/2066
सूर्य	11/05/2061	चंद्र	08/04/2063	मंगल	16/01/2065	राहु	26/04/2066	शनि	13/10/2066
चंद्र	04/07/2061	मंगल	23/05/2063	राहु	29/04/2065	गुरु	03/06/2066	बुध	23/10/2066
मंगल	11/08/2061	राहु	16/09/2063	गुरु	30/07/2065	शनि	18/07/2066	केतु	27/10/2066
राहु	16/11/2061	गुरु	27/12/2063	शनि	16/11/2065	बुध	27/08/2066	शुक्र	08/11/2066

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - चंद्र	
08/11/2066	
10/03/2067	
चंद्र	19/11/2066
मंगल	26/11/2066
राहु	14/12/2066
गुरु	30/12/2066
शनि	18/01/2067
बुध	05/02/2067
केतु	12/02/2067
शुक्र	04/03/2067
सूर्य	10/03/2067

सूर्य - मंगल	
10/03/2067	
03/06/2067	
मंगल	15/03/2067
राहु	28/03/2067
गुरु	08/04/2067
शनि	22/04/2067
बुध	04/05/2067
केतु	09/05/2067
शुक्र	23/05/2067
सूर्य	27/05/2067
चंद्र	03/06/2067

सूर्य - राहु	
03/06/2067	
09/01/2068	
राहु	06/07/2067
गुरु	04/08/2067
शनि	08/09/2067
बुध	09/10/2067
केतु	22/10/2067
शुक्र	28/11/2067
सूर्य	08/12/2067
चंद्र	27/12/2067
मंगल	09/01/2068

सूर्य - गुरु	
09/01/2068	
21/07/2068	
गुरु	03/02/2068
शनि	05/03/2068
बुध	02/04/2068
केतु	13/04/2068
शुक्र	16/05/2068
सूर्य	25/05/2068
चंद्र	11/06/2068
मंगल	22/06/2068
राहु	21/07/2068

सूर्य - शनि	
21/07/2068	
10/03/2069	
शनि	27/08/2068
बुध	29/09/2068
केतु	12/10/2068
शुक्र	20/11/2068
सूर्य	01/12/2068
चंद्र	21/12/2068
मंगल	03/01/2069
राहु	07/02/2069
गुरु	10/03/2069

सूर्य - बुध	
10/03/2069	
03/10/2069	
बुध	08/04/2069
केतु	20/04/2069
शुक्र	25/05/2069
सूर्य	04/06/2069
चंद्र	21/06/2069
मंगल	03/07/2069
राहु	03/08/2069
गुरु	31/08/2069
शनि	03/10/2069

सूर्य - केतु	
03/10/2069	
27/12/2069	
केतु	08/10/2069
शुक्र	22/10/2069
सूर्य	26/10/2069
चंद्र	02/11/2069
मंगल	07/11/2069
राहु	20/11/2069
गुरु	01/12/2069
शनि	15/12/2069
बुध	27/12/2069

सूर्य - शुक्र	
27/12/2069	
27/08/2070	
शुक्र	05/02/2070
सूर्य	18/02/2070
चंद्र	10/03/2070
मंगल	24/03/2070
राहु	30/04/2070
गुरु	01/06/2070
शनि	10/07/2070
बुध	13/08/2070
केतु	27/08/2070

चंद्र - चंद्र	
27/08/2070	
18/03/2071	
चंद्र	13/09/2070
मंगल	25/09/2070
राहु	26/10/2070
गुरु	22/11/2070
शनि	24/12/2070
बुध	21/01/2071
केतु	02/02/2071
शुक्र	08/03/2071
सूर्य	18/03/2071

चंद्र - मंगल	
18/03/2071	
07/08/2071	
मंगल	27/03/2071
राहु	17/04/2071
गुरु	06/05/2071
शनि	28/05/2071
बुध	17/06/2071
केतु	26/06/2071
शुक्र	19/07/2071
सूर्य	26/07/2071
चंद्र	07/08/2071

चंद्र - राहु	
07/08/2071	
07/08/2072	
राहु	01/10/2071
गुरु	19/11/2071
शनि	16/01/2072
बुध	07/03/2072
केतु	29/03/2072
शुक्र	29/05/2072
सूर्य	16/06/2072
चंद्र	16/07/2072
मंगल	07/08/2072

चंद्र - गुरु	
07/08/2072	
27/06/2073	
गुरु	19/09/2072
शनि	09/11/2072
बुध	25/12/2072
केतु	13/01/2073
शुक्र	08/03/2073
सूर्य	25/03/2073
चंद्र	21/04/2073
मंगल	10/05/2073
राहु	27/06/2073

चंद्र - शनि	
27/06/2073	
18/07/2074	
शनि	27/08/2073
बुध	21/10/2073
केतु	12/11/2073
शुक्र	16/01/2074
सूर्य	04/02/2074
चंद्र	08/03/2074
मंगल	31/03/2074
राहु	27/05/2074
गुरु	18/07/2074

चंद्र - बुध	
18/07/2074	
28/06/2075	
बुध	05/09/2074
केतु	25/09/2074
शुक्र	21/11/2074
सूर्य	08/12/2074
चंद्र	06/01/2075
मंगल	26/01/2075
राहु	19/03/2075
गुरु	04/05/2075
शनि	28/06/2075

चंद्र - केतु	
28/06/2075	
17/11/2075	
केतु	06/07/2075
शुक्र	30/07/2075
सूर्य	06/08/2075
चंद्र	18/08/2075
मंगल	26/08/2075
राहु	16/09/2075
गुरु	05/10/2075
शनि	28/10/2075
बुध	17/11/2075

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 10 वर्ष 2 मास 28 दिन

बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष	
27/01/2000		26/04/2010		25/04/2020		26/04/2039		26/04/2051	
26/04/2010		25/04/2020		26/04/2039		26/04/2051		25/04/2072	
	00/00/0000	शनि	30/03/2011	गुरु	29/08/2023	राहु	25/08/2040	शुक्र	27/05/2055
	27/01/2000	गुरु	01/01/2013	राहु	08/10/2025	शुक्र	25/12/2042	सूर्य	26/07/2056
गुरु	22/07/2000	राहु	11/02/2014	शुक्र	19/06/2029	सूर्य	26/08/2043	चंद्र	26/06/2059
राहु	12/06/2002	शुक्र	22/01/2016	सूर्य	09/07/2030	चंद्र	26/04/2045	मंगल	14/01/2061
शुक्र	02/10/2005	सूर्य	12/08/2016	चंद्र	27/02/2033	मंगल	16/03/2046	बुध	06/05/2064
सूर्य	12/09/2006	चंद्र	01/01/2018	मंगल	26/07/2034	बुध	04/02/2048	शनि	16/04/2066
चंद्र	21/01/2009	मंगल	29/09/2018	बुध	23/07/2037	शनि	16/03/2049	गुरु	25/12/2069
मंगल	26/04/2010	बुध	25/04/2020	शनि	26/04/2039	गुरु	26/04/2051	राहु	25/04/2072

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
25/04/2072		26/04/2078		26/04/2093		27/04/2101	
26/04/2078		26/04/2093		27/04/2101		00/00/0000	
सूर्य	25/08/2072	चंद्र	26/05/2080	मंगल	28/11/2093	बुध	30/12/2103
चंद्र	26/06/2073	मंगल	06/07/2081	बुध	03/03/2095	शनि	27/07/2105
मंगल	05/12/2073	बुध	15/11/2083	शनि	29/11/2095	गुरु	28/01/2108
बुध	15/11/2074	शनि	05/04/2085	गुरु	26/04/2097		00/00/0000
शनि	06/06/2075	गुरु	25/11/2087	राहु	16/03/2098		00/00/0000
गुरु	25/06/2076	राहु	26/07/2089	शुक्र	06/10/2099		00/00/0000
राहु	24/02/2077	शुक्र	25/06/2092	सूर्य	17/03/2100		00/00/0000
शुक्र	26/04/2078	सूर्य	26/04/2093	चंद्र	27/04/2101		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
27/01/2000		22/07/2000		12/06/2002		02/10/2005		12/09/2006	
22/07/2000		12/06/2002		02/10/2005		12/09/2006		21/01/2009	
	00/00/0000	राहु	07/10/2000	शुक्र	02/02/2003	सूर्य	21/10/2005	चंद्र	09/01/2007
	00/00/0000	शुक्र	18/02/2001	सूर्य	10/04/2003	चंद्र	08/12/2005	मंगल	14/03/2007
	00/00/0000	सूर्य	29/03/2001	चंद्र	25/09/2003	मंगल	02/01/2006	बुध	28/07/2007
	00/00/0000	चंद्र	02/07/2001	मंगल	23/12/2003	बुध	26/02/2006	शनि	16/10/2007
	00/00/0000	मंगल	22/08/2001	बुध	30/06/2004	शनि	30/03/2006	गुरु	16/03/2008
	27/01/2000	बुध	09/12/2001	शनि	20/10/2004	गुरु	29/05/2006	राहु	19/06/2008
बुध	12/04/2000	शनि	11/02/2002	गुरु	21/05/2005	राहु	07/07/2006	शुक्र	04/12/2008
शनि	22/07/2000	गुरु	12/06/2002	राहु	02/10/2005	शुक्र	12/09/2006	सूर्य	21/01/2009

बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु		शनि - राहु		शनि - शुक्र	
21/01/2009		26/04/2010		30/03/2011		01/01/2013		11/02/2014	
26/04/2010		30/03/2011		01/01/2013		11/02/2014		22/01/2016	
मंगल	24/02/2009	शनि	27/05/2010	गुरु	21/07/2011	राहु	15/02/2013	शुक्र	29/06/2014
बुध	08/05/2009	गुरु	26/07/2010	राहु	01/10/2011	शुक्र	05/05/2013	सूर्य	07/08/2014
शनि	19/06/2009	राहु	01/09/2010	शुक्र	03/02/2012	सूर्य	27/05/2013	चंद्र	14/11/2014
गुरु	08/09/2009	शुक्र	06/11/2010	सूर्य	09/03/2012	चंद्र	23/07/2013	मंगल	05/01/2015
राहु	29/10/2009	सूर्य	25/11/2010	चंद्र	07/06/2012	मंगल	22/08/2013	बुध	27/04/2015
शुक्र	27/01/2010	चंद्र	11/01/2011	मंगल	24/07/2012	बुध	25/10/2013	शनि	02/07/2015
सूर्य	21/02/2010	मंगल	05/02/2011	बुध	02/11/2012	शनि	01/12/2013	गुरु	04/11/2015
चंद्र	26/04/2010	बुध	30/03/2011	शनि	01/01/2013	गुरु	11/02/2014	राहु	22/01/2016

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - बुध		गुरु - गुरु	
22/01/2016		12/08/2016		01/01/2018		29/09/2018		25/04/2020	
12/08/2016		01/01/2018		29/09/2018		25/04/2020		29/08/2023	
सूर्य	02/02/2016	चंद्र	21/10/2016	मंगल	21/01/2018	बुध	28/12/2018	गुरु	26/11/2020
चंद्र	01/03/2016	मंगल	28/11/2016	बुध	05/03/2018	शनि	19/02/2019	राहु	11/04/2021
मंगल	16/03/2016	बुध	16/02/2017	शनि	30/03/2018	गुरु	31/05/2019	शुक्र	04/12/2021
बुध	17/04/2016	शनि	04/04/2017	गुरु	16/05/2018	राहु	03/08/2019	सूर्य	10/02/2022
शनि	06/05/2016	गुरु	02/07/2017	राहु	15/06/2018	शुक्र	23/11/2019	चंद्र	30/07/2022
गुरु	11/06/2016	राहु	27/08/2017	शुक्र	07/08/2018	सूर्य	25/12/2019	मंगल	28/10/2022
राहु	03/07/2016	शुक्र	04/12/2017	सूर्य	22/08/2018	चंद्र	14/03/2020	बुध	08/05/2023
शुक्र	12/08/2016	सूर्य	01/01/2018	चंद्र	29/09/2018	मंगल	25/04/2020	शनि	29/08/2023

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल	
29/08/2023		08/10/2025		19/06/2029		09/07/2030		27/02/2033	
08/10/2025		19/06/2029		09/07/2030		27/02/2033		26/07/2034	
राहु	23/11/2023	शुक्र	28/06/2026	सूर्य	10/07/2029	चंद्र	20/11/2030	मंगल	06/04/2033
शुक्र	21/04/2024	सूर्य	11/09/2026	चंद्र	02/09/2029	मंगल	31/01/2031	बुध	26/06/2033
सूर्य	03/06/2024	चंद्र	17/03/2027	मंगल	30/09/2029	बुध	01/07/2031	शनि	13/08/2033
चंद्र	18/09/2024	मंगल	25/06/2027	बुध	30/11/2029	शनि	29/09/2031	गुरु	11/11/2033
मंगल	14/11/2024	बुध	24/01/2028	शनि	05/01/2030	गुरु	16/03/2032	राहु	07/01/2034
बुध	15/03/2025	शनि	28/05/2028	गुरु	14/03/2030	राहु	01/07/2032	शुक्र	17/04/2034
शनि	26/05/2025	गुरु	20/01/2029	राहु	25/04/2030	शुक्र	05/01/2033	सूर्य	16/05/2034
गुरु	08/10/2025	राहु	19/06/2029	शुक्र	09/07/2030	सूर्य	27/02/2033	चंद्र	26/07/2034

गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
26/07/2034		23/07/2037		26/04/2039		25/08/2040		25/12/2042	
23/07/2037		26/04/2039		25/08/2040		25/12/2042		26/08/2043	
बुध	14/01/2035	शनि	20/09/2037	राहु	19/06/2039	शुक्र	07/02/2041	सूर्य	08/01/2043
शनि	25/04/2035	गुरु	11/01/2038	शुक्र	22/09/2039	सूर्य	26/03/2041	चंद्र	11/02/2043
गुरु	04/11/2035	राहु	24/03/2038	सूर्य	19/10/2039	चंद्र	23/07/2041	मंगल	01/03/2043
राहु	04/03/2036	शुक्र	27/07/2038	चंद्र	26/12/2039	मंगल	24/09/2041	बुध	08/04/2043
शुक्र	02/10/2036	सूर्य	31/08/2038	मंगल	31/01/2040	बुध	05/02/2042	शनि	01/05/2043
सूर्य	02/12/2036	चंद्र	28/11/2038	बुध	16/04/2040	शनि	25/04/2042	गुरु	13/06/2043
चंद्र	03/05/2037	मंगल	15/01/2039	शनि	01/06/2040	गुरु	22/09/2042	राहु	10/07/2043
मंगल	23/07/2037	बुध	26/04/2039	गुरु	25/08/2040	राहु	25/12/2042	शुक्र	26/08/2043

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध		राहु - शनि		राहु - गुरु	
26/08/2043		26/04/2045		16/03/2046		04/02/2048		16/03/2049	
26/04/2045		16/03/2046		04/02/2048		16/03/2049		26/04/2051	
चंद्र	19/11/2043	मंगल	20/05/2045	बुध	03/07/2046	शनि	13/03/2048	गुरु	30/07/2049
मंगल	03/01/2044	बुध	10/07/2045	शनि	05/09/2046	गुरु	23/05/2048	राहु	23/10/2049
बुध	07/04/2044	शनि	09/08/2045	गुरु	04/01/2047	राहु	07/07/2048	शुक्र	22/03/2050
शनि	03/06/2044	गुरु	05/10/2045	राहु	22/03/2047	शुक्र	24/09/2048	सूर्य	04/05/2050
गुरु	18/09/2044	राहु	10/11/2045	शुक्र	03/08/2047	सूर्य	17/10/2048	चंद्र	19/08/2050
राहु	25/11/2044	शुक्र	12/01/2046	सूर्य	10/09/2047	चंद्र	12/12/2048	मंगल	15/10/2050
शुक्र	23/03/2045	सूर्य	30/01/2046	चंद्र	15/12/2047	मंगल	11/01/2049	बुध	14/02/2051
सूर्य	26/04/2045	चंद्र	16/03/2046	मंगल	04/02/2048	बुध	16/03/2049	शनि	26/04/2051

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध	
26/04/2051		27/05/2055		26/07/2056		26/06/2059		14/01/2061	
27/05/2055		26/07/2056		26/06/2059		14/01/2061		06/05/2064	
शुक्र	10/02/2052	सूर्य	19/06/2055	चंद्र	21/12/2056	मंगल	07/08/2059	बुध	23/07/2061
सूर्य	03/05/2052	चंद्र	18/08/2055	मंगल	10/03/2057	बुध	05/11/2059	शनि	12/11/2061
चंद्र	26/11/2052	मंगल	18/09/2055	बुध	24/08/2057	शनि	27/12/2059	गुरु	13/06/2062
मंगल	17/03/2053	बुध	24/11/2055	शनि	01/12/2057	गुरु	05/04/2060	राहु	25/10/2062
बुध	06/11/2053	शनि	03/01/2056	गुरु	06/06/2058	राहु	07/06/2060	शुक्र	16/06/2063
शनि	25/03/2054	गुरु	18/03/2056	राहु	03/10/2058	शुक्र	26/09/2060	सूर्य	23/08/2063
गुरु	12/12/2054	राहु	04/05/2056	शुक्र	28/04/2059	सूर्य	27/10/2060	चंद्र	06/02/2064
राहु	27/05/2055	शुक्र	26/07/2056	सूर्य	26/06/2059	चंद्र	14/01/2061	मंगल	06/05/2064

शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
06/05/2064		16/04/2066		25/12/2069		25/04/2072		25/08/2072	
16/04/2066		25/12/2069		25/04/2072		25/08/2072		26/06/2073	
शनि	10/07/2064	गुरु	09/12/2066	राहु	30/03/2070	सूर्य	02/05/2072	चंद्र	07/10/2072
गुरु	12/11/2064	राहु	08/05/2067	शुक्र	12/09/2070	चंद्र	19/05/2072	मंगल	29/10/2072
राहु	30/01/2065	शुक्र	26/01/2068	सूर्य	29/10/2070	मंगल	28/05/2072	बुध	16/12/2072
शुक्र	17/06/2065	सूर्य	10/04/2068	चंद्र	24/02/2071	बुध	16/06/2072	शनि	13/01/2073
सूर्य	27/07/2065	चंद्र	14/10/2068	मंगल	28/04/2071	शनि	28/06/2072	गुरु	08/03/2073
चंद्र	02/11/2065	मंगल	22/01/2069	बुध	10/09/2071	गुरु	19/07/2072	राहु	11/04/2073
मंगल	25/12/2065	बुध	22/08/2069	शनि	28/11/2071	राहु	02/08/2072	शुक्र	09/06/2073
बुध	16/04/2066	शनि	25/12/2069	गुरु	25/04/2072	शुक्र	25/08/2072	सूर्य	26/06/2073

सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध		सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु	
26/06/2073		05/12/2073		15/11/2074		06/06/2075		25/06/2076	
05/12/2073		15/11/2074		06/06/2075		25/06/2076		24/02/2077	
मंगल	08/07/2073	बुध	28/01/2074	शनि	04/12/2074	गुरु	13/08/2075	राहु	22/07/2076
बुध	02/08/2073	शनि	01/03/2074	गुरु	08/01/2075	राहु	24/09/2075	शुक्र	08/09/2076
शनि	17/08/2073	गुरु	01/05/2074	राहु	31/01/2075	शुक्र	08/12/2075	सूर्य	21/09/2076
गुरु	15/09/2073	राहु	08/06/2074	शुक्र	11/03/2075	सूर्य	30/12/2075	चंद्र	25/10/2076
राहु	03/10/2073	शुक्र	14/08/2074	सूर्य	23/03/2075	चंद्र	21/02/2076	मंगल	12/11/2076
शुक्र	03/11/2073	सूर्य	02/09/2074	चंद्र	20/04/2075	मंगल	21/03/2076	बुध	20/12/2076
सूर्य	12/11/2073	चंद्र	20/10/2074	मंगल	05/05/2075	बुध	21/05/2076	शनि	12/01/2077
चंद्र	05/12/2073	मंगल	15/11/2074	बुध	06/06/2075	शनि	25/06/2076	गुरु	24/02/2077

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - बुध		चंद्र - शनि	
24/02/2077		26/04/2078		26/05/2080		06/07/2081		15/11/2083	
26/04/2078		26/05/2080		06/07/2081		15/11/2083		05/04/2085	
शुक्र	18/05/2077	चंद्र	10/08/2078	मंगल	25/06/2080	बुध	18/11/2081	शनि	01/01/2084
सूर्य	10/06/2077	मंगल	05/10/2078	बुध	28/08/2080	शनि	06/02/2082	गुरु	30/03/2084
चंद्र	09/08/2077	बुध	02/02/2079	शनि	04/10/2080	गुरु	08/07/2082	राहु	26/05/2084
मंगल	09/09/2077	शनि	13/04/2079	गुरु	15/12/2080	राहु	12/10/2082	शुक्र	01/09/2084
बुध	15/11/2077	गुरु	25/08/2079	राहु	29/01/2081	शुक्र	29/03/2083	सूर्य	30/09/2084
शनि	25/12/2077	राहु	18/11/2079	शुक्र	18/04/2081	सूर्य	15/05/2083	चंद्र	09/12/2084
गुरु	10/03/2078	शुक्र	14/04/2080	सूर्य	10/05/2081	चंद्र	12/09/2083	मंगल	16/01/2085
राहु	26/04/2078	सूर्य	26/05/2080	चंद्र	06/07/2081	मंगल	15/11/2083	बुध	05/04/2085

चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल	
05/04/2085		25/11/2087		26/07/2089		25/06/2092		26/04/2093	
25/11/2087		26/07/2089		25/06/2092		26/04/2093		28/11/2093	
गुरु	22/09/2085	राहु	01/02/2088	शुक्र	18/02/2090	सूर्य	12/07/2092	मंगल	12/05/2093
राहु	07/01/2086	शुक्र	29/05/2088	सूर्य	18/04/2090	चंद्र	24/08/2092	बुध	15/06/2093
शुक्र	14/07/2086	सूर्य	02/07/2088	चंद्र	13/09/2090	मंगल	15/09/2092	शनि	05/07/2093
सूर्य	05/09/2086	चंद्र	25/09/2088	मंगल	01/12/2090	बुध	02/11/2092	गुरु	12/08/2093
चंद्र	17/01/2087	मंगल	09/11/2088	बुध	18/05/2091	शनि	30/11/2092	राहु	05/09/2093
मंगल	29/03/2087	बुध	13/02/2089	शनि	25/08/2091	गुरु	23/01/2093	शुक्र	17/10/2093
बुध	28/08/2087	शनि	10/04/2089	गुरु	28/02/2092	राहु	26/02/2093	सूर्य	29/10/2093
शनि	25/11/2087	गुरु	26/07/2089	राहु	25/06/2092	शुक्र	26/04/2093	चंद्र	28/11/2093

मंगल - बुध		मंगल - शनि		मंगल - गुरु		मंगल - राहु		मंगल - शुक्र	
28/11/2093		03/03/2095		29/11/2095		26/04/2097		16/03/2098	
03/03/2095		29/11/2095		26/04/2097		16/03/2098		06/10/2099	
बुध	09/02/2094	शनि	28/03/2095	गुरु	27/02/2096	राहु	01/06/2097	शुक्र	05/07/2098
शनि	23/03/2094	गुरु	15/05/2095	राहु	24/04/2096	शुक्र	03/08/2097	सूर्य	05/08/2098
गुरु	12/06/2094	राहु	14/06/2095	शुक्र	02/08/2096	सूर्य	21/08/2097	चंद्र	23/10/2098
राहु	02/08/2094	शुक्र	05/08/2095	सूर्य	31/08/2096	चंद्र	05/10/2097	मंगल	04/12/2098
शुक्र	31/10/2094	सूर्य	20/08/2095	चंद्र	10/11/2096	मंगल	29/10/2097	बुध	04/03/2099
सूर्य	25/11/2094	चंद्र	27/09/2095	मंगल	18/12/2096	बुध	19/12/2097	शनि	25/04/2099
चंद्र	28/01/2095	मंगल	17/10/2095	बुध	09/03/2097	शनि	18/01/2098	गुरु	03/08/2099
मंगल	03/03/2095	बुध	29/11/2095	शनि	26/04/2097	गुरु	16/03/2098	राहु	06/10/2099

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : मंगला 0 वर्ष 4 मास 28 दिन

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
27/01/2000		25/06/2000		25/06/2002		25/06/2005		25/06/2009	
25/06/2000		25/06/2002		25/06/2005		25/06/2009		25/06/2014	
	00/00/0000	पिंग	05/08/2000	धांय	25/09/2002	भ्राम	05/12/2005	भद्रि	06/03/2010
	00/00/0000	धांय	04/10/2000	भ्राम	25/01/2003	भद्रि	25/06/2006	उल्क	04/01/2011
	00/00/0000	भ्राम	25/12/2000	भद्रि	26/06/2003	उल्क	24/02/2007	सिद्ध	25/12/2011
	00/00/0000	भद्रि	05/04/2001	उल्क	25/12/2003	सिद्ध	05/12/2007	संक	03/02/2013
	00/00/0000	उल्क	05/08/2001	सिद्ध	25/07/2004	संक	25/10/2008	मंग	26/03/2013
	27/01/2000	सिद्ध	25/12/2001	संक	26/03/2005	मंग	04/12/2008	पिंग	05/07/2013
सिद्ध	05/04/2000	संक	05/06/2002	मंग	25/04/2005	पिंग	23/02/2009	धांय	05/12/2013
संक	25/06/2000	मंग	25/06/2002	पिंग	25/06/2005	धांय	25/06/2009	भ्राम	25/06/2014

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
25/06/2014		25/06/2020		26/06/2027		26/06/2035		25/06/2036	
25/06/2020		26/06/2027		26/06/2035		25/06/2036		25/06/2038	
उल्क	26/06/2015	सिद्ध	04/11/2021	संक	05/04/2029	मंग	06/07/2035	पिंग	05/08/2036
सिद्ध	25/08/2016	संक	26/05/2023	मंग	25/06/2029	पिंग	26/07/2035	धांय	04/10/2036
संक	25/12/2017	मंग	05/08/2023	पिंग	05/12/2029	धांय	26/08/2035	भ्राम	25/12/2036
मंग	24/02/2018	पिंग	25/12/2023	धांय	05/08/2030	भ्राम	05/10/2035	भद्रि	05/04/2037
पिंग	25/06/2018	धांय	25/07/2024	भ्राम	26/06/2031	भद्रि	25/11/2035	उल्क	05/08/2037
धांय	25/12/2018	भ्राम	06/05/2025	भद्रि	05/08/2032	उल्क	25/01/2036	सिद्ध	25/12/2037
भ्राम	26/08/2019	भद्रि	26/04/2026	उल्क	05/12/2033	सिद्ध	05/04/2036	संक	05/06/2038
भद्रि	25/06/2020	उल्क	26/06/2027	सिद्ध	26/06/2035	संक	25/06/2036	मंग	25/06/2038

नोट :– योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :–

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
25/06/2038		25/06/2041		25/06/2045		25/06/2050		25/06/2056	
25/06/2041		25/06/2045		25/06/2050		25/06/2056		26/06/2063	
धांय	25/09/2038	भ्राम	05/12/2041	भद्रि	06/03/2046	उल्क	26/06/2051	सिद्ध	04/11/2057
भ्राम	25/01/2039	भद्रि	25/06/2042	उल्क	04/01/2047	सिद्ध	25/08/2052	संक	26/05/2059
भद्रि	26/06/2039	उल्क	24/02/2043	सिद्ध	25/12/2047	संक	25/12/2053	मंग	05/08/2059
उल्क	25/12/2039	सिद्ध	05/12/2043	संक	03/02/2049	मंग	24/02/2054	पिंग	25/12/2059
सिद्ध	25/07/2040	संक	25/10/2044	मंग	26/03/2049	पिंग	25/06/2054	धांय	25/07/2060
संक	26/03/2041	मंग	04/12/2044	पिंग	05/07/2049	धांय	25/12/2054	भ्राम	06/05/2061
मंग	25/04/2041	पिंग	23/02/2045	धांय	05/12/2049	भ्राम	26/08/2055	भद्रि	26/04/2062
पिंग	25/06/2041	धांय	25/06/2045	भ्राम	25/06/2050	भद्रि	25/06/2056	उल्क	26/06/2063

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
26/06/2063		26/06/2071		25/06/2072		25/06/2074		25/06/2077	
26/06/2071		25/06/2072		25/06/2074		25/06/2077		25/06/2081	
संक	05/04/2065	मंग	06/07/2071	पिंग	05/08/2072	धांय	25/09/2074	भ्राम	05/12/2077
मंग	25/06/2065	पिंग	26/07/2071	धांय	04/10/2072	भ्राम	25/01/2075	भद्रि	25/06/2078
पिंग	05/12/2065	धांय	26/08/2071	भ्राम	25/12/2072	भद्रि	26/06/2075	उल्क	24/02/2079
धांय	05/08/2066	भ्राम	05/10/2071	भद्रि	05/04/2073	उल्क	25/12/2075	सिद्ध	05/12/2079
भ्राम	26/06/2067	भद्रि	25/11/2071	उल्क	05/08/2073	सिद्ध	25/07/2076	संक	25/10/2080
भद्रि	05/08/2068	उल्क	25/01/2072	सिद्ध	25/12/2073	संक	26/03/2077	मंग	04/12/2080
उल्क	05/12/2069	सिद्ध	05/04/2072	संक	05/06/2074	मंग	25/04/2077	पिंग	23/02/2081
सिद्ध	26/06/2071	संक	25/06/2072	मंग	25/06/2074	पिंग	25/06/2077	धांय	25/06/2081

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
25/06/2081		25/06/2086		25/06/2092		26/06/2099		27/06/2107	
25/06/2086		25/06/2092		26/06/2099		27/06/2107		00/00/0000	
भद्रि	06/03/2082	उल्क	26/06/2087	सिद्ध	04/11/2093	संक	06/04/2101	मंग	07/07/2107
उल्क	04/01/2083	सिद्ध	25/08/2088	संक	26/05/2095	मंग	26/06/2101	पिंग	27/07/2107
सिद्ध	25/12/2083	संक	25/12/2089	मंग	05/08/2095	पिंग	06/12/2101	धांय	27/08/2107
संक	03/02/2085	मंग	24/02/2090	पिंग	25/12/2095	धांय	06/08/2102	भ्राम	06/10/2107
मंग	26/03/2085	पिंग	25/06/2090	धांय	25/07/2096	भ्राम	27/06/2103	भद्रि	26/11/2107
पिंग	05/07/2085	धांय	25/12/2090	भ्राम	06/05/2097	भद्रि	06/08/2104	उल्क	26/01/2108
धांय	05/12/2085	भ्राम	26/08/2091	भद्रि	26/04/2098	उल्क	06/12/2105	सिद्ध	28/01/2108
भ्राम	25/06/2086	भद्रि	25/06/2092	उल्क	26/06/2099	सिद्ध	27/06/2107		00/00/0000

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : धनु 3 वर्ष 3 मास 19 दिन
कुल दशाकाल : 83 वर्ष
तिथि : चित्रा - 3 सव्य
देह : वृष जीव : मिथुन

धनु 10 वर्ष		मकर 4 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष		मीन 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष	
27/01/2000		18/05/2003		18/05/2007		18/05/2011		17/05/2021	
18/05/2003		18/05/2007		18/05/2011		17/05/2021		17/05/2028	
	00/00/0000	मक	27/07/2003	कुंभ	27/07/2007	मीन	31/07/2012	वृश्चि	19/12/2021
	00/00/0000	कुंभ	06/10/2003	मीन	19/01/2008	वृश्चि	04/06/2013	तुला	26/04/2023
	00/00/0000	मीन	30/03/2004	वृश्चि	22/05/2008	तुला	09/05/2015	कन्या	28/01/2024
	00/00/0000	वृश्चि	31/07/2004	तुला	27/02/2009	कन्या	08/06/2016	तुला	04/06/2025
	00/00/0000	तुला	09/05/2005	कन्या	05/08/2009	तुला	13/05/2018	वृश्चि	06/01/2026
	27/01/2000	कन्या	14/10/2005	तुला	13/05/2010	वृश्चि	17/03/2019	धनु	10/11/2026
कन्या	09/08/2000	तुला	23/07/2006	वृश्चि	13/09/2010	धनु	30/05/2020	मक	13/03/2027
तुला	14/07/2002	वृश्चि	23/11/2006	धनु	08/03/2011	मक	22/11/2020	कुंभ	14/07/2027
वृश्चि	18/05/2003	धनु	18/05/2007	मक	18/05/2011	कुंभ	17/05/2021	मीन	17/05/2028

तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		तुला 16 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		धनु 10 वर्ष	
17/05/2028		17/05/2044		17/05/2053		17/05/2069		17/05/2076	
17/05/2044		17/05/2053		17/05/2069		17/05/2076		00/00/0000	
तुला	18/06/2031	कन्या	09/05/2045	तुला	17/06/2056	वृश्चि	19/12/2069	धनु	31/07/2077
कन्या	12/03/2033	तुला	01/02/2047	वृश्चि	23/10/2057	धनु	23/10/2070	मक	23/01/2078
तुला	12/04/2036	वृश्चि	06/11/2047	धनु	27/09/2059	मक	23/02/2071	कुंभ	18/07/2078
वृश्चि	18/08/2037	धनु	06/12/2048	मक	05/07/2060	कुंभ	27/06/2071	मीन	01/10/2079
धनु	23/07/2039	मक	13/05/2049	कुंभ	12/04/2061	मीन	30/04/2072	वृश्चि	04/08/2080
मक	30/04/2040	कुंभ	18/10/2049	मीन	17/03/2063	वृश्चि	01/12/2072	तुला	09/07/2082
कुंभ	05/02/2041	मीन	18/11/2050	वृश्चि	22/07/2064	तुला	08/04/2074	कन्या	27/01/2083
मीन	10/01/2043	वृश्चि	23/08/2051	तुला	23/08/2067	कन्या	10/01/2075		00/00/0000
वृश्चि	17/05/2044	तुला	17/05/2053	कन्या	17/05/2069	तुला	17/05/2076		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृश्चि - कन्या	
26/04/2023	
28/01/2024	
कन्या	26/05/2023
तुला	18/07/2023
वृश्चि	11/08/2023
धनु	13/09/2023
मक	27/09/2023
कुंभ	10/10/2023
मीन	12/11/2023
वृश्चि	06/12/2023
तुला	28/01/2024

वृश्चि - तुला	
28/01/2024	
04/06/2025	
तुला	02/05/2024
वृश्चि	13/06/2024
धनु	11/08/2024
मक	04/09/2024
कुंभ	28/09/2024
मीन	26/11/2024
वृश्चि	07/01/2025
तुला	12/04/2025
कन्या	04/06/2025

वृश्चि - वृश्चि	
04/06/2025	
06/01/2026	
वृश्चि	22/06/2025
धनु	18/07/2025
मक	29/07/2025
कुंभ	08/08/2025
मीन	03/09/2025
वृश्चि	21/09/2025
तुला	02/11/2025
कन्या	25/11/2025
तुला	06/01/2026

वृश्चि - धनु	
06/01/2026	
10/11/2026	
धनु	12/02/2026
मक	27/02/2026
कुंभ	13/03/2026
मीन	20/04/2026
वृश्चि	16/05/2026
तुला	14/07/2026
कन्या	16/08/2026
तुला	15/10/2026
वृश्चि	10/11/2026

वृश्चि - मक	
10/11/2026	
13/03/2027	
मक	16/11/2026
कुंभ	22/11/2026
मीन	06/12/2026
वृश्चि	17/12/2026
तुला	10/01/2027
कन्या	23/01/2027
तुला	16/02/2027
वृश्चि	26/02/2027
धनु	13/03/2027

वृश्चि - कुंभ	
13/03/2027	
14/07/2027	
कुंभ	19/03/2027
मीन	03/04/2027
वृश्चि	13/04/2027
तुला	07/05/2027
कन्या	20/05/2027
तुला	13/06/2027
वृश्चि	23/06/2027
धनु	08/07/2027
मक	14/07/2027

वृश्चि - मीन	
14/07/2027	
17/05/2028	
मीन	20/08/2027
वृश्चि	15/09/2027
तुला	14/11/2027
कन्या	17/12/2027
तुला	14/02/2028
वृश्चि	11/03/2028
धनु	17/04/2028
मक	02/05/2028
कुंभ	17/05/2028

तुला - तुला	
17/05/2028	
18/06/2031	
तुला	20/12/2028
कन्या	21/04/2029
तुला	25/11/2029
वृश्चि	28/02/2030
धनु	13/07/2030
मक	06/09/2030
कुंभ	30/10/2030
मीन	15/03/2031
वृश्चि	18/06/2031

तुला - कन्या	
18/06/2031	
12/03/2033	
कन्या	25/08/2031
तुला	26/12/2031
वृश्चि	17/02/2032
धनु	03/05/2032
मक	03/06/2032
कुंभ	03/07/2032
मीन	18/09/2032
वृश्चि	10/11/2032
तुला	12/03/2033

तुला - तुला	
12/03/2033	
12/04/2036	
तुला	16/10/2033
वृश्चि	19/01/2034
धनु	03/06/2034
मक	28/07/2034
कुंभ	20/09/2034
मीन	03/02/2035
वृश्चि	09/05/2035
तुला	12/12/2035
कन्या	12/04/2036

तुला - वृश्चि	
12/04/2036	
18/08/2037	
वृश्चि	24/05/2036
धनु	22/07/2036
मक	15/08/2036
कुंभ	07/09/2036
मीन	06/11/2036
वृश्चि	17/12/2036
तुला	22/03/2037
कन्या	15/05/2037
तुला	18/08/2037

तुला - धनु	
18/08/2037	
23/07/2039	
धनु	11/11/2037
मक	15/12/2037
कुंभ	18/01/2038
मीन	12/04/2038
वृश्चि	11/06/2038
तुला	24/10/2038
कन्या	09/01/2039
तुला	25/05/2039
वृश्चि	23/07/2039

तुला - मक	
23/07/2039	
30/04/2040	
मक	05/08/2039
कुंभ	19/08/2039
मीन	22/09/2039
वृश्चि	16/10/2039
तुला	09/12/2039
कन्या	09/01/2040
तुला	03/03/2040
वृश्चि	27/03/2040
धनु	30/04/2040

तुला - कुंभ	
30/04/2040	
05/02/2041	
कुंभ	13/05/2040
मीन	16/06/2040
वृश्चि	10/07/2040
तुला	02/09/2040
कन्या	03/10/2040
तुला	26/11/2040
वृश्चि	20/12/2040
धनु	23/01/2041
मक	05/02/2041

तुला - मीन	
05/02/2041	
10/01/2043	
मीन	01/05/2041
वृश्चि	29/06/2041
तुला	12/11/2041
कन्या	27/01/2042
तुला	12/06/2042
वृश्चि	11/08/2042
धनु	03/11/2042
मक	07/12/2042
कुंभ	10/01/2043

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

तुला - वृश्चि	
10/01/2043	
17/05/2044	
वृश्चि	21/02/2043
तुला	27/05/2043
कन्या	19/07/2043
तुला	22/10/2043
वृश्चि	03/12/2043
धनु	31/01/2044
मक	24/02/2044
कुंभ	19/03/2044
मीन	17/05/2044

कन्या - कन्या	
17/05/2044	
09/05/2045	
कन्या	25/06/2044
तुला	02/09/2044
वृश्चि	02/10/2044
धनु	14/11/2044
मक	01/12/2044
कुंभ	18/12/2044
मीन	30/01/2045
वृश्चि	01/03/2045
तुला	09/05/2045

कन्या - तुला	
09/05/2045	
01/02/2047	
तुला	08/09/2045
वृश्चि	31/10/2045
धनु	16/01/2046
मक	15/02/2046
कुंभ	18/03/2046
मीन	02/06/2046
वृश्चि	25/07/2046
तुला	25/11/2046
कन्या	01/02/2047

कन्या - वृश्चि	
01/02/2047	
06/11/2047	
वृश्चि	25/02/2047
धनु	30/03/2047
मक	12/04/2047
कुंभ	26/04/2047
मीन	29/05/2047
वृश्चि	22/06/2047
तुला	14/08/2047
कन्या	13/09/2047
तुला	06/11/2047

कन्या - धनु	
06/11/2047	
06/12/2048	
धनु	23/12/2047
मक	11/01/2048
कुंभ	30/01/2048
मीन	18/03/2048
वृश्चि	21/04/2048
तुला	06/07/2048
कन्या	18/08/2048
तुला	02/11/2048
वृश्चि	06/12/2048

कन्या - मक	
06/12/2048	
13/05/2049	
मक	13/12/2048
कुंभ	21/12/2048
मीन	09/01/2049
वृश्चि	22/01/2049
तुला	22/02/2049
कन्या	11/03/2049
तुला	11/04/2049
वृश्चि	24/04/2049
धनु	13/05/2049

कन्या - कुंभ	
13/05/2049	
18/10/2049	
कुंभ	21/05/2049
मीन	09/06/2049
वृश्चि	22/06/2049
तुला	23/07/2049
कन्या	09/08/2049
तुला	08/09/2049
वृश्चि	22/09/2049
धनु	11/10/2049
मक	18/10/2049

कन्या - मीन	
18/10/2049	
18/11/2050	
मीन	05/12/2049
वृश्चि	08/01/2050
तुला	25/03/2050
कन्या	07/05/2050
तुला	22/07/2050
वृश्चि	25/08/2050
धनु	11/10/2050
मक	30/10/2050
कुंभ	18/11/2050

कन्या - वृश्चि	
18/11/2050	
23/08/2051	
वृश्चि	12/12/2050
तुला	03/02/2051
कन्या	05/03/2051
तुला	28/04/2051
वृश्चि	21/05/2051
धनु	24/06/2051
मक	07/07/2051
कुंभ	20/07/2051
मीन	23/08/2051

कन्या - तुला	
23/08/2051	
17/05/2053	
तुला	23/12/2051
कन्या	01/03/2052
तुला	01/07/2052
वृश्चि	23/08/2052
धनु	08/11/2052
मक	08/12/2052
कुंभ	08/01/2053
मीन	25/03/2053
वृश्चि	17/05/2053

तुला - तुला	
17/05/2053	
17/06/2056	
तुला	21/12/2053
वृश्चि	26/03/2054
धनु	08/08/2054
मक	02/10/2054
कुंभ	25/11/2054
मीन	10/04/2055
वृश्चि	14/07/2055
तुला	16/02/2056
कन्या	17/06/2056

तुला - वृश्चि	
17/06/2056	
23/10/2057	
वृश्चि	29/07/2056
धनु	26/09/2056
मक	20/10/2056
कुंभ	12/11/2056
मीन	11/01/2057
वृश्चि	21/02/2057
तुला	27/05/2057
कन्या	20/07/2057
तुला	23/10/2057

तुला - धनु	
23/10/2057	
27/09/2059	
धनु	16/01/2058
मक	19/02/2058
कुंभ	25/03/2058
मीन	17/06/2058
वृश्चि	16/08/2058
तुला	29/12/2058
कन्या	16/03/2059
तुला	30/07/2059
वृश्चि	27/09/2059

तुला - मक	
27/09/2059	
05/07/2060	
मक	11/10/2059
कुंभ	24/10/2059
मीन	27/11/2059
वृश्चि	21/12/2059
तुला	13/02/2060
कन्या	15/03/2060
तुला	08/05/2060
वृश्चि	01/06/2060
धनु	05/07/2060

तुला - कुंभ	
05/07/2060	
12/04/2061	
कुंभ	18/07/2060
मीन	21/08/2060
वृश्चि	14/09/2060
तुला	07/11/2060
कन्या	08/12/2060
तुला	31/01/2061
वृश्चि	24/02/2061
धनु	30/03/2061
मक	12/04/2061

चर दशा

भोग्य दशा काल : वृष 7 वर्ष 0 मास 0 दिन

वृष 7 वर्ष	
27/01/2000	
27/01/2007	
मेष	27/08/2000
मीन	28/03/2001
कुंभ	27/10/2001
मक	28/05/2002
धनु	27/12/2002
वृश्चि	28/07/2003
तुला	26/02/2004
कन्या	27/09/2004
सिंह	28/04/2005
कर्क	27/11/2005
मिथु	28/06/2006
वृष	27/01/2007

मेष 10 वर्ष	
27/01/2007	
26/01/2017	
वृष	27/11/2007
मिथु	27/09/2008
कर्क	28/07/2009
सिंह	28/05/2010
कन्या	29/03/2011
तुला	27/01/2012
वृश्चि	26/11/2012
धनु	27/09/2013
मक	28/07/2014
कुंभ	29/05/2015
मीन	28/03/2016
मेष	26/01/2017

मीन 11 वर्ष	
26/01/2017	
27/01/2028	
मेष	27/12/2017
वृष	27/11/2018
मिथु	28/10/2019
कर्क	27/09/2020
सिंह	27/08/2021
कन्या	28/07/2022
तुला	28/06/2023
वृश्चि	28/05/2024
धनु	28/04/2025
मक	28/03/2026
कुंभ	26/02/2027
मीन	27/01/2028

कुम्भ 10 वर्ष	
27/01/2028	
27/01/2038	
मीन	26/11/2028
मेष	27/09/2029
वृष	28/07/2030
मिथु	29/05/2031
कर्क	28/03/2032
सिंह	26/01/2033
कन्या	27/11/2033
तुला	27/09/2034
वृश्चि	28/07/2035
धनु	28/05/2036
मक	28/03/2037
कुंभ	27/01/2038

मकर 9 वर्ष	
27/01/2038	
27/01/2047	
धनु	27/10/2038
वृश्चि	28/07/2039
तुला	27/04/2040
कन्या	26/01/2041
सिंह	27/10/2041
कर्क	28/07/2042
मिथु	28/04/2043
वृष	27/01/2044
मेष	27/10/2044
मीन	28/07/2045
कुंभ	28/04/2046
मक	27/01/2047

धनु 4 वर्ष	
27/01/2047	
27/01/2051	
वृश्चि	29/05/2047
तुला	27/09/2047
कन्या	27/01/2048
सिंह	28/05/2048
कर्क	27/09/2048
मिथु	26/01/2049
वृष	28/05/2049
मेष	27/09/2049
मीन	27/01/2050
कुंभ	28/05/2050
मक	27/09/2050
धनु	27/01/2051

वृश्चिक 2 वर्ष	
27/01/2051	
26/01/2053	
तुला	29/03/2051
कन्या	29/05/2051
सिंह	28/07/2051
कर्क	27/09/2051
मिथु	27/11/2051
वृष	27/01/2052
मेष	28/03/2052
मीन	28/05/2052
कुंभ	28/07/2052
मक	27/09/2052
धनु	26/11/2052
वृश्चि	26/01/2053

तुला 2 वर्ष	
26/01/2053	
27/01/2055	
वृश्चि	28/03/2053
धनु	28/05/2053
मक	28/07/2053
कुंभ	27/09/2053
मीन	27/11/2053
मेष	27/01/2054
वृष	28/03/2054
मिथु	28/05/2054
कर्क	28/07/2054
सिंह	27/09/2054
कन्या	27/11/2054
तुला	27/01/2055

कन्या 8 वर्ष	
27/01/2055	
27/01/2063	
तुला	27/09/2055
वृश्चि	28/05/2056
धनु	26/01/2057
मक	27/09/2057
कुंभ	28/05/2058
मीन	27/01/2059
मेष	27/09/2059
वृष	28/05/2060
मिथु	26/01/2061
कर्क	27/09/2061
सिंह	28/05/2062
कन्या	27/01/2063

सिंह 7 वर्ष	
27/01/2063	
27/01/2070	
कन्या	28/08/2063
तुला	28/03/2064
वृश्चि	27/10/2064
धनु	28/05/2065
मक	27/12/2065
कुंभ	28/07/2066
मीन	26/02/2067
मेष	27/09/2067
वृष	27/04/2068
मिथु	26/11/2068
कर्क	27/06/2069
सिंह	27/01/2070

कर्क 9 वर्ष	
27/01/2070	
27/01/2079	
मिथु	27/10/2070
वृष	28/07/2071
मेष	27/04/2072
मीन	26/01/2073
कुंभ	27/10/2073
मक	28/07/2074
धनु	28/04/2075
वृश्चि	27/01/2076
तुला	27/10/2076
कन्या	28/07/2077
सिंह	28/04/2078
कर्क	27/01/2079

मिथुन 7 वर्ष	
27/01/2079	
27/01/2086	
वृष	28/08/2079
मेष	28/03/2080
मीन	27/10/2080
कुंभ	28/05/2081
मक	27/12/2081
धनु	28/07/2082
वृश्चि	26/02/2083
तुला	27/09/2083
कन्या	27/04/2084
सिंह	26/11/2084
कर्क	27/06/2085
मिथु	27/01/2086

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

मीन - वृश्चि	
28/06/2023	
28/05/2024	
तुला	26/07/2023
कन्या	23/08/2023
सिंह	20/09/2023
कर्क	18/10/2023
मिथु	14/11/2023
वृष	12/12/2023
मेष	09/01/2024
मीन	06/02/2024
कुंभ	05/03/2024
मक	02/04/2024
धनु	30/04/2024
वृश्चि	28/05/2024

मीन - धनु	
28/05/2024	
28/04/2025	
वृश्चि	25/06/2024
तुला	23/07/2024
कन्या	19/08/2024
सिंह	16/09/2024
कर्क	14/10/2024
मिथु	11/11/2024
वृष	09/12/2024
मेष	06/01/2025
मीन	03/02/2025
कुंभ	03/03/2025
मक	31/03/2025
धनु	28/04/2025

मीन - मक	
28/04/2025	
28/03/2026	
धनु	26/05/2025
वृश्चि	22/06/2025
तुला	20/07/2025
कन्या	17/08/2025
सिंह	14/09/2025
कर्क	12/10/2025
मिथु	09/11/2025
वृष	07/12/2025
मेष	04/01/2026
मीन	01/02/2026
कुंभ	01/03/2026
मक	28/03/2026

मीन - कुंभ	
28/03/2026	
26/02/2027	
मीन	25/04/2026
मेष	23/05/2026
वृष	20/06/2026
मिथु	18/07/2026
कर्क	15/08/2026
सिंह	12/09/2026
कन्या	10/10/2026
तुला	07/11/2026
वृश्चि	05/12/2026
धनु	01/01/2027
मक	29/01/2027
कुंभ	26/02/2027

मीन - मीन	
26/02/2027	
27/01/2028	
मेष	26/03/2027
वृष	23/04/2027
मिथु	21/05/2027
कर्क	18/06/2027
सिंह	16/07/2027
कन्या	13/08/2027
तुला	10/09/2027
वृश्चि	07/10/2027
धनु	04/11/2027
मक	02/12/2027
कुंभ	30/12/2027
मीन	27/01/2028

कुंभ - मीन	
27/01/2028	
26/11/2028	
मेष	21/02/2028
वृष	18/03/2028
मिथु	12/04/2028
कर्क	08/05/2028
सिंह	02/06/2028
कन्या	27/06/2028
तुला	23/07/2028
वृश्चि	17/08/2028
धनु	11/09/2028
मक	07/10/2028
कुंभ	01/11/2028
मीन	26/11/2028

कुंभ - मेष	
26/11/2028	
27/09/2029	
वृष	22/12/2028
मिथु	16/01/2029
कर्क	11/02/2029
सिंह	08/03/2029
कन्या	02/04/2029
तुला	28/04/2029
वृश्चि	23/05/2029
धनु	17/06/2029
मक	13/07/2029
कुंभ	07/08/2029
मीन	01/09/2029
मेष	27/09/2029

कुंभ - वृष	
27/09/2029	
28/07/2030	
मेष	22/10/2029
मीन	17/11/2029
कुंभ	12/12/2029
मक	06/01/2030
धनु	01/02/2030
वृश्चि	26/02/2030
तुला	23/03/2030
कन्या	18/04/2030
सिंह	13/05/2030
कर्क	07/06/2030
मिथु	03/07/2030
वृष	28/07/2030

कुंभ - मिथु	
28/07/2030	
29/05/2031	
वृष	23/08/2030
मेष	17/09/2030
मीन	12/10/2030
कुंभ	07/11/2030
मक	02/12/2030
धनु	27/12/2030
वृश्चि	22/01/2031
तुला	16/02/2031
कन्या	13/03/2031
सिंह	08/04/2031
कर्क	03/05/2031
मिथु	29/05/2031

कुंभ - कर्क	
29/05/2031	
28/03/2032	
मिथु	23/06/2031
वृष	18/07/2031
मेष	13/08/2031
मीन	07/09/2031
कुंभ	02/10/2031
मक	28/10/2031
धनु	22/11/2031
वृश्चि	17/12/2031
तुला	12/01/2032
कन्या	06/02/2032
सिंह	03/03/2032
कर्क	28/03/2032

कुंभ - सिंह	
28/03/2032	
26/01/2033	
कन्या	22/04/2032
तुला	18/05/2032
वृश्चि	12/06/2032
धनु	07/07/2032
मक	02/08/2032
कुंभ	27/08/2032
मीन	21/09/2032
मेष	17/10/2032
वृष	11/11/2032
मिथु	07/12/2032
कर्क	01/01/2033
सिंह	26/01/2033

कुंभ - कन्या	
26/01/2033	
27/11/2033	
तुला	21/02/2033
वृश्चि	18/03/2033
धनु	12/04/2033
मक	08/05/2033
कुंभ	02/06/2033
मीन	27/06/2033
मेष	23/07/2033
वृष	17/08/2033
मिथु	12/09/2033
कर्क	07/10/2033
सिंह	01/11/2033
कन्या	27/11/2033

कुंभ - तुला	
27/11/2033	
27/09/2034	
वृश्चि	22/12/2033
धनु	16/01/2034
मक	11/02/2034
कुंभ	08/03/2034
मीन	02/04/2034
मेष	28/04/2034
वृष	23/05/2034
मिथु	18/06/2034
कर्क	13/07/2034
सिंह	07/08/2034
कन्या	02/09/2034
तुला	27/09/2034

कुंभ - वृश्चि	
27/09/2034	
28/07/2035	
तुला	22/10/2034
कन्या	17/11/2034
सिंह	12/12/2034
कर्क	07/01/2035
मिथु	01/02/2035
वृष	26/02/2035
मेष	24/03/2035
मीन	18/04/2035
कुंभ	13/05/2035
मक	08/06/2035
धनु	03/07/2035
वृश्चि	28/07/2035

कुंभ - धनु	
28/07/2035	
28/05/2036	
वृश्चि	23/08/2035
तुला	17/09/2035
कन्या	13/10/2035
सिंह	07/11/2035
कर्क	02/12/2035
मिथु	28/12/2035
वृष	22/01/2036
मेष	16/02/2036
मीन	13/03/2036
कुंभ	07/04/2036
मक	02/05/2036
धनु	28/05/2036

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

चर दशा - प्रत्यन्तर

कुंभ - मक		कुंभ - कुंभ		मक - धनु		मक - वृश्चि		मक - तुला	
28/05/2036		28/03/2037		27/01/2038		27/10/2038		28/07/2039	
28/03/2037		27/01/2038		27/10/2038		28/07/2039		27/04/2040	
धनु	22/06/2036	मीन	23/04/2037	वृश्चि	18/02/2038	तुला	19/11/2038	वृश्चि	20/08/2039
वृश्चि	18/07/2036	मेष	18/05/2037	तुला	13/03/2038	कन्या	12/12/2038	धनु	12/09/2039
तुला	12/08/2036	वृष	12/06/2037	कन्या	05/04/2038	सिंह	04/01/2039	मक	05/10/2039
कन्या	06/09/2036	मिथु	08/07/2037	सिंह	28/04/2038	कर्क	27/01/2039	कुंभ	28/10/2039
सिंह	02/10/2036	कर्क	02/08/2037	कर्क	21/05/2038	मिथु	19/02/2039	मीन	20/11/2039
कर्क	27/10/2036	सिंह	27/08/2037	मिथु	13/06/2038	वृष	13/03/2039	मेष	12/12/2039
मिथु	21/11/2036	कन्या	22/09/2037	वृष	05/07/2038	मेष	05/04/2039	वृष	04/01/2040
वृष	17/12/2036	तुला	17/10/2037	मेष	28/07/2038	मीन	28/04/2039	मिथु	27/01/2040
मेष	11/01/2037	वृश्चि	11/11/2037	मीन	20/08/2038	कुंभ	21/05/2039	कर्क	19/02/2040
मीन	05/02/2037	धनु	07/12/2037	कुंभ	12/09/2038	मक	13/06/2039	सिंह	13/03/2040
कुंभ	03/03/2037	मक	01/01/2038	मक	05/10/2038	धनु	06/07/2039	कन्या	05/04/2040
मक	28/03/2037	कुंभ	27/01/2038	धनु	27/10/2038	वृश्चि	28/07/2039	तुला	27/04/2040

मक - कन्या		मक - सिंह		मक - कर्क		मक - मिथु		मक - वृष	
27/04/2040		26/01/2041		27/10/2041		28/07/2042		28/04/2043	
26/01/2041		27/10/2041		28/07/2042		28/04/2043		27/01/2044	
तुला	20/05/2040	कन्या	18/02/2041	मिथु	19/11/2041	वृष	20/08/2042	मेष	21/05/2043
वृश्चि	12/06/2040	तुला	13/03/2041	वृष	12/12/2041	मेष	12/09/2042	मीन	13/06/2043
धनु	05/07/2040	वृश्चि	05/04/2041	मेष	04/01/2042	मीन	05/10/2042	कुंभ	06/07/2043
मक	28/07/2040	धनु	28/04/2041	मीन	27/01/2042	कुंभ	27/10/2042	मक	28/07/2043
कुंभ	19/08/2040	मक	20/05/2041	कुंभ	18/02/2042	मक	19/11/2042	धनु	20/08/2043
मीन	11/09/2040	कुंभ	12/06/2041	मक	13/03/2042	धनु	12/12/2042	वृश्चि	12/09/2043
मेष	04/10/2040	मीन	05/07/2041	धनु	05/04/2042	वृश्चि	04/01/2043	तुला	05/10/2043
वृष	27/10/2040	मेष	28/07/2041	वृश्चि	28/04/2042	तुला	27/01/2043	कन्या	28/10/2043
मिथु	19/11/2040	वृष	20/08/2041	तुला	21/05/2042	कन्या	19/02/2043	सिंह	20/11/2043
कर्क	12/12/2040	मिथु	12/09/2041	कन्या	13/06/2042	सिंह	13/03/2043	कर्क	12/12/2043
सिंह	03/01/2041	कर्क	04/10/2041	सिंह	05/07/2042	कर्क	05/04/2043	मिथु	04/01/2044
कन्या	26/01/2041	सिंह	27/10/2041	कर्क	28/07/2042	मिथु	28/04/2043	वृष	27/01/2044

मक - मेष		मक - मीन		मक - कुंभ		मक - मक		धनु - वृश्चि	
27/01/2044		27/10/2044		28/07/2045		28/04/2046		27/01/2047	
27/10/2044		28/07/2045		28/04/2046		27/01/2047		29/05/2047	
वृष	19/02/2044	मेष	19/11/2044	मीन	20/08/2045	धनु	21/05/2046	तुला	06/02/2047
मिथु	13/03/2044	वृष	12/12/2044	मेष	12/09/2045	वृश्चि	13/06/2046	कन्या	16/02/2047
कर्क	05/04/2044	मिथु	03/01/2045	वृष	04/10/2045	तुला	05/07/2046	सिंह	26/02/2047
सिंह	27/04/2044	कर्क	26/01/2045	मिथु	27/10/2045	कन्या	28/07/2046	कर्क	08/03/2047
कन्या	20/05/2044	सिंह	18/02/2045	कर्क	19/11/2045	सिंह	20/08/2046	मिथु	19/03/2047
तुला	12/06/2044	कन्या	13/03/2045	सिंह	12/12/2045	कर्क	12/09/2046	वृष	29/03/2047
वृश्चि	05/07/2044	तुला	05/04/2045	कन्या	04/01/2046	मिथु	05/10/2046	मेष	08/04/2047
धनु	28/07/2044	वृश्चि	28/04/2045	तुला	27/01/2046	वृष	27/10/2046	मीन	18/04/2047
मक	19/08/2044	धनु	20/05/2045	वृश्चि	18/02/2046	मेष	19/11/2046	कुंभ	28/04/2047
कुंभ	11/09/2044	मक	12/06/2045	धनु	13/03/2046	मीन	12/12/2046	मक	08/05/2047
मीन	04/10/2044	कुंभ	05/07/2045	मक	05/04/2046	कुंभ	04/01/2047	धनु	18/05/2047
मेष	27/10/2044	मीन	28/07/2045	कुंभ	28/04/2046	मक	27/01/2047	वृश्चि	29/05/2047

Ackoastro
44B-Block,Shri Vijay Nagar-335704,Rajasthan
8657171000
ackoastro@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	9
भाग्यांक	3
मित्र अंक	1, 3, 6, 9
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मकर, मिथुन
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	लक्ष्मी
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

sample

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन–तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

जीवन रत्नः	हीरा		दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
भाग्य रत्नः	नीलम		कम खर्च, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
कारक रत्नः	पन्ना		भाग्योदय, धन, सन्तति सुख
शुभ उपरत्नः	माणिक्य		भाग्योदय, सुख

दशा	रत्न	क्षमता	मंत्र–जप / व्रत / दान / लाभ
मंगल	पन्ना	86%	ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः (10000)
27/01/2000	माणिक्य	81%	मंगलवार,मल्का, केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन, घी
12/12/2002	नीलम	62%	व्यावसायिक उन्नति, कम खर्च, दम्पति
राहु	पन्ना	98%	ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः (18000)
12/12/2002	नीलम	69%	शनिवार,तिल, सरसों, खड़ग, कम्बल, तेल
11/12/2020	माणिक्य	62%	पराक्रम, कम खर्च, दम्पति
गुरु	पन्ना	86%	ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः वृहस्पतये नमः (19000)
11/12/2020	माणिक्य	81%	गुरुवार,दाल चना, हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प, घी
11/12/2036	नीलम	62%	कम खर्च, दुर्घटना से बचाव, धनार्जन
शनि	पन्ना	100%	ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः (23000)
11/12/2036	नीलम	75%	शनिवार,उड़द, कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह, तेल
12/12/2055	माणिक्य	62%	कम खर्च, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
बुध	पन्ना	100%	ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः (9000)
12/12/2055	माणिक्य	81%	बुधवार,मूँग, हाथी दाँत, कपूर, फल, घी
11/12/2072	नीलम	62%	भाग्योदय, धन, सन्तति सुख
केतु	पन्ना	98%	ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः (17000)
11/12/2072	माणिक्य	62%	मंगलवार,तिल, सप्तधान्य, नारियल, शस्त्र, तेल
12/12/2079	लहसुनिया	62%	भाग्योदय, धन, सन्तति सुख
शुक्र	पन्ना	100%	ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः (16000)
12/12/2079	नीलम	69%	शुक्रवार,चावल, मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन, घी
12/12/2099	माणिक्य	62%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, सन्तति सुख

sample

नवग्रह रत्न धारण विधि

रत्न का पूर्ण शुभ फल पाने के लिए इसे शुक्ल पक्ष में निर्दिष्ट वार एवं समय में ही धारण करना चाहिए। निर्दिष्ट नक्षत्र में धारण करने से रत्न और भी प्रभावशाली हो जाता है। इसे निम्नलिखित तालिका में दिये गये भार या उससे अधिक भार का लेकर जो किवाया हो एवं पौना न हो जैसे 4–1/4 रत्ती आदि, उसे निर्दिष्ट धातु में इस प्रकार जड़वाएं कि रत्न नीचे से अंगुली को स्पर्श करे।

धारण करते समय अपने इष्ट देव का श्रद्धापूर्वक ध्यान करना चाहिए। तत्पश्चात अंगूठी को कच्चे दूध एवं गंगाजल में धोकर शुद्ध करना चाहिए एवं धूप दीप जलाकर संबंधित ग्रह के मंत्र का कम से कम एक माला जप करना चाहिए। फिर अंगूठी को धूप देकर निर्दिष्ट अंगुली में दाएं हाथ में धारण करना चाहिए। स्त्रियों को बाएं एवं पुरुषों को दाएं हाथ में अंगुली धारण करना चाहिए। अंगूठी धारण के पश्चात यथाशक्ति संबंधित ग्रह के पदार्थों का दान करना चाहिए।

यदि आप अन्य कोई रत्न पहले से पहने हुए हैं तो यह ध्यान रखें कि परस्पर विरोधी रत्न एकसाथ न पहनें। उपरोक्त विधि से रत्न को पहनने से रत्न के शुभ फल प्रचुर मात्रा में शीघ्र मिलते हैं।

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

रत्न	मंत्र	निषेध रत्न	दान पदार्थ
माणिक्य	ऊँ घृणि सूर्याय नमः	हीरा, नीलम, गोमेद	गेहूँ,चंदन,घी,लाल वस्त्र
मोती	ऊँ सों सोमाय नमः	गोमेद	चावल,चीनी,घी,श्वेत वस्त्र
मूंगा	ऊँ अं अंगारकाय नमः	हीरा, गोमेद, नीलम	गेहूँ,ताम्र,गुड़,लाल वस्त्र
पन्ना	ऊँ बुं बुधाय नमः	–––	मूंग,कांसा,हरित वस्त्र
पुखराज	ऊँ वृं वृहस्पतये नमः	हीरा, गोमेद	चने की दाल,गुड़,पीला वस्त्र
हीरा	ऊँ शुं शुक्राय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	चावल,चांदी,श्वेत वस्त्र
नीलम	ऊँ शं शनैश्चराय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	काला तिल,तेल,काला वस्त्र
गोमेद	ऊँ रां राहवे नमः	माणिक्य, मोती, मूंगा	तिल,तेल,कंबल,नीला वस्त्र
लहसुनिया	ऊँ कें केतवे नमः	–––	सप्तधान्य,नारियल,धूम्र वस्त्र

sample

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता–पिता पर पङता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पङता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढेसाती द्वितीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढेसाती तृतीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	स्वास्थ्य
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	सन्तति
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	भाग्योदय

sample

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म–पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

sample

योग कारक

किसी भी जन्मकुंडली में ग्रह, अपने स्वामित्व तथा स्थिति के अनुसार, सकारात्मक या नकारात्मक फल देते हैं। ये ग्रह विभिन्न दशा काल में भिन्न–भिन्न प्रकार से आचरण करते हैं, जो दशा स्वामी की स्थिति तथा उससे ग्रह के संबंध पर आधारित है। सुविधा के लिए हमने ग्रह के शुभ तत्वों की संगणना प्रतिशत में की है। 50 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले ग्रहों को लाभकारक तथा उससे नीचे हानिकारक समझना चाहिए। इस सूचना को आधार बनाकर आप अपनी जन्मकुंडली में दशा के प्रभावों का अध्ययन स्वयं ही कर सकते हैं। इसी तरह इन आंकड़ों द्वारा गोचर के प्रभाव का भी अध्ययन किया जा सकता है।

योग कारक एवं मारक

लग्न के लिए	:	योग कारक	-	शुक्र, शनि, सूर्य
		मारक	-	चंद्र, मंगल, गुरु
जन्मकुंडली के लिए	:	योग कारक	-	सूर्य, केतु, बुध
		मारक	-	राहु, चंद्र, गुरु

जन्मकुंडली में ग्रह बल

सूर्य	60%	भाग्योदय, सुख
चन्द्र	38%	शत्रु व रोग मुक्ति, पराक्रम
मंगल	52%	व्यावसायिक उन्नति, कम खर्च, दम्पति
बुध	55%	भाग्योदय, धन, सन्तति सुख
गुरु	38%	कम खर्च, दुर्घटना से बचाव, धनार्जन
शुक्र	50%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
शनि	41%	कम खर्च, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
राहु	33%	पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति
केतु	57%	भाग्योदय, कम खर्च

दशा काल में ग्रह बल

दशा	समाप्ति	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मंगल	12/12/2002	61	66	88	33	50	43	39	22	59
राहु	11/12/2020	36	37	32	46	51	56	65	79	34
गुरु	11/12/2036	75	50	57	47	81	47	70	47	61
शनि	12/12/2055	50	25	32	72	69	72	83	60	48
बुध	11/12/2072	92	39	44	90	50	56	51	35	78
केतु	12/12/2079	67	39	57	77	50	56	39	22	91
शुक्र	12/12/2099	36	25	44	58	54	87	68	47	59
सूर्य	12/12/2105	92	64	57	77	62	31	39	22	66
चन्द्र	13/12/2115	73	81	61	71	37	43	39	36	47

sample

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर–कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति दशम भाव में है। यह भाव कर्म का मुख्य प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप एक कर्मठ एवं पराक्रमी व्यक्ति होंगे। अपने कार्य क्षेत्र में सर्वदा उन्नतिशील रहेंगे। साथ ही आप अपनी बुद्धि एवं योग्यता के बल पर किसी उच्च प्रशासनिक पद इंजीनियरिंग, मेडिकल या होटल आदि के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता अर्जित करेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे जिससे समाज में आप एक आदरणीय पुरुष समझें जाएंगे । आप अपने कार्यों के द्वारा विशिष्ट सम्मान एवं ख्याति भी अर्जित करेंगे। आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा आपको वे पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आप भी उनकी आज्ञा का अनुपालन करेंगे तथा यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

दशम भाव से मंगल की दृष्टि प्रथम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप यदा कदा पित या गर्मी से उत्पन्न रोगों के द्वारा कष्ट की अनुभूति कर सकते हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। सामान्यतया आप परिश्रम एवं उत्साह से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। चतुर्थ भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों को अर्जित करेंगे तथा आनन्द पूर्वक उनका उपभोग भी करेंगे। जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे परन्तु माता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप उनको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि से संतति से सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा साथ ही संतति की प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। आपकी बुद्धि में भी यदा कदा उग्रता का भाव विद्यमान रहेगा लेकिन आप अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से सम्पन्न करेंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको न्यूनाधिक सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा।

sample

इस प्रकार दशमस्थ मंगल के प्रभाव से आप एक प्रभावी व्यक्ति होंगे। जीवन में धनऐश्वर्य एवं सुख संसाधनों से सर्वदा युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करने में समर्थ रहेंगे जिससे परिवार में शान्ति तथा सन्तुष्टि रहेगी। इसके अतिरिक्त सभी लोग आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

sample

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं–

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

sample

नक्षत्रफल

चित्रा नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न होने के कारण आपकी जन्मराशि तुला तथा राशिस्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ग मृग, वर्ण शूद्र, नाड़ी मध्य, योनि व्याघ्र तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म का प्रथमाक्षर "र" या "रा" से प्रारम्भ होगा। यथा रमेश, रामकुमार आदि।

आप स्वभाव से ही धार्मिक प्रवृति के मनुष्य होंगे तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में आस्था एवं सम्मान का भाव हमेशा विद्यमान रहेगा। आप सपरिवार अर्थात् स्त्री पुत्र सहित हमेशा सन्तुष्ट रहेंगे तथा जितनी भी प्राप्ति हो उसी के अनुसार अपना जीवन यापन करेंगे। धन वैभव तथा धान्यादि से आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगे इनके अभाव की आपको कभी भी अनुभूति नहीं होगी।

पुत्रदारयुतसंतुष्टो धनधान्य समन्वितः।
देव ब्राह्मण भक्तश्च चित्रायां जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्त्री तथा पुत्र सहित सन्तुष्ट रहने वाला, धनधान्यादि से परिपूर्ण रहने वाला तथा देवता एवं ब्राह्मणों का भक्त होता है।

नवीन वस्त्रों को धारण करने की आपके मन में प्रबल इच्छा रहेगी तथा गले में हार को भी आप धारण करने के लिए रूचिशील रहेंगे तथा इसे धारण भी करेंगे। आपके नेत्र सुन्दरता से परिपूर्ण रहेंगे। साथ ही आपका शारीरिक सौन्दर्य भी सुन्दर होगा।

चित्राम्बर माल्यधरः सुलोचनाङ्गश्च भवति चित्रायाम्।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अनेक वस्त्र एवं मालाओं को धारण करने वाला, सुन्दर नेत्र तथा सुन्दर शरीर वाला होता है।

यदि कोई भी विशेष बात के आपके मन में हो तो आप उसे अपने मन में ही रखेंगे तथा अन्य व्यक्ति पर कभी भी प्रकट नहीं होने देगे। अपनी इस प्रवृति का पालन आप हमेशा करते रहेंगे। अपने समाज के आप एक प्रभावी तथा लोकप्रिय व्यक्ति होंगे। तथा उनमें पूर्ण मान सम्मान अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगे। स्त्री वर्ग से भी आपका अनुराग रहेगा। अतः इनसे आपके मैत्री पूर्ण संबंध स्थापित रहेंगे।

चित्रायामति गुप्तशीलनिरतो मानी परस्त्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अपने मन की बात को गुप्त रखने वाला तथा दूसरे पर प्रकट न करने वाला ऐसे स्वभाव से युक्त, सम्माननीय तथा दूसरे की स्त्रियों में अनुरक्त रहता है।

आप अपने प्रताप तथा पराक्रम से शत्रुपक्ष को संताप देने या हराने में हमेशा सफलता प्राप्त करेंगे। आपका कोई शत्रु विरोध या मुकाबला करने में असमर्थ रहेगा। नीति शास्त्र के आप महान ज्ञाता होंगे तथा नीति संबंधी कार्यो को चतुराई पूर्ण ढंग से सम्पन्न करेंगे। विभिन्न एवं नाना प्रकार के वस्त्रों को धारण करने के लिए आप हमेशा उत्सुक रहेंगे। शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आप हमेशा यत्नशील रहेंगे तथा शास्त्रों के ज्ञान में आप अपनी बुद्धि का परिचय देंगे।

प्रतापसन्तापितशत्रुपक्षो नयेळतिदक्ष विचित्रवासः।
प्रसूतिकाले यदि यस्य चित्रा बुद्धिविचित्रा खलुतस्य शास्त्रे।।
जातकाभरणम्

अर्थात् चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न मानव अपने प्रताप के द्वारा शत्रु को कष्ट पहुँचाने वाला, नीति शास्त्र में दक्ष, नाना प्रकार के वस्त्रों को धारण करने वाला तथा शास्त्रादि में अद्भुत बुद्धिवाला होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा।

अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु अल्प मात्रा में रहेंगे तथा वे आपसे पराजित तथा प्रभावित होंगे। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में क्रोध तथा उग्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा। आपका सौन्दर्य आकर्षक होगा एवं शरीर में पूर्ण रूप से कोमलता विद्यमान रहेगी। आप अपने जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करेंगे तथा प्रसन्नताा पूर्वक उसका उपभोग करने में भी सफल रहेंगे। द्रव्यों के प्रति भी यदा कदा आपकी आसक्ति रहेगी एवं कभी कभी सामान्य बीमारियों से भी आप पीडित रहेंगे।

तुला राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका शरीर तथा मुखमंडल देखने में सुन्दर होगा तथा आंखे बड़ी बड़ी होंगी। आपके पास वाहनो की संख्या प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहेगी तथा समाज में सभी वर्गों से आपके संबंधो में आत्मीयता रहेंगी। आप वाहन तथा भूमि से शक्ति तथा लाभ भी प्राप्त करने वाले होंगे। आप एक पराक्रमी तथा प्रतापी पुरूष होंगे एवं समाज में अपना पूर्ण प्रभुत्व स्थापित करने में समर्थ रहेंगे धनैश्वर्य एवं वैभव का आपके पास कभी भी अभाव नहीं रहेगा। आप स्त्री के हमेशा वश में रहेंगे तथा उसके वशीभूत होकर ही अधिकांश सांसारिक कार्यों

को सम्पन्न करेंगे। आप एक क्रियाशील व्यक्ति होंगे तथा कई कार्यों को करने में आप निपुणता प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों में आपकी पूर्ण श्रद्धा तथा सेवा की भावना रहेंगी। आप की रूचि धन संग्रह करने के प्रति भी प्रेरित रहेगी। इसके अतिरिक्त अपने बंधु वर्ग की भलाई करने में भी आप हमेशा तत्पर रहेंगे तथा यत्नपूर्वक उनकी सहायता करेंगे।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप सज्जन पुरूषों तथा समाज की सेवा में सम्मान पूर्वक तत्पर रहेंगे। आप पांडित्य तथा प्रतिभा से भी हमेशा सुशोभित रहेंगे। आपका शरीर सुंगध से युक्त रहेगा परन्तु शरीर के अंग दुर्बल एवं शिथिल होंगे। आपको घूमने का बहुत शौक होगा तथा अपना अधिकांश समय भ्रमण एवं यात्राओं के आवागमन में ही व्यतीत करेंगे। किसी भी वस्तु के क्रय एवं विक्रय करने में आप हमेशा निपुण रहेंगे तथा समाज में आप किसी देवता के नाम से अपना दूसरा नाम रखकर प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आपका शरीर समय समय पर कई रोगों से भी ग्रसित रहेगा फलतः आप कष्टानुभूति करेंगे। आप अपने समस्त सम्बन्धियों तथा बन्धुओं का हृदय से उपकार करेंगे परन्तु बाद में इन्ही लोगों के कारण आप को समाज में अपयश तथा निरादर भी मिलेगा।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरूक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप एक धैर्यशाली पुरूष होंगे तथा अपने समस्त कार्यों को धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगे। न्याय में आपकी प्रबल आस्था रहेगी तथा स्वयं भी एक न्यायप्रिय व्यक्ति होंगे तथा निष्पक्ष रूप से अपनी बातों को अन्य जनों के सम्मुख प्रस्तुत करेंगे फलतः आप समाज में पंच की या मध्यस्थ की भूमिका चतुराई से निर्वाह करेंगे। साथ ही आपकी संतति संख्या अल्प रहेगी तथा भाग्योदय भी विलम्ब से होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा तथा उच्चाधिकार प्राप्त करने में भी सफलता प्राप्त करेंगे। आप अपने भाई बन्धुओं को कुछ न कुछ अवश्य देते रहेंगे लेकिन आप स्वभाव से ही

अधिक बोलने वाले होंगे जिससे कभी कभी अन्य जन आपसे दूर रहना ही अधिक पसन्द करेंगे। ज्योतिष विद्या के विषय में आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा तथा बन्धु एवं सेवकों के प्रति आपके मन में विशेष अनुराग रहेगा अर्थात् आप सबसे प्रेम तथा स्नेह का व्यवहार सम्पन्न करेंगे।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

कभी कभी आप असमय तथा अकारण ही क्रोध भी करेंगे तथा इससे आप दुःख की अनुभूति करेंगे। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर होगी जिससे समाज के अन्य लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपका हृदय दया तथा करूणा की भावना से भी पूर्ण रूप से युक्त रहेगा। आपके नेत्रों में चंचलता का भाव भी विद्यमान रहेगा परन्तु जीवन में आपकी आर्थिक स्थिति काफी डाँवाडोल रहेगी कभी यह बहुत अच्छी रहेगी तथा कभी बहुत खराब। अतः आर्थिक क्षेत्र में आप विषम परिस्थितियों से गुजरेंगे। आप घर में अपने आपको अत्यन्त बलवान समझेंगे परन्तु घर से बाहर एकदम निर्बलता का अनुभव करेंगे। साथ ही व्यापार के कार्य में आप हमेशा तत्पर रहेंगे एवं मित्र वर्ग से आपका विशेष स्नेह एवं सहयोग का भाव रहेगा। इसके अतिरिक्त आप विदेश में भी निवास करेंगे।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येळति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

जीवन में वाहनों का आपको अभाव नहीं रहेगा तथा कार मोटर आदि से सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी प्रवृति दानशील होगी तथा यदा कदा आप अपनी इस प्रवृति का पालन करते रहेंगे। धन एवं वैभव से भी आप हमेशा युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त मित्र वर्ग से भी आपका गहन स्नेह रहेगा।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

राक्षस गण में पैदा होने के कारण आप कभी कभी अधिक बातों को करने वाले होंगे। आप का चित्त कठोरता से युक्त रहेगा तथा दया एवं करूणा के भाव की इसमें न्यूनता रहेगी। आप में साहसी व्यक्ति के लक्षण परिलक्षित होगे तथा साहसिक कार्यो को करने के लिए सदा

तत्पर रहेंगे। आप छोटी छोटी बातों पर शीघ्र ही उत्तेजित या क्रोधित भी होंगे। अपने कार्यों को सिद्ध करने के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे। आपका शरीर बलवान होगा अतः अन्य लोगों से आप का विवाद चलता रहेगा एवं अधिकांश जनों से आपका वैमनस्य भी रहेगा। अतः आपको अन्य लोगों के विनम्रता का व्यवहार करना चाहिए।

आप अपने जीवन काल में प्रमेह तथा उन्माद रोगों से भी पीड़ित रह सकते है। आपकी मुखाकृति भी सामान्य सुन्दर होगी तथा आपकी वाणी कभी कभी इतनी कठोर होगी कि सुनने वाला अत्यन्त ही कष्टानुभूति करेगा। अतः अपने सम्भाषण में आपको मधुर शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

व्याघ्र योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वतंत्र प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त कार्यकलापों को बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप या दवाब के पूर्ण करना चाहेंगे। आप धन को एकत्रित करने के प्रति सजग रहेंगे तथा यत्नपूर्वक इसका संचय करेंगे। आप अपने क्षेत्र में पूर्ण प्रशिक्षित होंगे तथा सम्मान के पात्र समझे जाएंगे। गुण ग्राहयता की शक्ति से आप सुशोभित रहेंगे तथा अच्छी बातों को शीघ्र ही ग्रहण करेंगे परन्तु आपकी एक कमजोरी यह रहेंगी कि आप कभी कभी स्वयं अपनी प्रशंसा अपने ही मुख से करेंगे जिससे अन्य लोगों पर इसका उचित प्रभाव नहीं पड़ेगा।

स्वच्छन्दोडर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् व्याघ्र योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, अर्थसंग्रह में तत्पर, गुणों को ग्रहण करने वाला, दीक्षित, वैभव युक्त तथा अपने ही मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिलकरण, गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनुराशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फलदायी रहेंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा धनुराशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यो में वजित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी पूर्ण रूप से सचेत रहें।

यदि आपके लिए परिस्थितियां अनुकूल न हो मानसिक अशान्ति शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधाएं तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्य सफल नहीं हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी का पूजन करना चाहिए तथा शुक्रवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही सोना, रजत, हीरा, चावल, दूध, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन इत्यादि पदार्थो का श्रद्धा पूर्वक किसी योग्य पात्र को दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता होगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप किसी यो3गय विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र– ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

sample

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया वृष लग्न में उत्पन्न जातक सुदंर उदार तथा सहिष्णु स्वभाव के होते हैं। उनकी वाणी में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहता है। साथ ही व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में वे समर्थ रहते हैं। शारीरिक रूप से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा मानसिक सन्तुष्टि भी उनकी बनी रहती है। ये अत्याधिक परिश्रमी जातक होते हैं तथा परिश्रम करने की उनकी अपूर्व क्षमता रहती है जिससे जीवन में उन्नति मार्ग प्रशस्त करने तथा सुखैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में वे प्रायः सफल रहते हैं। शांति एवं सहिष्णुता के साथ इनमें साहस तथा पराक्रम का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। अपने वाक्चातुर्य से शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सिद्ध करने में भी सफल होंगे। आपका शारीरिक कद मध्यम होगा परन्तु स्वरूप सुदंर एवं आकर्षक होगा। आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान होगा।

आप एक परिश्रमी पुरूष होंगे तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से किसी उच्च पद या समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करेंगे साथ ही अपने सदगुणों के द्वारा श्रेष्ठ जनों को सन्तुष्ट करने में सफल होंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा विभिन्न विषयों कला साहित्य एवं संगीत का आपको उचित ज्ञान रहेगा तथा इस क्षेत्र में प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी।

लग्नेश शुक्र की राशि के प्रभाव से शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे तथा उत्साह एवं परिश्रम पूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। दानशीलता का भाव भी आप में विद्यमान होगा तथा समय समय पर जरूरतमन्दों को दान देने में तत्पर रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी।

धर्म के प्रति आप श्रद्धालु रहेंगे तथा अवसरानुकूल धार्मिक अनुष्ठानों तथा कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। धार्मिक क्षेत्र में आप किसी संस्था से सम्बंधित हो सकते हैं या इस क्षेत्र में आपको कोई विशिष्ट सफलता या प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकती है।

आप में उदारता तथा सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल आप समाज सेवा के लिए भी उद्यत रहेंगे। आपकी प्रवृति सात्विक होगी तथा विचार भी उत्तम होंगे। साथ ही परोपकार की भावना भी विद्यमान होगी। इसके अतिरिक्त कई शास्त्रों का आपको ज्ञान होगा जिससे आपको सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि प्राप्त होगी।

इस प्रकार आप स्वस्थ सुदंर आकर्षक व्यक्तित्व विद्वान एवं साहसी पुरूष होंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक आपका जीवन व्यतीत होगा।

sample

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृति धनसंग्रह करने की रहेगी तथा वर्तमान एवं भविष्य के लिए प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करके उसका संग्रह करेंगे इससे आपकी आर्थिक स्थिति सन्तुलित रहेगी। साथ ही जायदाद या स्वर्ण आदि धातुओं पर पूंजीनिवेश करेंगे तथा इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ प्राप्त होगा। आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा तथा उनकी खुशहाली के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक जनों से आपको पूर्ण सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

सामान्यतया आपको सभी स्वाद रूचिकर लगेंगे परन्तु मिष्ठान के प्रति विशेष रूचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे। चूंकि यह भाव वाणी का प्रतिनिधित्व करता है तथा इसका स्वामी बुध होने के कारण आपकी वाणी मृदु तथा प्रभाव शाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही विचारों की अभिव्यक्ति भी कुशलता पूर्वक करेंगे परन्तु अवसरानुकूल आप अपने विचारों में परिवर्तन भी कर सकते है। यदि आप यह अनुभव करते है कि इस समय के लिए यह विचार ठीक नहीं है। आतिथ्य सत्कार की भावना भी आपके मन में विद्यमान रहेगी। इसके अतिरिक्त स्त्री वर्ग से आपको उचित लाभ समय समय पर मिलता रहेगा तथा वाहन एवं बहुमूल्य रत्नों की भी प्राप्ति होगी। इसके साथ ही धार्मिक एवं सज्जन प्रवृति के लोगों से आप सामान्यतया मित्रता करना पसन्द करेंगे।

sample

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चंद्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने भाई बहिनों के प्रति उदार भावुक तथा अत्यंत ही सहानुभूति का व्यवहार रखेंगे। आप उनसे अत्यधिक प्रेम करेंगे तथा उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगे परन्तु इसके बाद भी उनसे आपको यथोचित सम्मान तथा आदर अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। कभी कभी परिस्थिति के अनुकूल आप असाधारण साहस तथा पराक्रम का प्रदर्शन करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा नैतिकता का यत्नपूर्वक अनुपालन करते रहेंगे। भाई बहिनों के प्रति समयानुसार आप अपने को परिवर्तन करने में समर्थ रहेंगे। आपकी स्मरण शाक्ति तीव्र रहेगी तथा ऐतिहासिक घटनाओं को याद रखने में सफल रहेंगे। साथ ही भाई बहिनों के प्रति आपका क्रोध भी क्षणिक रहेगा तथा शीघ्र ही उनसे प्रसन्न हो जाएंगे।

जीवन में आप एक कर्तव्य परायण व्यक्ति रहेंगे तथा यत्नपूर्वक अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण करेंगे। आपकी सीखने या याद करने की शक्ति तीव्र होगी अतः किसी से कोई नवीन ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही उच्च शिक्षा या दर्शन शास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी। आप सामाजिक जनों की भी यथाशाक्ति सेवा करेंगे। अतः अपने इन कार्यो से ख्याति भी प्राप्त होगी। आप किसी भी उददेश्य को कार्य रूप में परिवर्तित करने के लिए साहसिक निर्णय लेने में हमेशा समर्थ रहेंगे अतः यदा कदा आप समूह के नेतृत्व को भी प्राप्त कर सकते हैं। आप समाज सेवा, लेखन या किसी नवीन आविष्कार से प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते है। साथ ही संचार की सुविधाओं से आप युक्त रहेंगे तथा संचार के क्षेत्र में आजीविका आदि भी कर सकेंगे। प्रकाशक संपादक या संवाददाता के रूप में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप वैश्य वर्ग के मित्र रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक अपने घर एवं परिवार का पालन पोषण करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति आपकी रूचि रहेंगी तथा शील स्वभाव भी उत्तम रहेगा।

sample

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों एवं आधुनिक विलासमय वस्तुओं से युक्त होंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। शुक्र के प्रभाव से युवावस्था से ही आपको सुख–संसाधनों की उपलब्धि हो जायेगी तथा इसके लिए विशेष परिश्रम भी कम ही करना पड़ेगा।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को आप अवश्य प्राप्त करेंगे। आपके प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा विवाह के बाद इसमें काफी वृद्धि होगी। स्त्री के सहयोग से भी धनाढ्य एवं समृद्धशाली व्यक्ति माने जायेंगे। चल सम्पत्ति की उपेक्षा अचल सम्पत्ति की आपके पास बहुलता होगी जिससे जमीन जायदाद तथा मकान प्रमुख होंगे। साथ ही समस्त आधुनिक भौतिक एवं विलासमय उपकरणों से आप सम्पन्न होंगे तथा आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

उत्तम निवास स्थान के विषय में आप सौभाग्यशाली व्यक्ति समझे जायेंगे। आपका घर उत्तम एवं आधुनिक स्थान में होगा तथा सर्व प्रकार से यह आकर्षक एवं सुसज्जित रहेगा। आप भी इसकी सुन्दरता एवं सफाई का पूर्ण ध्यान रखेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे तथा आपसी संबंध अच्छे रहेंगे। आपकी कुंडली में उत्तम वाहन के भी योग बनते है जिसका आप युवावस्था से ही उपयोग करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

आपकी माता जी सुन्दर सुसंस्कृत एवं मृदुस्वभाव की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक चतुर एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपनी चतुराई एवं व्यवहार कुशलता से परिवार का अच्छी तरह पालन पोषण करेंगी एवं किसी भी व्यक्ति को उनसे कोई परेशानी नहीं होगी। आपके प्रति उनके हृदय में विशेष वात्सल्य एवं स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको प्रचुर मात्रा में आर्थिक सहयोग की भी प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा उनकी आज्ञा का पालन करने में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त सुख–दुख में उनको अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आपसी संबंध भी मधुर होंगे।

अध्ययन के प्रति वचपन से ही आपकी रूचि होगी तथा बुद्धिमान एवं परिश्रमशील होने के कारण प्रारंभ से ही अध्ययन के क्षेत्र में अनावश्यक समस्याओं एवं बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसी परिपेक्ष्य में आप स्नातक परीक्षा आसानी से उतीर्ण करेंगे तथा इससे आप की आत्मिक शक्ति में वृद्धि होगी फलतः जीवन में इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। सामाजिक जनों एवं संबंधियों में भी आपके सम्मान में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं प्रभावित होंगे। इससे आपको प्रोत्साहन मिलेगा जिससे भविष्य उज्ज्वल होगा।

sample

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा आपके सांसारिक एवं अन्य कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे। आप कठिन से कठिन कार्य को आसानी से पूर्ण करने में भी समर्थ होंगे। यद्यपि वैदिक धर्म एवं दर्शन शास्त्रों में आपकी रूचि अल्प होगी परंतु आधुनिक साहित्य कविता एवं कला में आप पूर्ण रूचि रखेंगे। पाश्चात्य कला, संगीत एवं साहित्य के विशेष प्रेमी होंगे तथा इन क्षेत्रों में आप अपनी बुद्धिमता, योग्यता एवं परिश्रम से ज्ञान अर्जित करके समाज में अपने प्रभुत्व को स्थापित करने में समर्थ होंगे। फलतः आपका सम्मान एवं विद्वता का प्रभाव समाज में बना रहेगा।

पंचमभाव में कन्या राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में आप अधिक लिप्त रहेंगे तथा अधिकांश प्रसंग आप मनोरंजन या मानसिक सन्तुष्टि के लिए स्थापित करेंगे। आपके प्रेम प्रसंग में आदर्श, यथार्थवाद एवं मर्यादा की भी कमी होगी। फलतः ऐसे क्षेत्र में आप अपने लिए अनावश्यक परेशानियां एवं अशान्ति उत्पन्न कर सकते है तथा वैवाहिक जीवन पर भी दुष्प्रभाव हो सकता है। अतः ऐसे प्रसंगों की यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए तभी आप सुखी रह सकते है।

पंचमभाव में बुध की राशि के प्रभाव से आपको यथा समय संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब नहीं होगा आपकी संतति बुद्धिमान एवं गुणवान होगी तथा आज्ञाकारिकता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा एवं एक दूसरे के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान का भाव भी रखेंगे । वे व्यावहारिक बुद्धि के स्वामी होंगे फलतः जीविकार्जन एवं आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ रहेंगे। सुख दुःख में माता पिता की पूरी सेवा करेंगे।

अध्ययन के प्रति बच्चों की रूचि सामान्य होगी तथापि परिश्रम पूर्वक वे वांछित शिक्षा अर्जित करने में समर्थ होंगे। यद्यपि किसी मान्यता प्राप्त प्रशासनिक या अन्य क्षेत्रों में वे परिश्रम एवं पराक्रम से ही प्रवेश कर रखेंगे परंतु वाणिज्य क्षेत्र में योग्य सिद्ध होंगे तथा इसी से अपने जीवन में ऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करेंगे। अतः इनके लिए आपको अधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथापि अपने लिए आपको पूर्ण धन संचय करके रखना चाहिए जेकि आपके सुख दुख के समय काम आएगा तथा बच्चों को स्वावलंबी छोड़ देना चाहिए एवं उनके कार्यो में दखल नहीं देना चाहिए। इससे आप तथा वे शान्ति एवं सन्तुष्टि अनुभूति करेंगे।

sample

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगे तथा किसी भी प्रकार के कष्ट को सहन करने की शक्ति आप में विद्यमान रहेंगी। आप यदा कदा बुखार या अन्य सामान्य रोगों से कष्ट प्राप्त कर सकते है लेकिन आपको अपने स्वास्थ्य का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए क्योंकि आप में रोग अवरोधक तत्वों की न्यूनता होने से जब एक बार बीमार पड़ेगें तो इसमें ठीक होने में काफी समय लग जाएगा। इसके अतिरिक्त भावुकता में आपको वाहन आदि को भी सामान्य गति से चलाना चाहिए।

आपके शत्रु काफी होंगे तथा समय समय पर आपको नीचा दिखाने के लिए वे प्रयत्नशील रहेंगे क्योंकि वे आपकी खुशहाली के प्रति ईर्ष्या का भाव रखते हैं। साथ ही आपके मित्र, संबन्धी एवं पड़ौसी भी आपके ऐश्वर्य से ईर्ष्या करेंगे अतः ये भी समय समय पर शत्रुओं का कार्य करेंगे जो कि आपके अन्य प्रत्यक्ष शत्रुओं से अधिक प्रभावी होंगे। यद्यपि मुकद्दमे आदि में आपकी कोई रूचि नहीं रहेगी परन्तु धन संबन्धी मामलों में आप कोई मुकद्दमा दायर कर सकते हैं। इसमें आपका धन व्यय अधिक होगा परन्तु कुछ परिश्रम के बाद आपको इसमें सफलता मिल सकती है। आपके नौकर आपके लिए विश्वास पात्र नहीं रहेंगे तथा पारिवारिक गुप्त रहस्यों को वे अन्य लोगों को बताकर आपके सम्मान में न्यूनता लाएंगे। साथ ही उनकी चोरी करने की आदत से भी आपको आर्थिक हानि की संभावना रहेगी।

आप स्वच्छन्द प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा अपनी रूचि के अनुसार ही कार्यो को सम्पन्न करेंगे। यद्यपि आपके पास प्रचुर मात्रा में धनागमन होता रहेगा लेकिन आपात्काल के लिए आप बचाव करने में असमर्थ रहेंगे तथा प्रौढ़ावस्था में आपको भाइयों या संबन्धियों के कारण आपको ऋृण के बोझ में दबना पड़ सकता है। इससे आपके सामाजिक सम्मान में न्यूनता होगी अतः ऐसी परिस्थितियों से सावधान रहना चाहिए। आपके मामा मामियों से संबन्ध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा उनसे सुख एवं सहयोग अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। खान पान के प्रति भी आपको सतर्क रहना चाहिए अन्यथा वृद्धावस्था में आपको वायु, गुर्दे तथा प्रमेह संबन्धी रोगों से परेशानी हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप एक धनवान व्यक्ति होंगे परन्तु समाज में आपके अच्छे कार्यो से भी लोगों से शत्रुता के भाव में वृद्धि होगी अतः सावधान रहें।

sample

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है सामान्यतया सप्तम भाव में जलतत्व युक्त वृश्चिक राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी पित प्रकृति धनवान एवं अधिक व्ययशील होता है। परन्तु नैसर्गिक शुभ ग्रह एवं जलतत्व युक्त शुक्र के प्रभाव से जातक सुशील संगीत एवं कला प्रिय मधुरभाषी तथा आधुनिक विचारों से युक्त होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव से युक्त बुद्धिमान एवं गुणवती महिला होंगी तथा आधुनिकता के प्रति विशेष आकर्षित रहेंगी। उनमें चंचलता का भाव भी होगा एवं प्रवृति भ्रमण प्रिय होगी। सांसारिक कार्य कलापों में वह दक्ष होंगी। वह एक शिक्षित महिला होंगी तथा आधुनिक तथा पाश्चात्य शास्त्रों में विशेष रूचि रखेंगी। वह कर्तव्य परायण एवं मधुर बोलने वाली होंगी जिससे पारिवारिक एवं सामाजिक लोग उनसे प्रभावित रहेंगे।

आपकी पत्नी गौरवर्ण की सुंदर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा उनका अदभुत सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा उनका कद भी सामान्य होगा परन्तु शारीरिक संरचना दर्शनीय होगी एवं अंग प्रत्यंग सुडौल एवं पुष्ट रहेंगे। वृश्चिक राशि एवं शुक्र ग्रह में जल तत्व की प्रधानता के कारण उनमें स्थूलता भी आ सकती है अतः पहले से ही व्यायाम या योगादि द्वारा इसे नियंत्रित करना चाहिए। सौन्दर्य के प्रति वह हमेशा सतर्क रहेगी तथा सुंदर वस्तुओं संगीत एवं कला के प्रति समर्पित होंगी।

आपका विवाह विज्ञापन या किसी महिला संबंधी के द्वारा सम्पन्न होगा। सप्तम भावस्थ शुक्र के प्रभाव से प्रेम विवाह की भी प्रबल संभावना रहती है। विवाह के बाद आप एक दूसरे के प्रति समर्पित रहेंगे तथा सुख दुख में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। अतः आपके संबंधों में मधुरता रहेगी जिससे दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा ।

आपका विवाह किसी उच्च एवं प्रभावशाली परिवार में होगा तथा आर्थिक रूप से भी उनकी स्थिति सुदृढ़ होगी फलतः विवाह के समय आपको ससुराल से प्रचुर मात्रा में धन सम्पति की प्राप्ति होगी। सास ससुर से भी आपके संबंधों में मधुरता रहेगी एवं उनको पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। वे भी आपको पुत्रवत स्नेह देंगे तथा ससुराल से आर्थिक एवं नैतिक सहयोग भी अवसरानुकूल मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी सेवा एवं श्रद्धा का भाव रखेंगी तथा उनकी सुख सुविधा का ध्यान रखकर उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। साथ ही अपने सद्व्यवहार एवं मृदुवाणी से देवर एवं ननदों से भी यथोचित सम्मान एवं सहयोग प्राप्त करेंगी जिससे परिवार में सुख शांति बनी रहेगी।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी एवं इससे आपके लाभ एवं उन्नति

मार्ग प्रशस्त होंगे।

sample

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। इसके प्रभाव से आपकी ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि के प्रति श्रद्धा रहेगी तथा यत्न पूर्वक इसके ज्ञानार्जन करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी कुछ कार्य करने के लिए तत्पर होंगे। आप के पास पैतृक सम्पत्ति रहेगी लेकिन वह अधिक नहीं होगी साथ ही उसका उपयोग भी आप अच्छी तरह करने में असमर्थ से रहेंगे। आपके संबन्धी भी आपकी जमीन जायदाद आदि पर अपना दावा कर सकते है जिससे अनावश्यक तर्क वितर्कों के साथ वातावरण अप्रसन्नता से युक्त रहेगा। इसके प्रभाव से पारिवारिक कलह भी हो सकता है। अतः यह जायदाद सन्तुष्टि की जगह असन्तुष्टि का भाव ही उत्पन्न करेगी।

विवाह के समय दहेज आदि आपको मध्यम रूप से ही प्राप्त होगा तथा ससुराल पक्ष से किसी निश्चित रकम के बारे में कोई विवाद भी हो सकता है जिससे दाम्पत्य जीवन की मधुरता प्रभावित हो सकती है। आपको न्यूनाधिक रूप से बीमा अवश्य कराना चाहिए चाहे वह किसी का भी हो इससे आपको न्यूनाधिक लाभ अवश्य प्राप्त होगा यद्यपि जीवन में आपको यहां चोरी आदि की संभावना नहीं है तथापि सावधान अवश्य रहना चाहिए। आप स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से ही इच्छित धनार्जन करेंगे तथा विशिष्ट धन लाभ के भाव की अल्पता रहेगी। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा जीवन में आप स्वस्थ रहकर अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगे परन्तु वृद्धावस्था में यदा कदा आप शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे लेकिन इसका विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा।

sample

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से यद्यपि आप धर्म तथा धार्मिक कार्य कलापों का विरोध नहीं करेंगे परंतु स्वयं की इसमें कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी। साथ ही इच्छा पूर्वक किसी भी धार्मिक ग्रंथ के अध्ययन के इच्छुक भी नहीं रहेंगे लेकिन ईश्वर की सत्ता में आपका पूर्ण विश्वास रहेगा तथा इसी परिपेक्ष्य में आप व्रतादि का भी आचरण करेंगे। आप दैनिक पूजा पाठ भी सम्पन्न करेंगे या इस उदद्शेय की पूर्ति के लिए प्रतिदिन किसी मंदिर या अन्य पूजास्थल में जा सकते है। आप धार्मिक कार्य कलापों में विशेष व्यय करना उचित नहीं समझते। इसके साथ ही अन्य विषयों में उच्चशिक्षा अर्जित करने के लिए विशेष उत्सुक रहेंगे लेकिन धर्म एवं भाग्य को आप अपनी विचार धारा में सम्मिलित कम ही करेंगे। आपकी अर्न्तप्रज्ञा विकसित रहेगी तथा शरीर में आत्मा को स्वीकार करेंगे।

आपके विचार में जीवन कर्म प्रधान होना चाहिए तथा भाग्य इसमें सहायक की भूमिका निभाता है। अतः अन्य जनों को हमेशा कार्य करने की शिक्षा देंगे तथा भाग्य पर अल्प विश्वास करने के लिए कहेंगे लेकिन प्रौढ़ावस्था में आप स्वयं कर्म की अपेक्षा भाग्य की महत्ता को अधिक मात्रा में अनुभव करेंगे तथा आपके विचार में भाग्य की प्रबलता के बिना कर्म का कोई विशेष महत्व नहीं है। आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अल्प मात्रा में होंगी तथा इनसे विशेष लाभ भी नहीं होगा लेकिन समाज में सम्मानीय तथा ख्याति प्राप्त व्यक्ति होंगे। आप अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के फल से मध्यमायु में शुभ फल प्राप्त करेंगे तथा इस समय सुखी रहेंगे लेकिन वृद्धावस्था में किंचित परेशानी हो सकती है। साथ ही पौत्रादि का सुख भी मध्यम ही रहेगा।

sample

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्मसमय में दशम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। साथ ही मंगल भी कुम्भराशि में ही दशमभाव में स्थित है। कुम्भ राशि वायु तत्व एवं मंगल ग्रह अग्नितत्व युक्त ग्रह है अतः इनके प्रभाव से आपका व्यवसाय मानसिक एवं बौद्धिक क्रिया प्रधान होगा तथा इसमें आप सतत उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे दिग्बली मंगल के प्रभाव से स्वपराक्रम से आप इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही दशम भाव में स्थिर राशि के प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र स्थिर होगा तथा इसमें परिवर्तन की संभावना अल्प ही होगी।

आपके लिए आजीविका की दृष्टि से डाक्टर, सेना, पुलिस, सी आई डी, इंजीनियर, विद्युत एवं ऊर्जा शक्ति से संबंधित विभाग, विद्युत फैक्टरी, होटल या अग्नि से संबंधित कार्य, रत्न संबंधी कार्य एवं अन्य पराक्रमी कार्य शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। यदि आप उपरोक्त विभागों में ही अपने आजीविका क्षेत्र का चयन करेंगे तो इसमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा। अतः अपने उज्जवल भविष्य के लिए आपको यत्नपूर्वक इन्हीं क्षेत्रों में अपनी आजीविका प्रारंभ करनी चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में आप शस्त्रों का व्यापार, बिजली के उपकरण, दवाइयों का व्यापार, इंजीनियरिंग उपकरण, रासायनिक वस्तु, होटल एवं भारी उद्योग में वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अतः प्रचुर धन एवं लाभ अर्जित करने तथा जीवन में उन्नति प्राप्त करने के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार करना चाहिए। इससे आपके कार्य में सतत उन्नति होगी एवं किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याएं एवं तनावों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

सप्तमेश मंगल की दशम भाव में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको किसी उच्च पद एवं विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही इसे आप स्वपराक्रम एवं प्रभाव से अर्जित करेंगे। आपको किसी सामाजिक संस्था में भी किसी सम्मानीय एवं प्रभावशाली पद की प्राप्ति होगी जिससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे, परन्तु शनि की राशि के प्रभाव से इससे यदा कदा विलम्ब या व्यवधान भी आ सकते हैं परन्तु इससे आपको हतोत्साहित नहीं होना चाहिए एवं परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिता एक पराक्रमी योग्य एवं तेजस्वी स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा समाज में उनका पूर्ण प्रभाव रहेगा। साथ ही सभी लोग उन्हें वांछित आदर प्रदान करके उनके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव होगा तथा आपकी शिक्षा दीक्षा की समुचित व्यवस्था करेंगे एवं आपको योग्य व्यक्ति बनाना उनका मुख्य उददेश्य होगा। साथ ही आपके कार्य क्षेत्र की उन्नति में उनका मुख्य सहयोग होगा तथा उनके प्रभाव से भी आप उन्नति एवं यश प्राप्त करेंगे। आपका भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा का भाव होगा तथा यत्नपूर्वक उनकी आज्ञा का पालन करेंगे। इसके अतिरिक्त नैसर्गिक पापी ग्रह मंगल के प्रभाव से यदा कदा

सैद्धान्तिक एवं वैचारिक मतभेद भी बने रहेंगे लेकिन बुद्धिमता से आप दोनों परस्पर सामंजस्य स्थापित करने में समर्थ होंगे।

sample

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं तथा इच्छाओं की पूर्ति के लिए ईमानदारी तथा सत्य का अनुपालन करेंगे तथा परिश्रम पूर्वक उनको पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही आप जब भी जिस वस्तु की कामना करते है आपको उसकी प्राप्ति भी हो सकती है। आप शिक्षक, बैंक अधिकारी, वकील कम्पनी या सरकारी अधिकारी के रूप में व्यवसायिक सफलता अर्जित कर सकते है या इन लोगों से आपको समय समय पर विशिष्ट लाभ की प्राप्ति हो सकती है। इसके प्रभाव से आप मित्रों के संबंध में भाग्यशाली रहेंगे तथा उनसे आपको समय समय पर इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। मित्रों से आप को जीवन में उचित प्रोत्साहन भी प्राप्त होगा जिससे आपकी उन्नति होगी तथा वे आपसे वयस्क एवं अनुभवी होंगे।

आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा बड़े बड़े अधिकारी मंत्री नेता या महत्वपूर्ण व्यक्तियों से आपका मेल जोल या संबंध रहेंगे जिससे समाज में आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही महत्वपूर्ण लोगों के प्रभाव से आप उचित लाभ एवं ख्याति प्राप्त करेंगे। बड़े भाई बहिनों से आपके संबंध सामान्यतया मधुर रहेंगे आवश्यकतानुसार उनका सहयोग भी मिलता रहेगा। आपके आय के साधन मुख्य कार्य के अतिरिक्त अन्य भी हो सकते है जिससे की आपका धनार्जन अच्छा रहेगा साथ ही जीवन में आप समयानुसार कोई विशिष्ट सम्मान भी अर्जित करने में समर्थ हो सकते है। इसके अतिरिक्त बाएं कान के दर्द से यदा कदा परेशान हो सकते है परन्तु सामान्य जीवन आनन्द पूर्वक व्यतीत करेंगे।

sample

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप धन का सदुपयोग करने वाले व्यक्ति होंगे तथा अवसरानुकूल बचत भी करेंगे। आप समान्यतया अनावश्यक व्यय कम ही करेंगे। साथ ही धैर्य का भाव भी आप में विद्य मान रहेगा। आप धन की कीमत समझेंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक इसका उपयोग करेंगे लेकिन आपको अपना पूंजीनिवेश सामान्य कंपनियों या अन्य स्थानों में नहीं करना चाहिए।

आपकी जीवन में उन्नति शनैः शनैः सम्पन्न होगी क्योंकि आप किसी कार्य को अत्यंत ही सोच समझकर धैर्य पूर्वक सम्पन्न करते हैं तथा आर्थिक स्थिति भी युवावस्था के बाद ही विशेष अनुकूल हो सकती है। अतः आपको आर्थिक क्षेत्र में किसी नाटकीय परिवर्तन की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त आप लम्बी अवधि के निवेशों से लाभान्वित हो सकते है।

आपका सामान्य व्यय परोपकार संबंधी कार्यो पर होगा तथापि यदा कदा कोई अनावश्यक व्यय भी हो सकता है। अतः इससे आपको सावधानी रखनी चाहिए। यात्राओं से आपको आनन्द की अनुभूति होगी तथा समय समय पर इनसे लाभ भी होता रहेगा। आप जीवन में विदेश यात्रा अवश्य करेंगे। यह यात्रा आपकी धर्म या धार्मिक कार्यो से संबंधित होगी अथवा किसी अन्य व्यक्ति या संबंधी के सहयोग से आपको यह सुअवसर प्राप्त होगा। यह चाहे यात्रा किसी भी संदर्भ में हो आपके लिए आर्थिक एवं अन्य दृष्टियों से लाभदायक रहेगी तथा विभिन्न दर्शनीय स्थानों की सैर करने का भी आपको अवसर प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त यदा कदा आपको बायीं आंख में कोई परेशानी हो सकती है। अतः इसका उचित ध्यान रखना चाहिए।

sample

वार्षिक फलादेश - 2024

इस वर्ष शनि कुम्भ राशि में शनि दशम में और राहु मीन राशि में एकादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में गुरू मेष राशि में द्वादश में रहेंगे और 1 मई को वृष राशि में लग्न भाव में गोचर करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 29 अप्रैल से 28 जुन तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला–जुला रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ बाहरी या विदेशी सम्बन्धों से लाभ प्राप्त होगा। आपको अपने व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान–सम्मान प्राप्त होगा। अप्रैल के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपको अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। लग्न स्थान का गुरु व्यापार में नये अवसरों का संकेत दे रहा है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। एकादश स्थान के राहु अचानक लाभ कराते रहेंगे जिससे आपके धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आपके पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

अप्रैल से समय बहुत अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी सर्वप्रकारेण उन्नति होगी। व्यावसायिक जीवन में स्थिरता आपके लिए वरदान सिद्ध होगी तथा कोई भी व्यवधान आपकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के आपके प्रयास में बाधक सिद्ध नहीं हो सकता। निवेश के लिए यह समय काफी अनुकूल है। यदि इस समय आपने निवेश किया तो आपको इच्छित लाभ हो सकता है।

घर–परिवार, समाज

वर्षारम्भ में चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगा व परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक लगाव रहेगा।

अप्रैल के बाद समय और अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। उसमें आपकी अहम भूमिका

sample

होगा। सप्तम स्थान पर गुरू एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान का गुरु सन्तान सम्बन्धित कुछ चिन्ताएं दे सकता है, परन्तु अप्रैल के बाद लग्नस्थ गुरू के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है।

आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेगे व शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करेंगे। श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश होगा। आप अपने बच्चों पर गर्व करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान हेतु शुभ समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय भाग्यवर्द्धक है। यदि विवाह के योग्य है, तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान के गुरु आपके स्वास्थ्य में उतार–चढ़ाव की स्थिति बना सकते हैं। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है।

गुरु ग्रह के अग्नि तत्व राशि में होने के कारण पित्त या पेट संबंधित परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, परन्तु अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य, दिनचर्या व आहार सम्बन्धी अनुशासन में निश्चित रूप से सुधार आना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में विशेष सफलता नहीं मिलेगी, परन्तु गुरू ग्रह के गोचर के बाद समय पूर्णतः अनुकूल हो जायेगा।

आप शिक्षा के क्षेत्र में अच्छा करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्त कर पायेंगे। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता निश्चित है। अनुभवी व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त होगा। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना है।

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के शुभ योग बना रहे हैं।

sample

अप्रैल के बाद नवम स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि तीर्थ यात्रा के लिए शुभ है। कुल मिलाकर यह वर्ष छोटी व लम्बी तथा अन्य सभी प्रकार की यात्रा के लिए शुभ रहेगा तथा यात्राएं सौभाग्यवर्द्धक सिद्ध होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादशस्थ गुरू पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंग जैसे– गरीबों को खाना खिलाना, भिक्षुओं को दान देना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा करना आदि आपका नैसर्गिक गुण होगा। अप्रैल के बाद गुरू ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान और बढ़ेगा, जिससे निःस्वार्थ भाव से आप पूजा पाठ में रूचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- माता–पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- नित्यप्रति सूर्य को अर्घ्य दें।

sample

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि दशम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु एकादश भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि एकादश भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि का गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि द्वितीय भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि तृतीय स्थान में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि द्वितीय भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे जिससे आपकी आय में वृद्धि होगी। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। कोई नया व्यापार शुरु करने के लिए अच्छा समय है। लग्न स्थान का गुरु नवीन विचार धारा तथा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं।

आपका भाग्य भी आपके साथ है। इसलिए कम समय में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। साझेदारी या शेयर बजार में आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। मई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी। एकादश स्थान के राहु अचानक धन लाभ कराते रहेंगे। आपको बड़े भाईयों से लाभ प्राप्त होता रहेगा। मई के बाद आपको रत्न आभूशण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपके रुके हुए पैसे मिल सकते हैं। आप बचत करने में सफल रहेंगे।

मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से खर्च करेंगे। निवेश के मामले में यह वर्ष अनुकूल रहेगा, और आप अच्छा निवेश भी करेंगे। अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। 14 मई के बाद अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से धन लाभ हो सकता है।

sample

घर–परिवार, समाज

वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

मई के बाद परिवार में सदस्य संख्या में बढोत्तरी हो सकती है। आपको बड़े भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, जिससे समाज में आपके पराक्रम व प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। 30 मई के बाद चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा और आपको उनका सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है।

यदि आपकी सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय काफी अनुकूल है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त होगी। आपके बच्चे इतने कामयाब होंगे कि आपको उन पर गर्व होगा।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में हमेशा अच्छे विचार आएंगे। जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान–पान पर विशेष ध्यान देंगे एवं अपनी दिनचर्या भी अनुशासित रखेंगे।

यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है। उस समय आपको मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से

sample

अनुकूल है। यदि शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

14 मई के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्त होगी। जिन जातकों की नौकरी अभी तक नहीं लगी है, मई के बाद उन लोगों को नौकरी मिल सकती है।

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा होगी।

द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहें है। मई के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी। आप पूजा पाठ, यज्ञ एवं अनुष्ठान करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। आप गुरु मन्त्र लेकर साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके सामने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्रणायाम करें।

sample

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे औंर उसके बाद मकर राशिमें नवम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने व्यवसाय में बेहतरसफलता प्राप्त करेंगे। आपकी सफलता में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में कुछ नया करेंगेऔर आपको अच्छा लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान–सम्मान मिलेगा व अपने अधिकारियों की अनुकूलता प्राप्त होगी।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपने कार्य क्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो उसमें भी इच्छित लाभ प्राप्त होगा। भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को 31 अक्टूबर के बाद अच्छा लाभ मिलेगा। इस समय के अंतराल में इच्छित स्थान पर आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्धबहुत उत्तम रहेगा। आपके धनागम में वृद्धि होगीजिससे आप इच्छित बचत करके आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपको रत्न आभुषण इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पैतृक सम्पत्ति, या ससुराल से धन प्राप्त होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी आय के स्रोतों में बढोत्तरी होगी। इस समय अंतराल में आपको अचानक धन लाभ होगा। 31 अक्टूबर के बाद भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख भी प्राप्त हो सकता है।

sample

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनने के कारण सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का केतु आपके पारिवारिक माहौल को भंग करने की कोशिश करेगा, परन्तु आप अपने बुद्धि–विवेक से उसे भी अनुकूल कर लेंगे।

02 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियों मेंबढ़ चढ़ के भाग लेंगे और सामाजिक उत्थान के लिए आप किसी संस्था का संचालन भी कर सकते हैं। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। 31 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है उस समय आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण छा जाएगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। संतान के इच्छुक व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है।

02 जून से आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दुसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो विवाह हो जाएगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावानात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धउत्तम रहेगा। आपकी शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। गुरु ग्रह की अनुकूलता के कारण शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप छोटी–मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आलस्य की भावना उत्पन्न कर सकती है। उस समय आपको परहेज की ज्यादा जरूरत होगी। खान–पान के साथ साथ आपको अपनी दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

sample

सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा, षष्ठ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे, सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है।

02 जून के बाद तकनीकि शिक्षा या व्यवसाय के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारणबेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला–जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोइ विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है, परन्तु 02 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी–मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

31 अक्टूबर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंग या पयर्टन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 2 जून के बाद नवम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा–पाठ यज्ञ,अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन भी करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 31 अक्टूबर के बाद अपने परिवार में सुख शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगें।

- स्फटिक श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं एवं ऊँ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।

sample

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि एकादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं एकादश भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष नवम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी रहेगा। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके कार्य व्यवसाय में अनुकूलता बनी रहेगा। बड़े अधिकारी या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय में कुछ विशेष वनया करने के अवसर भी मिलते रहेंगे परन्तु इस समय के अंतराल में व्यापार में विस्तार न करें। जितना आपसे हो सके उतना ही कार्य करें नहीं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपसे नुकसान हो सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नती के साथ–साथ स्थान परिवर्तन भी हो सकता है।

03 जून के बाद शनि ग्रह का गोचर द्वादश भाव में हो रहा है। उस समय आपका कार्य व्यवसाय कुछ प्रभावित हो सकता है। आपके प्रतिद्वंदी आपका विरोध कर सकते हैं या शत्रुओं द्वारा आपके कार्य में रुकावट डालने की चेष्टा की जा सकती है। अतः बिना किसी पर विश्वास किये आत्मविश्वास के साथ कार्य करते रहें, क्योकि 03 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके सारे विरोधी शान्त होंगे और आपको कार्य–व्यवसाय मेंसफलता भी मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण सेयह वर्ष अच्छारहेगा।एकादश स्थान केशनि धनागम में निरंतरता बनाए रखेंगे। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धनादि संचित करने में आपको भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। निवेश के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ रहेगा। मांगलिक कार्यों में या समाजिक कार्यों में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

sample

03 जून से 03 अक्टूबर के मध्य समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें या किसी को उधार पैसे न दें। कोई आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें नही तो आपका पैसा फंस सकता है। 03 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। वर्षान्त में गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा, जिसके प्रभाव से सट्टा लॉटरी या शेयर बजार से भी आप को धन लाभ हो सकता है।

घर–परिवार, समाज

सामाजिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़–चढ़ कर भाग लेंगे। पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

26 जून से चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद संतान पक्ष के लिए समय काफी अनुकूल हो रहा है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा–दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। सन्तान का लक्ष्य प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम भी मनचाहा परिणाम नहीं देगा परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह निश्चित है।

जून के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 26 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का शुभसमय है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं।

sample

मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा परन्तु शनि ग्रह के गोचर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

03 जून के बाद द्वादश स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप बीमार हो सकते है। सुबह जल्दी उठ कर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी, जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दूर हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। इन्जीनीयरिंग या हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

जून के बाद विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति रूझान बढ़ेगा। द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर अपने करियर में उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा है।

यात्रा–तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ–साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी अधिकांश यात्रा अचानक होंगी। पूर्व से निधारित यात्रा प्रायः निरस्त होंगी।

26जून के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रूचि लेंगे। नियमित रूप से अपनी दैनिक पूजा करते रहेंगे। जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, यन्त्र एवं मन्त्र के प्रति आप

sample

का विश्वास बढेगा और चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें। (तांबे के लोटे में चावल डाल कर)
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और शनि मन्त्र का पाठ करें।
- संध्या के समय पीपल वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।

sample

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। कोई नया कार्य आरम्भ करेंगे और उसमें आपको सफलता भी मिलेगी। उच्च अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति भी हो सकती है। 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रतिकूल हो रहा है। गुप्तशत्रु या विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर व्यावसायिक जीवन की समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने कर्मचारियों पर निगाह रखें ।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष के प्रारम्भ में धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। नये व्यापार से भी शीघ्र लाभ होने के योग हैं। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय करेंगे। फरवरी से जून तक समय कुछ प्रभावित रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ खर्च से आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऋण इत्यादि भी बढ़ सकता है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण सामान्य काम काज पर असर नहीं होगा। परन्तु आर्थिक कमी महसूस होती रहेगी। मांगलिक कार्य व पुत्रादि के विवाह अवसर पर भी धन का व्यय हो सकता है।

sample

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप विवाह योग्य हैं तो विवाह होने की सम्भावना है। प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। 28 फरवरी के बाद मातुल पक्ष के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। माता के लिए समय शुभ रहेगा परंतु पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

24 जुलाई के बाद समय अच्छा हो रहा है। नवविवाहिताओं को संतान की प्राप्ति हो सकती है। पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना रहेगा। यह समय बड़े भाई तथा मित्रों से लाभ का योग बना रहा है। घर के वातावरण में प्रेम, आपसी समन्वय व प्रसन्नता का संचार होगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि के संकेत है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपनी बुद्धि एवं विवेक के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। संतान की इच्छा रखने वाली महिलाओं के लिए गर्भ धारण का अच्छा समय है। परन्तु 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रभावित रहेगा। ये समय आपके संतान की तरक्की में बाधक हो सकता है। दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

जुलाई के बाद आपके बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी। आपको अपने बच्चों पर अभिमान होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अतिउत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। 23 फरवरी के बाद शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु का गोचर एक साथ प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य में उतार–चढाव की स्थिति बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने का पूर्ण प्रयास करेंगे फिर भी चोट या दुघर्टना की स्थिति बन सकती है।

sample

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। परन्तु 23 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यावसायिक रूप से भी समय अच्छा नही रहेगा।

यात्रा–तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटी–मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही नवमस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचानक आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। 23 फरवरी के बाद विदेश यात्रा का भी योग बन रहा है। फरवरी के बाद चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से मनोवांछित स्थान पर स्थानांतरण होने के योग बन रहे हैं। आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे अथवा माता के निवास स्थल का भ्रमण करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में यात्रा के दौरान आपको छोटी–मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा–पाठ यज्ञ अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति रूचि बढ़ेगी। फरवरी के बाद पारिवारिक सुख शान्ति के लिए भी आप अपने घर में हवन व कोई धार्मिक कार्य संपन्न करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप गुरु मन्त्र लेकर साधना भी कर सकते है। आप अपने से बड़े लोगों का सम्मान करेंगे।

- शनि मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का या काले कम्बल मजदूरों या गरीबों को दान करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।

sample

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय की स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में हानि भी हो सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आलस्य की भावना बनी रहेगी। गुप्त शत्रु एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण व्यापार में कुछ सुधार होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु एवं लग्नस्थ शनि के प्रभाव से व्यवसाय में उतार–चढ़ाव का योग बन रहा हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको अपने आत्मविश्वास को बनाए रखना चाहिए और बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहना चाहिए। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आय के स्रोत प्रभावित होंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में बहुत ज्यादा सुधार नहीं होगा। अष्टमस्थ राहु के कारण अचानक आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। 29 मार्च के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धन लाभ होगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

sample

जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। शारीरिक बीमारी पर भी पैसा खर्च होगा।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला–जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे परिवार में खुशी का वातावरण बनेगा परन्तु आपके मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। सामाजिक उन्नति के लिए भी समय बहुत अच्छा नहीं है।

29 मार्च के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। 05 अक्टूबर के बाद पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। अतः उस समय के अंतराल में आपको अपने विवेक से काम लेना होगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। पंचम स्थान का मंगल गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात करा सकता है। बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिसके कारण आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं। 29 मार्च के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। उनका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपकी संतान विवाह योग्य है तो उनका विवाह भी हो सकता है। दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः मन को एकाग्र कर शिक्षा के प्रति ध्यान केन्द्रित करें। 05 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय ज्यादा खराब हो रहा है। उसके खान–पान पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी या तली हुई वस्तु का सेवन कम करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आप आलस्य व बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके

sample

स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा।

25 अगस्त के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान रह सकते हैं। अष्टमस्थ राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह–सुबह व्यायाम या योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए अन्न दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है परन्तु उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा नहीं है। द्वादशस्थ शनि के कारण पढ़ाई में आलस्य व शिक्षा में व्यवधान आता रहेगा परन्तु 29 मार्च के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से समय काफी अनुकूल होगा। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा–तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। 29 मार्च से 25 अगस्त तक आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। अगस्त के बाद से छोटी–मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

यात्रा के दौरान या वाहन चलाते सावधानी बहुत जरूरी है, क्योंकि अष्टम स्थान का राहु दुर्घटना का योग बना रहा है। यात्रा के अंतराल में आपका सामान भी चोरी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा–पाठ कम ही कर पाएंगे परन्तु दान पुण्य खूब करेंगे। भण्डारा करना या किसी गरीब की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। 29 मार्च के बाद मन्त्र जाप करेंगे। 05 अक्टूबर के बाद लग्न स्थान का शनि आपको बहुत ज्यादा आलसी बना सकता है जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित हो सकता है।

sample

- माता–पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें। शनि मन्त्र का जाप करें।
- दुर्गा चालीसा का प्रत्येक दिन पाठ करें। दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

sample

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बहुत अच्छा नही रहेगा। व्यावसायिक जीवन में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है। आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे परन्तु 04 फरवरी के बाद राहु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में चण्डाल योग बना रहा है। इस समय आपको कार्य व्यवसाय में हानि हो सकती है। साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो असंतुष्ट रहेंगे और साझेदार के साथ संधंब भी खराब हो सकते हैं।

अप्रैल के बाद मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल हो रहे हैं फलस्वरूप आय के सारे मार्ग बन्द हो सकते हैं। अधीनस्थ कर्मचारी आपका साथ नहीं देंगे। अधिकारी आपको अनायास ही तंग कर सकते हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति अनुकूल नहीं होने के कारण आय के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। 04 फरवरी के बाद शारीरिक व्याधि दूर करने में भी आपका व्यय होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें और खर्च पर भी अंकुश लगाए।

01 मई से समय और ज्यादा खराब हो रहा हैं। इस समय के अंतराल में आपके सारे ग्रह प्रतिकूल है अतः धोखा, हानि व आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। लोन इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। विषम परिस्थितियों में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और मां लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए।

sample

घर–परिवार, समाज

दूसरे भाव में शनि एवं राहु के गोचरीय प्रभाव के चलते पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता बनी रह सकती है। छोटी–छोटी बातों पर झगड़े या विवाद मे नहीं पड़ना चाहिए और वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए, नहीं तो आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं रहेगी। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

04 फरवरी के बाद धर्मपत्नी के साथ आपके वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे। यदि आपकी किसी के साथ मित्रता या साझेदारी है तो उसमें दरार आ सकती है। या उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक पद–प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। मई के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक स्थिति को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपकी संतान के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी परन्तु उसके लिए उनको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। 04 फरवरी के बाद सप्तम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है, जो कि आपके दूसरे बच्चे के लिए अच्छा नहीं है।

01 मई से गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से संतान की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न होंगे। शारीरिक व्याधि के कारण शिक्षा में भी रूकावट आ सकती है। अतः उस समय मन को एकाग्र कर पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगाना चाहिए। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही भी न करें।

स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य ही रहेगी। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे–धीरे करके कम हो रही है। लग्न स्थान का शनि आपको आलसी बना सकता है।

मई से उदर सम्बन्धित परेशानी हो सकती हैं। खान–पान पर संयम

sample

रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठकर टहलना व व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए अच्छा रहेगा। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए नहीं तो मानसिक भटकाव के कारण आप अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं।

शनि ग्रह के गोचर के बाद आलस्य आपके करियर को खराब कर सकता है।

यात्रा–तबादला

वर्षारम्भ में ही द्वादशस्थ शनि के कारण आपकी विदेश यात्रा होगी। शनि ग्रह के गोचर के बाद आपकी छोटी–मोटी यात्राएं होती रहेंगी। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें दुर्घटना हो सकती है। राहु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्य के कारण भी आपका दैनिक पूजा–पाठ प्रभावित होगा। मई से आप दान–पुण्य अधिक करेंगे

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।

sample

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध कार्य व्यवसाय के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। सप्तम स्थान में राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके व्यावसायिक जीवन में व्यवधान ला सकती है। गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं। यदि आप साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे और उसके साथ आपका संधंब भी खराब हो सकता है। 9 अगस्त से राहु का गोचर अनुकूल होने के कारण आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने शत्रुओं पर विजयी प्राप्त कर लेंगे। आप अपने व्यापारिक जीवन में उन्नति करने का पूर्ण प्रयास करेंगे और उसके लिए अथक परिश्रम भी करेंगे। इस समय के अंतराल में आपको सफलता मिल सकती है।

15 अक्टूबर से आपका समय फिर से प्रभावित हो रहा है जिसके फलस्वरूप आपकी आय के सारे मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपका साथ नहीं देंगे। यदि आप नौकरी करते हैं तो आपके अधिकारी लोग आपको तंग कर सकते हैं जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रहेंगे।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। गुरु एवं राहु की युति निवेश के लिए अच्छी नहीं होती है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

18 फरवरी से आपका समय और ज्यादा खराब हो रहा है अतः धोखा, हानि या आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। पत्नी के स्वास्थ्य पर

sample

भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। ऋण इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। विषम परिस्थिति में आपको अपना आत्मबल बनाए रखना होगा। 09 अगस्त से राहु का गोचर अच्छा होने के कारण धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। अचानक आपको मातुल पक्ष के लोगों से लाभ प्राप्त होगा।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। घरेलू मामलों में आपको बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी–छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद में नहीं पड़ना चाहिए। यदि आपकी किसी के साथ मित्रता है तो उसमें दरार आ सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय काफी अच्छा हो रहा है। पत्नी के साथ आपके मधुर संबंध होंगे। माता पिता सहित मातुल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से आपके शत्रु भी आपके साथ मित्रवत व्यवहार करेंगे। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी परन्तु उसके लिए उनको अथक परिश्रम करना पड़ेगा सप्तम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है। जो कि आपके दूसरे बच्चे के लिए अच्छा नहीं है।

18 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपकी संतान की उन्नति में बाधा आ सकती है। मानसिक कष्ट व शारीरिक व्याधि के कारण शिक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं अतः उस समय उनको अपने मन को एकाग्र कर पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगाना चाहिए। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए। 15 अक्टूबर से समय अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य के लिहाज से उत्तम नहीं रहेगी। लग्नस्थ शनि पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे–धीरे करके कम हो रही है। पेट संबंधित समस्याएं हो सकती हैं। खान–पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठ कर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा।

sample

9 अगस्त के बाद राहु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। यदि आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो इस समय के अंतराल में अच्छे हो जाएंगे। 15 अक्टूबर से समय और बढ़िया हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए। विदेशी भाषा सीखने वालों के लिए यह समय अच्छा है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। लग्नस्थ शनि के कारण आप आलसी भी हो सकते हैं।

9 अगस्त से राहु का गोचर बहुत शुभ हो रहा है। षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से अचानक बेरोजगारों को नौकरी मिल जाएगी। व्यवसायियों को उनका ब्राण्ड नेम मिल सकता है प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपनी परीक्षा में सफल होंगे।

यात्रा–तबादला

वर्षारम्भ में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है। आपकी छोटी–मोटी यात्राएं होती रहेंगी। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी। 18 फरवरी के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

9 अगस्त के बाद आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं तो दुर्घटना हो सकती है, क्योंकि लग्न स्थान का शनि चोट चपेट की सम्भावन बनाएं हुए है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में पूजा पाठ में आपका मन कम लगेगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक शनिवार शनि मन्त्र का पाठ करें।

- शनिवार के दिन एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

sample

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं लग्न स्थान में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए साल का पूर्वार्द्ध अच्छा नहींरहेगा। आर्थिक तंगी के चलते व्यापार में विस्तार करने की योजनाएं वर्षारंभ में धीमी पड़ेंगी। अथकप्रयास एवं बौद्धिक परिश्रम की आवश्यकता है। घर से दूर अर्थात् विदेश में सफलता मिल सकती है। लग्नस्थ शनि के कारण कुछ गलत फहमियों से आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं। 5 मार्च के बाद वेतन वृद्धि व पदोन्नति के रूप में आपको पुरुस्कृत किया जा सकता है।

12 अगस्त के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो उससे आपको हानि हो सकती है। जमीन–जायदाद से जुड़े व्यक्तियों के लिए यह समय अनुकूल नहीं है। 23 अक्तूबर के बाद व्यवसाय व नौकरी के लिए लंबी यात्रा हो सकती है। ये यात्रा सफल सिद्ध होगी। इस दौरान महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर बिना देखे दस्तखत न करें और जोखिम उठाने की प्रवृत्ति पर भी अंकुश लगाएं।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह साल आपके लिए मिला–जुला रहेगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी से बचने के लिए बेहतर यही होगा कि आप अपनी सभी योजनाएं पहले से तय कर लें।आपको आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहना चाहिए और जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए।

5 मार्च के बाद कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। इन अवसरों का भरपूर लाभ उठाएं। क्योंकि मई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। इस समय अपने रिश्तेदार, संबंधी या दोस्तों को उधार पैसा न दें।जोखिम भरा निवेश करने से बचें। कृषक वर्गों एवं फुटकर विक्रेताओं के लिए वर्षान्त अच्छा नहीं रहेगा।

sample

घर–परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए सामान्य रहेगा। अधिक भाग–दौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। 5 मार्च के बाद परिवार में छोटे भाई–बहनों का मांगलिक कार्य सम्पन्न होने का योग बन रहा है। यदि परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो अनुकूलता प्राप्त होगी। 31 मई के बाद परिवार में किसी व्यक्ति के साथ आपके वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

23 अक्तूबर से आपके पारिवारिक एवं सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा। आपकीमाता के स्वास्थ्य में उतार–चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी और आपको ससुराल पक्ष के लोगों का सहयोग नहीं मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधानी से बरतनी चाहिए ।

5 मार्च के बाद का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। संतान के साथ संबंध में मधुरता आएगी जिससे घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। यदि अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। अतः आप उनकीसकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मानसिक चिंताएं भी रहेंगी।दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

5 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। यदि स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो 23 अक्तूबर के बाद आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। 5 मार्च के बाद लग्न भाव

sample

पर गुरु की दृष्टि आपके मनोबल को बढ़ाएगी। अगर आप प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग ले रहे हैं तो सफलता आपके पक्ष में होगा। षष्ठस्थ राहु के कारण अचानक ही आपको उन्नति व सफलता मिलेगी।

मई के बाद चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए अनुकूल समय रहेगा। कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ प्राप्त होगा। अध्ययन कार्य में आपकी रुचि बनी रहेगी। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह व साहस बना रहेगा। 23अक्तूबर से आप गुप्त विद्याओं के प्रति आकर्षित हो सकते हैं।

यात्रा–तबादला

यात्रा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आपकीछोटी–मोटी यात्राएं होती रहेंगी परन्तु 5 मार्च के बाद लम्बी यात्राएं भी होंगी। आध्यात्मिक सुख प्राप्ति के लिए आप तीर्थ स्थल की यात्रा भी करेंगे।

कुछ समय के लिए आप प्रवास भी कर सकते हैं। 23अक्तूबर के बाद देश–विदेश घूमने का योग बन रहा है। इस समय के अंतराल में अवांछित यात्रा भी करनी पड़ सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। आपके धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे। 5 मार्च के बाद समय अच्छा हो रहा है। दैनिक पूजा व दिनचर्या में काफी सुधार होगा। 15 अक्तूबर से आप दान–पुण्य अधिक करेंगे।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवारके दिन गरीबों को काला कम्बल दान करें।
- अपनेबजन के बराबर अन्न आदि दान करें जिससे आपको शारीरिक अनुकूलता प्राप्त होगी।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।

sample

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष मिला–जुला रहेगा। वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि नवीन विचारधारा, नयी योजनाओं को जन्म देगी। उसका उचित लाभ उठा कर आप अपने कार्य व्यवसाय में अच्छी उन्नति करेंगे। 18 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता है। अष्टमस्थ मंगल के कारण गुप्त या प्रत्यक्ष शत्रु परेशानी उत्पन्न कर सकते हैं।

8 अक्टूबर के बाद आप के अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। जमीन–जायदाद से संबंधित कई लाभकारी अवसर आएंगे परन्तु बहुत सोच–विचार कर ही उसमें निवेश करें। क्योंकि चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह की दृष्टि जमीन–जायदाद के लिए अच्छी नहीं होती। द्वितीय स्थान में शनि ग्रह की स्थिति आपकी आर्थिक उन्नति के लिए शुभ नहीं है। परन्तु 18 मार्च से आपके आय के साधन बढ़ेंगे। ऋण के लिए आवेदन डाला हो तो इस समय के अंतराल में आपको लोन मिल जाएगा। आप अपनी भौतिक सुख–सुबिधा पर भी अधिक खर्च करेंगे।

द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार मे मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

sample

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न होंगी। परिवार में एक–दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। 18 मार्च से द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से परिवारिक प्रतिकूलता दूर होगी एवं परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी।

आपके माता पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। गुरु ग्रह की शुभता के कारण स्त्री सुख, विवाह, धन आगमन एवं संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। 8 अक्टूबर से आपके दाम्पत्य जीवन में सामान्य उतार चढ़ाव की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

संतान

यह वर्ष आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु संतान के लिए अच्छा नहीं होता। वर्ष भर संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। संतान इच्छित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ेगा। गर्भवती स्त्रियां सावधानी बरतें अन्यथा गर्भपात हो सकता है।

8 अक्टूबर के बाद का समय आपके दूसरे बच्चे को प्रभावित कर सकता है। इस समयान्तराल में स्वास्थ्य पर ध्यान दें। यात्रादि से भी बचना चाहिए।

स्वास्थ्य

द्वितीस्थ शनि के प्रभाव से मामूली संक्रमण की चपेट में आप जरूर आ सकते हैं। शनि की स्थिति आपके परिवार, संचय, वाणी व आयु के प्रतिकूल सिद्ध हो सकती है। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं रहेगी। रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोग होने की संभावना है।

आपको दुरुस्त रहने के लिए ध्यान और योग का सहारा लेना होगा। शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन आपके लिए लाभप्रद रहेगा। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए समय समय पर चिकित्सक की सलाह लेते रहें।

sample

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 18 मार्च के बाद सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। विद्यार्थियों को अपने करियर में उचित सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

दशमस्थ राहु के कारण चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए समय अनुकूल रहेगा। वकील, जज एवं कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ नहीं होगा।

यात्रा–तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी–मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। 18 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

परिवार के साथ भ्रमण पर जाएंगे। यह यात्रा मनोरंजनात्मक व आनन्ददायक रहेगा। इन यात्राओं में आपको कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थ गुरु के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्षारम्भ में ही आप धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा अधिक करेंगे। 18 मार्च से घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति व समाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। मन्दिर निर्माण, धार्मिक कार्य, भण्डारादि कार्यों में आप अच्छा दान करेंगे। गरीब बच्चों की पढ़ाई हेतु दान देकर या अनाथ आश्रम में भण्डारा कर अधिक से अधिक पुण्यार्जन करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।
- चींटी एवं चिड़ियों को दाना डालें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। आप व्यापार में अच्छी उन्नति करेंगे। दशम भाव में गुरु ग्रह की उपस्थिति आपके हित में काम करेगी और साक्षात्कारों में भी सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। जो व्यक्ति नौकरी बदलना चाहते हैं उनके लिए यह समय बहुत ही शुभ है। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी खास ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आप आनंद भी लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया व्यापार भी प्रारम्भ करेंगे। जिसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होंगे। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का भरपूर सहयोग मिलेगा। भूमि क्रय–विक्रय या खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को सावधान रहना चाहिए। क्योंकि चतुर्थ स्थान का राहु अच्छा नहीं होता। छोटे व्यापारियों को अपना ब्राण्ड नेम मिलेगा, जिससे वह अपने व्यापार को बड़े पैमाने पर ले जाएंगे।

धन संपत्ति

आपकी आर्थिक स्थिति के बारें में क्या कहना, इस साल तो आपकी बल्ले–बल्ले रहने वाली है। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। मार्च माह के बाद तो स्थिति और भी सुदृढ़ होने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। शेयर बाजार से भी लाभ होने की संभावना है। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा।

12 अगस्त के बाद चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आर्थिक स्थिति थोड़ी कमजोर रह सकती है। खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की

जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इस साल आपकी जिन्दगी में बहुत बदलाव आने वाले हैं।

घर–परिवार, समाज

इस साल आपकी पारिवरिक स्थिति बेहतर रहने वाली है, बस जरूरत है सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आने की। परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है, लेकिन इसके विरूद्ध जाना घातक हो सकता है। है। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

12 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान में राहु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके परिवार में कुछ परेशानियां उत्पन्न हो सकती हैं। लेकिन कुछ ज्यादा हानि होने की संभावना नहीं है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और संयम बरतें। पिता जी के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। विवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति के प्रबल योग बन रहे हैं।

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध संतान के लिए अच्छा नहीं है। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। गर्भवती स्त्रियों को सावधान रहना चाहिए नहीं तो पंचम स्थान का राहु गर्भपात करा सकता है।

वर्ष का उतरार्द्ध आपकी संतान के लिए काफी उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। उनकी शिक्षा–दीक्षा में सुधार होगा। आपके बच्चे कुछ विशेष कार्य करेंगे जिससे आप उन पर अभिमान करेंगे। उनकी इस कामयाबी से समाज में भी आपके पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपकी दूसरी संतान के लिए भी समय काफी शुभ रहेगा।

स्वास्थ्य

सामान्यतः वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहने वाला है। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य में उतार–चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेगी। द्वितीय स्थान के शनि आपको मानसिक परेशानी दे सकते हैं। आप को ऐसा लगेगा कि धीरे धीरे आपकी ऊर्जा कम हो रही है और आप कमजोर होते जा रहे हैं। परन्तु मार्च के बाद समय काफी शुभ हो रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। अर्थात इस

sample

समय आप रोग–मुक्त रहने वाले हैं। लेकिन आप मोटापे का शिकार हो सकते हैं, क्योंकि मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्यागकर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए अच्छा नहीं है। विद्यार्थियों को मेहनत करने के बावजूद भी पारिश्रमिक फल नहीं मिलेगा। पंचम स्थान का राहु आपकी शिक्षा–दीक्षा में भी रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के करण आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नये स्रोतों का सृजन करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

यात्रा–तबादला

मार्च के बाद आप अधिक से अधिक यात्राएं करेंगे। छोटी–छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राओं का भी प्रबल योग बन रहा है। इन यात्राओं के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपकी उन्नति के लिए अच्छी होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। नवम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए शुभ नहीं है। आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास एवं श्रद्धा उत्पन्न होगी, जिसके चलते आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। मन्त्र जाप या भगवान का ध्यान करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- अपने आपको नियंत्रित रखें।

- हनुमान चालीसा का पाठ करना आपके लिए श्रेष्ठ रहेगा।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- अपने घर में पारद के शिवलिंग स्थापित कर उनका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि तृतीय भाव में और सिंह राशि का राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि व्यापारिक व्यक्तियों के लिए बहुत ही अनुकूल है। यदि आप कुछ नया करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। कार्य व्यवसाय में आपके भाईयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। साझेदारी में व्यवसाय कर रहे व्यक्तियों की उन्नति होगी। 6 अप्रैल के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

यदि आप नौकरी करते हैं तो अचानक प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। द्वादश स्थान में गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके प्रति किसी प्रकार का षड्यन्त्र या कोई बड़ी समस्या उत्पन्न की जा सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अति उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा या रुका हुआ धन वापस मिल सकता है। धन संचित करने में आपके भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका व्यय होगा।

अप्रैल के बाद आपके अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले उपायों पर अंकुश लगाएं। लेन–देन व निवेश के मामले में सावधान रहें। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें।

घर–परिवार, समाज

यह साल पारिवारिक जीवन के लिए अच्छा नहीं रहेगा। व्यापारिक

व्यस्तता के कारण अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। चतुर्थ स्थान का राहु परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकता है। ऐसे मे आपको बड़े ही विवेक से काम लेना होगा। सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आए।

परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है और उनके विरूद्ध जाना घातक हो सकता है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं। अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहार में संयम बरतें। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से समाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़–चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ बच्चों के लिए बहुत ही शुभ है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। उनकी शिक्षा–दीक्षा मे भी सुधार होगा। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपकी दूसरे संतान को उन्नति के अवसर मिलेंगे।

6 अप्रैल के बाद समय प्रभावित हो रहा है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। आपके दूसरे बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। यदि पहले से कोई बीमारी नहीं है तो यह समय काफी अच्छा रहेगा। परन्तु 6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से छोटी–मोटी बीमारियों से आप प्रभावित हो सकते हैं।

गुरु के अग्नि तत्व राशि में होने के कारण पाचन या गैस संबंधित परेशानी हो सकती है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना बहुत जरुरी होगा। सुबह–सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। चतुर्थ स्थान का राहु आपकी माता का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी है। उच्च शिक्षा

sample

हेतु किसी अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अरुचि उत्पन्न होगी। चतुर्थ स्थान का राहु एकेडमिक एजूकेशन में कमी करेगा। जो जातक नौकरी की तलाश में हैं उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा–तबादला

तृतीयस्थ शनि के कारण आपकी छोटी–मोटी यात्राएं होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुर्ण्याजन करेंगे। 5 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ शुभ रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा–पाठ यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र पाठ अधिक करेंगे एवं योग इत्यादि क्रियाओं में भी रुचि लेंगे। द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भूखे को खाना खिलाना, गरीबों को दान देना, मजबूरों की सहायता करना ही अपना धर्म समझेंगे।

- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला–जुला रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। अभी कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा और यह परिवर्तन आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। 15 अप्रैल के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप अपने व्यापार में कुछ विशेष करेंगे, जिससे आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

अतः इस समय के अंतराल में एकाग्रचित होकर व्यापार के विस्तार और नए कारोबार को शुरू करने के लिए सोचना कारगर होगा। क्योंकि लग्न स्थान का गुरु नयी विचारधारा एवं नयी योजनाओं को जन्म देगा, जिसका भरपूर लाभ उठा कर आप अपने व्यापार में उन्नति कर सकते हैं। अगस्त के बाद बेकार के कुछ मुद्दे आपके लिए परेशानी खड़ी कर सकते हैं। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे एवं अपने कार्य में सफल रहेंगे।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति में उतार–चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान का गुरु व्यय अधिक करा सकता है। अतः बहुत ही सोच विचार कर आर्थिक निर्णय लें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। नौकरी या व्यापार में नए प्रयोग से बचें। आयात–निर्यात करने वालों को बहुत उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। नए कार्य में हाथ डालने के लिए बेहतर समय नहीं है। 15 अप्रैल से समय अच्छा हो रहा है। रुका हुआ अथवा फंसा हुआ धन वापस मिल सकता है। आपके छोटे भाई व धर्मपत्नी से भी लाभ प्राप्त हो सकता है। भौतिक सुख सुविधाओं पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

sample

27 अगस्त के बाद शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कुछ चुनौतियां आपके सामने आ सकती हैं। परन्तु आप जिस तरह के चौकस और विश्लेषिक व्यक्ति हैं, इन चुनौतियों को लाभकारी अवसरों में बदलना आपके लिए बड़ी बात नहीं होगी। पैतृक संपत्ति या भूमि इत्यादि पर केश मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी और आपको नुकसान का सामना करना पड़ सकता है।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला–जुला रहेगा। अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। चतुर्थ स्थान के राहु आपके पारिवारिक माहौल में थोड़ी कटुता का वातावरण बना सकते हैं, जिसके कारण किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। उस समय आपको विवेक से काम लेना होगा। 15 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह के गोचर काफी अनुकूल हो जाएगा। यदि आप विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है एवं नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती हैं।

तृतीयस्थ शनि के कारण आपको भाइयों का सहयोग मिलेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। सामाजिक कार्यों के प्रति नैसर्गिक रूप से आपका लगाव बढ़ेगा, जिससे आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़–चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान के लिए कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। परन्तु 15 अप्रैल के बाद लग्न स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अच्छा हो रहा है। यह समय गर्भाधान के लिए उत्तम रहेगा।

आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। मेहनत करने में कभी वे पीछे नहीं रहेंगे और आप अपने बच्चों पर गर्व करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। स्वास्थ्य में उतार–चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। यदि पहले से कोई बीमारी भुगत रहे हैं तो यह समय अधिक कष्ट कारक हो सकता है। द्वादशस्थ गुरु अग्नितत्व राशि में होने के कारण पेट से सम्बन्धित व पाचन संबंधित रोग दे सकते हैं। 15 अप्रैल के

sample

बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है।

लग्न स्थान के गुरु मन में अच्छे विचार लाएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान–पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। तृतीयस्थ शनि किसी भी परीक्षा में उन्नति के संकेत दे रहा है। अप्रैल के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में अधिक सुधार लाएंगे, सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना है।

पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पढ़ाई–लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है।

यात्रा–तबादला

द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। अतः वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। 15 अप्रैल के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि लम्बी यात्रा के योग बना रही है।

तृतीयस्थ शनि एवं राहु के प्रभाव से छोटी–मोटी यात्राएं होती रहेंगी। यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरुरी है। क्योंकि 27 अगस्त के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपका मन धार्मिक कार्यों में नहीं लगेगा। मन एकाग्र नहीं रहने के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। 15 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। जिससे पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप अपने गुरुजनों का

sample

सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- माता–पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे।

व्यवसाय

इस साल कारोबार में अच्छी सफलता मिलने वाली है और बेहतर लाभ भी होगा। विभिन्न प्रकार के स्रोतों से धन का आगमन होगा। जो लोग ब्याज पर पैसे देते हैं उनको अच्छा लाभ होने वाला है। यदि आप शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं तो अच्छा लाभ मिलेगा। 26 अप्रैल के बाद समय और भी रोमांचक और शानदार हो रहा है। हालाँकि चतुर्थ स्थान का शनि कुछ परेशानियाँ ला सकता है। लेकिन हताश होने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो के कारण कोई खास प्रभाव नहीं पड़ने वाला है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों को किंचित परेशानी हो सकती है। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपका स्थानान्तरण घर से दूर हो सकता है। अतः अपने से बड़े अधिकारियों के साथ संबंध अच्छा बनाकर रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के कारण आपकी मान–प्रतिष्ठा बढ़ेगी और सहकर्मियों का सहयोग भी मिलेगा। इस समय आपको कुछ ऐसी खुशियाँ मिलेंगी, जिसकी तलाश आपको एक लम्बे अरसे से थी। आप अपने काम को समय से पहले पूरा करने में सफल रहेंगे। 19 अक्टूबर के बाद आपका समय कुछ प्रभावित हो सकता है।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ मे आपकी आर्थिक स्थिति शानदार रहने वाली है। आप अपने कार्यों के प्रति गंभीर बने रहेंगे, जिस कारण धन का आगमन भी सुचारु रूप से होता रहेगा। 26 अप्रैल के बाद स्थिति में अप्रत्याशित बदलाव होगा और आप यह पाएंगे कि आपकी जमापूंजी में वृद्धि हो रही है। द्वितीयस्थ गुरु के कारण आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें यदि निवेश करना चाहते हैं। तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

sample

16 सितम्बर के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो रहा है। भूमि, घर व वाहन खरीदते समय कागजी कार्यवाही पर विशेष ध्यान दें नहीं तो चतुर्थ स्थान का शनि आपको फंसा सकता है। कुछ अपने ही लोग आपके साथ धोखा–धड़ी कर सकते हैं, इसलिए अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत है। जमापूंजी और लेन–देन के मामले में किसी प्रकार की कोताही न करें। संभव हो तो लिखित रूप में ही लेन–देन करें। कोई बड़ा–बुजुर्ग आदमी आपके साथ ठगी कर सकता है। किसी प्रकार का कर्जा लेने से परहेज करें।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह की स्थिति पारिवारिक माहौल में विषम परिस्थिति उत्पन्न कर रही है। आपके माता पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। परिवार मे किसी के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। ऐसे में आपको बड़ी ही बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए और घरेलू माहौल को अनुकूल बनाये रखने के लिए छोटी मोटी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धर्मपत्नी के लिए अच्छी है। अतः उनके साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद पारिवारिक स्थिति कुछ अनुकूल होगी। परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। मातुल व ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है। उन लोगों को अच्छा सहयोग मिलगा। तृतीय स्थान के राहु सामाजिक पद प्रतिष्ठा में उन्नति करेंगे। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़–चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में आपका एक अलग ही व्यक्तित्व होगा।

संतान

पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि संतान के लिए बहुत ही श्रेष्ठ है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी।

अप्रैल के बाद आपके बच्चों को उन्नति प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। परन्तु अक्टूबर के बाद समय अच्छा हो जाएगा। उसके बाद आपके दोनों बच्चे एक साथ उन्नति करेंगे।

sample

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु केघ्घ्घ्घ्घ्घ प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट व शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान–पान व दिनर्चया पर विशेष ध्यान देंगे। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

26 अप्रैल के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। लेकिन मक्खन, घी और मिठाई से दूर रहना आपके लिए ज्यादा फायदेमंद होगा, अन्यथा आपका वजन बढ़ सकता है। 19 अक्टूबर के बाद से आप अचानक छोटी–मोटी बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। जैसे – सिर दर्द और अपच आपको परेशानी में डाल सकती है। अतः अपनी सेहत के प्रति सावधान रहें। आँख, किडनी और लीवर से संबंधित कुछ दिक्कतें हो सकती हैं। आलस्य भी आपके उपर हावी रहेगा। इस समय आपको दिमाग स्थिर रखने की आवश्यकता है। सुबह–शाम टहलना और प्रोटीनयुक्त पदार्थ अपने आहार में शामिल करना आपके लिए हितकर होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम एवं नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को अथक परिश्रम के पश्चात् नौकरी मिल सकती है। इंजीनियर, वकील, व कानून से जुड़े लोगों को अच्छी सफलता मिल सकती है। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों के लिए भी यह समय अच्छा है।

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में आपकी लम्बी यात्रा के योग बन रहे हैं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

अक्टूबर के बाद वाहनादि चलाते समय सावधानी बहुत ज्यादा जरूरी है क्योंकि राहु एवं शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण दुर्घटना इत्यादि

sample

का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा, जिसके प्रभाव से आपकी पूजा पाठ के प्रति विशेष रूचि रहेगी। ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। अप्रैल के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। जागरण, साई संध्या इत्यादि धार्मिक गतिविधियों में संलग्न रहेंगे। तीर्थ यात्रा व भण्डारा कर अत्यधिक पुर्ण्याजन करेंगे।

- शनिवार के दिन लोहे का तवा गरीबों को दान करे एवं शनि मन्त्र का जाप करें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा कवच व आठ मुखी रुद्राक्ष अपने गले के धारण करें।

sample

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

यदि आप नौकरी करते हैं तो यह साल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होने की प्रबल संभावना बन रही है। कुछ लोग आपकी छवि धूमिल करने की कोशिश कर सकते हैं, इसे नजरअंदाज न करें। बेहतर परिणाम के लिए आपको कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। मई के बाद आपका कारोबार सही रास्ते पर आएगा और मुनाफा भी होगा। प्रत्येक क्षेत्र में बेहतर परिणाम मिलेंगे।

प्रतिद्वन्दी आपकी नकल करने की खूब कोशिश करेंगे लेकिन वे अपने मंसूबों में सफल नहीं होंगे। आप अपने अहंकार और गुस्से पर नियंत्रण रखें। तभी आपको प्रतिष्ठा और धन दोनों की प्राप्ति होगी। सफलता आपके कदमों को चूमेगी और आपका प्रदर्शन काबिले तारीफ रहेगा। आप अपने विरोधियों को काफी पीछे छोड़ जाएंगे।

7 अक्टूबर के बाद समय अच्छा हो रहा है। नौकरी में पदोन्नती व कार्यों में सफलता मिलेगी। बड़े अधिकारी व उच्च लोगों का सहयोग मिलने के कारण व्यापारिक क्षेत्र में इच्छित लाभ प्राप्त करेंगे। साथ ही विशिष्ट उपलब्धियां भी अर्जित करेंगे।

धन संपत्ति

नए साल में आपकी आर्थिक स्थिति ठीक–ठाक रहने वाली है। एकाधिक स्रोतों से धन का आगमन होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। मई के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। अचानक संचित धन में कमी आ सकती है। परिवार में रोगादि की अधिकता होने के कारण धन व्यय होगा। आर्थिक लेन देन के मामलों में सावधान रहना बहुत ही जरूरी है। जमीन खरीदते समय व निवेश करते समय कागजी कार्यवाई पर पूरा ध्यान देना होगा, नहीं तो आपके साथ धोखा हो सकता है।

sample

आधुनिक सुख संसाधनों को प्राप्त करने में भी बहुत परिश्रम करना पड़ेगा।

अक्टूबर के बाद शेयर बाजार से दूरी बनाकर ही रहें तो बेहतर होगा। निवेश करने से ज्यादा बचाने के बारें में सोचना आपके लिए फायदेमंद होगा। भूमि व वाहन खरीदने का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु जल्दबाजी में कोई भी बड़ा निर्णय न लें नहीं तो हानि हो सकती है।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। जीवनसाथी के साथ अच्छे पल व्यतीत होंगे। पारिवारिक खुशियों में वृद्धि होगी। मई के बाद माता के साथ थोड़ी अनबन हो सकती है। उस समय राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक माहौल में नकारात्मक स्थिति उत्पन्न हो सकती है। जिससे अंतर्कलह हो सकती है। खुद पर नियंत्रण रखें। परिवार से जुड़ी किसी भी समस्या को छोटा न समझें और तुरन्त उसका हल निकालें।

तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। बांछित मान–सम्मान मिलेगा। किसी सम्मानित पद को अर्जित करेंगे। आपकी प्रसिद्धि दूर दूर तक व्याप्त हो सकती है एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। अक्टूबर के बाद परिवार से जुड़ी सभी समस्याएं दूर होंगी। एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

इस वर्ष आपके बच्चे महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से ही सम्पन्न करेंगे। मई के बाद बांछित लाभ एवं सफलता भी अर्जित कर सकते हैं। आपकी दूसरी संतान अधिक प्रभावित करेगी। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति उसकी रुचि अल्प मात्रा में होगी, परन्तु आधुनिक विज्ञान, इतिहास इत्यादि के प्रति उसका आकर्षण बढ़ेगा।

अक्टूबर के बाद समय प्रभावित हो रहा है। पंचम स्थान का शनि संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। गर्भवती स्त्रियों को बड़े सावधानी से रहना चाहिए नहीं तो आपका गर्भ खराब हो सकता है। माता पिता के प्रति संतान के मन में आदर व संमान का भाव कम होगा। इस समय के अंतराल में आपको उन पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं तो आपके बच्चे गलत संगति में फंस सकते हैं।

sample

स्वास्थ्य

इस साल आपकी सेहत ठीक–ठाक रहेगी। आपकी जिन्दगी सुचारु रूप से चलेगी। मई के बाद कुछ असमंजस की स्थिति पैदा हो सकती है, लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है। इससे आप जल्द ही उबर जाएंगे। इस पर ज्यादा सोच–विचार करने की जरूरत नहीं है। आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। किसी गंभीर बीमारी से आपको परेशानी नहीं होगी, लेकिन कुछ सामान्य सी दिक्कतें आ सकती हैं– जैसे–पेट में दर्द, बदहजमी, जोड़ों और घुटनों में दर्द संबंधी शिकायत हो सकती है।

बजन बढ़ने से बचने के लिए खान–पान पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। नहीं तो आपका बजन बढ़ सकता है। चतुर्थस्थ शनि के कारण आपके माता पिता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे भी आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। 7 अक्टूबर के बाद आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा, जिससे आप आरोग्य बने रहेंगे, परन्तु 22 अक्टूबर को शनि ग्रह का गोचर पत्नी एवं संतान के स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

कहते हैं कि अच्छे दिन आने से पहले बुरे दिन देखने पड़ते हैं। आपके साथ भी कुछ ऐसा हो सकता है। शुरुआत में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन समय के साथ स्थितियों में सुधार होगा। 11 मई के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे। उसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपनी परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों की शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न होंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो स्थान परिर्वतन का योग बन रहा है। अक्टूबर के बाद मेकेनिकल इंजीनियर एवं हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले लोगों की अच्छी उन्नति होगी।

यात्रा–तबादला

वर्षारम्भ में छोटी मोटी यात्राएं होती रहेगी। परन्तु मई के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी करा सकती है। इस यात्रा से आपको विशेष लाभ प्राप्त होगा।

अक्टूबर के बाद आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल

की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगी। विदेश यात्रा की भी संभावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में राहु गुरु की युति के कारण सारे यज्ञ, अनुष्ठान प्रभावित होंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी व्यवधान आ सकता है। ये सब आपके आलस्यता के कारण होगा। कोई भी धार्मिक कार्य करना हो तो अचानक करें क्योंकि योजनाबद्ध तरीके से कोई भी कार्य सफल नहीं होगा। 11 मई के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। अक्टूबर के बाद अपने घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे। जैसे– जागरण, साई संध्या, माता की चौकी इत्यादि। तांत्रिक क्रियाएं व काला जादू के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- शनिवार के दिन सुबह सुबह पीपल के वृक्ष में जल चढ़ाएं एवं सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- दुर्गा सप्तति का पाठ करें एवं आठ मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।
- वीरवार के दिन पीला केला गरीबों को दान करें।

sample

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए मिला जुला रहेगा। मेहनत और लग्न से किये गये कार्यों में सफलता मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। 13 अप्रैल के बाद राजनीति से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। 3 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए काफी शुभ हो रहा है। व्यवसायिक क्षेत्र में रूके हुए कार्य पूरे होंगे। व्यापारिक उन्नति के लिए आपको ऋण लेना पड़ सकता है। बड़े अधिकारी, वरिष्ठ जन या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रूझान बढ़ेगा।

13 जुलाई के बाद नौकरी करने वालो व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तण होगा। इस अवधि में आप पर आजीविका क्षेत्र में मानसिक दबाव अधिक रहेगा। आय में अनियमितता का भाव बना रहेगा। पैतृक संपत्ति, जमीन जायदाद से संबंधित मामलों में अनुकूलता नहीं मिलेगी। कुछ विरोधियों का भी सामना करना पड़ सकता है। 4 नवम्बर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। यदि आप नौकरी में हैं तो बड़े अधिकारी परेशान कर सकते हैं, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रहेंगे।

धन संपत्ति

पंचम स्थान का शनि आर्थिक स्थिति के लिए अच्छा नहीं है। अतः आपके लिए एक सुझाव है कि जुआ सट्टा इत्यादि से दूरी बनाकर ही रहें और साथ ही किसी प्रकार का आर्थिक जोखमि उठाने से परहेज करें। वित्तीय विषयों के लिए यह समय सही नहीं है। द्वितीय स्थान का राहु आपके संचित धन में भी कमी कर सकता है। अप्रैल के बाद पैसे के मामले में सावधान रहें तथा आंख बन्द कर किसी पर विश्वास करना अच्छा नहीं होगा।

2 जून से गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए शुभ हो रहा है। भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होने की प्रबल संभावना बन रही है। 4 नवम्बर के बाद आपके सारे धनागम के स्रोत खुलेंगे तथा आपकी आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी। पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, जिसमें आप खुले हाथों से खर्च करेंगे।

घर–परिवार, समाज

आपके पारिवारिक जीवन की बात करें तो वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान का राहु पारिवारिक माहौल में कुछ विषम स्थिति उत्पन्न कर सकता है। अचानक किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद होने की संभावना बन रही है। ऐसे समय में कुछ ऐसा न करें जिससे बाद में पछताना पड़े। जीवनसाथी के साथ बेहतर सामंजस्य बिठाने की कोशिश करें क्योंकि सप्तम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि धर्म पत्नी के लिए शुभ नहीं है। 5 अप्रैल के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है अतः इस समय अपने सहन शक्ति को बढ़ाएं एवं अपनी वाणी पर पूर्ण नियन्त्रण रखें।

2 जून के बाद आपके पारिवारिक स्थिति में अनुकूलता आनी शुरू हो जाएगी। आपके माता पिता के लिए यह समय काफी शुभ है। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। 4 नवम्बर से पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि दूर दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।

संतान

पंचम स्थान का शनि संतान की तरक्की के लिए बाधक है। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो सकती है। उनकी शिक्षा दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों में मर्यादा एवं आदर्श की भावना कम होगी, जिससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। उसके अतिरिक्त आपके साथ भावनात्मक लगाव में भी कमी आएगी। गर्भवती स्त्रियों को बहुत ही सावधान रहना होगा नहीं तो आपका गर्भपात हो सकता है। परन्तु 13 अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपकी दूसरी संतान की उन्नति होगी।

4 नवम्बर से समय अच्छा हो रहा है। आपके बच्चे अध्ययन के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे तथा उनकी आय में वृद्धि होगी। यदि आपकी संतान विवाह

sample

के योग्य है तो उसके विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। बदलते मौसम के कारण कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, लेकिन आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे। वजन बढ़ने की संभावना है, इसलिए मक्खन, घी और मिठाई खाने से परहेज करें। यदि निरोगी काया चाहते हैं तो नियमित रूप से व्यायाम करें और खान–पान का विशेष ध्यान रखें। नहीं तो 7 अप्रैल को लग्न स्थान में राहु का गोचर अचानक आपको बीमार कर सकता है, जिससे आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से ज्यादा परेशान हो सकते हैं। अतः इस अवधि में स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही न करें तथा अपने खान पान पर पूर्ण ध्यान दें।

4 नवम्बर के बाद लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि करेगी, जिससे आप तंदुरूस्त एवं सेहतमन्द बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह–सुबह टहलने जाना।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। पंचम स्थान का शनि विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं है। उन्नति में रुकावट व उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। अतः करियर में सफलता प्राप्त करने के लिए आपको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। मार्च के बाद समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। इस अवधि में वांछित सफलता नहीं मिलने के कारण आप निराश हो सकते हैं। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो 2 जून के बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है।

विद्यार्थियों के लिए 4 नवम्बर से समय काफी शुभ हो रहा है। अतः आपको वांछित शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

यात्रा–तबादला

साल के प्रारम्भ में यात्रा के योग कम ही बन रहे हैं। परन्तु 3 मार्च के बाद छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। 5 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण घर से दूर भी हो सकता है।

13 जुलाई के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी

sample

जन्मभूमि की यात्रा होगी। अपने पूरे परिवार के साथ सुखद यात्राओं का आनन्द प्राप्त करेंगे अर्थात पूरे परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों पर घूमने जाएंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से दैनिक पूजा–पाठ करते रहेंगे। घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए कोई विशष पूजा का आयोजन करेंगे। परन्तु 7 अप्रैल के बाद लग्न स्थान में राहु का गोचर धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। 2 जून के बाद गरीबों को दान देना, भिखारियों को खाना खिलाना एवं दुखियों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। योग व ध्यान के प्रति भी आपका रूझान बढ़ेगा।

- महामृत्यंजय मन्त्र का पाठ करें तथा सोमवार का व्रत करें ।
- पारद शिव लिंग अपने पूजा स्थान में रखें और नित्य उसका दर्शन करें।
- काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।

sample

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। राहु वृष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। मेहनत और लगन से किये गए कार्यों में सफलता की प्राप्ति होगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। 6 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यवसायी व्यक्तियों को वांछित सफलता मिलेगी। परन्तु लग्नस्थ राहु के कारण मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। फुटकर विक्रेता व आभूषण से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को ज्यादा लाभ मिलेगा। यदि आप शेयर, लॉटरी व सट्टा से जुड़े है तो यह समय काफी शुभ है। सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि आपको उच्चमहत्वाकांक्षी बना रही है। आप अधिक आय प्राप्त करने के प्रयास करते रहेंगे तथा परिश्रम के बल पर अपने व्यवसाय में वृद्धि करेंगे। यदि आप साझेदारी में कोई नया कार्य करना चाहते हैं तो यह समय अच्छा नहीं है। सप्तम स्थान पर राहु एवं शनि की दृष्टि मित्रता में धोखे का योग बना रही है। 3 दिसम्बर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः वर्षान्त में व्यापारिक निर्णय बहुत ही सोच विचार कर लें।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में एकादश स्थान पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ है। यदि आप शिक्षा, कानून व बैंक से जुड़े हैं तो इच्छित बचत करने में सफल होंगे। आर्थिक उन्नति करने में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। धनागम के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। हालांकि 6 अप्रैल से समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः वित्त से सम्बन्धित गतिविधियों के लिए यह समय सही नहीं है अतः लेन देन करते समय सावधान रहें। लग्नस्थ राहु के कारण आर्थिक स्थिति को लेकर मानसिक कष्ट भी बना रहेगा। नई संपति क्रय करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है।

28 जून के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके रुके हुए व फंसे हुसे पैसे मिलेंग। अप्रत्याशित धन की प्राप्ति होने से आपको आनन्द की अनुभूति होगी। बहुत दिन से चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। पिता व भाईयों से धन लाभ होगा। आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य पर अचानक धन व्यय होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

घर–परिवार, समाज

घर परिवार के लिए वर्ष का प्रारम्भ मिला–जुला रहेगा। सप्तम स्थान पर राहु की दृष्टि से दाम्पत्य जीवन में सामान्य उतार–चढ़ाव बना रहेगा। घरेलू विषयों को लेकर चिन्ता हो सकती है। परन्तु 6 अप्रैल को चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक स्थिति के लिए काफी शुभ है। परिवार के सभी लोग एक दूसरे का सहयोग करेंगे, जिसके परिवार में स्नेह–सौहार्द का संचार होगा तथा भावनात्मक लगाव में भी वृद्धि होगी। 28 जून के बाद लम्बे समय से चली आ रही संतान संबंधी दिक्कतों का अन्ततः समाधान हो जाएगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी तथा मांगलिक कार्य भी सम्पन्न होंगे। सामाजिक उन्नति के लिए भी यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा। वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित उच्च पद को ग्रहण करने में भी आप समर्थ होंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ है। आपके बच्चे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। मां–बाप के प्रति उनके मन में आदर एवं सम्मान का भाव बढ़ेगा। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए समय अनुकूल है। 6 अप्रैल से समय थोड़ा कष्टकर हो रहा है। पंचम स्थान का शनि आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। आपके बच्चे आलसी व लक्ष्य से भ्रमित हो सकते हैं।

28 जून से समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। आपके दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ राहु के कारण स्वास्थ्य में उतार–चढ़ाव काफी देखने को मिलेगा। जातक को जोड़ों में दर्द, सिर दर्द एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। यदि आप आयुर्वेद और योगाभ्यास आदि का सहारा लें तो

sample

जल्दी लाभ मिलेगा। सूर्योदय से पहले उठकर पार्क में घूमना भी आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगा।

पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लें। हालांकि घबराने की कोई बात नहीं है क्योंकि लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि रोग प्रतिरोधक शक्ति को विकसित कर रही है। स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए तुला दान श्रेष्ठ रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता में उन्नति के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। जिससे आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय उत्तम है। श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में नामांकन मिलेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में सफलता मिलेगी।

28 जून के बाद नये–नये तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों के लिए यह समय उत्तम रहेगा। साल के अंत में रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा–तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में आपकी अधिक यात्राएं होंगी। व्यावसायिक यात्रा के कारण आप ज्यादातर घर से बाहर ही रहेंगे। 6 अप्रैल के बाद आप परिवार सहित अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में तीर्थ यात्राओं का भी आनन्द लेंगे। यात्रा के अंतराल में किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए काफी लाभप्रद रहेगी। 11 दिसम्बर के बाद विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

यह वर्ष धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। लग्नस्थ राहु के कारण आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। आलस्यता व दीर्घ सूत्रता की भावना बनी

sample

रहेगी। दैनिक पूजा भी प्रभावित होगी। इस समय के अंतराल में आप कर्मनिष्ठ होंगे अर्थात् अपने कर्मों पर ज्यादा विश्वास करेंगे तथा आप दान पुण्य अधिक करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप साधना, योग व ध्यान में अपना समय अधिक व्यतीत करेंगे। गरीबों की सहायता एवं बुजुर्गों की सेवा करेंगे तथा दूसरों की सहायता करना ही अपना धर्म सझेंगे।

- महामृत्युंजय मन्त्र का पाठ करें तथा शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए तुला दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें तथा घृणी सूर्याय नमः मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें तथा बुधवार व शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- आठमुखी रूद्राक्ष रत्न धारण करें।

sample

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं छठे भाव में प्रवेश कर जाएंगे।

व्यवसाय

काम काज के लिए यह वर्ष मिला–जुला रहेगा। व्यापार में उतार–चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। वर्षारम्भ में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो हानि हो सकती है। यदि व्यावसायिक क्षेत्र बढ़ाना चाहते हैं तो अप्रैल के बाद ही विस्तार करें क्योंकि उससे पहले का समय अच्छा नहीं है। नौकरी करने वाले लोगों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। कार्यस्थल पर आपके खिलाफ साजिश रची जा सकती है। आपकी छवि को धूमिल करने की कोशिश भी की जा सकती है, इसलिए सतर्क रहें। नौकरी छोड़ने का भी मन बना सकते हैं। वरिष्ठ सहकर्मियों से झगड़ा करने से बचें। सरकारी नौकरी वालों को ज्यादा सावधानी बरतने की आवश्यकता है, नुकसान होने की संभावना ज्यादा है।

साझेदारी में काम करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध प्रभावित रहेगा। आपके मित्र आपको धोखा दे सकते हैं। सकारात्मक बने रहें। 25 सितम्बर के बाद का समय आपके पक्ष में होगा। विरोधी शान्त होंगे तथा उन्नति के मार्ग खुलेंगे। उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा। लोहा, कच्चे तेल, कच्चे माल के कारखानों आदि से जुड़े लोगों के लिए समय विशेष लाभकारी रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का राहु खर्च में वृद्धि करेगा। निवेश व लेन देन के मामले में सावधान रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 6 मई के बाद समय अनुकूल हो रहा है। व्यापारिक अनुकूलता के कारण लाभ होगा। शेयर, सट्टा व जुआ आदि से जुड़े लोगों के लिए यह समय उत्तम है। नयी संपत्ति क्रय करने का भी सुंदर योग बन रहा है। गुप्त धन की प्राप्ति होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध में गोचर प्रतिकूल होने के कारण चोरी, बीमारी, दुर्घटना व अपव्यय के योग हैं। यदि धन संपत्ति से संबंधित कोई मामल कोर्ट

sample

कचहरी में चल रहा है तो उसमें सफलता प्राप्त नहीं होगी। अचानक कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिसके कारण आपको कर्ज लेना पड़ सकता है।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला–जुला रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक स्थिति अनुकूल नहीं रहने से आप चिंतित रहेंगे। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने का प्रबल योग बना रहा है। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद न करें। 6 मई से समय कुछ अच्छा होगा। आपके भाईयों की उन्नति होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको कुछ पारिवारिक परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे समय में समझदारी से काम लेना आपके लिए हितकर होगा। आपके रास्ते में कुछ बाधाएं आ सकती हैं। 25 सितम्बर के बाद षष्ठस्थ शनि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे तथा समाज में लोग भी आपको वांछित सम्मान प्रदान करेंगे।

संतान

वर्षारम्भ में पंचम स्थान में शनि ग्रह का गोचर आपके बच्चों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है, जिसका असर उनकी शिक्षा पर भी पड़ेगा, परन्तु 6 मई से समय अनुकूल हो रहा है। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय शुभ है। आपके बच्चे आपकी उम्मीदों पर खरा उतरेंगे। बच्चे मान सम्मान में वृद्धि व गर्व का अनुभव कराएंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध दूसरी संतान के लिए शुभ नहीं है। आलस्य के कारण उनके सभी कार्यों में व्यवधान आने कि संभावना बन रही है। उनके रहन सहन पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। गैस, पाचन या पेट संबंधित बीमारियां होने की प्रबल संभावना बन रही है। मुख्यतः सभी ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। ऐसे में आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना होगा। खान पान के साथ–साथ अपनी दिनचर्या में सुधार करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

sample

6 मई से समय स्वास्थ्य के लिए अनुकूल हो रहा है। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि होने के कारण मानसिक शान्ति बनी रहेगी। आप दैनिक कार्यों में स्फुर्तिवान बने रहेंगे। अगस्त के बाद मौसमजनित बीमारियों से किंचित परेशान होंगे। परन्तु 25 सितम्बर के बाद समय काफि अच्छा हो रहा है। छठे स्थान का शनि आपको व्याधि मुक्त रखेगा तथा आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ महसूस करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विदेशी भाषा सीखने वाले लोगों के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं उन लोगों की उन्नति होगी। 6 मई के बाद उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है। तकनीकी शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा से जुड़े विद्यार्थियों को भी सफलता मिलेगी।

25 सितम्बर के बाद नौकरी इच्छित व्यक्तियों को वांछित सफलता मिलेगी तथा उन्नति के सारे मार्ग प्रसस्त होंगे। छठे स्थान का शनि प्रतियोगिता परीक्षा के लिए बहुत ही शुभ होता है।

यात्रा–तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। द्वादश स्थान का राहु अचानक विदेश यात्रा करा सकता है। 6 मई के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आप धार्मिक यात्राओं का भी आनन्द लेंगे।

मुख्यतः आपके सारी यात्राएं अचानक होंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए वर्ष का अंत बहुत ही शुभ है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। मानसिक द्वंद्वता के कारण आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। पंचमस्थ शनि के कारण पूजा–पाठए यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि कर्मों में आपका मन नहीं लगेगा, परन्तु 6 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप सांस्कृतिक उत्सवों मे बढ़–चढ़ के भाग लेंगे

तथा दान पुण्य अधिक करेंगे। अपने पूजा घर में श्वेतार्क गणपति की स्थापना कर नित्य उनका पूजन करें तथा प्रत्येक बुधवार के दिन दुर्वा (घास) चढ़ाएं और लड्डुओं का भोग लगाएं।

- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।
- चन्दन का तिलक लगाएं तथा गुरु के मन्त्र का पाठ करें।
- साधु संन्यासियों की सेवा करें तथा अपने से बड़े लोगों का सम्मान करें।

sample

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं एकदश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से नौकरी वाले लोगों को जबरदस्त सफलता मिलने की संभावना है। आपको उच्च अधिकारियों का सहयोग व पदोन्नति मिलने के भी योग बने हुए हैं। आपके वेतन में बढ़ोत्तरी हो सकती है व कंपनी की तरफ से आपको सुख–सुविधाएं प्रदान की जा सकती हैं। व्यावसायिक क्षेत्र में आपको वांछित सफलता भी मिल सकती है। अगर कोई नया काम करने की सोच रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह लेना आपके लिए फायदेमंद होगा। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वाद–विवाद से बचें क्योंकि राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको सरकारी या निजी क्षेत्र से कोई बड़ा प्रोजेक्ट मिल सकता है। शॉर्टकट या कम मेहनत से धन कमाने का विचार अगर आपके मन में आ रहा है तो इस अवधि में उसका त्याग करें। शेयर बाजार में लंबी अवधि के लिए निवेश करना आपके लिए काफी फायदेमंद रहेगा। यदि आप प्रॉपर्टी से सम्बन्धित कार्य करते हैं, तो इस अवधि में अच्छा लाभ होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला–जुला रहने वाला है। धनागम में अनियमितता बनी रहेगी। भौतिक सुख सुविधाओं पर आप अधिक खर्च करेंगे। द्वादशस्थ राहु के कारण आपको थोड़ी आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए धन बचाकर रखें और फिजूलखर्ची से बचें। किसी भी प्रकार का धन संबंधित लेन–देन करते वक्त सावधानी बरतें क्योंकि किसी नजदीकी व्यक्ति से धोखा मिलने की संभावना बन रही है।

22 जून से आर्थिक मामले के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है। आमदनी के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। किसी सरकारी आदमी के सहयोग से आर्थिक पक्ष मजबूत होगा तथा कोई मुनाफे का बड़ा सौदा हाथ लग सकता है।

sample

जो जातक व्यवसाय करते हैं, उनके टर्नओवर में बढ़ोत्तरी होगी तथा आप वांछित बचत करने में सफल होंगे।

घर–परिवार, समाज

इस वर्ष परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहर दोनों में बदलाव आएगा। धर्मपत्नी के साथ आपके संबंध और मधुर होंगे। चतुर्थ स्थान पर राहु की दृष्टि माता के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है, परन्तु 22 जून के बाद यह स्थिति भी अच्छी हो जाएगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके भाई बहनों के लिए उन्नतिकारक व श्रेष्ठ है। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य करेंगे जिससे समाज में आपकी ख्याति और बढ़ेगी तथा सभी लोग आपको सम्मान की दृष्टि से देखेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 22 जून के बाद अचानक आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपकी दूसरी संतान के लिए शुभ है। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति करेंगे। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहे हैं। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही अनुकूल है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध कोई खास नहीं रहेगा। द्वादशस्थ राहु के कारण स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। परन्तु 22 जून के बाद जैसे ही यह स्थिति समाप्त होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल हो जाएगा।

यदि आप किसी पुरानी बीमारी से परेशान हैं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में उससे छुटकारा मिल सकता है। 27 अगस्त के बाद लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा। जो आपको शारीरिक आरोग्यता प्रदान करेगी। आप आपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए शुद्ध

sample

शाकाहारी भोजन करें एवं योगासन के साथ–साथ व्यायाम भी करते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपनी परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको वांछित नौकरी की प्राप्ति होगी।

व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वालो विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी।

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। द्वादशस्थ राहु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा यह स्थानान्तरण प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको खूब लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। धार्मिक गतिविधियो में आप बढ़–चढ़ के भाग लेंगे। मई के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- अमावस्या तिथि को किसी ब्राह्मण को भोजन कराएं।
- दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार या बुधवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

sample

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक लिहाज से ग्रह स्थिति आपके पक्ष में बनी हुई है। कार्य व्यवसाय में जो परेशानियां आ रही थी उन सब से छुटकारा मिलेगा। व्यावसायिक गतिविधियां तेजी से चलेंगी। व्यापार में काफी ठोस व बड़े निर्णय लेंगे, जिससे आपके मुनाफे में बढ़ोत्तरी होगी। अपने सभी प्रतिद्वंद्वियों से आप खुद को आगे पाएंगे। कस्टम, रॉयल्टी, वैट, इनकम टैक्स आदि से सम्बन्धित परेशानियां आ सकती हैं। किसी सरकारी मुसीबत का सामना करना पड़ सकता है लेकिन घबराने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि 30 जुलाई के बाद उसका भी समाधान मिल जाएगा।

11 सितम्बर के बाद आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं अतः उस समय आप सतर्क रहें तथा किसी पर भी आवश्कता से ज्यादा विश्वास न करें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की अचानक पदोन्नति होगी तथा अपने कार्यस्थल पर मान–सम्मान में वृद्धि होगी। आपको बड़े अधिकारियों का समय समय सहयोग मिलता रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण संचित धन में वृद्धि होगी। रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। अचल संपत्ति के साथ साथ वाहनादि का सुख भी मिल सकता है। मांगलिक कार्यों में या सामाजिक कार्यों में आप अधिक व्यय करेंगे। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ अनावश्यक खर्चे आ सकते हैं परन्तु जुलाई के बाद यह स्थिति भी अच्छा हो जाएगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध और भी श्रेष्ठ रहने वाला है। आपके पास कोई पुराना कर्ज है तो उससे छुटकारा पा सकते हैं। आमदनी के नए स्रोत मिलने की

उम्मीद है। विदेश अथवा दूर की यात्रा के माध्यम से भी धनार्जन होने के योग बन रहे हैं। यदि आपका पैसा कहीं रुका हुआ है तो थोड़े से प्रयास से उसकी प्राप्ति हो सकती है। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा में अधिक खर्च करेंगे।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। परिवार में कोई मांगलिक कार्य सम्पन्न होने के योग बन रहे हैं। परिवार में सुख और शान्ति का वातावरण बनेगा। भाई–बहनों से आपके सम्बन्ध और मधुर होंगे। भाई–बहनों की उन्नति होगी। दूर रहने वाले पारिवारिक सदस्यों का घ ारागमन अथवा उनके साथ सम्बन्धों में सुधार होने से मन प्रसन्न होगा। परिवार के सभी सदस्यों का वर्ताव आपके प्रति अच्छा रहेगा। माताजी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, परन्तु आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ संबंध अच्छे नहीं रहेंगे।

जुलाई के बाद तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा मे बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियो में आप बढ़–चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान–सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। आपको छोटे भाई बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा जिससे आपका पराक्रम बढ़ेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। आपके बच्चों को उदर संबंधित रोग हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा–दीक्षा पर पड़ेगा। निर्णय लेने की शक्ति में कमी व उन्नति में व्यवधान आ सकता है। दूसरी संतान के लिए यह समय ज्यादा प्रभावित रहेगा। लेकिन घबराने की बात नहीं है क्योंकि 30 जुलाई को गुरु ग्रह का गोचर आपके बच्चों के लिए शुभ हो रहा है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके बच्चों के लिए शुभ है। संतान के उन्नति के मार्ग खुलेंगे तथा शिक्षा–दीक्षा में आने वाली रुकावटें दूर होंगी। आपके बच्चों को वांछित सफलता मिलेगी। यदि आपकी दुसरी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार–चढ़ाव बना रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है।

खान–पान के साथ अपनी दिनचर्या सुधारें तथा व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करें। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़–चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

30 जुलाई के बाद नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ने से आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव होने से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। धार्मिक कृत्यों में अधिक रुचि बढ़ेगी, जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारीरिक रूप से आरोग्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष काफी अच्छा रहेगा। छठे स्थान में शनि तथा एकादश स्थान में राहु के प्रभाव से आप सभी प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। सभी शत्रुओं को परास्त कर सफलता के मार्ग पर आप सबसे आगे रहेंगे। जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं, उनको अपने करियर में वांछित सफलता मिलेगी।

यदि आप कोई व्यासायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद है। यदि आप किसी नए शिक्षण संस्थान की तलाश में हैं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको एक अच्छे संस्थान की प्राप्ति होगी जहां से शिक्षा लेने के बाद आप को नई और सही दिशा की प्राप्ति होगी। जो लोग दूर देश में जाकर शिक्षा लेना चाह रहे हैं, उनके लिए भी समय अनुकूल है। बेरोजगार जातकों को इस वर्ष नौकरी मिल जाएगी।

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

30 जुलाई के बाद आपकी छोटी–मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं अधिक होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक द्वन्दता के कारण पूजा पाठ में एकाग्रता नहीं रहेगी। परन्तु 30 जुलाई के बाद गुरु

sample

ग्रह का गोचर धर्म स्थान में होगा। उस समय आपका मन धार्मिक कार्यों के प्रति आकृष्ट होगा।

आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे। लक्ष्य प्राप्ति के लिए आप विशेष रूप से ईश्वर की उपासना करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रुषा करें।
- केला या पीली वस्तुओं का दान करें। वीरवार का व्रत करे एवं बेसन के लड्डू गरीबों में वितरित करें।
- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।
- प्रतिदिन गणेश जी के निम्नलिखित मन्त्र का पाठ करें–

  ऊँ गं गणपतये नमः।

sample

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कारोबारियों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहने वाला है। एकाधिक स्रोतों से धन का आगमन होगा। सप्तमस्थ शनि के प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। जो लोग अपनी पत्नी के साथ मिलकर कोई कारोबार कर रहे हैं, उन्हें अधिक लाभ होने वाला है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहें है तो इस वर्ष इच्छित लाभ होगा। वर्ष के प्रारम्भ मे अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे, परन्तु 16 फरवरी के बाद आप सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे। उसके बाद समय बहुत ही शुभ होने वाला है।

आपके प्रयासों की सार्थकता ही आपकी सफलता को सिद्ध करेगी। जिससे विरोधी पक्ष भी आपकी तारीफ करने पर मजबूर हो जाएगा। सहयोगियों की सहायता से मान–सम्मान बढ़ सकता है। आय के बहुत सारे नये स्रोत सामने आ सकते हैं। जो लोग नौकरी में हैं, उन्हें तरक्की मिलने से वेतन वृद्धि हो सकती है। आप अपनी सारी ऊर्जा अपने नए प्रोजेक्ट में लगाएँ और अपने प्रयासों को दोगुना करें।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। 16 फरवरी के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण आपके संचित धन में वृद्धि होगी। कोई पुराना उधार वापस मिलने से आर्थिक स्थिति में काफी सुधार होगा। जिसके चलते आप अपने व्यवसाय को विस्तार देने के बारे में सोच सकते हैं या किसी नए व्यापार में निवेश कर सकते हैं। ऋण और वित्तीय मामलों के संदर्भ में आपके प्रयास सफल हो सकते हैं।

यदि आप किसी से धन लिया हो अथवा उधारी हो तो उसे भी चुका कर कर्ज में कमी कर सकेंगे। आर्थिक सुधार के कारण व्यापार में सम्मान बना रहेगा। धन प्राप्ति के लिए आपको भाग दौड़ करनी पड़ सकती है। लेकिन आपको अपेक्षित नतीजे मिलने के कारण आत्म संतुष्टी भी होगी। भूमि व वाहन से संबंधित

sample

कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा।

घर–परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान पर राहु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि पारिवारिक अनुकूलता के लिए अच्छी नहीं है। आपकी माता जी के साथ आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे तथा आपके पारिवारिक जीवन में थोड़ी मुश्किलें खड़ी हो सकती हैं। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा। एक बात जो आपको सभी लोगों से जुदा करती है, वह है आपका अचानक क्रोधित होना और जल्दी शांत नही होना। यह आपके दाम्पत्य जीवन के लिए कतई अच्छा नहीं है।

आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें नहीं तो परिवार में किसी के साथ अनबन हो सकती है। आपके ससुराल पक्ष के लिए समय अच्छा नहीं है। अतः उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक स्तर पर भी आपको सतर्क रहना होगा कुछ अपमान जनक परिस्थितियाँ पैदा हो सकती हैं। घर की शोभा बढ ाने के लिए कुछ सुंदर वस्तुओं की खरीददारी संभव है।

संतान

संतान की दृष्टि से 16 फरवरी तक समय अच्छा नहीं है, परन्तु उसके बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चे अपने भाग्य के बल पर आगे बढ़ेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

यदि आपका पहला बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है, परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। उनको शारीरिक एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी। आलस्यता एवं दीर्घसूत्रता के कारण उनके सभी कार्यों में व्यवधान आते रहेंगे।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में आपको स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है। बाहर का खाना खाने से बचें अन्यथा फूड पॉयजनिंग से पीड़ित हो सकते हैं। आवश्यकता से अधिक परिश्रम आपको स्वास्थ्य की हानि दे सकता है इसलिए बेहतर है की आप पूर्ण विश्राम भी करें। त्वचा संबंधी विकार हो सकते हैं। 16 फरवरी के बाद समय अनुकूल हो रहा है। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के

प्रबल संकेत है। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा। जो आपको शारीरिक आरोग्यता प्रदान करेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

16 फरवरी के बाद पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है। छात्रों को सफलता मिलने के पूर्ण आसार है। इस समय दी गई परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा। दोस्तों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

प्रतियोगिता परीक्षार्थियो को सफलता मिलेगी परन्तु अथक परिश्रम के बाद। यदि आप किसी के मित्र के साथ साझेदारी में कोई नया काम शुरु करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए काफी लाभप्रद रहेगा।

यात्रा–तबादला

16 फरवरी के बाद नवमस्थ गुरु के प्रभाव से इस वर्ष आपकी खूब यात्राएं होंगी। ज्यादातर समय आप अपने घर से बाहर ही रहेंगे। यात्रा दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। यह तबादला आपके घर से दूर भी हो सकती है। इस वर्ष आप धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा–पाठ यज्ञ, अनुष्ठान सम्पन्न करेंगे, जिससे आपको समाज में ख्याति प्राप्त होगी और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में नैसर्गिक रूप से आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। गुरु दीक्षा लेकर मन्त्र साधना कर सकते हैं। गुरुजनों पर आपको अटूट विश्वास होगा।

- अपने पूजा घर में स्फटिक श्रीयन्त्र की स्थापना करें तथा उसके सामने देशी घी की दीपक जलाएं।

- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- वीरवार के दिन केला व बेसन के लड्डू गरीबों को दान करें।
- माता पिता व अपने से बड़े लोगों की सेवा करें।

sample

वार्षिक फलादेश - 2045

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 15 जून तक राहु कुम्भ राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 2 मार्च को गुरु कुम्भ राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष आपको व्यापार में अच्छा लाभ मिलने वाला है। कुछ नए कारोबारियों से आपका संपर्क बढ़ेगा, उनके साथ काम करके आप एक नई ऊँचाईयों को प्राप्त करेंगे, साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपको सभी कार्यों में वाच्छित सफलता मिलेगी। यदि आप अपनी पत्नी के साथ मिलकर कार्य रहे हैं तो सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले लोगों के लिए समय श्रेष्ठ रहने वाला है। पदोन्नति व इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण का पूर्ण योग बन रहा है। इस अवधि में आपको सराहना, सहयोग व ऐसी खुशी मिलेगी जिसकी तलाश आप एक लम्बे समय से कर रहे थे। आपका प्रत्येक काम समय से पहले पूरा होगा। वर्तमान नौकरी के अलावा अन्य स्रोतों से भी आपको लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष लाभदायक सिद्ध होगा। अतिरिक्त आय प्राप्त होने की उम्मीद पूरी हो सकती है। आपमें साहस का स्तर अधिक रहेगा तथा आप आमदनी के नए स्रोत भी पैदा कर सकते हैं। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आप वांछित बचत करने में सफल रहेंगे। मांगलिक कार्यों व सुख–सुबिधाओं पर इस वर्ष आप अधिक खर्च कर सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले लोगों को उनकी मेहनत का फल प्रोत्साहन राशि या वेतन वृद्धि के रूप में मिल सकता है। आर्थिक मोर्चे पर अच्छे समाचार मिल सकते हैं। सरकारी विभाग या अन्य किसी जगह पैसा फंसा हुआ है, उसकी पेमेंट हो सकती है। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, वाहन, रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ कुछ अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण परिवार में काफी उतार–चढ़ाव होने

की संभावना है। माता–पिता के साथ कुछ विवाद हो सकता है तथा फालतू के झगड़ों की संभावना है, इसलिए विवादों से दूरी बनाकर रहना आपके लिए फायदेमन्द रहेगा नहीं तो इससे आपकी पेशेवर और सामाजिक जिन्दगी प्रभावित हो सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध अनुकूल होने के कारण परिजनों, परिचितों एवं मित्रों से हर कार्य में सहयोग मिलेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि परिवार के लिए कोई नया वाहन लेने की स्थिति बना सकती है। मित्रों एवं भाईयों के सहयोग से आपके कार्य पूर्ण हो सकते हैं। आपके खर्चों में वृद्धि की संभावना है। घर में मांगलिक कार्यक्रम का आयोजन हो सकता है। पुराने परिचितों से मिलने–जुलने और पुराने रिश्तों को फिर से तरोताजा करने के लिए अच्छा समय है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ रहने वाला है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय मे शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बन रहे हैं। दूसरे बच्चे के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि आपकी प्रथम संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है तथा उनकी शिक्षा–दीक्षा व उन्नति में भी रुकावटें आ सकता हैं।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि स्वास्थ्य के लिए बहुत ही शुभ है। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी, परन्तु 2 मार्च के बाद जैसे ही यह स्थिति समाप्त होगी, उसके बाद आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित होगा।

15 जून के बाद अचानक बीमार हो सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान रह सकते हैं। आलस्य, मानसिक चिंता इत्यादि छोटी–मोटी बीमारियां होती रहेंगी। अतः आपको अपनी सेहत का पूर्ण ध्यान रखना होगा। खान–पान तथा रहन–सहन पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा संक्रामक बीमारियों से है। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। चिड़–चिड़े न बनें अन्यथा इन सबका आपकी सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

sample

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए अनुकूल रहेगा। आपकी शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। इस समय यदि आप अपने मन को एकाग्र कर पढ़ाई करेंगे तो अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर सकते हैं।

वर्ष का उत्तरार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं है। पंचम स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से पढ़ाई–लिखाई में कमी व प्रतियोगिता परीक्षा में व्यवधान आ सकता है। आपकी सृजनात्मक क्षमता छुपी रहेगी और बुद्धि विवेक का भी ह्रास होगा। फलस्वरूप आप अपने कामों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे।

यात्रा–तबादला

नवमस्थ गुरु के कारण छोटी–मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। वर्ष के प्रारम्भ में धार्मिक यात्राएं अधिक करेंगे। वर्ष के प्रारम्भ में व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको खूब लाभ होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर तबादला होगा तथा यह परिवर्तन आपके लिए काफी शुभ रहेगा। अपने घर से दूर रहने वाले लोगों की इस वर्ष जन्मभूमि की यात्रा होगी। इस वर्ष आपकी विदेश यात्रा प्रभावित होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

पंचम एवं लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा के लिए शुभ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। व्रत, यज्ञ, अनुष्ठान व भगवान की भक्ति में ज्यादा समय व्यतीत करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे तथा पूजा पाठ में आपका मन भी नहीं लगेगा। मानसिक अशान्ति व शारीरिक कष्ट के कारण भी यज्ञ, अनुष्ठान नहीं कर पाएंगे।

- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित करें तथा नित्य उनका दर्शन करें।
- संपूर्ण बाधामुक्ति यंत्र का विधिवत् पूजन एवं दर्शन करें।
- प्रातःकाल पक्षियों को दाना डालें।
- सात मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन प्रातः काल धारण करें।

sample

वार्षिक फलादेश - 2046

इस वर्ष राहु मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा 13 मार्च को मीन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 8 दिसम्बर तक शनि वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल वक्री होकर 27 अप्रैल से 1 जुलाई तक कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में नौकरी करने वालों के लिए पदोन्नति का योग बना रहा है। 13 मार्च के बाद गुरु के गोचर के साथ नया व्यापार करने का अवसर प्राप्त होगा। उस समय उच्चाधिकारी एवं विश्वसनीय लोगों से संबंध बनेंगे और उनकी सहायता से आप व्यापार में अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करेंगे। व्यावसायिक जीवन में विशेष मान–सम्मान की भी प्राप्ति होगी तथा आय के साधनों में तेजी से वृद्धि होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप कोई अच्छी योजना बना कर व्यापार में उन्नति करेंगे। शेयर मार्केट व सट्टा आदि के कार्यों से लाभान्वित हो सकते हैं। यदि आप किसी के साथ साझेदारी में व्यापार कर रहे हैं तो आपको वांछित उन्नति मिलेगी तथा आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ में आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहने वाली है। आपकी आमदनी में निरंतरता बनी रहेगी तथा 13 मार्च के बाद आय प्रवाह में तीव्रता आयेगी। आप कोई सम्पत्ति खरीद सकते हैं या कहीं पूंजी निवेश कर सकते है। यह समय आपके आर्थिक मामलों के लिए अनुकूल रहेगा। नई साझेदारी योजनाएं शुरू करेंगे और नवीन प्रयोजनाओं को लागू करने के लिए समय की शुभता बनी हुई है। शेयर बजार सट्टा व अचानक धन लाभ होने का भी योग बन रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण धर्म पत्नी से धन लाभ होने के प्रबल योग बन रहे हैं तथा व्यापारिक अनुकूलता के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में तेजी से वृद्धि होगी। रुके हुए व फेसे हुए पैसे मिलने की उम्मीद लग रही है।

sample

घर–परिवार, समाज

वर्ष के प्रारम्भ में पारिवारिक सुख शान्ति बनी रहेगी। परिजनों के साथ किसी दर्शनीय स्थल पर जाएंगे। 13 मार्च को गुरु ग्रह के गोचर के बाद भाई–बहनों, मित्रों तथा पड़ोसियों से संबंधों में मधुरता बनी रहेगी। घर में खुशहाली का माहौल रहेगा। परिवार के बुजुर्ग व्यक्तियों का आप आदर–सम्मान करेंगे। सामाजिक रूप से यह समय श्रेष्ठ रहने वाला है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके जीवनसाथी के साथ प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। आप मनोरंजक गतिविधियों में व्यस्त रहेंगे। परिवार में कोई मांगलिक कार्यक्रम का आयोजन हो सकता है, जिसमें परिवार के सभी लोग एक साथ सम्मिलित होंगे। सामाजिक उन्नति के लिए यह साल श्रेष्ठ रहने वाला है।

संतान

प्रारम्भ दो माह छोड़कर पूरा साल बहुत ही श्रेष्ठ रहने वाला है। पंचम स्थान पर गुरू की दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी तथा आपके बच्चे वांछित उन्नति करेंगे।

यदि आपका पहला बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है। आपके बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे तथा उनके पराक्रम में वृद्धि होगी। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आपका यश बढ़ेगा तथा आप उन पर गर्व करेंगे।

स्वास्थ्य

यह वर्ष आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। क्रोध करके आसपास के वातावरण को तनावयुक्त न बनाएं। लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं है। खान पान पर विशेष ध्यान दें और सुबह–सुबह व्यायाम करें।

जो लोग मधुमेह और मोटापे की समस्या से पीड़ित हैं, उन्हें अपना ख्याल रखने की जरुरत है क्योंकि लग्न स्थान पर राहु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि आपके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं है। अतः अपने आप पर आवश्यकता से अधिक बोझ न डालें। देव पूजा, मंत्र आराधना और योगाभ्यास से आप मानसिक शान्ति व शारीरिक आरोग्यता प्राप्त कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले छात्रों को सफलता प्राप्ति के लिए पहले से अधिक लगन और मेहनत से काम करना होगा। नौकरी में

sample

हैं तो पदोन्नति मिलने की संभावना है।

साल का उत्तरार्द्ध विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है। छात्रों को सफलता मिलने के पूर्ण आसार है। इस समय दी गई परीक्षाओं का परिणाम आशानुकूल होगा। दोस्तों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

यात्रा–तबादला

वर्षारम्भ में अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी और इस यात्रा के अन्तराल में आपको आनंद की अनुभूति होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आपको मानसिक शान्ति मिलेगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अचानक आपकी लम्बी–लम्बी यात्राएं होंगी तथा आप ज्यादारत समय अपने घर से बाहर ही रहेंगे। व्यावसायिक व्यक्तियों की इस समयांतराल में अधिक यात्राएं होंगी परन्तु इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस साल आप पूजा पाठ यज्ञ अनुष्ठान में अधिक रुचि लेंगे तथा आपका आध्यात्मिक ज्ञान भी बढ़ेगा। साल के उत्तरार्द्ध में पंचम भाव पर गुरु की दृष्टि के प्रभाव से आप किसी को अपना गुरू बना सकते हैं तथा उनसे मन्त्र लेकर उस मन्त्र की साधना भी कर सकते हैं।

- श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित करें, और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- पारद शिव लिंग अपने पूजा घर में स्थापित कर नित्य उनका पूजन करें।
- मजदूरों व भीखारियों को काले रंग का कम्बल दान करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2047

इस वर्ष शनि धनु राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 26 फरवरी तक राहु मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के प्रारम्भ में गुरु मीन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और 21 मार्च को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे तथा अतिचारी होकर 18 अगस्त को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 11 अक्टूबर को मेष राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ आपके के लिए शुभ फलदायी नहीं रहेगा। मुख्यतः ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आर्थिक हानि व व्यापार में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। आर्थिक व व्यावसायिक मामले में आवेग से बचें तथा बहुत ही सोच समझकर कोई निर्णय लें। वरिष्ठ जनों से मतभेद होने के चलते, कार्य पूरा करने में बाधा आ सकती है। वाणी को मधुर रखें, क्योकि द्वितीय स्थान पर शनि एवं राहु की दृष्टि वाणी दोष उत्पन्न करती है। हालांकि 28 मार्च को गुरु के गोचरीय प्रभाव से समय कुछ अनुकूल हो रहा है फिर भी कोई बड़ा जाखिम लेना उचित नही रहेगा।

अष्टम स्थान में राहु एवं शनि ग्रह के गोचर के कारण आपके विरोधी बढ़ेंगे। नौकरी, ऋण और विरोधियो के कारण चिंता व मानसिक परेशानी बनी रहेगी। अचानक व्यावसायिक हानि होने की संभवना बन रही है। अतः इस समय के अंतराल में किसी पर ज्यादा विश्वास न करें नही तो धोखा मिल सकता है। यदि आप साझेदारी में व्यापार कर रहे हैं तो अगस्त के बाद उसमें भी दरार आ सकती है।

धन संपत्ति

वर्ष का पूर्वार्द्ध आर्थिक स्थिति के लिए अच्छा नहीं है। द्वितीय स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की दृष्टि होने के कारण आपके संचित धन में कमी आएगी तथा आय के मार्ग भी प्रभावित होंगे। वर्ष के प्रारम्भ में आपके अनावश्यक खर्च बढ़ेंगे। आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ कुछ अच्छा रहेगा। धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। परन्तु 21 मार्च के बाद धन सम्पति के लिए समय प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय बहुत ही सोच समझकर आर्थिक निर्णय लें नहीं तो धन हानि होने की संभावना बन रही है। जोखिम भरे कार्यों में धन का निवेश करने से बचें। दीर्घकालीन निवेश के लिए यह समय अच्छा नहीं है। क्योंकि द्वादश स्थान का गुरु एवं अष्टम स्थान का शनि निवेश के लिए अच्छा नहीं है। आपको अपनी

sample

जोखिम उठाने वाली प्रवृत्तियों पर भी पूरी तरह अंकुश लगाकर रखना होगा नहीं तो नुकसान होने की संभावना बढ़ सकती है।

18 अगस्त से 11 अक्टूबर तक का समय किंचित अनुकूल रहेगा। भाग्य साथ देने के कारण कुछ आर्थिक उन्नति मिल सकती है। पत्नी व पुत्र से भी आर्थिक सहायता मिल सकती है। अक्टूबर के बाद आर्थिक हानि व नुकसान होने के प्रबल योग बन रहे हैं। अतः वर्षान्त में आपको बहुत ज्यादा सावधान रहना होगा।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्षारम्भ सामान्यतः अच्छा रहेगा। आपके भाई एवं मित्रों के लिए समय शुभ है तथा उन लोगों का आपको भरपूर सहयोग मिलेगा। तृतीय भाव पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। आपके व्यक्तिगत, सामाजिक तथा राजनैतिक प्रभाव में वृद्धि होगी।

21 मार्च को गुरु ग्रह का गोचर संतान संबंधित परेशानी दे सकता है। पिता के स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है, उनको स्वास्थ्य संबंधी परेशानी बनी रहेगी। 18 अगस्त से 11 अक्टूबर के अंतराल में आपके जीवनसाथी के साथ संबंध मधुर होंगे तथा उनके साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। अष्टम स्थान में शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण ससुराल पक्ष के लोगों के साथ मानसिक मतभेद हो सकता है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। परन्तु 21 मार्च के बाद समय प्रभावित हो रहा है। द्वादश स्थान का गुरु आपकी संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है तथा उनकी शिक्षा–दीक्षा व उन्नति में भी रुकावटें आ सकती हैं।

18 अगस्त से 11 अक्टूबर तक का समय कुछ अनुकूल हो रहा है। स्वास्थ्य व शिक्षा में सुधार होगा तथा आपके बच्चों का अच्छा सहयोग मिलेगा। लेकिन अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम नहीं रहेगा। किसी न किसी बीमारी से आप परेशान होते रहेंगे। 21 मार्च के बाद समय अधिक प्रभावित हो रहा

sample

है। उस समय आपको कोई लम्बी बीमारी हो सकती है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना बहुत जरूरी है। यदि पहले से किसी बीमारी से ग्रसित हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है।

मौसमजनित बीमारियां आपको अधिक परेशान कर सकती हैं। खान–पान तथा रहन सहन पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा संक्रामक बीमारियों से है। अतः समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल करने के लिए महामृत्यंजय मन्त्र का पाठ करें या तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। 21 मार्च के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। पंचम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पढ़ाई लिखाई में कमी व प्रतियोगिता में व्यवधान आ सकता है। आपकी सृजनात्मक क्षमता छुपी रहेगी और बुद्धि विवेक का भी ह्रास होगा। फलस्वरूप आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे।

प्रतियोगिता में प्रतिद्वंदियों द्वारा रुकावट डाली जा सकती है। गुप्त व प्रत्यक्ष शत्रु आपको परेशान कर सकते हैं तथा उन्नति के मार्ग में व्यवधान आने की संभावना बन रही है।

यात्रा–तबादला

वर्षारम्भ यात्रा के लिए अनुकल नहीं है। बहुत आवश्यक हो तभी यात्रा करें अन्यथा यात्रा को टालना आपके लिए लाभकारी रहेगा। 21 मार्च के बाद विदेश गमन का योग बन रहा है।

18 अगस्त को गुरु ग्रह का गोचर लम्बी यात्रा का योग बना रहा है। इस समय के अंतराल में आपकी व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी। धार्मिक यात्रा के भी संकेत दिख रहे हैं। यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय अधिक सावधान रहें क्योंकि 11 अक्टूबर के बाद दुघ र्टना का प्रबल योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। आपके सभी धार्मिक कार्यों में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। लग्न स्थान पर राहु की

sample

दृष्टि के कारण आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं तथा आपके दैनिक पूजा पाठ में भी कमी आ सकती है। 18 अगस्त को लग्न स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। पूजा पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे तथा आपके दैनिक पूजा पाठ में भी सुधार होगा।

- अपने घर में शिवलिंग की स्थापना कर उसके सामने महामृत्यंजय मन्त्र का पाठ करें।
- तामसिक वस्तुओं का सेवन न करें तथा अनैतिक कार्य करने से बचें।
- संपूर्ण बाधामुक्ति यन्त्र अपने घर में स्थापित करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

sample

वार्षिक फलादेश - 2048

इस वर्ष शनि धनु राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 4 सितम्बर तक राहु धनु राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु मेष राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा 28 मार्च को वृष राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और अतिचारी होकर 13 अगस्त को मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल वक्री होकर 10 फरवरी से 8 सितम्बर तक वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक उन्नति के लिए यह साल अच्छा नहीं है। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कार्य व्यवसाय में व्यवधान आते रहेंगे। गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। विरोधी बढ़ेंगे जिससे आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। हालांकि 28 मार्च को गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने से आपके व्यावसायिक जीवन में कुछ सुधार होगा। व्यापारिक सफलता के लिए आप कोई अच्छी योजना बनाएंगे।

कार्य स्थल पर आपके सहयोगी बढ़ेंगे तथा व्यावसायिक जीवन में आपको धर्मपत्नी का पूर्ण सहयोग मिलेगा। आपके आत्मविश्वास व कार्य क्षमता में अधिक पैनापन आएगा। यह समय मित्रता व साझेदारी में कार्य करने के लिए शुभ है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने मित्र से संतुष्ट रहेंगे परन्तु 4 सितम्बर को राहु ग्रह का गोचर मित्रता में दरार ला सकता है। अतः व्यापार में पारदर्शिता भविष्य के लिए श्रेष्ठ रहेगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह साल सामान्य रहने वाला है।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं है। धन स्थान पर शनि एवं राहु की दृष्टि संचित धन के लिए ज्यादा खराब है। आपके संचित धन में कमी आएगी तथा आय के सभी मार्ग प्रभावित होंगे। द्वादश स्थान का गुरु कुछ अनावश्यक खर्च ला सकता है, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः इस समय के अंतराल में आप कोई बड़ा निवेश न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

13 अगस्त के बाद समय कुछ अनुकुल हो रहा है। द्वितीय स्थान में

sample

गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी तथा रुके व फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं। धन संचय करने में आपकी धर्मपत्नी का सहयोग मिलेगा। संतान की उच्च शिक्षा व विवाह आदि शुभ कार्यों पर भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर–परिवार, समाज

घरेलू माहौल के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान पर राहु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि पारिवारिक वातावरण में विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकती है। किसी घरेलू सदस्य के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है जिसके कारण आप मानसित रूप से अशान्त रह सकते हैं। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह वर्ष ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। परन्तु 28 मार्च के बाद आपको धर्मपत्नी का भरपूर सहयोग मिलेगा तथा पारिवारिक माहौल में भी कुछ अनुकूलता आएगी।

यदि आप अविवाहित हैं तो गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण इस वर्ष विवाह होने की संभावना बन रही है तथा परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे। 13 अगस्त के बाद परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी, जिसके प्रभाव से घर परिवार में खुशी का माहौल रहेगा। अपने परिवार के बुजुर्ग व्यक्तियों का आप आदर–सम्मान करेंगे। सामाजिक रूप से यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। परन्तु 28 मार्च के बाद समय शुभ हो रहा है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी तथा आपके बच्चे वांछित उन्नति करेंगे।

आपके दूसरे बच्चे के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे तथा उसके पराक्रम में वृद्धि होगी। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आपका यश बढ़ेगा तथा आप उन पर गर्व करेंगे।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में मुख्यतः सभी ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ न कुछ बीमारी से आप परेशान होते रहेंगे। जिनको मधुमेह व रक्तचाप की बीमारी है वे ज्यादा परेशान रह सकते हैं। अष्टम स्थान में शनि एवं राहु ग्रह का गोचर कोई लम्बी बीमारी व दुर्घटना इत्यादि का योग बना रहा है। हालांकि 28 मार्च के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है फिर भी स्वास्थ्य को लेकर किसी

प्रभाव की लापरवाही न करें तथा रहन सहन के साथ साथ अपने खान पान पर भी विशेष ध्यान दें।

लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से आप धार्मिक कार्य भजन कीर्तन व पूजा पाठ इत्यादि शुभ कार्य अधिक करेंगे। सत्संग व योगादि क्रियाओं में आपका समय ज्यादा व्यतीत होगा। 4 सितम्बर को राहु ग्रह का गोचर अचानक आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। लेकिन घबराने की कोई बात नहीं है क्योंकि उनका स्वास्थ्य शीघ्र ही अच्छा हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विदेश में जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहने वाला है। विद्यार्थियों को 28 मार्च के बाद इच्छित सफलता मिलेगी तथा यह समय आपके लिए अधिक लाभकारी रहने वाला है।

यदि आप अनुसंधान से जुड़े छात्र हैं तो बेहतर फल की आशा कर सकते हैं। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर शुभ नहीं है।

यात्रा–तबादला

वर्षारम्भ में द्वादश स्थान का गुरु आपको विदेश यात्रा करा सकता है। चतुर्थ स्थान पर राहु एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि स्थानान्तरण का प्रबल योग बना रही है। यह स्थान परिवर्तन आपके लिए अनुकूल रहेगा। 28 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि तीर्थ यात्रा कराने के प्रबल योग बना रही है। इस समय के अंतराल में आपकी व्यावसायिक यात्राएं भी अधिक होंगी।

वाहन चलाते समय व यात्रा करते समय आपको बहुत ही सावधान रहना होगा क्योंकि अष्टम स्थान में राहु एवं शनि ग्रह का गोचर दुर्घटना इत्यादि का योग बना रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। सभी अच्छे कार्यों में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। पूर्व निर्धारित धार्मिक कार्यों में व्यवधान आने की संभावना बन रही है तथा दैनिक पूजा पाठ में भी कमी आ सकती है। परन्तु 28 मार्च को लग्न स्थान में गुरु ग्रह का गोचर धार्मिक कार्यों के लिए शुभ हो रहा है। इस अवधि में आप यज्ञ अनुष्ठान अधिक करेंगे तथा आपके

sample

दैनिक पूजा पाठ में सुधार होगा। शाबर तन्त्र में भी आपका विश्वास बढ़ सकता है।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा पीपल के वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।
- अपने पूजन घर में नर्मदा शिवलिंग की स्थापना करें तथा प्रतिदिन उन पर जल चढ़ाएं।
- अपने घर में तुलसी का पौधा लगाएं तथा निरंतर उसकी पूजा करते रहें।
- प्रतिदिन दुर्गा कवच व दुर्गा चालीसा का पाठ करें।

sample

वार्षिक फलादेश - 2049

इस वर्ष राहु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा 3 अप्रैल को मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और अतिचारी होकर 27 अगस्त को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 6 मार्च को शनि मकर राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर पुनः 10 जुलाई को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आजाएंगे और मार्गी होकर फिर 4 दिसम्बर को मकर राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्षारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। एकाग्रचित होकर व्यापार में विस्तार के लिए और नए कारोबार को शुरू करने के लिए सोचना कारगर होगा। अष्टमस्थ शनि के कारण कुछ परेशानियां आएंगी परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी समाधान निकाल लेंगे और आपके कार्यों में सफलता अवश्य मिलेगी। किसी के साथ मिल कर भी कोई नया काम आरम्भ कर सकते हैं। यदि संतान के नाम पर कोई कार्य करते हैं तो लाभ की उम्मीद अधिक है। 3 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर धन संपत्ति के लिए शुभ हो रहा है। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कोई बड़ा निर्णय लेने से पहले उसके सकारात्मक एवं नकारात्मक तथ्यों पर पूर्ण ध्यान दें क्योंकि 10 जुलाई के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। इस दौरान किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास न करें नहीं तो आपको धोखा मिल सकता है और धोखा देने वाला आपका कोई करीबी ही हो सकता है अतः इस समय के अंतराल आपको सतर्क रहना होगा। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है।

धन संपत्ति

धन संपत्ति के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। किसी व्यापार या व्यवसाय को शुरू करने में धन खर्च हो सकता है। आमदनी में निरंतरता बनी रहेगी। 3 अप्रैल के बाद आप कोई नई सम्पति खरीद सकते हैं। द्वितीय स्थान में गुरु ग्रह का गोचर रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति के लिए शुभ है। मांगलिक, धार्मिक व शुभ कार्यों में आप अधिक खर्च करेंगे। यदि आप निवेश करना चाहते हैं तो यह समय निवेश के लिए भी शुभ है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आर्थिक उन्नति के लिए शुभ नहीं है। अष्टम स्थान में शनि ग्रह का गोचर संचित धन में कमी कर सकता है। अतः इस समय के

sample

अंतराल में बहुत ही सोच समझ कर कोई आर्थिक निर्णय लें। पैसे लेन देन करते समय सावधान रहें। कोई बड़ा निवेश न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। किसी पारिवारिक सदस्य के रोग इत्यादि में भी आपका धन खर्च हो सकता है।

घर–परिवार, समाज

वर्षारम्भ घर परिवार के लिए अच्छा रहने वाला है। पारिवारिक सदस्यों का भरपूर सहयोग मिलेगा। 3 अप्रैल के बाद किसी शुभ कार्य में धन खर्च होने के योग बन रहे हैं। आकस्मिक कोई सुखद समाचार मिलने से आपका मन प्रसन्न होगा। मित्रों के साथ घूमने फिरने व मौजमस्ती करने के कई मौके मिलेंगे। काफी दिनों से रुके हुए महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण होने की भी संभावना है। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है, जिससे परिवार में हंसी खुसी का वातावरण बना रहेगा।

पुराने परिचितों से मिलने–जुलने और पुराने रिश्तों को फिर से तरोताजा करने के लिए अच्छा समय है। 10 जुलाई को अष्टम स्थान में शनि ग्रह का गोचर आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए अच्छा नहीं है। उनके साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न होने की पूर्ण संभावना बन रही है। 27 अगस्त को तृतीय स्थान में गुरु ग्रह का गोचर सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए श्रेष्ठ है। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़–चढ़ के भाग लेंगे जिससे आपके मान–सम्मान व पराक्रम में वृद्धि होगी।

संतान

वर्षारम्भ बच्चों के लिए शुभ है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि बच्चों की उन्नति के लिए श्रेष्ठ योग बना रही है। संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बन रहे हैं। 3 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर आपके बच्चों की आर्थिक उन्नति के लिए सुन्दर योग बना रहा है।

उत्तरार्द्ध में संतान के पराक्रम में वृद्धि होगी तथा इनका सामाजिक स्तर भी बढ़ेगा परन्तु दूसरी संतान के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। सप्तम स्थान में राहु ग्रह का गोचर आपकी दूसरी संतान की उन्नति को रोक सकता है।

स्वास्थ्य

शारीरिक आरोग्यता के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहने वाला है। लग्नस्थ गुरु के कारण आपकी शारीरिक कार्यक्षमताओं में वृद्धि होगी। ज्यादा समय

धार्मिक कार्यों व तीर्थाटन में व्यतीत करेंगे। 3 अप्रैल के बाद धर्मपत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित होने के कारण आप किंचित परेशान हो सकते हैं।

13 जुलाई के बाद अष्टम स्थान में शनि ग्रह का गोचर अचानक आपको बीमार कर सकता है तथा आपके स्वास्थ्य में कमी आ सकती है। स्वास्थ्य अनियमितताओं को अनदेखा करना आपके लिए अच्छा नहीं होगा। वायु संबंधित परेशानी भी हो सकती है। जोड़ो में दर्द, वदन दर्द व संक्रमण संबंधित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। ऐसे में अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान दें तथा किसी प्रकार की लापरवाही न करें क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर आपके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

पंचम और नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अनुकूल है। आप पढ़ाई में अच्छे स्तर पर प्रर्दशन कर सकते हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के अवसर मिलेंगे। अगर आप अनुसंधान से जुड़े छात्र हैं तो बेहतर फल की आशा कर सकते हैं। वर्ष का पूर्वार्द्ध आपके पक्ष में है इसलिए अपना परिश्रम जारी रखें सफलता अवश्य मिलेगी।

जो लोग किसी प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी में जुटे हुए हैं उनके लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध कड़ी मेहनत करने का है। आपको अन्य विषयों से अपना ध्यान हटाना होगा तथा प्रतियोगियों को हल्के में लेने से बचना होगा। आपके प्रयास आने वाले समय में सफलता दिलाने में कारगर साबित होंगे।

यात्रा–तबादला

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक यात्राओं के लिए शुभ है। धार्मिक व पर्यटन स्थल की यात्रा होने की संभावना बन रही है। मुख्यतः सभी यात्राएं मंगलमय व सौभाग्यवर्धक तथा आनंददायक होंगी।

27 अगस्त के बाद अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होने के प्रबल योग बन रहे हैं। चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप सपरिवार किसी दर्शनीय स्थल पर घूमने जा सकते हैं। जलीय प्रदेश व सामुद्रिक स्थलों की यात्रा होने के भी योग बन रहे हैं।

sample

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्नस्थ गुरु के कारण आपके परिवार में धर्म–कर्म पूजा पाठ और धार्मिक यात्राओं के शुभ योग बन रहे हैं। इस अवधि में आपकी सक्रियता धार्मिक क्रिया–कलापों में सामान्य से अधिक रहेगी। आप किसी धार्मिक समारोह में शामिल होंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य के कार्यों में अधिक सक्रिय रहेंगे तथा तन्त्र मन्त्र के प्रति भी आपका विश्वास बढ़ेगा। इस समय के अंतराल में गृह शान्ति के लिए आप पूजा–पाठ कर सकते हैं।

- शनिवार के दिन सुन्दरकाण्ड का पाठ करें तथा गरीबों को खाना खिलाएं।
- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।
- चीटियों, चिड़ियों एवं मछलियों को दाना डालें।
- प्रतिदिन गणेश जी के मन्त्र का पाठ करें।

sample

वार्षिक फलादेश - 2050

इस वर्ष शनि मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा राहु 22 फरवरी को तुला राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर एक माह के लिए मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और मार्गी होकर 2 अप्रैल को पुनः कर्क राशि तृतीय भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 19 सितम्बर को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह वर्ष अनुकूल रहने वाला है। आप अपने बौद्धिक बल के द्व ारा व्यावसायिक जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे। 22 फरवरी के बाद समय और भी शुभ हो रहा है। इस दौरान कोई महत्वपूर्ण कार्य पूरा हो सकता है। कार्य व्यापार की सफलता के लिए सार्थक प्रयास करेंगे। छठे स्थान का राहु व्यावसायिक शत्रुओं पर विजय प्राप्ति के लिए शुभ है। इव वर्ष आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं जिससे सफलता मिलने की पूर्ण संभावन है।

19 सितम्बर के बाद कार्य व्यवसाय में अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। नौकरी में पदोन्नति के साथ अनुकूल स्थान पर तबदला होने की पूर्ण संभावना बन रही है। कार्य स्थल पर सहयोगियों का अच्छा सहयोग मिलेगा। काम धंधे में बढ़ोत्तरी होगी और आप अपने सभी कार्यों को सकारात्मक रूप से करेंगे। इस दौरान व्यावसायिक उन्नति के नये अवसर भी मिलेंगे।

धन संपत्ति

एकादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए शुभ है। आपके धनागम में तेजी से वृद्धि होगी तथा धन कमाने के नये अवसर भी मिलेंगे जिससे आर्थिक स्थिति में मजबूती आयेगी। 22 फरवरी से समय और भी उत्तम हो रहा है। छठे स्थान का राहु शत्रुओं से भी धन लाभ करा सकता है।

19 सितम्बर के बाद भूमि, भवन व वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होने के योग हैं। धन संचय करने में पारिवारिक सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा तथा सुख सुविधाओं पर आप अधिक व्यय करेंगे। अचल सम्पत्ति प्राप्त होने की संभवना बन रही है। वर्षान्त में अपने व्यय पर अंकुश लगाएं नहीं तो आपके अनावश्यक खर्च बढ़ सकते हैं क्योंकि द्वादश स्थान पर राहु की दृष्टि शुभ नहीं है अतः इस अवधि में कोई बड़ा निवेश करने से बचें।

sample

घर–परिवार, समाज

घरेलू जीवन के लिए यह वर्ष काफी अच्छा रहने की सम्भावना है। अपने परिजनों के साथ सुखपूर्वक समय व्यतीत करेंगे। घर परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। सभी सदस्यों में आपको एक जुटता व सौहार्द देखने को मिलेगा परन्तु वर्षारम्भ बच्चों के स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु अचानक बच्चों के स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनाएगा। लेकिन 22 फरवरी से समय अनुकूल हो रहा है। जीवनसाथी के साथ आप कुछ अच्छे स्थलों की सैर पर भी जा सकते हैं। भाई बहनों के साथ–साथ माता पिता का भी भरपूर सुख व सहयोग मिलेगा। मित्रों व परिचितों से मुलाकात संभव है। प्रेम सम्बन्धों में मधुरता आएगी।

यह वर्ष सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए काफी श्रेष्ठ रहने वाला है। 19 सितम्बर के बाद चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा तथा परिवार की आर्थिक समृद्धि के योग प्रशस्त होंगे। राजनीतिज्ञों से संपर्क स्थापित होने से सामाजिक मान–सम्मान में अभिवृद्धि होगी। घरेलू सुविधाओं पर व्यय करेंग। परिवार में एक–दूसरे के प्रति भावनात्मक लगााव में वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। उन्नति के लिए अधिक परिश्रम की आवश्यकता है। दूसरी संतान के लिए यह समय शुभ है। उनके विवाह की प्रबल संभावना है। कार्यों को करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे।

उत्तरार्द्ध में बच्चों के पराक्रम व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। यही पराक्रम उनकी सफलता में सहायक बनेगा। इस दौरान बच्चों को नौकरी मिल सकती है तथा वे आपको आर्थिक सहयोग भी करेंगे।

स्वास्थ्य

शारीरिक आरोग्यता और मानसिक शान्ति के लिए यह वर्ष अनुकूल बना रहेगा। जो लोग पहले से किसी बीमारी से ग्रस्त हैं उनको 22 फरवरी के बाद रोग से मुक्ति मिल सकती है तथा षष्ठस्थ राहु के कारण आपकी शारीरिक ऊर्जा में तेजी से वृद्धि होगी। स्फूर्ती और ऊर्जा का स्तर अच्छा रहेगा। तंदुरुस्ती और मानसिक शान्ति प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिक विषयों की ओर आपका रुझान बढ़ेगा।

आप निरोगी काया के स्वामी बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी

गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह–सुबह टहलने जाना आदि।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

22 फरवरी के बाद प्रतियोगिता परीक्षा के लिए समय अनुकूल हो रहा है। इस दौरान कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली सुधार करेंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा जिससे करियर में उन्नति मिलने की संभावना है।

उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। पदोन्नति व नयी नौकरी मिलने की संभावना बन रही है। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो इच्छित नौकरी मिल सकती है।

यात्रा–तबादला

वर्षारम्भ में छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्रा के भी प्रबल योग बन रहे हैं। इस वर्ष की यात्राएं आपके लिए लाभप्रद रहने वाली हैं। नवमस्थ शनि पर गुरु की दृष्टि के कारण धार्मिक यात्राएं अधिक करेंगे।

19 सितम्बर के बाद परिवार के साथ की गयी यात्राएं आपको आत्मिक सुख प्रदान करेंगी। चतुर्थस्थ गुरु के कारण आपको पदोन्नति के साथ साथ अनुकूल स्थान पर तबदला होने की संभावना है। यदि आप अपने घर से दूर रहते हैं तो इस अवधि में जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी और आप निःस्वार्थ भाव से पूजा–पाठ इत्यादि शुभ कार्य करेंगे। आध्यात्मिक उन्नति के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। धार्मिक कार्यों के लिए उत्तरार्द्ध और भी शुभ रहने वाला है। पारिवारिक सुख शान्ति के लिए घर मे हवन व ग्रह शान्ति संबंधित कोई विशेष पूजा का आयोजन रखेंगे।

- साधू, सन्न्यासी, द्विज व ब्राह्मण की सेवा करें तथा गरीबों को भोजन कराएं।
- प्रतिदिन दुर्गा कवच का पाठ करें या आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- शनिवार के दिन नीलम रत्न धारण करें।
- सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।

sample

वार्षिक फलादेश - 2051

इस वर्ष शनि मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। गुरु सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा 17 अक्टूबर को कन्या राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे। राहु तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा 1 सितम्बर को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

दशम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण नौकरी में पदोन्नति तथा कार्य व्यवसाय में उन्नति मिलेगी। सभी अधिनस्थ कर्मचारी वांछित सम्मान देंगे तथा बड़े अधिकारियों का भरपूर सहयोग मिलता रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अनुकूल स्थान पर तबदला होने की पूर्ण सम्भावना बन रही है। यह स्थानान्तरण घर के नजदीक होने से आप अत्यधिक प्रसन्न रहेंगे। व्यावसायिक प्रतिद्व द्वियों को मुहतोड़ जवाब देंगे तथा सफलता के मार्ग पर आगे रहेंगे। कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे जिसमें अच्छा लाभ मिलेगा।

अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा। लम्बे समय से रुके हुए कार्यों में अब तेज गति से प्रगती होगी। प्रोपर्टी, भूमि व वाहन से संबंधित कार्यों में इच्छित सफलता मिलने की संभावना है। 17 सितम्बर को पंचम भाव में राहु गुरु की युति व्यावसायिक उन्नति के लिए शुभ नहीं है। शेयर बाजार, सट्टा, व लॉटरी के माध्यम से नुकसान होने की संभावना बन रही है।

धन संपत्ति

इस वर्ष नौकरी या व्यापार के माध्यम से अच्छा लाभ होगा। धन कमाने के लिए की गयी सभी यात्राएं लाभप्रद रहेंगी। चतुर्थस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से भूमि, भवन व वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। धन कमाने के काफी अच्छे अवसर मिलेंगे जिससे आर्थिक स्थिति में मजबूती आएगी। मांगलिक कार्यों व वाहनादि सुख सुविधाओं एवं मनोरंजन के कार्यों पर आप अधिक खर्च करेंगे। अचानक धन प्राप्ति की संभावना बन रही है। धन प्राप्ति के मार्ग में आने वाले सभी व्यवधान दूर होंगे।

यदि पैतृक संपत्ति पर कोई बाद विवाद चल रहा हो तो उसमें सफलता मिलने की पूर्ण संभावना है। इस दौरान माता पिता से भी धन लाभ होगा। लेकिन 17 सितम्बर के बाद जूआ, लॉटरी जैसे अनैतिक कार्यों से दूर रहें तथा बचत को सुरिक्षत रखें। संपत्ति संबंधी कार्यों में निवेश करते हुए सावधानी

sample

बरतें। जहां तक हो सके संपत्ति के दस्तावेज भली भांति जांच लें। किसी भी ऐसे कार्य में धन का निवेश न करें जिसमें जोखिम हो।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। माता पिता सहित पूरे परिवार के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण का आनन्द उठाएंगे। घर में मांगलिग या धार्मिक कार्य होते रहेंगे, जिससे घर परिवार में सुख शान्ति का माहौल बना रहेगा। पैतृक संपत्ति से संबंधित कोई पुराना विवाद सुलझने से आप मानसिक शान्ति का अनुभव करेंगे।

17 अक्टूबर के बाद आप विभिन्न धार्मिक संस्थानों से जुड़ेंगे एवं धार्मिक क्रिया–कलापों में धन व्यय करेंगे। पिताजी के लिए यह वर्ष लाभप्रद सिद्ध होगा। बड़े भाई के लिए यह समय विशेष अनुकूल है। बच्चे के स्वास्थ्य को लेकर चिंताएं हो सकती हैं।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। परिश्रम के बदौलत प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता के संकेत हैं। उनके सृजनात्मक शक्ति में वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में उनका संबंध अच्छे लोगों के साथ होगा। पठन पाठन के प्रति भी रुचि बढ़ेगी। किसी भी कार्य को सकारात्मक ऊर्जा के साथ करेंगे और जबतक कार्य पूर्ण नहीं होता तब तक उस कार्य को करते रहेंगे और भाग्य से ज्यादा अपने कर्म पर विश्वास रखेंगे।

1 सितम्बर को पंचम स्थान में राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके बच्चे को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना होगा। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बनी रहेगी प्ररन्तु आलस्य की भावना पढ़ाई में अवरोध उत्पन्न कर सकती है।

स्वास्थ्य

इस वर्ष शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होने के कारण सभी कार्यों को सकारात्मक रूप से करेंगे। मानसिक शान्ति होने से शारीरिक कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। खान–पान, रहन सहन व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देंगे तथा समय का सदुपयोग कर जीवनशैली को और सरल बनाने की कोशिश करेंगे। इस दौरान आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे।

sample

सितम्बर के बाद यदि मौसम जनित बीमारियां होती भी हैं तो आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे तथा अपनी सेहत पर पूर्ण ध्यान देंगे सुबह शाम व्यायाम करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। ध्यान, योग, पूजा–पाठ व मन्त्र जाप के माध्यम से अलौकिक सुख की अनुभूति करेंगे तथा अपने आपको हमेशा अच्छे कार्यों में व्यस्त रखेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। सभी कार्यों में आपको वांछित उन्नति मिलेगी। जो लोग नौकरी की तलास में हैं उनको मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी तथा प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलेगी। विद्यार्थीयों के मन में नए–नए विषयों के प्रति जिज्ञासा बढे गी। विज्ञान, कला व तकनीकी शिक्षा के प्रति विशेष रूचि जाग्रत होगी।

उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो सकता है। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है। 17 अक्टूबर के बाद अचानक आपके कार्यों में रुकावट आ सकती है लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे और सफलता के पथ पर अग्रसर रहेंगे।

यात्रा–तबादला

चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से अनुकूल स्थान पर तबादले का योग बन रहा है। यदि आप घर से दूर रहते हैं तो इस समय के अंतराल में सपरिवार जन्म भूमि की यात्रा होगी। वर्ष के पूर्वार्द्ध में विदेश यात्रा की भी संभावना है।

17 अक्टूबर को नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि धार्मिक यात्राओं के लिए शुभ है। इस दौरान आप धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे। छोटी–मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी अधिक होंगी। मुख्यतः सभी यात्राएं व्यवसाय से संबंधित हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

चतुर्थस्थ गुरु के कारण घर परिवार में धार्मिक कार्यों का आयोजन होगा जिसमें घर के सभी सदस्य सम्मिलित होंगे। इस दौरान धार्मिक व

sample

आध्यात्मिक कार्य अधिक करेंगे। आपका ज्यादा समय ज्ञानार्जन व धार्मिक पुस्तकों के पठन पाठन में व्यतीत होगा।

17 अक्टूबर के बाद आप लम्बी तीर्थ यात्रा पर जा सकते हैं। गुरु भक्ति, इष्ट साधना व मन्त्र सिद्धि में ज्यादा विश्वास होगा। आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा इत्यादि शुभ कर्म कर पुर्ण्याजन करेंगे तथा गरीबों की सहायता अधिक करेंगे।

- गुरुवार को मन्दिर में केले और चने की दाल दान करें।
- काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- सोमवार को शिव जी को दूध चढ़ाएं।
- संध्या के समय तुलसीजी के सामने दीपक जलाएं।

sample

वार्षिक फलादेश - 2052

इस वर्ष राहु और गुरु कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा 16 नवंबर को गुरु तुला राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में शनि मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और 25 फरवरी को कुम्भ राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय में कुछ परेशानियां झेलनी पड़ेंगी। परंतु भाग्य आपका साथ नहीं छोड गा। आशावादी विचारधारा सफलता का कारण बनेगी। व्यापार में बदलाव या नौकरी में पदोन्नति तथा स्थानांतरण की प्रबल संभावना है। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलने से सभी कार्यों को सकारात्मक रूप से करेंगे। अथक परिश्रम एवं मेहनत के बदौलत व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। कार्यस्थल पर मान सम्मान मिलने कारण प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करते रहेंगे।

वर्षान्त कुछ प्रभावित रहने वाला है। कार्य में एकाग्रता नहीं रहने के कारण व्यावसायिक लेन–देन में कमी आ सकती है। कार्य व्यवसाय में आप काफी होशियार हैं फिर भी इस दौरान परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। दोस्त और अन्य लोगों से धोखा मिलने की संभावना बन रही है। इसलिए हर कदम फूँक–फूँक कर रखें और किसी पर भी ज्यादा विश्वास न करें।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। आपको अपनी मेहनत के अनुसार धन लाभ होता रहेगा। अपनी आय को बढ़ाने के लिए आप नए आमदनी स्रोत खोजेंगे। यदि आप शेयर बाजार, लॉटरी व सट्टा से जुड़े हैं तो सावधानी के साथ निवेश करें नहीं तो नुकसान होने की संभावना है। इस वर्ष कोई बड़ा निवेश करने से बचें तथा पैसा बचाने की कोशिश करें।

16 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आय के मार्ग प्रभावित होंगे। लेन–देन व क्रय विक्रय करते समय सावधानी बरतें। कोई नजदीकी व्यक्ति ही धोखा दे सकता है। अत्यधिक संघर्ष के बाद काम चलाऊ आमदनी होने की संभावना बन रही है। अपनी आर्थिक स्थिति को सुव्यवस्थित करें तथा अनावश्यक खर्चों पर पूर्ण रूप से नियन्त्रण रखें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीको से दूर रहें।

sample

घर–परिवार, समाज

वर्षारम्भ में पारिवारिक स्थिति अनुकूल रहेगी। सभी घरेलू सदस्यों के साथ आनन्दमय समय व्यतीत करेंगे। लेकिन 25 फरवरी से समय अचानक प्रतिकूल हो रहा है। घरेलू जीवन के लिए यह समय थोड़ा तनावमय रह सकता है। चौथे भाव पर शनि की दृष्टि होने के कारण पारिवारिक जीवन अशांत रहने के आसार हैं। माता के साथ थोड़ी अनबन हो सकती है। उनकी सेहत का ध्यान रखें। पिता के साथ आपके और आपके जीवनसाथी के संबंध अच्छे रहेंगे। हालाँकि आपके जीवनसाथी की माता के साथ अनबन हो सकती है।

अष्टमेश गुरु के पंचम भाव से गोचर करने के कारण बच्चों को सेहत से जुड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। किसी पारिवारिक सदस्य के खराब स्वास्थ्य की वजह से भी धन खर्च होने की संभावनाएँ नजर आ रही हैं। राहु गुरु की युति होने के कारण आपके अंदर क्रोध की अधिकता रहेगी। इस अवधि में आपको अपनी वाणी पर विशेष ध्यान देने की जरुरत है वरना आपके रिश्तों में खटास पैदा हो सकती है। समाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए भी यह साल सामान्य रहेगा।

संतान

पंचम स्थान में राहु गुरु की युति संतान के लिए अच्छी नहीं है। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति में विलम्ब होगा। गर्भवती स्त्रियों के लिए यह समय शुभ नहीं है। गर्भपात की संभावना बन रही है। संतान के साथ वैचारिक मतभेद होने की संभावना है।

16 नवम्बर से समय कुछ प्रभावित हो रहा है। बच्चे की संगति व आदतों पर नियंत्रण रखें तथा उसके स्वास्थ्य का भी ध्यान रखें। चोट आदि लगने का भय बना हुआ है। इसके अतिरिक्त उसे किसी भी वाद–विवाद में पड़ने से रोकें।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर फुर्ति और ऊर्जा का स्तर अच्छा रहेगा। तंदुरुस्ती और मानसिक शान्ति बनी रहेगी। आध्यात्मिक विषयों की ओर झुकाव बढे गा। खान–पान एवं दिनचर्या अनुकूल रहने से आप पूर्ण रूप से स्वास्थ्य बने रहेंगे। यदि कोई मौसम संबंधित बीमारियां होती भी हैं तो आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे।

sample

16 नवम्बर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। लग्न स्थान पर राहु ग्रह का प्रभाव होने से अचानक स्वास्थ्य में कमी आ सकती है। कार्यों में अरुचि व मानसिक उलझनें पैदा हो सकती हैं। आलस्य व शारीरिक परेशानी बढ़ सकती है। गर्मी के कारण होने वाले रोगों से संभल कर रहें व साफ सफाई का विशेष ध्यान रखें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। परिश्रम के बाद ही सफलता मिलेगी। इस समय आत्मविश्वास मजबूत रखेंगे तो अनुकूलता प्राप्त होगी। जल्दबाजी में आप कोई गलत निर्णय ले सकते हैं, उससे बचें। 25 फरवरी के बाद वांछित क्षेत्र में सफलता मिलने की संभावना है क्योंकि दशम स्थान में शनि ग्रह का गोचर प्रतियोगिता में सफलता के लिए शुभ है।

जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उन सब को अच्छी नौकरी मिल सकती है। यदि आप नौकरी में हैं तो पदोन्नति होने की पूर्ण संभावना है। यदि आप विदेश में जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ रहने वाला है।

यात्रा–तबादला

यात्रा के लिए यह वर्ष अनुकूल रहने वाला है। वर्ष के प्रारम्भ में लम्बी यात्राएं अधिक होंगी। 25 फरवरी के बाद नौकरी में स्थान परिवर्तन का प्रबल योग बन रहा है। यह तबदला घर से दूर हो सकता है, जिसके कारण आपको घर परिवार से दूर जाना पड़ सकता है।

16 नवम्बर के बाद विदेश जाने का सुन्दर योग बन रहा है। रिसर्च, अनुसंधान व उच्च शिक्षा के लिए देश से बाहर जा सकते हैं। परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल, म्युजियम, पुरानी धरोहर, इमारत इत्यादि देखने जा सकते हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

गुरु भक्ति, इष्ट साधना, मन्त्र सिद्धि व आध्यात्मिक ज्ञान के लिए यहा वर्ष अनुकूल रहने वाला है। गुरु दीक्षा लेकर उस मन्त्र की साधना कर सकते हैं। गुरु वाणी व गुरु जी पर आपका अटूट विश्वास बढ़ेगा। पूजा–पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान

sample

अधिक करेंगे तथा तीर्थ यात्रा के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ेगी।

16 नवम्बर को गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से धार्मिक कार्यों में कुछ कमी आएगी। मानसिक द्वन्द्वता के कारण पूजा पाठ में एकाग्रता नहीं रहेगी। परन्तु दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। अनाथालय या गरीब बच्चों की पढ़ाई लिखाई में अधिक खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख की अनुभूति होगी।

- सोमवार के दिन रुद्राभिषेक करें।
- प्रतिदिन दुर्गा चालीसा का पाठ करें तथा आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- अपने पूजा घर में सर्वबाधा मुक्ति यन्त्र स्थापित करें।

sample

वार्षिक फलादेश - 2053

इस वर्ष शनि कुम्भ राशि में दसवें भाव में रहेगा। बृहस्पति पूरे वर्ष तुला राशि में छठे भाव में गोचर करेंगे, वहीं इस काल अवधि में बृहस्पति तुला राशि में 19 फरवरी से 22 जून तक वक्री अवस्था में गोचर करेंगे। 16 दिसंबर को सातवें भाव में वृश्चिक राशि में प्रवेश करेंगे। साल के पहले भाग में राहु कन्या राशि में पंचम भाव में रहेगा और 5 मई को सिंह राशि में चतुर्थ भाव में प्रवेश करेगा।

व्यवसाय

करियर के लिए यह वर्ष आम तौर पर अनुकूल रहेगा। नौकरी में पदोन्नति की प्रबल संभावना है। आपको अपने करियर में भाग्य का साथ मिलेगा। प्रमुख व्यावसायिक निर्णय लेने से पहले, व्यवसाय योजना का अच्छी तरह से विश्लेषण करना आवश्यक है क्योंकि 5 मई के बाद की समयावधि प्रतिकूल है।

वर्ष के उत्तरार्ध में राहु का प्रतिकूल गोचर व्यापार में हानि की संभावना पैदा कर सकता है। यदि आप संपत्ति और वाहन से जुड़ा कोई काम करते हैं, तो नुकसान होने की संभावना बढ़ सकती है। नौकरीपेशा लोगों को उनकी पसंद के विरुद्ध किसी स्थान पर स्थानांतरित किया जा सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक मामलों के लिए यह साल मिले–जुले परिणाम लेकर आएगा। जहां एक तरफ खर्चे ज्यादा होंगे, वहीं दूसरी तरफ आपको ज्यादा पैसा कमाने के कई अवसर भी प्राप्त होंगे। आप धन कमाने के अपने प्रयासों में तेजी लाएंगे, जो निश्चित रूप से आपकी आर्थिक स्थिति को मजबूत करेगा। इस समय आप व्यवसाय से जुडी यात्रायें करेंगे, जो आर्थिक दृष्टि से सफल साबित होगी। शेयर बाजार, लॉटरी से दूर रहना आपके लिए बेहतर रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्ध में आपको अपने वित्तीय मामलों में सतर्क रहने की जरूरत है। इस बात की संभावना है कि आपके आस–पास कोई आपको धोखा दे सकता है। जितना हो सके पैसों की बचत करें, बेवजह खर्च न करें। वैसे, आप कुछ पैसे बचाने और कुछ नया खरीदने में सक्षम होंगे। आप अपना पैसा अपने माता–पिता के स्वास्थ्य पर भी खर्च कर सकते हैं।

sample

घर–परिवार, समाज

साल का पूर्वार्ध भाग परिवार के लिए अनुकूल रहेगा। घर में सभी के साथ आपके बेहतर संबंध रहेंगे तथा परिवार में खुशी, शांति समृद्धि का माहौल बना रहेगा। परिवार के सदस्यों के सहयोग से आप अत्यधिक प्रसन्न होंगे। आप घर में कुछ महंगे उपकरण खरीद सकते हैं। घर में कोई शुभ कार्य जैसे विवाह आदि होने की संभावना है।

05 मई के बाद का समय स्वास्थ्य की दृष्टि से कुछ परेशानी भरा रहेगा। राहु ग्रह का चतुर्थ भाव में गोचर माता–पिता के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है जो आपके परिवार पर नकारात्मक प्रभाव डालेगा। परिवार के कुछ लोगों से आपकी बहस हो सकती है। आपको अपना ध ैर्य बरकरार रखने की सलाह दी जाती है।

संतान

वर्ष का पूर्वार्ध भाग संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। राहु के गोचर से संतान के स्वास्थ्य को लेकर चिंता रहेगी। उनकी पढ़ाई भी प्रभावित हो सकती है। उनके स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें। हालांकि 5 मई के बाद समय अनुकूल हो रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके बच्चे प्रगति के पथ पर आगे बढ़ेंगे। पढ़ाई के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो उन्हें सर्वश्रेष्ठ शिक्षण संस्थान में प्रवेश मिल सकेगा। दूसरी संतान के लिए वर्ष का अंत बहुत ही शुभ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से पूरा साल अनुकूल रहेगा। स्वास्थ्य संबंधी कुछ छोटी–मोटी परेशानियां रह सकती हैं। क्रोध से बचने की कोशिश करें। कुछ बड़े फैसलों से आप दबाव में रहेंगे, जिससे कुछ मानसिक तनाव आपका पीछा करता रहेगा। ये तनाव आपको स्वभाव से थोड़ा अधीर बना देगा।

5 मई के बाद का समय स्वास्थ्य के लिहाज से खराब रहेगा। गुरु का गोचर आपकी सेहत के लिए अच्छा नहीं है। आपको सावधान रहने की जरूरत है, अन्यथा पेट, लीवर, किडनी, पित्ताशय की पथरी, आंत आदि से संबंधित समस्याएं हो सकती हैं। इसलिए आपको अपने खान–पान में विशेष सावधानी बरतने की जरूरत है। मसालेदार और बाहर के खाने से परहेज करें। नियमित

sample

व्यायाम और योग से खुद को फिट रखें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में तरक्की पाने के लिए इस वर्ष आपको अथक परिश्रम करना होगा। अन्यथा रोजगार मिलना और कार्यक्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ाना मुश्किल होगा। 05 मई के बाद आप घर से दूर जाकर अपनी शिक्षा में सुधार करेंगे। आप विदेशी भाषा और गूढ़ विज्ञान में अपनी रुचि बढ ाएंगे।

अध्ययन में आपकी रुचि सामान्य रहेगी, हालाँकि आप नियत समय में वांछित शिक्षा अर्जित करने में सक्षम होंगे। अगर आप नौकरी की तलाश कर रहे हैं तो इस दौरान आपको वह मिल सकती है लेकिन आप उस नौकरी से पूरी तरह संतुष्ट नहीं होंगे।

यात्रा–तबादला

यात्रा के लिए यह वर्ष अनुकूल है। आपको लम्बी यात्रायें और विदेश यात्रायें करने के मौके खूब मिलेंगे। यात्रा के अलावा एक लंबे, ऐतिहासिक, पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल का भी संकेत मिलता है। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों के लिए यह समय अवधि अत्यधिक अनुकूल है।

5 मई के बाद नौकरीपेशा लोगों का ट्रांसफर होने की संभावना है। आपको अपनी जन्मभूमि से दूर जाना पड़ सकता है। इस दौरान आप विदेश जाकर व्यापार कर सकते हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्ध भाग में आप धार्मिक कार्यों में दान आदि में पैसा देंगे। इससे आपको आध्यात्मिक सुख का अनुभव होगा। आपका पैसा किसी अनाथ या किसी गरीब बच्चे की शिक्षा पर खर्च हो सकता है। उत्तरार्द्ध में आप धार्मिक कार्यों के लिए ज्यादा समय नहीं दे पाएंगे।

- शनिवार के दिन नीली वस्तु का दान करें और राहु के मंत्र का जाप करें। जिससे मिलेगी, शारीरिक और मानसिक समस्याओं से मुक्ति।
- आर्थिक परेशानियों से मुक्ति के लिए, घर में श्रीयंत्र की स्थापना करें और उसके सामने घी का दीपक नियमित रूप से जलाएं।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, गुरु और मंदिर के पुजारी की सेवा करें।
- ग्रहों की शांति के लिए प्रतिदिन दुर्गा चालीसा का जाप करें।